Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक ज़िन्दगी निर्वासित

संतोष कौल

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक ज़िंदगी निर्वासित

सन्तोष कौल

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu.
Acc. No. 554 (D)
Dated 9-9-29

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक ज़िंदगी निर्वासित

© सन्तोष कौल

399-A, जुलाका मुहल्ला
जम्मू (तवी)

सर्वाधिकार सुरक्षित

कवर सज्जा : पी. एन. काचरू

प्रथम संस्करण 2001

ISBN 81 - 86029 - 06 - 0

प्रकाशक : सहयोग प्रकाशन
7/1, पन्त नगर, जंगपुरा
नई दिल्ली–110014

शब्दांकन : वी. एम. ग्राफिक्स
एस–170ए, स्कूल ब्लाक शकरपुर
दिल्ली–110092

मुद्रण : शान्ति प्रिन्टर्स
एस–152, स्कूल ब्लाक शकरपुर
दिल्ली–110092

मूल्य. : 200 रुपये

Ek Zindagi Nirvaasit (Hindi Novel)
By **SANTOSH KAUL**

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

समर्पण

पूज्य माता-पिता
को
सादर समर्पित

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh
Dr. P. L. Shant
Professor

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रकाशकीय

'सहयोग प्रकाशन' द्वारा प्रकाशित कई अंग्रेज़ी पुस्तकों के अलावा हिंदी पुस्तकों की श्रृंखला में हमने ***आतंक बीज*** (कहानी संग्रह), ***मैं प्यासा हूं*** (कविता संग्रह), **जय श्री राजनीति** (व्यंग्य–लेख संग्रह) और *स्वास्थ्य पथ* के बाद श्रीमती संतोष कौल का यह उपन्यास ***एक ज़िंदगी निर्वासित*** प्रकाशित करने में हमें प्रसन्नता हो रही है। लेखिका ने इससे पहले भी एक उन्यास लिखा है। नाम है ***लक्ष्यहीन***।

एक ज़िंदगी निर्वासित मुख्यतः सामाजिक परिवेश लिए हुए एक कश्मीरी (पंडित) परिवार के सदस्यों की व्यथा और अन्य पात्रों की कहानी है। फिर भी इस कथा की पृष्ठभूमि में कश्मीर को लीलता जा रहा आतंकवाद और उस से पीड़ित अल्प संख्यक कश्मीरी पंडित सम्प्रदाय की त्रासदी प्रतिबिंबित होकर सामने आती रहती है। इस समुदाय के लगभग तीन लाख लोग पाखंडी और धर्मांध इस्लामी जेहादियों की क्रूरता तथा दमनचक्र का शिकार होकर अपने आत्म सम्मान, मर्यादा और प्राणों की सुरक्षा के लिए अपना सैंकड़ों वर्षों का घर–द्वार छोड़कर कश्मीर से पलायन करने और अपने ही देश में शरणार्थी (*मायग्रंट*) बनने पर मजबूर हुए। यह भयंकर दुर्घटना हमारे स्वाधीन भारत की एक बड़ी त्रासदी है।

एक ज़िंदगी निर्वासित कहानी भले ही निधि, विनय, राज, शालू, शामरानी और श्यामलाल जैसे पात्रों के इर्द–गिर्द घूमती हो, लेकिन उक्त त्रासदी के परिणामस्वरूप इन घर से बेघर हुए विस्थापितों और प्रतिकूल परिस्थितियों में अपना अस्तित्व बनाए रखने के संघर्ष की भी कहानी है। कोई भी संवेदनशील लेखक जो समकालीन इतिहास की इतनी बड़ी ट्रेजेड़ी का प्रत्यक्षदर्शी रहा हो, ऐसा किए बिना नहीं रह सकता। इस उपन्यास की लेखिका श्रीमती संतोष कौल ने भी ऐसा ही किया है, हालांकि जितना प्रभावशाली ढंग से और सशक्त भाषा के प्रयोग से इस ऐतिहासिक विषय वस्तु को अभिव्यक्त किया जा सकता था उतना नहीं हो पाया है।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अस्तु, हम लेखिका के इन शब्दों के साथ सहमत हुए बिना नहीं रह सकते कि "... मनुष्य परिस्थितियों के सामने बौना बनकर अपना महत्व खो देता है, और फिर आतंक, मानस के अंदर का हो या बाहर का – हर हाल में मानवता का नृशंस अंत कर देता है।..."

'सहयोग प्रकाशन' प्रकाशन क्षेत्र में सहकारी संघ के आधार पर चलाया जा रहा एक प्रकाशन–घर है। कुछ बुद्धिजीवियों ने इसे कुछ वर्ष पहले एक प्रयोग के तौर पर शूरू किया था। लेकिन कोई सद्प्रयोग या सद्प्रयास सफल ही होगा इसकी कोई गारंटी नहीं है, विशेषकर आज की विषम परिस्थितियो में। इस दृष्टि से **'सहयोग प्रकाशन'** भी एक नया और अच्छा प्रयोग होते हुए भी कई कारणों से अपेक्षित सीमा तक सफल नहीं रहा, खासकर आर्थिक कठिनाइयों के कारण। फिर भी हमने अंग्रेज़ी और हिंदी में कई पुस्तकें प्रकाशित कीं। इनमें एक उल्लेखनीय पुस्तक है श्री अवतार कृष्ण राज़दान की कहानियों का संग्रह ***'आतंक बीज'*** जिसे 1997–98 वर्ष के अहिंदी भाषा क्षेत्रों के हिंदी लेखकों की श्रेणी में भारत सरकर के मानव संसाधन एवं शिक्षा मंत्रालय ने पुरस्कृत किया। लेखक को यह पुरस्कार तद्कालीन राष्ट्रपति, स्व. डा. शंकरदयाल शर्मा के कर–कमलों द्वारा प्राप्त हुआ था।

'सहयोग प्रकाशन' को, श्रीमती संतोष कौल का यह उपन्यास प्रबुद्ध एवं सहृदय पाठकों तक पंहुचाने के लिए प्रसन्नता हो रही है। वे ***एक ज़िंदगी निर्वासित*** का स्वागत करेंगे ऐसी हमारी आशा है।

ओंकार काचरू

कृते **'सहयोग प्रकाशन'**, नई दिल्ली

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक

उसका जन्म एक ऐसे वातावरण में हुआ था जिसे प्राकृतिक तो कहा जा सकता है पर, वास्तव में प्रकृति से बहुत दूर था। आम लड़कियों की तरह वह भी पल रही थी – कहने को सुखी और खुश पर वास्तव में अभाव, रुढ़ियाँ और बेमतलब की परिस्थियाँ उसके संगी साथी थे। वह इतनी मस्त थी कि उसे कभी अपने अभाव खले नहीं। कभी उसने और पाने की लालसा नहीं की। यदि कभी मन दुःखी भी हो जाता तो तुरन्त अपने स्वप्नों के सहारे वह अपने दिल को बहला लेती।

हाँ । उसने बड़े सपने संजोये थे। वही सतरंगी सपने जो हर युवा युवती संजोती है। उसके सपनों का राजकुमार कभी उसे हतोत्साहित न करता, कभी उसकी मर्ज़ी का विरोध न करता और वह अपने अभावों व विसंगतियों का समाधान अपने स्वप्नों के राजकुमार में ढूंढ लेती। कितनी सुन्दर थी उसकी स्वप्नों की दुनिया – जिसमें वह होती, उसके स्वप्नों का राजकुमार होता। और होते वे लोग जिनकी उसने कल्पना की थी। एक परियों की शहज़ादी थी वह। यह ठीक है कि जवानी की दहलीज़ पर कदम रखते हुए उसके अपने रापने ही थे जो उसे आगे ले चले थे। पर सब कुछ स्वप्न ही नहीं होता। जब संघर्षों की ठोकर लगती है तो सपने बिखर जाते हैं और आदमी बड़े ज़ोर से वास्तविकता की कठोर धरती पर जा गिरता है। कभी–कभी तो इस तरह का मनुष्य सम्भल भी नहीं पाता और यदि सम्भलता भी है तो बड़े धटकोलों के साथ। यही सब कुछ शालू के साथ हुआ। जवानी के सोलह वसन्त पार करके ही उसके पिता ने शालू का विवाह कर डाला और अनायास ही वह समझ गई कि उसके स्वप्नों का राजकुमार सतरंगी घोड़े का सवार न होकर एक बेरहम आदमी है जो मांगों और ज़रुरतों के वाहन पर सवार हो, रोज़ ही उसके कोमल स्वप्नों को कुचलता हुआ उस पर हावी होता जा रहा है।

जी हां शालू की शादी हुई और उसके पापा–मम्मी ने यथा–शक्ति उसका दहेज भी जुटाया और अपनी लाड़ली के लिए एक ऐसा वर खोजा

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जो उनकी नज़र में लाखों में एक था। पढ़ा लिखा एक धनी परिवार का लड़का, और क्या चाहिए था उसे। बात अलग है कि जिसकी अथवा जिस तरह के वर की कामना शालू ने की थी, वैसा उसमें कुछ न था, न शक्ल न अक़्ल। कुलीन घरों की लड़कियों को पसन्द करने की आज्ञा नहीं होती। माता–पिता जो करते हैं, अच्छा ही करते हैं। शालू भी तो एक कुलीन परिवार की बेटी थी भला वह अपनी पसन्द कैसे थोप सकती थी किसी पर। अपनी आदत के अनुसार उसने समझौता कर लिया परिस्थिति से और समाधान निकाला अपने स्वप्नों से – अर्थात् कल की आशा करने लगी कि शायद कल हालात बदल जायें।

यह कहना भी गलत होगा कि ससुराल में उसका स्वागत सही रुप से न हुआ – हुआ अच्छी तरह से लेकिन उसका नहीं अपितु उसके लाये दहेज का। नहीं तो दबे शब्दों में यही सुनने को मिला कि कोई खास सुन्दर तो नहीं–मोटी भी बहुत है; मां–बाप की इकलौती होने के कारण लाड़ली भी तो है। और साथ ही यह भी सुनने को मिला– ''लाड़ तो भई मां–बाप के पास ही मिलता है, सुसराल में नहीं। अपने–आप ठीक हो जायेगी कुछ ही दिनों में''। यह सुनकर प्रायः डर भी लगने लगता– अपने कहे जाने वाले उन लोगों से जिनके बीच रह कर ही अब शालू को सारा जीवन बिताना था। विनय– उसका पति, नाम के ही अनुरूप, मां–बाप का आज्ञाकारी बेटा था। वह उसे प्यार तो करता था पर केवल आसक्ति या नयेपन के सहवास तक। उसके अतिरिक्त न वह कभी कुछ कह पाई न ही उसने कभी उसे कुछ कहने का अवसर ही दिया।

ससुराल से शालू जब मायके आती तो सहेलियां, बहनें अथवा और कोई उसे ससुराल के विषय में पूछते तो वह कभी मन की बात न कहती, बल्कि हंसी मज़ाक में टाल देती। पर अन्दर ही अन्दर सुलगती रहती और प्रायः विस्मय भी करती अपनी हालत पर – चुलबुलापन तो समाप्त हो चला था उसका और वह अनदेखी आशा के सहारे कैसे दिनों–दिन पाषाण बनती जा रही थी। उसे कौन सा गम खाये जा रहा था वह समझ न पाती। समय ऐसे ही भाग रहा था और धीरे–धीरे उसे दुल्हिन के दिनों की बातें समझ आने लगी थीं। अब वह पुरानी शालू न होकर एक औरत बन चुकी थी। एक मशीन – या एक पढ़ी–लिखी नौकरानी जो बिना वेतन के ससुराल के मालिकों का हुक्म बजा लाती। कैसे हुआ यह परिवर्तन वह समझ नहीं सकी।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दो

एक दिन शालू ससुराल में अपने नित्य के काम में लगी थी कि उसके जेठ का बेटा आया और कहा – "भाभी आज दादी की सहेलियां तुम्हें देखने आई हैं।"

सुनकर वह हैरान रह गई। लगभग छः महीने हो गये उसकी शादी के अब तक यह सहेलियां नहीं आईं। खैर ! वह कर भी क्या सकती थी। चुप रही। तभी उसके मन में कौतूहल जागा और वह उसे पूछने लगी – राजा बेटा ! कौन कौन हैं वे लोग ?" इस पर राजा बोला, "मैं नाम थोड़े ही जानता हूं, बस उन्हें देखा है – समझो मन्दिर वाली सहेलियां होंगी।" वह कुछ और भी पूछती कि तभी सास का बुलावा आया–"बहू इधर तो आना"। न चाहते हुए भी उसे उनकी महफ़िल में उपस्थित होना ही पड़ा। थोड़ी देर वह खड़ी होकर वापिस मुड़ी ही थी कि हुक्म हुआ – "ज़रा इनके लिए चाय बना दो।" सिर से स्वीकृति का संकेत करके वह चलने लगी तभी ठहाका उसके कानों से टकराया। उत्सुकतावश फिर धीरे से दरवाज़े तक आकर उन औरतों की बातें सुनने लगी। शालू की सास कह रही थी – "देखा तुमने कैसी ऊंट की तरह खड़ी रही। किसी भी बात का सलीका नहीं है इसमें। सोचती हूं अपने चांद जैसे बेटे ने कैसे कर्म किये थे और किसमत में क्या मिला उसे।"

एक सहेली ने प्रश्न दाग़ दिया – क्या तुमने देख–सुन कर शादी नहीं की थी उसकी। इसके तो नाक–नक्श भी साधारण ही हैं।

सास ने उत्तर दिया – देखी तो हमने भी थी पर इकलौती बेटी है यह सोचकर हामी भरी थी।

"तो यों कहो ना कि खूब माल लेकर आई है।"

"अरे छोड़ो भी। क्या लाई खाक कुछ भी नहीं। इसके मां–बाप तो छत्तीस ही निकले – बड़े–बड़े वायदे करके थोप दिया इसे हम पर। नहीं

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तो तुम ही देखो मेरे लाड़ले के रुप के आगे यह क्या लगती है।"

"इसमें कोई शक नहीं कि तुम्हारा बेटा तो हीरा है हीरा – लाखों में एक। उसके लिए लड़कियों की क्या कमी थी। खैर ! अब दिल छोटा न करो – उसकी किस्मत में यही लिखी थी – अब किया भी क्या जा सकता है।

यह सब सुनकर शालू रो पड़ी – और वह दौड़ती हुई रसोईघर की ओर भागी। कुछ देर के लिए असहाय हो वह सुबकने लगी। एक कर्कश आवाज़ आई, "बहू चाय बनी कि नहीं"। उसके हाथ पांव फूल गये – वह उनकी बातों में भूल ही गई थी कि चाय बनानी है। जल्दी जल्दी उसने समावार लाया और उसमें चाय की पत्ती डाली। अब आग बनाने के लिए कोयला ढूंढने लगी, कि कोयला मिले नहीं। फिर बूरे वाला चूल्हा भरा और इसे जलाने लगी। इतनी देर में सासू जी की सहेलियां जाने लगीं। सास आई और पूछा – एक घण्टे से चाय की प्रतीक्षा में हूँ और चाय है कि बनती ही नहीं। महारानी जी क्या कर रही थी अभी तक। क्या तुम्हें यही सिखाया गया है कि मेहमान आये और उसे चाय–पानी न पूछकर सो जाओ। हां–हां मैंने भी तुम्हें कहकर बड़ी भूल कर दी। आप ही बनाई होती तो आज इतनी बेइज़्ज़ती न होती। पर तुम्हें कहकर भी क्या फायदा। तुम तो हो ही कमीनों की। थोथा चना बाजे घना। नाम बड़े और दर्शन छोटे। दफ़ा हो जाओ मेरे सामने से – नहीं तो मैं तुम्हारा खून पी जाऊंगी"।

शालू समझ ही नहीं पाई कि उसे किस बात पर डांटा जा रहा है। उसके मन में रोष था अपनी सास के लिए जिसने उसको कभी अपना न समझकर हमेशा अनादर करके डांटा था, फटकारा था। आज भी जब वह अपनी सहेलियों को उसका परिचय दे रही थी तो उलाहने के साथ। उसे याद आया उसके मां–बाप उसको जितना दहेज दे सकते थे दिया परन्तु फिर भी उसकी सासु मां उस से सन्तुष्ट नहीं थी। अपनी ओर से रोज़ नींद से उठकर भगवान के आगे विनती करती कि हे भगवान् आज का दिन आराम से गुज़र जाये। पर रोज़ ही कुछ न कुछ ज़रुर होता।

ससुराल में लड़की के लिए सबसे करीब कौन हो सकता है – उसका पति, जिसके सामने वह अपना दिल खोल सकती है। यदि पत्नी का पति उसके प्रति अपना कर्तव्य निभाता है, तो चाहे कितने ही तूफान क्यों न आयें

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

– पत्नी सब सहन कर लेती है। जहां पर पति कहलाने वाला आदमी भी अपना न हो सके – वहां वही परेशानी जन्म लेती है जो शालू के जीवन में आई। एक बार पति से शिकायत की थी – उसने उत्तर दिया था – "मैं अपने मां–बाप, बहन–भाई या किसी भी रिश्तेदार की शिकायत नहीं सुनूंगा, समझी तुम। अग़र इतना घमण्ड है अपने दो टके के बाप पर तो बोरिया–बिस्तर बांध और दफ़ा हो जा यहां से।"

इसलिए तब से जो कुछ गुज़रती है उस पर चुपचाप सहन करने के इलावा कोई चारा नहीं था शालू के पास। इस तरह की उद्देश्यहीन ज़िन्दगी में जब कभी उसे मायके जाने का अवसर मिलता तो वह जाने की घड़ी का बेसब्री से इन्तज़ार करती ताकि कुछ दिन वहां रह कर सकून से गुज़ारे। इसमें कोई सन्देह नहीं कि ससुराल में उसे हर बात पर उत्तेजित किया जाता और दहेज लाने के लिए। और शालू प्रायः इसी इरादे से जाती भी थी मायके, पर वहां जाकर उनकी दयनीय दशा देखकर चुप रह जाती और ससुराल लौटने वाले दिन की तैयारी उसी तरह करती जिस तरह बकरा बूचड़ खाने में ले जाने के लिए करता है। तब ससुराल आकर फिर शुरु होता तानों, उलाहनों और झिड़कियों का ज़ोर।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तीन

विनय दफ्तर में बैठा सोच रहा था कि अभी विवाह करके उसने अच्छा नहीं किया। यदि वह एक दो साल और ठहरता तो सम्भव था कि प्रमोशन हो जाती और तब उसे धनी घर की बेटी मिल जाती। उसे शिकायत शालू के रुप रंग से न थी। पर उसने कोई खास दहेज नहीं लाया था। यह बात उसे बहुत खलती थी। उसकी मां सदा यही कहती – "कितने घरों से तो रिश्ते आये पर मैं न जाने इधर ही हां क्यों कर बैठी – निक़ी ने कहा भी था कि लड़की मोटी है और साधारण नाक–नक्श वाली है। तब भी मैंने हामी भरी यही सोचकर कि मां–बाप की इकलौती बेटी है; चलो सुन्दर न सही धन तो लायेगी। पर वे तो कमीने ही निकले – जो दिया अपनी बेटी को दिया और वह भी मिलावट वाला माल; कुछ भी असली नहीं। क्या करें कर्म ही फूटे थे अपने"। और बेटा यह सब सुनकर खिन्न हो जाता और सोचता कि उसे शालू का कुछ करना चाहिए। मगर क्या करना चाहिए यह वह हर बार सोचकर भी तय नहीं कर पाया।

आज भी जब वह शालू के निपटारे के लिए सोच रहा था तो उसके मन में एक प्रश्न आया, "क्या शालू कभी भी किसी से बदतमीज़ी से पेश आई है मन से ही जवाब मिला – "नहीं ! उसने कभी किसी की बात का जवाब तक नहीं दिया। बल्कि हर बार डांट खाने के बाद भी चुप रही है। "तो फिर उस पर ज़ुल्म करुं तो क्यों? तभी विचार आता कि बिना उसे सताये वह पैसे नहीं लायेगी इसलिए उसे सताना होगा।

ज़ेवर, कपड़े बर्तन के अतिरिक्त शालू के पिता ने उसे नक़द बीस हज़ार रुपया देने का भी वायदा किया था जो अभी तक पूरा नहीं हुआ था।

इसी बात को लेकर विनय ने सोचा कि उसे मांगेगा, परन्तु साथ ही सोचने लगा – क्या वह ऐसा कर सकता है? आजकल के ज़माने में बीस हज़ार रक़म ही कितनी होती है और फ़िर वे लोग तो अच्छे खाते–पीते घर

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

से वास्ता रखते हैं, फिर भी क्या उसे उन पैसों का तकादा करना ठीक होगा। शायद नहीं। शायद हां। क्योंकि यदि उसके पिता ने देने का वादा किया है तो शालू को वे पैसे लाने चाहिए।

यही सोचकर विनय जब घर लौटा तो रोज़ की तरह देखा शालू को काम करते हुए और अपनी मां को डांटते हुए। उसे समझने में देर न लगी कि मां गालियां शालू के माता–पिता को दे रही है। कोई और होता तो अपना सन्तुलन क़ब का खो चुका होता। पर आश्चर्य कि शालू चुप–चाप अपना काम किये जा रही थी। आंखें भरी–भरी सी और मौन – उसकी हालत बड़ी दयनीय लग रही थी। उसे शालू पर थोड़ी देर के लिए बड़ी दया आई और अपनी मां के प्रति गुस्सा भी। उसने आगे बढ़कर शालू का बाजू पकड़ा और लगभग घसीटते हुए उसे अपने कमरे में ले गया। शालू घबरा गई और थर–थर कांपने लगी। मां ने यह देखा तो वहीं से चिल्लाने लगी, ''विनय आज फैसला होके ही रहेगा समझे तुम"। विनय एकदम चौंक गया और उसने पूछा, ''कैसा फैसला मां?''

''यही कि या तो अपने भिखमंगे मां–बाप से पैसा लायेगी या फिर विष खाके मर जायेगी। मैंने यहाँ कोई यतीमखाना नहीं खोला है कि इसे बेमतलब पालती जाऊं।''

विनय को अपने सोचे हुए मसले को मां की इस दलील से बल मिलते देर न लगी। उसने भी आव देखा न ताव, एक भरपूर चांटा रसीद कर दिया शालू के बीमार चेहरे पर। वह सम्भल न पाई और हड़बड़ा कर नीचे सीमेंट के फर्श पर मुहं के बल गिर पड़ी। ऊपर के होंठों में नीचे के जबड़े के कुछ दांत चुभ गये। फर्श लहुलुहान हो गया। खून देखते ही विनय पछताया, घबराया और जल्दी–जल्दी उसे सम्हालने लगा। मां ने इस पर एक और हुक्म दागा – ''मारो और मारो नीचों की इस औ़लाद को। थोड़ा सा खून निकला तो मर नहीं जायेगी।''

पर इस आज्ञा का विनय ने कोई पालन नहीं किया। ज्यों ही उस का हाथ शालू के माथे तक गया तो वह सिहर गया। शालू को ज़ोर का बुखार था और पीड़ा के उपरान्त भी वह होंठ सिये हुए थी। विनय ने आनन–फानन उसे बाहों में उठाया और बिस्तर पर लिटाया और दौड़ता हुआ डाक्टर के पास गया। डाक्टर ने शालू को देखा, दवाई दे दी और कुछ विशेष हिदायतें

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

देकर चला गया। तब सब कुछ भूलकर विनय शालू की सेवा में लग गया। दस दिन तक पूरी तरह से बिस्तर पर पड़ी रहने के बाद शालू की हालत सम्भल गई। इस बीच विनय को अपने घर वालों की अमानवीय व्यवहार का बहुत कुछ पता चला। उसे यह भी मालूम हुआ कि शालू से रात दिन कोल्हू के बैल की तरह काम तो लिया जाता रहा, पर कई–कई दिन खाने को कुछ भी नहीं दिया जाता। इसीलिए उसकी हालत बहुत खराब हो गई थी।

यह सब मालूम होने पर उसे शालू पर दया आई। एक दिन सेवा के दौरान उसने पूछा भी – "शालू ! तुम पर इतने ज़ुल्म हुए पर तुमने कभी शिकायत न की, आखिर क्यों?"

इस पर शालू ने धीरे–धीरे डरते हुए कहा – "एक बार आपके पास कहने के लिए आई भी थी पर आपने सुने बिना ही मना कर दिया। साथ में शिकायत कभी न सुनने की ताक़ीद भी की"।

"तुम इतनी बार मायके भी गई। पर वहां पर भी मन का बोझ हलका न किया। ऐसा क्यों?"

"गरीब लड़कियां किस मुंह से मां–बाप से शिकायत करेंगी जब उन्हें मालूम है कि उनके मां–बाप के पास उनकी रोती आंखें पौंछने की ताक़त नहीं है।"

"मैं समझा नहीं।"

"आपने मुझे कई बार मायके भेजा इसलिए कि रक़म लाऊं जिसका वायदा मेरे पिता ने किया है। पर मैं आपको कैसे समझाऊं कि जब–जब मैं इस विचार से उनके पास गई तब–तब मैंने उन्हें अभावों में ग्रस्त पाया। उन्हें हर बार परेशान देखा। इसलिए कुछ कहने सुनने की हिम्मत ही नहीं हुई।"

"ठीक है जब उनकी ताक़त नहीं थी तो वायदा करने के लिए किसने कहा था ?"

"हमारा समाज वास्तविकता से कोसों दूर है। हम यथार्थ को तिलांजलि देकर दिखावे के शिकार हो जाते हैं अक्सर! यही बात मेरे पिता के साथ भी हुई। उन्होंने सोचा होगा चलो बाद में ही तो देना है इस समय सबके सामने कहने से सब समझेंगे कि इकलौती बेटी को नकद भी दिया और

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इसी वाह–वाही में बेटी की ज़िन्दगी नरक बन गई। इसका किसी को कोई अफसोस नहीं।''

''सच मानो मैं भी उस दिन तुमसे उन्हीं बीस हज़ार का दावा करने वाला था। इसीलिए तुम्हें मारा भी था। पर तुम्हारी हालत ने सब कुछ भुला दिया। अब तुम्हें चिन्ता करने की कोई आवश्यकता नहीं। धीरे–धीरे पैसे बचाकर तुम्हारी यह रक़म भी पूरी की जायेगी। फिर वह पैसे लाकर तुम मां को दे देना तो सब ठीक हो जाएगा।''

शालू को अपने कानों पर विश्वास ही नहीं हुआ – कहीं वह अपनी आदत के अनुसार सपना तो नहीं देख रही है। वह पति को टुकुर–टुकुर देखने लगी। विनय ने उसके माथे पर हाथ रख कर कहा – "क्यों यकीन नहीं होता ना। चलो लिख के देता हूं। अपने पास रखो – ठीक।''

सुनते ही उसने एक लम्बी सी सांस ली और सोचने लगी शायद इस निष्ठुर मनुष्य में उसके स्वप्नों का राजकुमार जन्म ले रहा है। उस रात वह सूकून और संतोष की नींद सोई! खूब और निश्चिन्त !

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चार

शादी के बाद विनय की पहली शिवरात्री है। खूब सफाइयां और तैयारियां करनी हैं। मां इस चिंता में है कि यह सारे काम होंगे तो कैसे, क्योंकि शालू के घर आते ही धीरे–धीरे नौकरों को जवाब दिया गया था। अब शालू भी नहीं करेगी क्योंकि डा॰ ने मना किया है। मां स्वयं यह सब करने से रही। निधि करती पर वह तो कालेज जाती है – परीक्षा है, कैसे करेगी वह इतना काम। फिर ससुराल में करना ही होगा तो अभी से क्यों फसाऊं बेचारी को । अब इसके लिए कुछ व्यवस्था करनी ही पड़ेगी। यह सोच कर मां ने अपने पति से कहा – "सुनते हो शिवरात्री आ रही है।"

"हां तो।"

"किसी नौकर की व्यवस्था कर दो"

"क्यों। क्या तुम से यह नहीं होगा ?"

"नहीं"

"फिर अच्छा भला जो नौकर था उसे निकाला क्यों?"

"मुझे क्या पता था कि महारानी बिस्तर पकड़ेगी। जैसे मायके में दसों नौकर थे।"

"इतनी बीमार है कि घर का काम भी नहीं हो सकता। असल में तुम औरतों के कोई असूल नहीं होते। नखरे–सखरे नहीं चलते। बाल पकड़ कर उठाओ और काम करवाओ बस।"

शालू ने सब सुन लिया, और एक अनुभव और हुआ कि शान्त दिखने वाले मनुष्य भी राख में सने अंगारों की तरह कितने कठोर होते हैं। चुप–चाप उठी और टूटते कदमों से धीरे–धीरे काम करने लगी। चार–आठ दिन पति के काम पर निकलते ही वह शुरु हो जाती और पति के लौटने पर सास उसे कहती अब कल करना। इस तरह लगातार कड़ी मेहनत से उसकी सम्भली देह फिर से मुरझाने लगी। पति के कई बार पूछने पर टाल

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जाती। एक दिन वह मेज़ पर चढ़कर खिड़की का रोशनदान साफ़ कर रही थी कि मेज़ पर उसका सन्तुलन बिगड़ गया और वह धड़ाम से नीचे गिर पड़ी और बेहोश हो गई। सास ने पहले गालियां दे देकर उसे उठाना चाहा पर जब वह होश में ही नहीं आई तो उसके हाथ–पांव फूलने लगे। डाक्टर बुलाया गया और उसने बताया कि आराम की काफी ज़रुरत है। कम से कम एक महीने की। सास को बुरा लगा। वह बोली, ''यहां तो अपना नहीं होता उस पर इसकी सेवा टहल बाकी थी''। शालू ने सुन लिया – वह चाहती तो बता देती कि उसकी इस हालत की ज़िम्मेदार भी तो वही है। पर वह चुप रही। शाम को विनय के आने पर घर के लोगों की झूठी शिकायतों के बीच वह घिर गई और उसे आश्चर्य होने लगा। कैसे अपने झूठे अवलम्बनों में उन्होंने उसके पति कहलाने वाले आदमी को भी अपने वश में कर लिया। मां बेटे से कह रही थी, ''यह तो बीमार ही रहती है और इस पर रोज़ का खर्चा दस–बीस रुपये है। यह तो मंहगाई में एक और चोट है। क्यों न इसे कुछ दिनों के लिए मायके छोड़ आओ।''

''और शिवरात्री ?''

''ठीक है पूजा के बाद सही। अब शिवरात्री में दिन ही कितने रह गये – यही कोई चार दिन।''

सुनकर हंसी आ गई शालू को क्योंकि शिवरात्री का भारी काम तो हो चुका था अब निश्चय ही उसकी आवश्यकता न रही थी।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पांच

पहली शिवरात्री पर शालू की ससुराल क्या भेज देंगे। शालू के मां–बाप के लिए यह एक बड़ी समस्या थी, क्योंकि वे अपनी हैसियत से जितना अधिक भेजते थे उतना ही उसकी ससुराल वालों को कम पड़ता था। यद्यपि उनकी लड़की ऐसा कुछ नहीं कहती थी पर अपने समधियों के तेवर वे लोग अब जान चुके थे। शालू की मां को कमला यहां तक आभास होने लगा था कि उसकी लाडली का मुरझाया चेहरा इसी तरह की कमियों का शिकार हो चुका है। वह बहुत खोज–खोज कर बेटी से पूछती पर हर बार कुछ न पाकर मायूस ही हो जाती। लेकिन तब भी उसे जैसे यकीन सा हो चला था कि उसकी बेटी खुश नहीं है। चाहे कोई समझे अथवा न समझे पर ममता को धोखा देना सरल काम नहीं।

कमला ने अपनी सभी ज़रूरतों को ताक पर रखकर शिवरात्री की रकम जुटा ली। इस विचार से कि शायद बेटी के ससुराल वाले सन्तुष्ट हो जायें। इसमें कोई सन्देह नहीं कि वे लोग सामान्य धनी थे– लेकिन तृष्णा ने उनका साथ न छोड़ा था। ऐसा स्वाभाविक है कि जिसके पास जितना अधिक हो लालची लोगों को उतना ही अधिक और पाने की लालसा रहती है।

कमला देवी ने एक क्विंटल चावल और पांच हज़ार अखरोटों के अतिरिक्त सात हज़ार नकद रुपये भी भेजे। जो शालू की सास शामरानी ने चुपचाप ले लिये और बड़ा मीठा व्यवहार दिखाया बहु के लिए। शालू यह सब देखकर मन ही मन हैरान रह गई, अपनी सास की अभिनय कला देखकर।

शामरानी शालू के भाई से, जो यह सभी चीज़ें लाया था, बोली "बेटा मेरी तो जान ही बहु में बसती है, मन तो नहीं करता पर इधर कुछ दिनों से बीमार सी रहने लगी है, थोड़ा मन बहल जायेगा– दो चार दिन के लिए इसे अपने साथ ले चलो, फिर विनय अपने साथ वापिस ले आयेगा।"

शालू का भाई प्रसन्नता से बोला, "आंटी कहना तो मैं भी यही चाहता था। पर सोचता था कि कहीं आपने ना कर दी तो मैं क्या करूंगा"।

"ना किस बात की बेटे। सब कुछ इसी का है। पर सेहत का अच्छा

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रहना पहले आता है। है ना! और यहां यह आराम कर ही नहीं सकती। मुझे काम करते देखती है तो मना करने पर भी मदद के लिए उठ ही जाती है। ससुराल जो ठहरी। और फिर यहां आराम से हाथ पांव पसार कर लेट भी तो नहीं सकती है। इसीलिए कहा, नहीं तो इसे अपने से दूर करने में मुझे जितनी तकलीफ होती है, तुम इसका अन्दाज़ा नहीं लगा सकते।"

शालू यद्यपि अपनी सास की रग–रग से वाकिफ थी पर उसका भाई उसकी इस तरह की बातों से बड़ा प्रभावित हुआ, बोला, "तो आंटी क्या दीदी को तैयार होने के लिए कहूं!"

"नहीं रे! आज महूरत नहीं है, कल शाम को आना ले जाने के लिए।"।

"क्यों क्या रहने जा रही है अपनी बहुरानी जो महूरत का विघ्न डाल रही हो। दो–चार दिन जायेगी मां–बाप से मिल आयेगी। ले जा बेटा, हमें कोई हर्ज नहीं।" शालू के ससुर श्यामलाल ने बीच में आकर अपनी पत्नी का सारा खेल ही बिगाड़ दिया। बेचारी मन मसोस कर रह गई। शालू ने जल्दी से बैग में दो–चार कपड़े डाल दिये और चल दी भाई के साथ।

शालू के जाने के बाद – श्याम लाल पत्नी से बोले "यह तुम्हें क्या हो जाता है कभी–कभी? जो उसे भेज ही रही थी तो मुहूरत का चक्कर क्यों चलाया था? क्या करना था उस रोगिनी को लेकर यहाँ। कोई काम–काज करने लायक तो थी नहीं। तो उसकी सेवा करने का इरादा था क्या ?"

"तुम नहीं समझोगे! मुझे उसे यहां रखने का कोई शौक नहीं था, बस यह जताना था कि वह अपनी मर्ज़ी से जा रही है।"

"और अपनी इस बुद्धि को तुमने यह समझने क्यों नहीं दिया कि विनय इसको जाने न देता।"

"क्यों।"

"क्या तुम यह नहीं जानती कि वह इसकी इतनी देखभाल करता है जैसे शालू नहीं खुद वही बीमार है। तो ऐसे में वह उसको जाने देता क्या?"

"हां! यह बात ठीक है। तो क्या इसके पीछे वह अपनी जवानी खराब कर देगा? उसे भी सिखाना होगा कि ऐसी कई लड़कियां उस पर कुर्बान हो सकती हैं। शालू क्या चीज़ है।"

"अच्छा! यह बताओ। शिवरात्री का नेग क्या भेजा है उन कमीनों ने।"

"मैं न कहती थी कि इस पर दबाव डालने से वे ज़रूर रास्ते पर आयेंगे।"

"तो क्या...?"

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"हां पहले से अच्छा ही भेजा है, पर अभी पूरी तरह से काबू में नहीं आये हैं। नहीं तो एक ही लड़की और भेजा क्या है सात हज़ार नकद और पांच हज़ार अखरोट और यह चावल। चलो नहीं होने से कुछ तो बेहतर है। आजकल इतना तो आम गरीब लोग भी भेजते हैं, उन्होंने ही कोई कमाल नहीं कर दिखाया।"

वे लोग चाय की चुस्कियों के साथ अपने वार्तालाप में ही मस्त थे कि विनय दफ्तर से आया। उसे भी चाय के लिए बिठाया। इधर–उधर की बातों के बाद शामरानी बोली, "विनय आज शालू का भाई आया था। शिवरात्री का नेग लेकर। आज उन लोगों को थोड़ी अक्ल आई है, थोड़ा–बहुत कहने लायक भेजा है।"

"तुम खुश हो ना मां? चलो ठीक है।"

"भाई को देखकर शालू ने मायके जाने की ज़िद की। मैंने सोचा बीमार है इसलिए इजाज़त दे दी।"

'अच्छा तो वह मायके गई है।"

"बेटे। तुम्हारी बीवी रही। मैंने तो कहा था कल जायेगी, इसी बहाने पति से भी पूछेगी। पर वह न मानी। तब इन्होंने कहा जाने दो। जी बहल जायेगा इसका। फिर मैं चुप रही।"

"उसको तो पता था कि आज कोई न कोई वहां से आयेगा। यदि उसे जाना ही था मुझसे सुबह कह नहीं सकती थी?"

"यह तुम्हारे बीच की बात रही। इसमें मेरा कोई दखल नहीं। हां तुम्हारा कहना सही है कि वह सुबह ही तुमसे पूछ सकती थी, जो उसने नहीं किया। अगर मेरा मानोगे तो उसको बुलाओ ही नहीं। जैसे गई है वैसे ही आयेगी भी। पर मैं जानती हूं कि तुम ऐसा नहीं करोगे। उसने तुझे वश में कर लिया है। अब जैसा चाहेगी तुम्हें नाच नचायेगी।"

शामरानी और भी कुछ कहती पर विनय गुस्से में फुफकारता हुआ अपने कमरे में चला गया।

श्याम लाल बीवी से बोले, "लगता है तीर निशाने पर बैठा है।"

यह सुनकर शामरानी मुस्करा दी और बोली, "अब रानी जी सम्भाले अपनी सेहत। तब तक नहीं बुलाउंगी जब तक वह तन्दुरुस्त नहीं हो जाती। नहीं तो यहां कौन बैठा है उसको पालने के लिए। वहां इलाज करेगी तभी तो मैं बचूंगी रोज़ाना दस–बीस रुपये की दवाई और दूध–दही के झंझटों से।"

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

छः

शालू को मायके आये आज लगभग तीन हफ्ते हुए थे। पर न कभी किसी ने कोई खबर ली और न ही कभी कोई आया। मन ही मन वह आशंकित थी कि न जाने वहां क्या हो रहा होगा। नहीं तो किसी को न सही उसके पति को तो मालूम था कि वह बहुत बीमार है– वह भी नहीं आये। ज़रूर कुछ गड़बड़ है। पर कहे तो किससे। बड़ी देर तक सोचने के बाद वह इस निष्कर्ष पर पहुंची कि अब नवरेह (पहला नवरात्र) पर जाना ही है, जाकर ही पता लगायेगी।

उसने न जाने कितनी कितनी शिकायतें पाल रखीं थीं पति को बताने के लिए। यह करूंगी– वह करूंगी। पर जब वह कपड़े, दही, रोटी, पैसे इत्यादि लेकर गई तो वहां का माहौल दूसरा ही दिखा। सास को नमस्ते की, उसने जवाब नहीं दिया। ससुर के पांव छुए तो उसने भी मुंह फेर लिया। ननद से बात की तो वह भी उखड़ी–उखड़ी लगी। पति तो घर थे ही नहीं। आखिर कोई एक घण्टे के बाद निधि (ननद) ने उसे कहा," मां तो तुम्हें यहां से निकालने के मूड में है।"

"ऐसा क्यों?"

"मुझे मालूम नहीं। पर हां भैय्या भी अब तुमसे प्यार नहीं करेंगे।'

"क्यों?"

"मां कहती थी नई भाभी आयेगी जिसे भैय्या प्यार करेंगे।"

"तुम्हें कैसे पता?"

"मुझे क्यों नहीं पता होगा। मां तो यही कहती थी भैय्या से।"

"क्या कहती थी?"

"यही कि शालू अब बीमार रहने लगी है और बहुत जल्दी मर जायेगी, फिर भैय्या की दूसरी शादी करा देंगे।'

सुनकर जैसे उस पर पहाड़ टूट पड़ा। बड़े प्रयत्नों के बाद भी वह अपने को सम्भाल न सकी। उसकी रूलाई फूट पड़ी। थोड़ी देर खूब रोकर

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उसने अपने को सम्भाला और आने वाली मुसीबत का इन्तजार करने लगी। काम–काज भी कोई विशेष था नहीं क्योंकि उसके जाते ही एक पहाड़ी नौकर रख लिया गया था।

अन्धेरा पड़ने तक वह अपने कमरे में पड़ी–पड़ी अपने दुर्भाग्य पर आंसू बहाती रही। तब संध्या का दिया जलाने के लिए ठाकुरद्वारे में गई। दिया जलाया। वापिस अपने कमरे में आ रही थी कि सास–ससुर की बातों का कुछ अंश कानों में पड़ा। उत्सुकतावश दीवार के साथ लगकर सुनने का प्रयत्न किया।

श्याम लाल कह रहे थे, "अब तो मुश्किल है, विनय को काबू में रखना"।

''क्यों?''

''क्योंकि वह इसके मायके जाने की असलियत जान जायेगा और फिर हमसे पूछेगा।''

''नहीं ऐसा नहीं होगा। उसको मैंने पक्की तरह यकीन दिलाया है कि यह खुद ही चली गई और उसे भी इससे गिन–गिन कर बदले लेने चाहिए।''

''उससे क्या होगा?''

''उससे दोनों में नफरत बढ़ेगी और जल्दी ही इससे पिंड छूटेगा। तभी ताराचन्द को हां कही जायेगी।

''ताराचन्द क्या अभी भी तैयार होगा? और क्या वह अब उतनी रकम देगा?"

''देगा– ज़रूर देगा। पर अब एक अड़चन आ पड़ी है।''

''सो क्या?''

''वह यह कि बहू फिर से तन्दुरुस्त हो गई है और आसानी से मरने वाली नहीं।''

''तब क्या किया जाये?''

''वह भी सोचती हूं।''

''क्या इसे विष दोगी?''

''नहीं। अपने को फंसाना है क्या? और जो बदनामी होगी सो अलग।''

''तब?''

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"अब तो विष धीरे–धीरे खाने में मिलाकर या दूध इत्यादि में मिलाकर देते रहेंगे ताकि सांप भी मरे और लाठी भी न टूटे।"

"समझे ना ?"

"बड़ी पोलिटिकल हो।"

"अभी तुम्हें पता ही क्या लगा?"

शालू और न सुन सकी, भागती हुई अपने कमरे में आई और चुपचाप आंसू बहाती रही जब तक विनय न आया।

विनय ने आते ही कमरे में बिजली जलाई और तपाक से पूछा, "अब कैसी हो शालू?"

शालू ने क्षीण सा उत्तर दिया– "बस ठीक हूं।" और कोई शिकायत नहीं। कोई ताना–उलाहना कुछ भी नहीं। जो उसने सोच के रखे थे उलाहने–सब यहां आकर न जाने कहां जाकर लोप हो गये। केवल बेबस नज़रों से पति को भरपूर निहारती रही। उसके इस रवैये से उसके पति को भी बड़ी हैरानी हुई। उसने पूछा– "क्या हुआ तुझे? क्या देख रही है?" पर वह कुछ भी समझ न सकी– कुछ भी न सुन सकी। तब विनय ने उसे झकझोर दिया जिससे उसकी तन्द्रा टूट गई और वह फूट–फूट कर रोने लगी।

उसको इस तरह रोते देखकर विनय को बड़ी दया आई उस पर। उसने शालू को बाहों में भर कर कुर्सी पर बिठा दिया और सामने बैठ कर अपने ससुराल तक न पहुंचने की सफाई दी– "मुझे माफ करना कि मैं तुम्हारी खबर लेने वहां न आ सका। पर तुम आ गई हो, अब ऐसा न होगा। वैसे मुझसे पूछकर जाना तुम्हारा फर्ज़ नहीं था, क्या मैं तुम्हें जाने न देता?"

वह क्या उत्तर देती उसे तो अब तक सब कुछ मालूम हो चुका था। इसलिए चुपचाप छोटे बच्चे की तरह सुबकती रही।

उस दिन सारी रात वह असहाय और निरीह पक्षी की भांति अदृश्य डर से डरती रही और उसका पति अपने विश्वास का सारा पैमाना उस पर उंड़ेलता रहा। इस तरह रात के किस पहर में उसे नींद आई उसे मालूम नहीं। पर सुबह जब उसकी आंख खुली तो पता चला कि विनय दफ्तर जा चुका है। उठकर सास के पास जाने की हिम्मत न हुई इसलिए बुखार का बहाना करके अपने ही कमरे में पड़ी रही।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सात

आज विनय को दफ्तर में आते ही अपनी टेबुल पर रखा एक मैसेज मिला जिसमें उसके बॉस ने उसे फौरन अपने कमरे में बुलाया था। वह पर्चा देखते ही सोचने लगा कि न जाने उसके अफसर ने उसे क्यों बुलाया है? कुछ–कुछ उसे डर भी लगने लगा क्योंकि उसने सुना था कि वह बड़े दबंग स्वभाव का है। अपने मुलाज़िमों से बड़ी सख्ती से काम लेना जानता है। जो उसके हुक्म को न माने उसके साथ बड़ी बेदर्दी से पेश आता है। दफ्तर के सभी लोग उसके साथ किसी तरह की भी बदतमीज़ी की हिम्मत नहीं कर सकते। सबकी गिघ्घी बंध जाती है।

अपनी ओर से विनय ने कभी नाराज़ होने का अवसर ही नहीं दिया था परन्तु आज यह "पर्चा"। उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था। उसके दिमाग में तरह–तरह के विचार आये। कभी सोचता कि उसके किसी कोलीग ने अफसर के कान भरे हैं और कभी विचार आता कि कल शालू की खराब तबीयत के पीछे थोड़ा लेट हुआ था—शायद उसी की ऐक्सप्लीनेशन होगी। अभी वह सोच ही रहा था कि उसके पास चपरासी एक और पर्चा लेकर आया। लिखा था– अभी मेरे कमरे में हाज़िर हो जाओ, फौरन।

अब तो उसके मन का डर और भी पक्का हो गया। टांगों में थरथराहट आ गई और अच्छी भली आवाज़ में कम्पन। खैर! मरता क्या न करता, बेचारा चल दिया।

कमरे में पहुंचते ही उसके बॉस ने कहा– "मि. विनय क्या आपको वक्त का कोई एहसास नहीं। अगर इसी तरह डगमगाते हुए ड्यूटी निभाई तो अन्जाम जानते हैं क्या होगा?"

विनय बौखला सा गया। उसने दोनों हाथ जोड़कर घिघियाते हुए कहा– "सॉरी सर। आगे कभी न होगा।"

"आगे जब आप यहां रहोगे तब ना।" सुनकर विनय का चेहरा फक पड़

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गया और बड़ी मुश्किल से उसके मुंह से हकलाते हुए निकला– ''इतने छोटे से कसूर के लिए इतनी बड़ी सज़ा। सर यह तो बेइन्साफी हुई। सर ...''

"क्या ठीक हुआ क्या गलत मैं यह सब नहीं सोचता। सुना आप ने। जाइए अपना चार्ज मिस दलाल को दीजिए, जाइए।"

पर विनय न जाने क्यों बुत बन गया था। उसने कुछ भी नहीं सुना था शायद। इसीलिए वह मूर्खों की तरह हताश नज़रों से अफसर को ताके जा रहा था।

कुछ देर के इन्तज़ार के बाद उसका अफसर फिर बोला, ''सुना नहीं आप ने? जा करके अपना चार्ज मिस दलाल को दीजिए प्लीज़।" और वह उठा यह सोचते हुए कि अब इस आदमी पर किसी भी दलील का असर नहीं होगा। मैं ही बदनसीब हूं। मुझे मालूम था कि यह आदमी बड़ा टफ है तो मैंने इसका खास खयाल क्यों नहीं रखा। मां कहती है कि शालू के घर में आते ही घर के ग्रह उल्ट गये और मैं कहता हूं कि यह उसका वहम है। पर आज जब मैं घर जाऊंगा अपनी बरबादी की खबर लेकर तो घर में कुहराम मच जायेगा। शायद मां ठीक ही कह रही है। अभी तक ठीक–ठाक चल रहा था सब कुछ तो आज ही क्या हो गया। क्या शालू मेरे लिए शुभ नहीं? मुझे किसी ज्योतिषी के पास जाकर पता लगाना चाहिए। अगर ऐसी न हुई तो मुझे कितना शर्मिंदा होना पड़ेगा। और अगर सच में ही मेरे लिए अशुभ निकली– तब? बाप रे! मुझे उससे दूर ही रहना चाहिए। जैसे मां कहती है। वैसे शालू कितनी मासूम लगती है डरी–डरी सी। सहमी–सहमी सी। मुझे तो उस पर दया आती है। कैसे छोड़ सकता हूं उसे। लेकिन यदि मेरी ही ज़िन्दगी ठीक न रही तो मुझे उसकी मासूमियत पर कोई रहम या दया करने का अधिकार नहीं। ठीक भी तो नहीं रहती। अब कल ही उसकी कातर आंखों में न देखता तो शायद आज लेट न हो जाता। और अब यह मुसीबत। अगर नौकरी गई तो मेरा क्या होगा? कहां मिलेगी मुझे इतनी अच्छी नौकरी? न जाने कमबख्त ने क्या–क्या चार्ज लगाया होगा। मुझे एक बार फिर जाकर माफी मांग लेनी चाहिए। शायद इस भलेमानस का दिल पसीज जाये। वह वापिस कैबिन में जाने को मुड़ा ही था कि सामने अपने अफसर को देखकर सकपका सा गया। उसकी यह हालत देखकर उसके अफसर ने उससे पूछा, "क्या बात है मि॰ विनय। आज आप

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

काम क्यों नहीं करते ? जो आपसे करने को कहा जाता है उसमें इतनी हील हुज्जत क्यों? आप ठीक हैं ना?" विनय की जुबान पर जैसे ताले लगे हुए थे। वह कुछ न बोल कर थोड़ा मूर्खों की तरह दांत दिखाता हुआ, तेज़ी से आगे निकल गया।

मरता क्या न करता उसने अपने पास रखी सभी फाइलें इत्यादि निकाल कर उनकी सूची बनाई और मशीनी ढगं से जाकर मिस दलाल के पास पहुँच गया। अपने आपसे निरन्तर लड़ने के कारण उसका चेहरा बेहद मायूस दिखाई देता था। मिस दलाल ने खड़े होकर उसे चियर दी, और वह बैठ गया और बैठते ही उसने यन्त्रवत् अपनी फाइलें सामने कर दीं और कहने लगा, "मिस दलाल मुझे आर्डर हुआ है कि मैं अपना चार्ज आपको दूँ। सो आइये और लीजिए।"

मिस दलाल ने पूछा –– "लेकिन आप इतने अपसैट क्यों हैं, क्या आपको अच्छा नहीं लगा?" इसका उत्तर वह चाहता तो न जाने क्या देता पर उसने उसकी ज़रूरत नहीं समझी। मौन साधे वह अपने काम में ही लगा रहा। मिस दलाल ने हैरान होकर कहा–– "रियली इट इज़ ए सरप्राइज़ कि आप प्रमोट हो रहे हैं और आपके चेहरे पर बारह बज गये हैं। मेरा केस ऐसा होता–मैं तो पूरा हफ्ता जश्न मनाती।" सुनकर विनय के हाथ रुक गये और उसने पूछा–क्या कहती हैं आप?

"क्या आपको मालूम नहीं कि आपको इसी बैंक की ओर से किलम में ब्रांच मैनेजर की हैसियत से भेजा जा रहा है।" सुनकर वह उछल पड़ा और उसके चेहरे पर रौनक लौट गई।

मिस दलाल कह रही थी, "मि॰ विनय अब तो आप हमसे काफ़ी सीनीयर हो गये, पर हमें न भुलायें, यू आर वेरी लक्की सर। आई मस्ट से दैट यूवर वाईफ इज़ वेरी लक़ी।" सुनते ही वह न ज़ाने किस स्वप्न लोक में पहुंच गया। उसने एकदम हवाई किले बनाना शुरु कर दिये–– कैसे शालू को साथ ले जाऊँगा। वहां उसका इलाज करवाऊँगा। माँ गलत कहती है कि वह मेरे लिए शुभ नहीं। यदि ऐसा होता तो यह तरक्की मुझे न मिलती। और भी न जाने क्या–क्या सोचता लेकिन स्टाफ़ वालों ने दावत मांगी जो उसने सहर्ष स्वीकार की और इसी तरह विनय का सारा दिन हंसी खुशी में बीत गया। शाम को मिठाई का एक डिब्बा लेकर घर पहुंचा।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

घर पहुंचते ही मां को रसोईघर में काम करते पाया। मन किया कि पूछे शालू कहां है—पर हिम्मत न हुई। केवल मां को मुबारकबाद दी। जिसका मां ने बिना सोचे समझे इस तरह जबाव दिया, "ठीक है मुन्ना, मुझे इस तरह काम करते तो तुम्हें मुबारक ही देनी होगी क्यों? पर यह नहीं पूछेगा कि तेरी महारानी कहां है। मगर तू क्यों पूछने लगा, मैं ही बता देती हूं। सुबह से अब तक तेरी महारानी अपने कमरे से बाहर तक नहीं निकली। बस निधि ही बार—बार उसकी फरमाइशें पूरी करती रही। क्यों है न मुबारक वाली बात।" सुनते ही दिन भर की सारी खुशी एकदम न जाने कहां काफूर हो गई। कुछ तो उसे बीवी पर गुस्सा आया और कुछ मां की अभिनय कला पर। कुछ देर सोचने के बाद उसके दिमाग में एक ही बात आई कि ज़रुर दाल में कुछ काला है। नहीं तो कल रात की शालू और आज का यह बर्ताव कुछ मेल खाता नज़र नहीं आता। मां को बतियाते वहीं छोड़ वह एकदम अपने कमरे में गया जहां शालू अन्धेरे में डरी—सहमी एक कोने में लगभग बेहोश पड़ी थी।

जब उसने यह दृश्य देखा तो वह लपक कर शालू को छू कर देखने लगा। शालू को स्पर्श का अनुभव हुआ और ज़िबह होते बकरे की तरह लाचार आंखों से पति को देखने लगी। निराश और बेसहारा सी। उसके पति ने प्यार से उसे सहलाया और वह रोक न सकी फूट—फूट कर रोने लगी। बड़ी देर तक रोते रहने के बाद वह चुप हो गई, तब उसके पति ने उसे पूछा—"आज क्या हुआ, बोलो ?"

"कुछ नहीं"

"तो फिर यह रोना—धोना क्यों?

इस प्रश्न पर शालू ने उल्टा प्रश्न किया—"जब आप जागे थे सुबह मुझे क्यों नहीं जगाया?"

"मैंने सोचा बड़ी देर के बाद आंख लगी है इसलिए सोने दूँ। पर यह तो मेरे सवाल का जवाब नहीं"।

"जवाब है क्यों नहीं। आप के दफ्तर जाने के बाद मेरी आंख खुली और नीचे मम्मी का शोर और गुस्सा चल रहा था, तो मैं किस हिम्मत से नीचे जाती।"

"तो क्या तुम सुबह से यहीं हो?"

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

''हां''

''क्या किसी ने आकर तुम से पूछा भी नहीं?''

''निधि आई थी। मैंने झूठ कहा उसे कि मेरी तबीयत ठीक नहीं।''

''अच्छा खाना–वाना यहीं निधि लाई होगी।'' इसका शालू ने कोई उत्तर नहीं दिया। विनय ने मिठाई का डिब्बा खोला और शालू को ब्रर्फी देते हुए कहा, लो खाओ। शालू ने डरते–डरते बर्फी ली और खाने लगी उसकी आंखों में जैसे रोशनी आ गई। तब दूसरा टुकड़ा उसने अपनी भूख के कारण उठाया ही था कि सास की आवाज़ सुनी– "वाह क्या ज़माना आया है मां–बाप दुश्मन हो गये और बीवी खुदा बन गई। खिलाओं बर्फी खिलाओ, लड्डू खिलाओ यहां इसे भूखों जो मारते हैं। कंगलों की लाडली ने जो बर्फी देखी है, तभी तो दो–दो हाथ करके खा रही है। मैं भी कहूं इसे यहां की रुखी सूखी क्यों नहीं पचती। अब जो इसकी खातिर अलग से हो रही है। क्यों मुन्ना तुमने अपने मां–बाप या बहन के लिए कभी मिठाई लाई है क्या? हां। तब क्यों लाने लगे, अब तो ज़रुरी है बीवी का मिज़ाज जो ठहरा।" विनय जवाब में कुछ कह देता कि शालू ने अपना हाथ खींच लिया और बेबस होकर निरीह दृष्टि से धरती निहारने लगी। इतने में सास तेज़–तेज़ कदमों से आई और मिठाई का डिब्बा उठाकर चली गई। उसके जाते ही विनय भी उसके पीछे–पीछे चला गया। बड़ी देर तक दोनों मां–बेटे में बातें–बहस इत्यादि हो रहा था। शाम को विनय के पिता मन्दिर से आये तो उनकी पत्नी ने उन्हें डिब्बा दिखाते हुए कहा– "देखो तुमने कभी मेरे लिए मिठाई लाई है क्या?

''क्या बकवास करती हो?''

''बकवास नहीं सच कह रही हूं। आज हमारा मुन्ना अपनी बीवी को कमरे में मिठाई खिला रहा था।''

''क्यों मुन्ना यह सच है ?''

विनय के मन में आया कि कह दे अगर खिला भी रहा था तो कौन सा जुर्म कर रहा था, लेकिन उसने ऐसा न कहकर पिता को सही कारण बताया, ''पिता जी। आज मेरी प्रमोशन हुई है और उसी खुशी में मिठाई लाया था। आते ही मम्मी को मुबारक कहते हुए मिठाई पकड़ाने आया था कि मम्मी ने अपने गुस्से का राग अलापना शुरु कर दिया। मैं तंग आकर

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अपने कमरे में गया। वहां शालू को बेहोश देखा। फिर उसे होश में लाया तो तरक्की की बात कह दी और एक टुकड़ी बर्फी हाथ में दी कि मम्मी ने न जाने क्यों बात का बतंगड़ बना दिया"। तरक्की की बात सुनते ही उसके पिता ने पूछा–''अब सारी बात बताओ क्या हुआ?''

"हुआ यह कि मेरे अफसर ने मेरी सी॰ आर॰ ऐसी लिखी थी कि हैड आफ़िस से मेरे ट्रांसफर टु किलम इश्यू हुए। यह ट्रांसफर ही नहीं बल्कि मुझे एक ब्रांच मैनेजर बनाकर भेजा गया है। इसलिए दफ्तर में सब ने मिठाई मांगी उनको भी खिलाई और घर भी लाया"।

''कितनी देर में जॉयन करना होगा?''

''यही कोई एक हफ्ते का समय दिया गया है।

''अब क्या करोगे?''

''मेरे विचार से वहां एक किराये का कमरा लूंगा और वहां रहूंगा, नहीं तो आने जाने में बड़ा पैसा खर्च होगा।''

''हां, यह ठीक है। लाना ज़रा मुझे भी दे मुंह मीठा तो कर लूं।'' और इस तरह घर का माहौल बदल गया। सभी खाने–पीने लगे पर शालू की किसी को चिन्ता न हुई, बगैर उसके पति के। शाम के खाने पर विनय ने बहन को भेज कर शालू को नीचे बुलाया और अपने सामने खाना खिलाया। भूखी तो थी वह इसलिए खाती रही परन्तु खाते–खाते उसके मन में कई बार यह विचार आया कि कहीं उसकी सास ने उसके खाने में विष न मिलाया हो, जैसे उसने सुना था।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आठ

आज मेघा की शादी का मुहूर्त है। सभी लोगों के न्योता गया है, परन्तु बुआ ने साफ़–साफ़ कहा है कि शालू की ससुराल जाकर उसके सास–ससुर तथा उसे स्वंय ही कार्ड देकर न्यौता देना होगा। अब सोच यह लगी है कि पहली दफा़ उसकी ससुराल जाना है तो साथ क्या ले जाना होगा। बहुत बहस के बाद आखिर तय यह हुआ कि भाई साहब और रुपा दोनों जायेंगे, साथ मिठाई के दो डिब्बे और एक टोकरा फ्रूट जायेगा। वहां अगर चाय पीनी पड़ी तो 500 रुपये भी देने होंगे। ऐसा सोच कर शालू की मम्मी को संदेशा गया कि वे खुद ही शालू की ससुराल में न्यौता देने जायेंगे। सुनकर उसकी खुशी का ठिकाना नही रहा कि आखिर शालू के नानके हैं, उन्हें तो इसी तरह जाना चाहिए। शायद उसकी ससुराल वाले खुश हों।

इधर उड़ती–उड़ती खबर शालू की सास को भी पहुंची थी और वह बहु को उठते–बैठते सुना भी रही थी कि तेरे नानके में तेरी ममेरी बहन की शादी है, सुना है खूब दहेज देंगे क्योंकि उन्होंने ठाके की रस्म पर ही हज़ारों भेजे हैं और शगुन व कपड़ा आदि अलग से। वे लोग सच में ही दुनिया देखे हुए लोग हैं। तुम्हारे मां–बाप की तरह कंगले नहीं। देखें तुम्हें बुलाते भी हैं या नहीं। इधर तो जैसा मुंह वैसी चपेड़ वाली बात है। अब दिन ही कितने रहे, पर तुम्हारे पास कोई नहीं आया। क्यों वे लोग तेरे मां–बाप को पूछते भी हैं या नहीं। पर शालू सास की हर बात का एक चुप्प के अलावा और कोई जवाब न देती। उसकी एक–एक बात से मन छलनी हो जाता पर करती क्या?

आखिर एक दिन मामा–मामी और उनके साथ यह सारा सामान देखकर शालू खुशी से फूली न समाई। उसे इतनी प्रसन्नता मेघा की शादी की बात सुनकर न हुई जितनी यह सोच कर कि चलो इसी बहाने इस नर्क

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

से तो दूर रहेगी कुछ दिन।

साथ सामान देखकर शालू की सास के मुंह में लार टपकती अनुभव हुई। उसने बड़ा ज़ोर देकर चाय पीने के लिए राज़ी कर लिया। आज अचम्भा यह है कि आज निधि को चाय बनाने का हुक्म हुआ और शालू हैरान परेशान सी हालात को समझने की कोशिश करती रही। थोड़ा मामा–मामी के साथ बात करने के बाद उसकी सास ने बड़े प्यार के साथ उसे उन्हीं लोगों के साथ जाने के लिए तैयार होने को कहा। वह बहुत खुश हुई मानो उसके पंख लग गये हों। जल्दी–जल्दी शालू ने दो तीन साड़ियों के सैट साथ लिये, थोड़ा सा सिंगार किया और चल दी। उसके मन में बड़ी खुशी हो रही थी इस बात की कि चलो दो तीन दिन आराम से तो गुज़रेंगे। उसने जाते वक्त अपने कमरे में पति के लिए सन्देश लिखकर रख दिया कि सासू मां मुझे इन्हीं के साथ भेज रही है इसलिए आप से इजाज़त न ले सकूंगी। वैसे परसों 12 तारीख की शादी है आप अवश्य ही ब्राउन वाला सूट पहन कर आना। सूट अलमारी में हैंगर पर लगा है। आप से पहले जाने के लिए क्षमा।

इधर उसके जाने के बाद उसकी सास उसके मामा–मामी के लाये सामान की पड़ताल करने लगी। दो बड़े डिब्बे मिठाई के, एक टोकरे में आम, लीची व तरबूज़ और पांच सौ नकद। थोड़ा खुश भी हुई थोड़ा सोच में भी पड़ गई–यदि बहू की लगाम इसी तरह कसी रहेगी तो कुछ न कुछ ज़रुर हासिल होगा। अभी शादी के बाद भी तो देना है। मैं भी जाऊँगी और यह भी जायेंगे। वहाँ शगुन भी तो होगा। चलो कसके ही सही अपने बाप का क्या जाता है। थोड़ी देर में श्याम लाल के आने पर फिर बहस हुई और दोनों मियां बीवी में फैसला यह हुआ कि शालू पर कभी रियायत न बर्ती जाये केवल तभी उसके मायके वालों को निचोड़ा जा सकता है।

निधि उनकी बातचीत सुन रही थी और मन ही मन सोच रही थी कि यह तो शालू बेचारी सीधी और शरीफ़ है, यदि मेरे साथ ऐसा बर्ताव हुआ तो क्या होगा मेरा? मैं तो सब छोड़–छाड़ के भाग जाऊँगी।

बड़ी देर तक निधि सोचती रही अपनी लालची मां के विषय में। सोचती इतना सारा यह क्या करेगी? इसने कभी यह नहीं सोचा कि इसकी भी तो लड़की है जिसकी कुछ एक सालों में शादी हो जायेगी। क्या मेरी

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मां यह सब कुछ दे पायेगी अपनी लड़की को। फिर किस हिम्मत से मेरी मां मांग रही है। पर तभी उसे विचार आया अपनी बड़ी बहन का जिसकी शादी में बरात को सही ढंग से खाना भी नहीं खिलाया गया था। एक चीज़ अगर पूरी हुई तो दूसरी कम पड़ी थी। कुछ लोग तो भूखे ही अपने घरों को वापिस गये थे। यदि उसके साथ भी ऐसा ही हुआ तो वह क्या करेगी। निधि के सारे शरीर में सिहरन सी दौड़ पड़ी और बेसाख्ता उसके मुंह से निकला– छिः स्वार्थी लालची और क्रूर है मेरी मां। मुझे उसे समझाना चाहिए। और वह एकदम अपने मां–बाप के सामने प्रकट सी हुई। वे दोनों अपने हवाई किले बनाने में इतने मस्त थे कि उन्हें पता भी न चला कि उनकी लड़की कब आई या क्यों आई?

उसकी मां कह रही थी– "देखो जी अगर बच्चा रोये नहीं तो मां भी उसे दूध नहीं पिलाती। अगर इसकी रास कसी न रखी होती तो उसके मामा–मामी इतना कुछ न दे जाते। मिठाई भी आई है, फ्रूट भी और यह पैसे भी। समझे तुम"।

''बिल्कुल अच्छी तरह से। तो आगे का क्या प्रोग्राम है।''

''आगे। बस यही कि उसके साथ कभी सीधे मुंह बात नहीं करनी और काम गधों की तरह लेना।''

''कब तक''?

''जब तक खेल खत्म न हो जाये।

''यानी?''

''जब तक मर न जाये और क्या? कहीं इसके बच्चा ठहरा तो काम ज़रा मुश्किल हो जायेगा।''

''सो कैसे?''

"तब तो डा. के कहे मुताबिक चलना होगा। दवाई वगैरा भी अलग से होगी। तो इस पर अपनी 'दवाई' मुश्किल से ही आज़माई जायेगी"।

''यह अपनी दवाई– क्या मतलब?''

''रहे ना बुद्धू के बुद्धू। मैंने कहा है ना कि धीरे–धीरे विष आज़माऊंगी इस पर, जिससे दो तीन महीने तक इसकी मौत हो जायेगी और किसी को शक भी न होगा और–"

"बस करो मां। कितनी नीच हो तुम। उस गरीब ने कभी तुमसे ऊंची

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आवाज़ में बात तक नहीं की और तुम हो कि, छिः"

तू.....तू......तू......तुम कब आई? अपने मां–बाप के इस प्रश्न का उत्तर उसने इस तरह दिया– "लालच की आंख अन्धी होती है मां। तभी आप लोगों को मैं दिखाई न दी। मैं गई कहां थी। इधर ही आपकी योजना सुन रही थी। धिक्कार है ऐसी बुद्धि को। मैं पूछती हूं जब मेरी बारी आयेगी और मेरे सास–ससुर तुम्हारे जैसे ही होंगे तो तुम क्या करोगी? पहले मेरा यह कहना भी गलत है क्योंकि मंगते कभी उदार नहीं होते। जानती हूं जो कुछ आपने मेरी दीदी को दिया है?

निधि की बात सुनकर दोनों मियां–बीवी सकते में आ गये। फिर लगे बेटी को फुसलाने– "ऐसी बात नहीं है जो तुम समझ रही हो। हम तो किसी और की बात कर रहे थे। तुम खामख्वाह गलत समझ बैठी"। "रहने दीजिए" "तुम्हारी कसम बात कोई और चल रही थी। हम अपनी इकलौती बहू के लिए ऐसा क्यों सोचने लगे।" मां–बाप ने इधर–उधर की बातें करके उसके मूड़ को ठीक कर दिया लेकिन कहीं कुछ ऐसा टूट चुका था जो उसके मन को फिर से जोड़ न सका। निधि अशान्त सी रहने लगी। कभी सोचती कि उसे सब कुछ जाकर अपने भाई से कह देना चाहिए। पर तभी अपने मां–बाप पर दया भी आती। कहीं उनकी बेइज़्ज़ती हुई तो क्या होगा? उसे कुछ न कुछ करना ही चाहिए। –ठीक है वह भाभी के खाने–पीने पर अवश्य नज़र रखेगी ताकि मां के मनसूबे कभी सफल ही न हो पायें। मां ऐसा क्यों करती है? तभी उसे याद आई एक दिन की बात जब कोई औरत उनके घर आई थी और उसके साथ उसकी मां ने इस तरह बात की थी– मेरा बेटा तो लाखों में एक है। बैंक में नौकरी करता है। उसकी किस्मत होगी जो ऐसा कमाऊ पति पायेगी। इस तरह के कमाऊ पति मुफ्त में नहीं मिलते, इन पर खर्च करना पड़ता है। समझी न आप? यदि रिश्ते की उम्मीद रखते हैं तो उन्हें कम से कम डेढ़ लाख देना होगा। तभी मैं हां कहूंगी। – उसने मां से सवाल किया था कि उसका एक ही भाई वह भी शादी–शुदा यह किसकी बात कर रही थी उसकी मां? मां ने जवाब दिया था– "किसी और का संदेश दे रही थी इसे" इस तरह बात आई–गई हो गई और आज– सचमुच उसे अपनी मां से बड़ा डर लगने लगा।

• • • • • • •

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शाम को जब विनय दफ्तर से घर आया तो माहौल कुछ बदला–बदला सा लगा। पूछताछ की तो पता चला कि शालू अपने मामा–मामी के साथ उससे बिना पूछे ही मायके चली गई है। उसने मां से पूछा– "मां क्या तुम उसे रोक नहीं सकती थीं?

"यह लो वह बच्चों की तरह ज़िद करने लगी और मैं उसके मामा–मामी के सामने मना कैसे कर सकती थी?"

खैर! जब वह अपने कमरे में गया तो टेबल पर बैग रखते ही शालू की चिट्ठी मिली और धीरे–धीरे असलियत सामने आई कि अब भी उसे ज़बरदस्ती भेजा गया है। उसे अपनी मां पर बड़ा गुस्सा आया पर कर क्या सकता था। चुप रहा। रात भर सोचता रहा– उसे अपनी बीवी को बचाना है। यहां उसकी कदर नहीं हो रही है वह दिनों–दिन कमज़ोर होती जाती है। अब तो उसे ट्रांसफर का आर्डर भी मिल चुका है। वह उसे मायके से ही "किलम" ले जायेगा। वहीं उसकी देखभाल करेगा। ऐसा सोच कर वह सो गया।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नौ

शालू के मायके में शादी हुई उसकी ममेरी बहन की। दावत में उसके सास–ससुर, ननद इत्यादि सभी आये थे। उनकी खास खातिर की गई, इस विचार से कि शालू की मां को उनके लालच का अच्छा अनुभव था।

शादी के बाद जो नेग (पैसे वगैरा) उन्होंने भेजा उसमें शालू की मां कमला ने और पैसे डाले किन्तु उन्हें वह बहुत कम लगा। उन्होंने मठ्ठियां, मिठाई इत्यादि रखकर पैसे वापिस भेजे यह कह कर कि उन्होंने उनकी कदर नहीं की। इतना तो आम जानकारी वाले को भेजी जाती हैं। इस तरह के रिश्ते में नहीं। पैसों का वापिस आना था कि शालू के साथ–साथ उसकी मां दोनों ही चिंतत रहने लगीं। बड़े दिनों तक कुछ भी निश्चय न हो सका आखिर एक दिन मामा के आने पर उन्हें भी पता चल ही गया। बड़ी देर तक सोच विचार चलता रहा। उसके बाद यह फैसला हुआ कि और पैसे डालकर क्षमा याचना के साथ भेजा जाये। दुबारा मामा ही स्वयं पैसे लेकर गया। शालू की सास ने बड़ी बेदिली से उसका स्वागत किया और पैसों के देते वक्त ही मामा ने उसकी चण्डी वाला रूप देख लिया। लड़की की जगह होने के कारण उसने अपने ऊपर काफी संयम रखा और कोई होता तो ज़रूर उसे सबक सिखाता पर यहां चुप रहकर मन ही मन आंसू पीने पड़े। तब शालू की सास ने पैसे गिने तथा अपने अण्टी में रखते हुए कहा– "भाई साहब। यह आप दुबारा खुद ले आये हैं तो रख रही हूं, नहीं तो मैंने मुंह पर मारे होते। क्या आप लोगों को रीति रिवाज भी सिखाना पड़ेगा? अरे इतने पैसे तो मुझे दूर–पार के रिश्ते में भी देते शर्म आयेगी। खैर! आपको बताने से क्या लाभ। लगता है आप को इन बातों का कोई इल्म नहीं"।

अन्दर ही अन्दर मामा गुस्से से जले जा रहे थे, पर उसकी इन बातों पर सिर झुकाये– केवल मुस्कराये बिना और कर भी क्या सकते थे? मामा कोई आधा घण्टा बैठे रहे, पर उस औरत ने पानी भी नहीं पूछा। आखिर

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

थोड़ी शान्ति होते ही मामा ने इजाज़त ली और चल दिये। इधर शालू की सास बड़ी खुश–सौ, सौ के कई नोट बार–बार गिने जा रही थी। तभी उसके पति आये– ''यह क्या कर रही हो?''

''देखो''

''हां देख लिया। पैसे गिन रही हो। कहां से आये?''

''बूझो''

''तुम्हीं बताओ ना''

''तो सुनो; मैंने कहा था ना कि सीधी उंगली से घी नहीं निकलता। सो देखो उस दिन वे छः सौ वापिस न भेजती तो आज यह 12 सौ न बनता।''

''क्या?''

''हां। बहू का मामा दे गया और काफी माफियां भी मांग रहा था।''

''तो तुमने क्या कहा?''

''मैंने और खरी–खोटी सुनाई।''

''अब भी?''

''और नहीं तो क्या?'' उसको थोड़े ही यह एहसास दिलाना था कि मुझे बड़ी खुशी हुई। और तो और मैंने उसे पानी तक नहीं पूछा।''

''यह तुमने अच्छा नहीं किया।''

''क्यों–क्यों?''

''इसलिए कि वह हमारे व्यवहार से पहले ही दुःखी था। अब जाकर बहन–बहनोई को भी न जाने क्या–क्या कहेगा?''

''नहीं ऐसा कुछ नहीं होगा? वह काफी शर्मिन्दा था। मैंने ज़रा और कस दिया ताकि आगे भी देता रहे''।

''अब क्या देगा?''

''अभी बड़े अवसर हैं उसके देने के। अभी तो एक ही लड़की ब्याही है। दो और हैं। समझे कि नहीं।''

''मान गये तुम्हारी चतुराई को।''

• • • • • • •

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शाम को विनय घर आया और मां–बाप से कहने लगा "मैं सोचता हूं कि मेरे आने–जाने में वक्त और पैसा दोनों बरबाद हो जायेंगे। इसलिए किलम में ही एक कमरा किराये पर लूंगा और वही रहूंगा कभी छुट्टी वाले दिन यहां आया करूंगा।" सुनकर उसके बाप ने कहा– "यह तुमने ठीक सोचा। अब किसी को लिखकर कमरे का इन्तज़ाम करवा लो।"

मां बोली– "ठीक है मैं साथ चलूंगी तुम्हारे खाने–पीने का भी तो देखना है।"

विनय का बाप बोला– "तुम इसके साथ जाओगी तो इधर घर का क्या इन्तज़ाम होगा?"

वह तपाक से बोली– "बहु है ना इधर और फिर निधि भी है। तुम्हें कोई कष्ट न होगा, समझे।"

"नहीं भाग्यवान। सवाल मेरे कष्ट का नहीं। कुछ और है।"

"और क्या है?"

"यही कि बहु अभी कमज़ोर व बीमार है उसे मायके वाले अभी थोड़े ही भेजेंगे। तुम इसके साथ गई तो क्या इस बुढ़ापे में चूल्हा भी जलाना होगा?"

"निधि है ना।"

"निधि को आता क्या है जो वह मेरी सेवा करेगी। और फिर उसके इम्तेहान सिर पर हैं वह थोड़े ही मानेगी।"

इस बहस में विनय पड़ना नहीं चाहता था, पर इस वक्त मौका देखकर उसने कह ही दिया–

"आप सब को फिक्र करने की ज़रूरत नहीं। मैं शालू को ही अपने साथ ले जाऊंगा।"

"वह बीमार है, और एकदम अल्हड़। नई जगह क्या कुछ करेगी? क्या पता? मुझे तब भी तुम्हारे साथ जाना ही पड़ेगा ताकि तुम्हारी गृहस्थी जमा दूं, फिर चाहे शालू ही रहे मुझे कोई हर्ज नहीं।"

यह बात सब को ठीक लगी। मकान का इन्तज़ाम हो गया। शालू को मायके से बुलाया गया और एक दिन तीनों किलम रवाना हुए। वहां पर सास जितना ले सकती थी बहु से काम लेती रही और रोज़ ही शिकायत का बहाना ढूंढती रहती। जैसे–तैसे तीन महीने गुज़र गये। सासू जी वापिस

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जाने का नाम ही नहीं ले रही थीं। एक दिन शालू के सुसर का पत्र आया सास के नाम जिसमें उसे किसी विशेष कारण से जल्दी वापिस बुलाया था। इस तरह सास को बेदिली से ही सही पर वापिस जाना पड़ा।

सास के वापिस जाने के बाद से शालू की सेहत में सुधार आने लगा। वह खुश रहने लगी। दोनों मियां–बीवी एक दूसरे से प्रसन्न तथा सन्तुष्ट थे। शालू ने समझ लिया था कि गर्दिश के बादल हट गये और विनय भी प्रसन्न था, चलो अच्छा हुआ जो इधर ट्रांसफर हुआ। बाकी झिक–झिक से तो पिण्ड छूटा।

• • • • • • •

इधर श्रीनगर पहुंचते ही शाम रानी ने अपने पति से पूछा– "क्यों क्या आफत आई थी यहां जो तुमसे सम्भाली न गई।"

"आफत ही आई है। चलो घर चलो और खुद जाकर देख लो कि तुम्हारी लाडली ने क्या गुल खिलाये हैं?"

"क्या हुआ मेरी फूल जैसी बच्ची को?"

"मातम मत करो। यह वक्त दूसरों की बच्ची पर जुल्म करने का नहीं है। चुल्लू भर पानी में डूब मरो क्योंकि तुम्हारी अपनी लाडली ने तुम्हें किसी को मुंह दिखाने के काबिल नहीं रखा है।"

"आखिर क्या किया उस गरीब ने जो तुम उसके पीछे हाथ धो कर पड़े हो।"

"उसके पांव भारी हैं।"

"क्या कहा?– हे राम।" वह धम्म से ज़मीन पर बैठ गई। श्याम लाल ने पत्नी को पानी पिलाया और होश में आते ही तांगा किया और घर की ओर चल पड़ा।

घर पहुंचते ही एक और हंगामा पेश आया। दोनों मां–बाप निधि को ढूंढते रहे। पर निधि का कोई अता–पता न मिला। उसके कमरे में उसके बिस्तर पर उसकी लिखी चिट्ठी मिली। जिसमें लिखा था–

"तुम लोगों के लालच ने भाभी को बीमार कर दिया। स्वयं मेरी जीजी को क्या दिया था तुमने यह कभी सोचा ही नहीं। तुम्हारा लालच इतना गंदा

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

है कि तुम्हें दिखाई ही नहीं देता कि मैं भी जवान हुई हूं, मेरी भी शादी होनी चाहिए। भाभी का यह हाल देखकर मुझे लगता है कि मुझे खुद कुछ करना चाहिए नहीं तो जीजी की तरह मुझे भी न जाने किस बूढ़े के गले बांध दोगे। इसलिए मुझे ढूंढने की कोशिश न करना। मैंने अपनी पसंद से शादी कर ली है और बालिग होने के कारण मेरा यह अधिकार कोई छीन नहीं सकता। जो भी कोशिश करेगा उसको मुंह की खानी पड़ेगी। मैं जा रही हूं।"

चिट्ठी पढ़ने के बाद दोनों के ऊपर जैसे बिजली गिर पड़ी। हताश व निराश हो दोनों ही एक दूसरे का मुंह ताकते रहे।

• • • • • • •

एक हफ्ते के बाद विनय की चिट्ठी आई जिसमें हाल–चाल पूछने के बाद शालू समेत शहर आने की भी सूचना दी थी। अब इस पत्र से दोनों में बड़ी बैचेनी बढ़ी। शामरानी ने राय दी कि कहेंगे कि निधि बाहर पढ़ने गई है। श्यामलाल को यह राय पसन्द न आई। बड़ी देर तक बहस करने के बाद फैसला यह हुआ कि बहु को मायके भेज कर बेटे से सारी बात की जाये।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दस

निधि मन ही मन सोचे जा रही थी कि उसने घर छोड़कर एक तरह से ठीक ही किया क्योंकि उसके लालची मां–बाप शालू को तंग करके पैसे बटोरने में इस तरह मग्न थे कि उन्हें इस बात का ज़रा भी गम न था कि निधि की उम्र ढल रही है। उसकी भी शादी होनी चाहिए। वह भी जवान है। पर कहीं कुछ था जो उसको अन्दर ही अन्दर सहमा सा देता। वह सोचती– कहीं इस नवयुवक राज ने भी उसे धोखा दिया तो वह कहीं की नहीं रहेगी। उसे पहले परखना चाहिए था। खाली खूबसूरती ही सब कुछ नहीं होती। जेब में तो फूटी कोड़ी नहीं तो कैसे करेगी ज़िन्दगी की मुश्किलों का सामना वह और भी न जाने क्या– क्या सोचती कि राज ने उसकी तन्द्रा को छिन्न–भिन्न कर दिया "क्या सोच रही हो डार्लिंग? यह पहाड़, यह नदी, यह देवदार के वृक्ष– प्रकृति की सुन्दरता है जनाब। और तुम कुछ कहने के बदले खो गई इनमें। क्यों है ना यही बात?" निधि सोते से जैसे जाग गई। एक सिहरन सी दौड़ पड़ी उसकी रगों में और न समझते हुए भी सिर हिलाती रही हामी के स्वर में।

राज ने उसे दोनों कंधों से पकड़ कर हिला दिया– "मैं कब से बोले जा रहा हूं और जनाब हूं, हां करके टाले जा रही है। क्या तुम्हें मेरे साथ इस तरह चलना अच्छा नहीं लगता? यदि ऐसी बात थी तो फिर भागने का इशारा ही क्यों किया था? मैंने तो ज़बरदस्ती नहीं की थी। तुम्हारे पीछे और तुम्हारे लिए मैं भी तो अपने घर के लोगों को छोड़कर आया हूं। मेरे माथे पर कोई शिकन नहीं। और तुम....."

"नहीं राज ऐसी बात नहीं। मैं अपनी मर्ज़ी से घर से भागी हूं। लेकिन सोचती हूं कि हमारा गुज़ारा कैसे होगा। तुम्हारी भी कोई नौकरी नहीं। मेरा भी कोई जुगाड़ नहीं। फिर कैसे चलेगा यह सब?"

"कुछ दिनों तक तो गुज़ारा चलेगा, इतना इन्तज़ाम है मेरे पास। तब

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तक कहीं छोटा–मोटा काम ढूंढेंगे और बस।"

"मैं भी बी.ए. पास हूं किसी प्राइवेट स्कूल में नौकरी मिल ही जायेगी।"

"मैं भी छोटी–मोटी नौकरी करूंगा। धीरे–धीरे जमा देंगे अपनी गृहस्थी। पर हां! शुरू–शरू में मेहनत करनी पड़ेगी। बाद में प्रभु ने चाहा तो सब ठीक हो जायेगा।"

"अब तक तो मेरे बापू को मेरे भागने की खबर मिल ही गई होगी।"

"तो तुम्हें ढूंढने का काम भी शुरू हो गया होगा। क्यों?"

"नहीं वह ऐसा नहीं करेंगे।"

"क्यों"

"क्योंकि मैं उन्हें जानती हूं। उनमें इतना दम नहीं। मां घर पर नहीं, जब तक आयेगी हम बहुत दूर जा चुके होंगे।

"पर मेरी बूढ़ी मां रोते–रोते पागल हो जायेगी। कभी सोचता हूं कि उसे छोड़कर मैंने अच्छा नहीं किया।"

"ठीक है तुम वापिस जाओ।"

"ऐसी बात मैंने नहीं कही। थोड़ा जम जाने के फौरन बाद मैं उसको अपने पास ही ले आऊंगा। ठीक है ना?"

"हां ठीक है।" कह तो दिया निधि ने पर मन ही मन उसे मां वाली बात जाने क्यों जंची नहीं। तभी उसे अपनी भाभी की याद आई और अपनी मां की सख्ती याद आई। एकदम उसके मुंह से निकल गया–

"राज अभी अपने बारे में सोचो बाद में मां के बारे में भी सोचा जायेगा"।

राज को निधि का इस तरह कहना चौंका गया। पर इस समय उसने चुप रहना ही ठीक समझा। लेकिन उसके अन्दर कहीं कुछ टूट सा गया! ट्रेन बराबर की रफ्तार से आगे बढ़ती जा रही थी। उसके मन में कई बार यह विचार आया कि उसने गलती तो नहीं की है निधि के साथ भागकर। घर में मां बेचारी का बुरा हाल हो गया होगा। कोई भी तो नहीं है जो उससे धीरज बंधाए, अकेली बेचारी क्या करेगी। रिश्तेदारों ने उन लोगों की फिक्र करना तभी का छोड़ दिया था जब उसके पिता की मृत्यु हुई थी। पहले अगर कभी उनके पास कोई आता भी था पर अब अनाथ होने के बाद कौन

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आकर उन बेसहारों का सहारा बनता। पर मां ने भी तो हिम्मत नहीं हारी, वह चट्टान की तरह किस्मत की मार सहती रही। पढ़ी लिखी होती तो शायद कुछ कर लेती। तब भी लोगों के कपड़े सी–सी कर उसने अपने और बेटे के जीने का इन्तज़ाम कर लिया था। इसी कशमकश में राज ने बी.ए. पास किया। नौकरी तो खैर नहीं मिली पर दो–चार ट्यूशनें पढ़ा कर कुछ आगे पढ़ने का विचार बनाया कि निधि के साथ मुलाकात हुई और साल भर में घर छोड़कर भागने की भी बारी आ गई। मां के लिए उसके दिल में विशेष स्थान था, पर इस समय निधि के इस तरह के रूखे उत्तर से वह कुछ उद्विग्न सा हुआ, लेकिन तत्काल ही अपने इन विचारों पर अंकुश रख कर स्थिति का विवेचन करने लगा।

इधर निधि भी अपने मन में गुम न जाने किस अनदेखे कल की उलझन में उलझ गई थी और ट्रेन अपनी रफ्तार से आगे बढ़ रही थी। टिकट इन लोगों ने दिल्ली का लिया था। राज के पास एक दो ट्यूशनों की फीस थी लगभग 400 रुपये और निधि ने भी मां की पिटारी की चोरी करके 2000 रुपये निकाले थे जिसका उसको यकीन था कि वे पैसे भाभी के मायके वालों से छीने हुए हैं। एक ओर तो उसे लगता था कि उसे इस तरह पैसे चुराने नहीं चाहिए थे पर तभी सहसा उसे अपनी मां पर बहुत गुस्सा भी आता और तब उसे अपने किये का कोई अफसोस न होता। दोनों अजनबियों की तरह गुमसुम बैठे थे कि इतने में ट्रेन किसी स्टेशन पर रूकी और एक यात्री उनकी सीट के पास आकर बैठ गया। उसके बैठते ही दोनों कुछ चौंक से गये। यात्री थोड़ा अनुभवी था। उसने भांप लिया कि बिना किसी सामान के यह लोग घर से भागे हुए लगते हैं। खैर! कुछ देर ठहर कर उसने राज से बातचीत शुरू कर दी। "आपको मेरे यहां बैठने से हर्ज तो नहीं है ना।" राज अपने में गुम उसकी बात न सुन सका तो यात्री ने दुबारा उसको हाथ से स्पर्श करते हुए कहा– "क्यों मिस्टर मैं आप से कुछ कह रहा हूं....." राज कुछ हड़बड़ा सा गया और बोला–" कहिए क्या कहना चाहते हैं आप?"

मैंने कहा "मेरे यहां बैठने से आप अनकम्फर्टेबल तो नहीं महसूस कर रहे हैं।"

"नहीं। नहीं। ऐसी कोई बात नहीं। आप बैठिये, आराम से बैठिये।"

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

''लगता है आप कुछ परेशान से है। क्या मैं आपकी कोई सहायता कर सकता हूं?''

उसकी इस बात को सुनते ही राज ने उसको ऊपर से नीचे तक पारखी नज़र से देखा कि क्या यह सचमुच कोई मदद करेगा भी या यों ही। अपनी ओर इस तरह उसके देखते ही यात्री ने अपना परिचय दिया– "मैं दिल्ली मैं रहता हूं। मेरा छोटा सा बिज़नेस है प्लास्टिक के खिलौनों का, जिसके सिलसिले में मुझे इधर–उधर यात्रा करनी पड़ती है। आप कहां जाइएगा?"

राज ने संक्षिप्त सा उत्तर दिया– ''दिल्ली''

''वहां कहां?''

''जहां किस्मत ले जाये।''

''क्या पहली दफा जा रहे हैं?"

"जी हां।"

''क्या कर रहे हैं?''

"मैं बेकार हूं। बी.ए. पास हूं और नौकरी की तलाश में हूं।"

''यह आपके साथ कौन है?''

"यह मेरी पत्नी है। पढ़ी लिखी है इसलिए साथ चलकर नौकरी की ज़िद कर रही है।"

''क्या कर सकती हैं यह?''

''कुछ भी जो आदर सहित मिले।''

''तो समझिये इनकी नौकरी पक्की"।

''कैसे?''

"मेरे एक मित्र हैं जो एक एडवराटाईज़िंग फर्म चलाते हैं, उन्हें हमेशा नये चेहरों की तलाश रहती हैं।''

इतनी देर तक निधि चुप दोनों का वार्तालाप सुन रही थी। पर अब वह चुप न रह सकी, बोली– "भाई साहब। क्या वे बिना टैस्ट इत्यादि के काम देंगे?''

''ज़रूर क्यों नहीं। और फिर खूबसूरत चेहरों के टैस्ट नहीं लिए जाते। आप इत्मिनान रखें आपको काम समझो मिल गया।"

''धन्यवाद।''

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

''और आप''– वह राज की ओर मुखातिब हुआ– ''क्या नाम बताया आपने?''

''राजनाथ''

''तो हां राजनाथ जी यदि आप अच्छा समझें तो जब तक आपको कोई काम मिलता है, तब तक मेरी फैक्ट्री में मेरी सहायता करें? मुआवज़ा अच्छा मिलेगा। क्यों मंज़ूर है?''

''ठीक है।'' बाहर से संजीदा पर अन्दर से बहुत खुश राज ने उस यात्री का धन्यवाद करके उसका नाम पूछा– क्या में अपने शुभचिंतक का नाम जान सकता हूं?''

''ओ श्योर, क्यों नहीं, मुझे कमल नन्दा कहते हैं। अच्छा तो क्या आपके ठहरने का कोई इन्तज़ाम है?

''अभी नहीं।''

''तो ऐसा करें आप हमारे पुराने फ्लैट में रह सकते हैं। किराया कम लेंगे साहब।''

फीकी सी हंसी हंसते हुए राज बोला– सब कुछ तो जनाब का ही है कम और ज़्यादा कह कर शर्मिन्दा क्यों कर रहे हैं। अच्छा तो आप का यह फ्लैट दिल्ली के किस स्थान पर है?''

''ओ हां। यह है उसका अड्रैस।'' ऐसा कह कर नंदा ने जेब से एक कार्ड निकाल कर राज को दिया। ''अभी तो हम आपको वहां ले चलेंगे, बाद में धीरे–धीरे मालूम हो जायेगा। वैसे हमारी फैक्ट्री से अधिक दूर नहीं। इस स्थान को मेहरोली कहते हैं''।

इसी तरह रात भर बातें करते हुए तीनों में खासी बेत़कल्लुफी आ गई। इतने करीब हुए जैसे जन्मों से एक दूसरे को जानते हों। ट्रेन दिल्ली पहुंच गई और स्टेशन पर कमल नंदा के लोग उसे लेने आये थे। सो उसने दोनों को अपने लोगों के हवाले करके अपने घर की राह ली। निधि और राज जब उस फ्लैट में पहुंचे तो दोनों ने राहत की सांस ली।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ग्यारह

विनय और शालू ज्यूं ही श्रीनगर पहुंच गये तो विनय ने महसूस किया कि शालू का चेहरा कुछ मुरझा सा गया है। उसने शालू से पूछ लिया– "क्यों शालू लगता है कि तुम्हें शहर आना अच्छा नहीं लगा"।

"क्यों?"

"क्योंकि तुम्हारे चेहरे पर बारह बज गये हैं। मैं मानता हूं कि ससुराल में तुम्हें सुख नहीं मिलता पर थोड़ी देर के लिए, लोगों को दिखाने के लिए ही केवल कुछ दिन यहां रहेंगे और फिर वापिस अपने गांव। क्यों ठीक है ना?"

एक ठंडी सांस भर कर शालू ने कहा– "ठीक है।"

पर घर पहुंचते ही आशा के विपरीत शालू को सास द्वारा स्वागत मिला। सुनने को दो चार मीठे बोल भी। वह हैरान हो गई इस परिवर्तन से। पर जो भी हो आज उसे ससुराल में अच्छा लगा। सोचने लगी–चलो अच्छा हुआ कि सासू मां में परिवर्तन आया है। उसने दो चार बार निधि के बारे में पूछा भी पर उसकी सास ने बड़ी खूबी के साथ बात टाल दी जो शालू को अच्छा न लगा। खैर! वह कर भी क्या सकती थी। चुप रही पर मन ही मन किसी आशंका ने उसे आ घेरा। रात अच्छी तरह से कट गई और दूसरे दिन सुबह ही सास ने उसे प्यार से अपने पास बुलाया। पीठ पर हाथ फेरती हुई कहने लगी– "काफी समय के बाद गांव से आई हो, जाओ मां से मिल आओ। उसे भी तुम्हारी याद आती होगी। यदि रहना भी चाहती हो तो दो चार दिन रह भी सकती हो। आखिर उसका भी तो तुम पर हक है।" यह सुनते ही शालू आकाश से जैसे नीचे ज़मीन पर आ गई। एक ओर तो मायके जाने की खुशी पर दूसरी ओर किसी आशंका से उसका माथा ठनका। उसने सास को जवाब दिया– "बाद में वहां भी जाना होगा पर पहले आप लोगों की सेवा का भी थोड़ा अवसर मिले।"

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

''नहीं बेटा। हम जब चाहें तुम से सेवा करवा सकते हैं पर तुम्हारी मां को ऐसे अवसर बहुत कम मिलेंगे। मैं जब खुद ही कह रही हूं तो जाने में हर्ज ही क्या है। दो दिन बाद विनय खुद लेता आयेगा। क्यों विनय ठीक है ना?"

"हां हां मां ठीक कह रही है। मैं तीसरे दिन स्वयं ही तुम्हें लेने आऊंगा। जाओ एनज्वाय करो।"

पति से भी आज्ञा मिली तो वह फूली न समाई। उसने झटपट अपने कुछ कपड़े बैग में डाले और तैयार होकर मायके चल दी। जाते वक्त सास ने कहा–बच्चों के लिए थोड़ी मिठाई या फ्रूट लेती जाना, समझी"। सास का इस तरह का व्यवहार उसके लिए वाकई एक आश्चर्य था जिसमें डूबती–इतराती वह इस परिणाम पर पहुंची कि अवश्य ही दाल में कुछ काला है। फिर मन में इसका पता लगाने का विचार करके वह मायके चली।

शालू को इस तरह पहली दफा मायके भेज दिया गया। इतना विनय भी समझ गया कि अवश्य कोई कारण है, नहीं तो उसके माता–पिता कभी इतने स्नेही न थे। खैर, वह खुद चाहता था कि शालू मायके में कुछ देर रहे ताकि पहले की तरह वह दुबारा बीमारी की शिकार न बने। वह इस विषय में सोच ही रहा था कि मामला स्वयं ही सुलझ गया, जिसकी उसे उम्मीद नहीं थी। कारण जो भी हो उसके लिए अच्छा ही हुआ। दर्जन भर दोस्तों और जानकारों में घूमने के बाद शाम को खाना–खाने के बाद उसके पिता ने उसे कहा–

''बेटा। कहते हुए कलेजा फट रहा है पर क्या करूं तुम्हें बताना ज़रूरी है। मैं तुम्हें कल ही बताता पर बहु के जाने की प्रतीक्षा में चुप रहा।"

विनय का माथा ठनका। शालू को घर से बाहर करने की चाल थी जो शायद कामयाब हो गई सो उसने और कुछ न सुनकर एकदम क़हा– "आपने कैसे जाना कि मैं उसको छोड़ सकता हूं। मैं आज ही जाकर उसे वापिस लाऊंगा। वैसे भी आपके मीठे व्यवहार से मैंने थोड़ा बहुत अन्दाज़ा लगाया ही था। मैं"...

विनय की बात को आधे में ही काट कर उसके पिता ने कहा–"हमारा कत्तई यह मतलब नहीं था कि तुम बीवी को छोड़ दो। बल्कि हम इस वक्त

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

किसी और मुसीबत में फंस गये हैं, जो उसके सामने सुनाना ठीक न था।"

"बेटा। शालू तुम्हारी ब्याहता है। हम उसे छुड़ा कर क्यों पाप लेंगे?"

मां से इस तरह सुनकर विनय परेशान सा हुआ और बोला– "फिर यह सब क्या है?

"तुम सुनो बेटा। निधि तुम्हारी बहन–

"क्या हुआ उसे। तुम तो कहती थी नानके गई है। उसको वापिस लाना है क्या?"

"नहीं। वह वापिस नहीं आयेगी, वह भाग गई है।"

"क्या.....!"

"हां बेटा।" इतना कहकर बाप ने एक हारे हुए जुआरी की तरह निधि की लिखी चिट्ठी उसे दिखा दी।

चिट्ठी पढ़ते ही विनय को आकाश घूमता नज़र आया। वह हताश और निराश सा होकर धम्म से कुर्सी में धंस गया। हाथ से माथा पीटते हुए सोचने लगा। इस तरह निधि के भागने का कारण क्या हो सकता है? मां–बाप का अधिक लाड़–प्यार या उसकी अपनी ओर से बहन की अवहेलना। बड़ी देर तक सोचने के बाद वह इस परिणाम पर पहुंचा कि निधि के जवान होने पर किसी ने कोई ध्यान न दिया, जिस कारण वह भाग गई। उसने मां से कहा "काश, आप मेरी शादी के बदले निधि की शादी करते तो यह दिन न देखना पड़ता। उमर तो उसकी हो गई थी। पर हमने ही ध्यान न दिया।"

"और वह बेहया अपना सब कुछ गंवा बैठी– "उसकी मां ने गुस्से में कहा।

और बाप ने बात पूरी की– उसे भागने के अलावा और कोई चारा ही न था।"

"क्यों?"

"क्योंकि उसका पांव भारी था।"

सुनते ही विनय जैसे सकते में आ गया। मूर्खों की तरह मां–बाप दोनों को देखता रहा। कुछ देर के बाद वह फिर बोला–"क्या आपको उसकी प्रगनैन्सी के बारे में मालूम था ?"

मां ने कहा– "नहीं। अगर मुझे मालूम होता तो मैं खुद उसको विष

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खिला देती। मुझे तेरे पिता ने कहा"। पिता बोले–"मुझे भी कहां मालूम था। इधर कई दिनों से उसे अलग–अलग तरीके की दवाइयां खाते देखा पूछा, तो टाल गई। उल्टियां करती थी, तभी एक बार उसके पर्स की तलाशी ली तो डा. का नुस्खा मिला। घबरा कर तुम्हारी मां को तार देकर बुलाया। तुम्हारी मां को अड्डे से घर लाने चला तो वह घर पर ही थी। पर रोज़ की तरह परेशान और कमज़ोर। पर हमारे घर लौटने से पहल ही वह भाग गई थी"।

"किसके साथ?"

"यह मालूम नहीं। अब बताओ हमें क्या करना चाहिए।"

"हैरानी है कि अब तक दस दिन हो गए और आप चुप रहे। अब कहां ढूढेंगे उसे। कहिए, न जाने कहां होगी वह और उसकी यह चिट्ठी तो उसके पक्के इरादे की बात कहती है। कहीं उसने आत्महत्या न की हो।"

"यदि ऐसा होता तो उसकी लाश अब तक मिल जानी चाहिए थी। इसलिए मेरा मन कहता है कि वह कलंकिनी जीवित है" मां ने यह कहकर सांस ली और फिर बोली– "मेरे खयाल से उसके बारे में भूल जाओ कि वह कभी थी, समझो मर गई। पर अब लोगों को क्या जवाब दोगे इस विषय में विचार करो"।

बड़ी देर तक तीनों में से कोई कुछ न बोला। फिर श्याम लाल बोला– "मेरे विचार से हम दोनों कुछ समय के लिए हरिद्वार जाते हैं। जब तक बात पुरानी हो जायेगी, उसके बाद वापिस आकर यह बात फैलायेंगे कि लड़की रास्ते में ही मर गई।"

विनय को अपने पिता की यह बात बच्चों जैसी लगी। पर वक्त की नज़ाकत को देखकर उसने भी हामी भरी। तय हुआ कि दो चार दिन बाद बहु को घर लाकर दो एक दिन उसके साथ रहकर यह कहा जायेगा कि वे दोनों नानके से निधि को साथ लेकर कुछ दिनों के लिए हरिद्वार जायेंगे। इस तरह गोष्ठी समाप्त तो हुई पर विनय के अन्तर मन को कचोटता रहा निधि का लापता होना। मन ही मन वह निधि को दोषी नहीं मान सका। उसने मन में ठान ली कि वह उसका पता लगा के ही रहेगा और उसके भागने का कारण जान कर ही दम लेगा।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बारह

आज महरोली के इस फ्लैट में आये निधि व राज को लगभग दस दिन हो गये थे। अब तक इन लोगों ने अपनी ज़िन्दगी को थोड़ा सा व्यवस्थित किया था। राज यद्यपि कमल की फैक्ट्री में पिछले कई दिनों से जाने लगा था, लेकिन निधि अभी तक घर में ही थी। उसकी अपनी हालत बहुत हद तक स्थिर होने लगी थी। राज ने उसे कहा था कि बच्चा पैदा होते ही उसके पालने की पक्की व्यवस्था हो जायेगी और निधि भी इसी स्वप्न को लेकर न जाने कितने हवाई किले बना चुकी थी।

कमल भी दो एक बार इन लोगों के पास आया था और उसने भी बहुत जल्द निधि को काम दिलाने का आश्वासन दिया था। आज भी जब वह आया और निधि को उसकी नौकरी की बात कही तो निधि ने कहा– "हड़बड़ी और जल्दी में तो मैं अपने प्रमाणपत्र ही कहीं भूल आई हूं। अब क्या खाक काम मिलेगा।"

इस पर कमल ने कहा– "नहीं निधि तुम्हारे काम के लिए सर्टिफिकेट्स की उतनी ज़रूरत नहीं पड़ती जितनी कि चुस्त–दुरुस्त फिगर की। आदमी इम्प्रैसिव हो स्मार्ट हो तो काम हो ही जाता है। और फिर तुम्हारे पास तो मेरी सिफारिश है। सवाल ही पैदा नहीं होता कि तुम्हें काम से इन्कार हो। वह क्या है कि मि. हुड़कर कुछ दिनों के लिए मद्रास गये थे। इसीलिए अभी तक तुम्हें उनसे इन्ट्रोड्यूस नहीं करा पाया। बस एक दो दिन में यह काम भी हो जायेगा। चलो इसी खुशी में हमें काफी पिलाओ। काफी बनाने तो वह यन्त्रवत् उठी भी पर उसके मन में विचारों की उथल–पुथल चल रही थी। यदि कहीं इन्हें पता लगा कि वह गर्भवती है तो चांस ही गया हाथ से। जो चांस गया फिर दुबारा मिलने से रहा। अब क्या किया जाये, कैसे छिपाया जाये यह रहस्य? चलो क्या है अभी तो दो ही महीने हुए। एक बार काम मिल जाये तो फिर की फिर देखी जायेगी। उसने उन दोनों को कॉफी

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पिलाई। स्वयं तबीयत ठीक न होने का बहाना करके दूसरे कमरे में सोने चली।

इधर कमल और राज के बीच निधि की अस्वस्थता पर बहस चली। बातों ही बातों में कमल को पता लग गया कि निधि को गर्भ है। उसने व्यापार के दृष्टिकोण से राज को समझाया कि इस समय उसका गर्भवती होना ठीक नहीं। यदि उसे इस समय चांस नहीं मिला तो बच्चा होने के बाद बिल्कुल ही नहीं मिलेगा। यदि उसको चांस मिल गया तो लाखों के वारे न्यारे होंगे। इसलिए इसी बात पर ज़ोर देने की ज़रूरत है। मेरी मानों तो आप्रेशन करके उसका गर्भ गिरा दो। राज को भी यह बात जंच गई पर वह डर रहा था कि निधि से कैसे कहे क्योंकि वह यदि घर से भागी थी तो केवल इसी कारण कि वह बच्चे को जन्म देना चाहती थी।

बहुत सोच समझकर कमल के जाने के बाद उसने निधि से यही बात की। पर निधि को बड़ा उट-पटांग सा लगा यह विचार। लेकिन चांस मिलने की उसे भी ललक थी सो बहुत अछता-पछता कर अन्त में उसने हामी भर ही ली।

दूसरे दिन वे लोग एक नर्सिंग होम में एक लेडी डाक्टर से मिले और उसे बच्चा गिराने के लिए कहा। पहले तो वह नहीं मानी क्योंकि दो महीने से अधिक समय हो चला था। अब ऐसा करना खतरा उठाने वाली बात थी। लेकिन फिर मुंह मांगे दाम देकर उसका मुंह बंद कर दिया गया। और चौथे दिन निधि का आप्रेशन हुआ। बहुत खून बहा, वह बहुत कमज़ोर हो गई। पर लालच बुरी बला है जिसके वश में आकर वह सब कुछ सहन कर गई। कुछ दिन नर्सिंग होम में रहने के बाद जब वह घर आई उसे लगा जैसे उसका बहुत कुछ छिन चुका है। वह पीली और कमज़ोर दिखने लगी थी। उसने शीशा देखा और एक ठंडी सांस ली। कमल साथ ही था, निधि का इस तरह निःश्वास छोड़ना उसे अच्छा न लगा। उसने झट राज की ओर देखकर कहा– "अब आपकी श्रीमति और भी खूबसूरत लग रही है। जल्दी-जल्दी इन्हें तन्दुरूस्त बनाइए। मि. हुडकर से मेरी बात हो गई है। मैंने उन्हें फोटोग्राफ भी दिखाया है और उन्होंने अप्रूव भी कर लिया है। पर मैंने थोड़ा सा झूठ बोला है जो आपको भी बोलना पड़ेगा– वह यह कि निधि व्याहता नहीं कुआंरी है।" यह सुनकर राज और निधि दोनों ही हैरान होकर

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उसकी ओर देखने लगे तो उसने कहा– "हां भाई मुझे मालूम है कि निधि की अभी शादी नहीं हुई है और यह भी मालूम है कि तुम दोनों आपस में प्यार करते हो। घर के लोगों से तंग आकर तुम लोग घर से भागे हो। क्योंकि तुम दोनों ही एक दूसरे से सच्चा प्यार करते हो इसलिए मैंने मन में विचार किया कि तुम दोनों की मदद करूंगा। सो कर रहा हूं। यह सब तुम पर एहसान जताने के लिए नहीं बल्कि मैं जानता हूं कि तुम लोग यदि इस तरह साहस न करते तो शेष लोगों की तरह तुम्हारा प्यार भी बलि चढ़ जाता।

"अब तुम लोगों के मन में मुझे लेकर जिज्ञासा होगी कि मैं कौन हूं और तुम में इतनी दिलचस्पी क्यों लेता हूं। तो सुनो! मैं निधि के भाई विनय का बचपन का एक दोस्त हूं, जो कभी निधि को पसन्द करता था। पर इनके घर का माहौल मुझे अच्छा न लगा और भाग्य से हम वह स्थान छोड़ कर दिल्ली आये। पिछले कुछ सालों से मेरा कारोबार अच्छा चला और इस तरह विनय की बीवी शालू के मामा की लड़की से मेरी शादी हुई। वहां मैंने निधि को दुबारा देखा था। दूल्हा था इसलिए अधिक पूछताछ न कर सका। पर ज्योंही उस दिन मैंने तुम लोगों को बिना किसी सामान के ट्रेन में गुम–सुम पाया तो समझने में देर न लगी कि आप लोग घर से भागे हुए हो। निधि के विवाहित होने के विषय में मैंने अपनी पत्नी से इधर–उधर की बातों से मालूम किया और पता चला कि अभी उसकी शादी नहीं हुई। बस!"

इतना सुनना था कि दोनों ही बुरी तरह से घबराये। जैसे दोनों पर बिजली गिरी हो। अब हाल ऐसा था न भाग सकते थे और न बैठ सकते थे।

यह देख कमल फिर बोला– "अब तक जो हुआ अच्छा ही हुआ और अब आगे जो होगा वह भी अच्छा ही होगा, अगर तुम लोग मेरे कहे के अनुसार करोगे तो। हां तो राज साहब आपके घर में और कौन–कौन है ?"

राज ने आज्ञाकारी बच्चे की तरह जवाब दिया– "केवल एक मां। "उसको किसके सहारे छोड़ दिया आपने?"

जवाब में वह क्या कहता, चुप रहा।

तब थोड़ी देर ठहरकर कमल ने कहा– आप मुझे अपना एड्रेस दीजिए

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ताकि उनसे मिला जाये। "यकीन रखिए हम आपके राज़ को राज़ ही रखेंगे। पर उस बदनसीब मां को भी तसल्ली देना चाहते हैं।"

राज ने एक कागज़ पर उसे अपना पता लिखकर दिया।

कागज़ लेकर उसने निधि से कहा– अच्छा निधि बहन अब जल्दी–जल्दी ठीक हो जाइए, तो आप को हुड़कर साहब से मिलवा दूं।"

निधि को काटो तो खून नहीं। वह प्रस्तर मूर्ति की तरह कमल को जाते हुए देखती रही।

उसके जाने के बाद राज ने आकर निधि से कहा– "मैं भी सोचूं कि यह बन्दा हम पर ज़रूरत से ज़्यादा ही मेहरबान क्यों है? अब पता चला कि मेरी ही तरह यह भी तेरा दीवाना था। चलो अच्छा ही हुआ न जाने कहां–कहां भटकते होते।" पर निधि को डर लगने लगा कि कहीं इसने भैय्या को खबर कर दी तो क्या होगा? लेकिन राज ने कहा– "अगर ऐसा करना होता तो अभी तक कर दिया होता। यह बन्दा ऐसा लगता नहीं। हमें नाहक ही किसी पर शक नहीं करना चाहिए। फिर तुम्हारे भैय्या शहर में थोड़े ही हैं। तुम्हारे पिता को कमल यह जानता नहीं। सो चिन्ता करना छोड़ दो और अपनी सेहत पर ध्यान दो।" इस तरह दोनों आश्वस्त होकर चाय पीने लगे।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तेरह

शालू को पीहर आये लगभग पंद्रह दिन हो गये थे। पर ससुराल से कोई बुलावा नहीं आया। उसे आशंका होने लगी कि कहीं कुछ गड़बड़ ज़रूर है, नहीं तो अभी तक के विवाहित जीवन में उसने कभी इतना लम्बा अवकाश पाया नहीं था। यहां रहना उसको अच्छा तो लगता था किन्तु अपने घर की चिन्ता अन्दर ही अन्दर खाये जा रही थी। उस दिन सास का इतना प्यार उंड़ेलना भी वास्तव में परिवर्तन न होकर कोई चाल थी और पति का कहना कि खुद ही ले आऊंगा। इसी बात के लिए वह पता भी तो नहीं लगा सकती थी। बस प्रतीक्षा– हां प्रतीक्षा ही उसकी नियति थी। और वह कर भी क्या सकती थी। कई बार उसके मन में आया शायद घर पर कोई बीमार हो गया हो या फिर विनय नौकरी से अभी लौट आया न हो। तब भी क्या हुआ वे निधि को तो मेरे पास भेज सकते थे। तभी विचार आया कि सास कभी इस तरह और कभी उस तरह होती है। कहीं उन लोगों का मनसूबा विनय की दूसरी शादी –नहीं–नहीं। विनय ऐसा नहीं–नहीं। विनय ऐसा नहीं है। वह ऐसा नहीं कर सकता। कुछ और बात है खैर और प्रतीक्षा करती हू।

शालू की मां सबको उसकी सास के स्वभाव का परिवर्तन बढ़ा–चढ़ाकर बताती थी और साथ ही भगवान् को इसके लिए धन्यवाद भी देती। चलो देर से ही सही अक्ल तो आ गई। परन्तु शालू के मन में ही कुछ टूटता सा लगता। उसे रह–रह कर उनके बर्ताव के विषय में कहीं कुछ खटका ज़रूर लगता। बहुत सोच विचार कर अन्त में विचार आकर तिनय को ही घेरे रहते –"कहीं विनय की दूसरी शादी तो नहीं हो रही। पर साथ ही विनय पर इस तरह अविश्वास करने को शालू का मन न मानता। वह सोचती यदि ऐसा होता तो वह अवश्य उसको बता देता या कोई संकेत देता। ऐसा तो कुछ भी नहीं हुआ है। पर तभी सोचती मन बदलते देर थोड़े ही लगती है।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आखिर वह भी तो उसी मां–बाप का बेटा है। इच्छा होती कि पता लगा ले, पर कहे किससे अपने अपमान का डर जो था। इसी तरह कशमकश में हफ्ता भर और बीत गया। अब उसे गहरी चिन्ता होने लगी। बड़े सोच–विचार के बाद शालू ने पति के नाम एक पत्र लिखा, जिसमें उसने अपनी सभी आशंकाओं का ज़िक्र किया और अपनी ओर से विनय के पुनः विवाह करने की अनुमति भी दी थी। पत्र लिखकर शालू ने काफी हल्का तो अनुभव किया पर वह पत्र भेजे कैसे? और कहाँ? यह समस्या उसे सताने लगी। क्योंकि इतने दिनों तक तो विनय छुट्टी पर नहीं हो सकता। सो एकदम लिफाफा फाड़कर दूसरे लिफाफे पर गांव का पता लिखकर डाक में डालने के लिए अपने छोटे भाई को दिया। पत्र लिखने के बाद पत्रोत्तर की प्रतीक्षा शुरू हुई। चार दिन और निकल गये। मन ही मन उदास शालू अपने भविष्य के लिए सोचने लगी– यदि विनय दूसरी शादी करेगा तो उसको कैसे अपना जीवन बिताना होगा। मन की इस उधेड़बुन में उसने एक संध्या के समय विनय को आते देखा। वह प्रसन्न तो बहुत हुई पर यह सोचकर कि पत्र पढ़कर आया होगा। वह गंभीर रही। घर पर सब लोगों ने विनय का स्वागत किया। चाय वगैरा के बाद उसके पिता ने विनय के घर का हाल चाल पूछा तो विनय बोला–

"इधर कुछ दिनों से माता जी ठीक नहीं। इसीलिए यहां न आ सका। घर में निधि भी तो नहीं है।"

"क्या बात हुई उनकी सेहत को? और निधि कहाँ है?"

"माता जी को बुखार हुआ था और निधि नानके पढ़ने के लिए गई हुई है। इसलिए मैं वापिस गांव भी तो नहीं जा सका।"

"शालू को बुला लिया होता।"

"वही तो करने आया हूं। अब माता जी की तबीयत ठीक हो गई है और अब हम लोग भी वापिस गांव जायेंगे।"

"ठीक है पर इतनी देर के बाद बिना महूरत कैसे जायेगी वह?"

"महूरत–शहूरत सब पुरानी बातें हैं। मैं आज इसीलिए आया हूं ताकि कल किलम गांव वापिस जा सकें। आप जानते हैं कि नौकरी से ज्यादा देर छुट्टी भी तो नहीं ली जा सकती।"

"आपका कहना सही है, पर आज ही तैयार तो नहीं हो सकेगी।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इसलिए कल इसको भेज देंगे।''

''तो ठीक है, गाड़ी का वक्त है ढाई बजे, तो मैं बारह बजे आकर ले जाऊंगा। अच्छा अब आज्ञा दीजिए।''

इतना कहकर विनय उसे मिले बिना ही चला गया जो शालू को एकदम बड़ा अजीब सा लगा। खैर! वह भी अपनी तैयारियों में जुट गई। दूसरे दिन ठीक बारह बजे विनय तांगा लेकर आया और शालू को अपने घर ले गया।

घर पहुंचते ही शालू को एक और आश्चर्य हुआ जब सास को बिल्कुल ठीक–ठाक पाया। इस समय सास के स्वभाव की पिछली मिठास तो न थी पर चिर–परिचित रूखापन भी न था। शाम को खाना खाते हुए ससुर ने कहा –देखो विनय हम कुछ दिन हरिद्वार यात्रा पर जा रहे हैं। तब तक घर तुम लोग संभालो।''

''नहीं पिता जी। घर में ताला लगा लीजिये। हम लोग आपके जाते ही गांव चले जायेंगे। नौकरी के लिए इतनी छुट्टी ठीक नहीं।''

''क्यों विनय की मां तुम क्या कहती हो?''

''ठीक है इस घर में इतना क्या है जो इसकी रखवाली ज़रूरी हो। संच मानो तो चोर भी यहां आकर पछतायेगा। ठीक.है बेटा फिर हम कल की गाड़ी से ही यात्रा पर चल देंगे। तब भी जाते वक्त अड़ोस–पड़ोस में इस मकान का भी खयाल रखने के लिए कह देना। वैसे भी इसका इन्तज़ाम करके ही जाऊंगी।''

''तो ठीक है, रात बहुत हो गई है अब सो जाना चाहिए'' विनय के पिता ने ऐसा कहकर महफिल बरखास्त कर दी और लोग अपने–अपने कमरों में चले गये।

आज शालू को कदम–कदम पर आश्चर्य हो रहा था। वह समझ ही नहीं पाती थी कि इतनी शान्ति और इतना ठहराव इन लोगों मं क्यों और कैसे आ गया। इधर विनय का झूठ बोलना भी उसे अजीब सा लगा। वह तो मायके से आज ही गांव के लिए आई थी। पर यहां तो कार्यक्रम कुछ और ही बना था। ऐसा क्यों? वह सोचने लगी, पर बड़े सोचने विचारने के बाद कोई हल मालूम न पड़ा। अब रात को पति के कमरे में आते ही उसने पूछा –''मुझे तो यहाँ सब कुछ अजीब सा लग रहा है। जैसे सारे ही घर

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

के लोग रहस्यमय बन गये हैं।''–

विनय ने चौंक कर पूछ लिया – "क्या कहा रहस्यमय, किस बात को लेकर? कुछ भी तो असामान्य नहीं लगता, फिर तुम यह क्यों पूछ रही हो?''

शालू ने सुनते ही जवा़ब दिया –"तुमने तो आज गांव जाने की बात की थी वहां। तो यहां आकर प्रोग्राम क्यों बदल गया? पूछ सकती हूं।"

''वह! हां मेरे मुंह से कल के बदले आज की बात भूल से निकली। और कुछ नहीं''।

"नहीं जी! कुछ है जो मुझसे छिपाया जा रहा है। खैर! आज नहीं तो कल बात पता चल ही जायेगी।"

''क्या पता चल जायेगा?'' "यही कि तुम्हारी दुबारा शादी हो रही है।''

इतना सुनना था कि विनय हंस पड़ा। थोड़ी देर हंसने के बाद उसने शालू को तसल्ली दी–"पगली तुम्हें छोड़ कर क्या में शादी कर सकता हूं। यह वहम् मन से निकाल दो। तुम देखना क़ल हम तुम गांव जायेंगे।"

''तो फिर यहां कुछ परिवर्तन ज़रूर है जिसका कारण मुझे अभी तक समझ नहीं आया।''

''वैसे तो कोई परिवर्तन नहीं है, यदि है भी वह तुम्हें स्वयं धीरे–धीरे पता चल जायेगा।''

पति से जवाब सुनकर चुप तो हो गई शालू किन्तु मन में उथल–पुथल चलती रही। पति इतना कह कर तो सो गया किन्तु उसकी आंखों से मानो नींद रूठ कर न जाने कहां चली गई। रात भर वह अजीब–अजीब बातें सोचती रही। खुद ही सवाल पूछती और खुद ही उस सवाल का जवाब भी बन जाती। न जाने यह सब कब तक चलता रहा। रात गहराती गई और उसकी आंखें बोझल। सुबह घड़ी ने अलार्म दिया तो वह जाग गई। सात बज गये थे।

आशा के विपरीत आज उसकी सास नहा–धो कर रसोई में नाश्ता बना रही थी। यह देखकर शालू पहले तो हैरान हो गई और उसके बाद शर्म महसूस करने लगी। कुछ झिझकती सी वह रसोई में आ गई कि उसकी सास बोली, ''आओ बहू यह चाय ज़रा अपने ससुर जी को दे आओ। चुपचाप चाय की ट्रे उठाई उसने और दूसरे कमरे में ससुर के सामने रख दी। मन ही मन इस अजीबो–गरीब परिवर्तन से वह असमंजस में पड़ गई

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कि यह पश्चिम से कैसे सूर्योदय हुआ? जो सास उसके रहते कभी रसोई में झांकती तक नहीं थी वही आज इतनी स्नेहमयी कैसे बन गयी? ज़रुर कोई राज़ है फिर वापिस रसोई में आकर सास से बोली– "न जाने मैं इतनी देर तक कैसे सोई रही?" सास ने उसकी बात का जवाब बड़ी सहजता से दिया– "कोई बात नहीं। फिर क्या हुआ? मैं पहले जागी सो काम हो गया बस।" शालू इस उत्तर से और भी भयभीत हो गई। इस आकस्मिक परिवर्तन से ज़रुर किसी अनहोनी की गन्ध सी लगने लगी उसको। खैर, अपने आप में सिमटी सी शालू नाश्ता करने लगी। नाश्ते के दौरान उसकी सास ने कहा– "अब हम लोग आज हरिद्वार जा रहे हैं। कुछ दिन रहेंगे। उसके बाद निधि को भी अपने साथ लाते हुए घर आयेंगे। इच्छा तो मेरी यही थी कि तुम यहीं रहती परन्तु तुम्हारे पति को भी गांव में अकेले तकलीफ होगी। इसीलिए कल तुम लोग घर को अच्छी तरह से बन्द करके गांव जाओ। मैंने एक दो पड़ौसनों को घर का ध्यान रखने के लिए कहा है। वैसे भी घर में है ही क्या जिसके नुकसान होने का डर हो। फिर भी एहतियात ज़रुरी है। हां, तुम अपने साथ अपना ज़रुरी सामान लेती जाना, आगे प्रभु रक्षक है।" शालू चुपचाप सुनती रही और सोचती रही कि इस परिवर्तन का क्या कारण हो सकता है? नाश्ते के बाद उसकी सास उसे ज़रुरी हिदायतें देकर सामान बांधने अपने कमरे की ओर चल पड़ी। अब शालू कुछ राहत सी अनुभव करने लगी, क्योंकि अब वह रसोई में अपने चिर–परिचित रुप से काम कर रही थी। सब्ज़ियां बन रही थीं, क्योंकि ट्रेन का सफर है सास–ससुर तो रात का खाना साथ लेंगे। इस विचार से उसने फटाफट दो तीन सब्ज़ियां तथा पूरियां बनाई। काम में वह मस्त तो थी पर दिल के किसी कोने में एक विचार कुलबुलाता ज़रुर था और वह विचार था घर का आकस्मिक परिवर्तन। इस गुत्थी को वह अभी तक सुलझा न पाई थी।

दिन भर काम करती रही शालू और शाम को निश्चित समय पर सास–ससुर हरिद्वार यात्रा के लिए चल पड़े। विनय मां–बाप के साथ स्टेशन चले और वह घर में अकेली रही। सोचती रही – चलो ठीक तो है, अब दोनों कुछ शांत से लग रहे हैं। घूम फिर आयेंगे तो और भी सुधर जायेंगे। यद्यपि उनके इस बदलाव से हैरानी हुई है मुझे फिर भी चलो झिक–झिक से छुटकारा तो मिला।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चौदह

जम्मू स्टेशन से रवाना होने के बाद ट्रेन रात के सन्नाटे को चीरती हुई पड़ाव पर पड़ाव तय किये जा रही थी। अपनी रफ्तार में इधर शामरानी का मस्तिष्क भी पड़ाव दर पड़ाव आगे बढ़ा जा रहा था। आज उसे रह–रह कर बहू के प्रति अपनी बेरूखी तथा क्रूरताएं याद आ रहीं थीं। बेटी ने कहीं का नहीं छोड़ा, और वह खुद इस हद तक आगे चल पड़ी थी कि बेटे की दूसरी शादी करने पर तुली थी, पर बेटी क्या गुल खिलायेगी इसकी उसको भनक तक नहीं मिली। जब हर तरह से अधिकार छीने जाते हैं तो आदमी किस तरह अपने सम्मान की रक्षा के लिए छटपटाता है, यह उसे आज ही पता चला। कभी तो मन में आता कि किसी तरह बेटी का पता मिल जाता तो वह बिना सोचे समझे उसका कत्ल कर डालती। आज ज़रा भी विचार न आता उसे कि वह उसी का खून है –उसकी अपनी बेटी। किन नाज़ों से पाला था बेटी को। वाकई वह निधि को अपने जीवन की निधि समझे बैठी थी जो अब लूटकर ले गई उसकी सुख–शान्ति।

शामरानी के पति ने बड़ी देर तक उसे अपने विचारों से लड़ते हुए देखा। उसके चेहरे पर एक के बाद एक रंग आता और चला जाता था वह कभी इतनी उद्विग्न लगती कि उसके चेहरे की नसें खिंच जातीं और कभी इतने आंसू आ जाते कि सारा चेहरा धूमिल सा लगता। यह सब कुछ देखकर वह खुद भी बहुत दुखी हुआ! अपना हाथ बढ़ाकर पत्नी को सचेत किया –क्या सोच रही हो? जो होना था सो हो गया अब आगे की सोचो कैसे इन पापों से छुटकारा होगा?''

आं हां। वह जैसे सोते से जाग उठी और टुकुर–टुकुर पति का चेहरा देखने लगी विक्षिप्तों की तरह। इतने में टिकट चैकर आया और टिकट मांगने लगा। उसकी आवाज़ से दोनों बौखला से गये। घबराई नज़रों से उसको देखने लगे, मानों उसने उनकी चोरी पकड़ी हो। उन्हें इस तरह घबराते देखकर टिकट चैकर बोला– "अच्छे खासे शरीफ लोग लगते हो लेकिन सफ़र बिना टिकट के। अफसोस है आप जैसे शहरियों के लिए।''

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उसकी शिकायत सुननी थी कि श्याम लाल को जैसे होश आया। वह बोला, "आप गलत समझ रहे हैं। भाई! मैं कुछ परेशान सा ज़रूर हूं पर गैर ज़िम्मेदार नहीं। यह लीजिए हमारा टिकट" कहकर उसने टिक़ट दिखा दिये और टिकट चैकर हैरान सा होकर बोला –फिर आप मुझे देखकर घबरा क्यों गये थे ज़नाब।"

इस पर शामरानी बोली –हमारी जवान बेटी एक हादसे में गुज़र गई, जिसका इन्हें बड़ा सदमा हुआ है। इसीलिए कुछ परेशान रहते हैं।" इस पर उस डिब्बे में जितने लोग थे हमदर्दी जताने लगे और टिकट चैकर क्षमा मांग कर आगे बढ़ गया।

रात गहरा गई। सभी मुसाफिर ऊंघने लगे किन्तु वे दो मियां–बीवी बिल्कुल सो न सके। उनकी खुली आंखों में भय, पछतावा तथा वीरानी विराजमान थी। ट्रेन भागी जा रही थी दिल्ली की ओर। एक छोटा–सा स्टेशन आया, ट्रेन रूक गई। कुछ और यात्रियों के साथ एक पहचाना चेहरा भी दिखा उन्हें। दोनों उससे बचने का प्रयत्न करते रहे परन्तु ज्यों ही उसने देखा तो वह बढ़कर आगे आया और नमस्ते की जिसका उत्तर उन्हें न चाह कर भी देना पड़ा। क्या करते, यह पहचान वाला तो बहु के मायके की ओर का था। उसने पूछा वह कहां जा रहे हैं? जिसके उत्तर में उन्होंने अपनी हरिद्वार की यात्रा' का बहाना दोहराया। बात संक्षिप्त सी हुई किन्तु उस आगन्तुक को थोड़ी बेतुकी सी लगी। खैर! वह चुप लगा गया और ध्यान से उनकी गतिविधि को देखने लगा। सारी रात यही कुछ होता रहा, और दूसरे दिन प्रातः ही ट्रेन दिल्ली पहुंची और वे लोग उतरकर किसी होटल की खोज में चले गये।

उन दोनों ने ट्रेन से उतर कर चैन की सांस ली और आगे के कामों में उलझकर भूल भी गये। किन्तु वह पहचान का चेहरा यह सब नहीं भूला था। वह बराबर उनका पीछा करता रहा, जिसकी उन दोनों को पता भी नहीं चला। बड़ी खोज के बाद उनको आखिर एक धर्मशाला में ठहरने की जगह मिल ही गई। यह पता लगाकर उनका जानने वाला भी अपने गन्तव्य की ओर चल पड़ा।

रास्ते में चलते वह यही सोचता रहा कि कुछ दाल में काला है, नहीं तो वह लोग जो बड़े ही कंजूस और ज़ालिम किस्म के हैं –इस तरह तीर्थ यात्रा पर नहीं जा सकते क्योंकि उसे शामरानी का वह चेहरा बिल्कुल याद

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

था जब वह अपनी बेटी की शादी पर शालू के घर न्योता देने गया था। जी हां। यह शालू के वही मामा जी थे जिनकी लड़की की शादी पर यह लोग इसलिए शामिल हुए थे कि कुछ लेन–देन के नाम पर उन्हें लूटा जाये और अपने मकसद में पूरी तरह सफल भी हो पाये थे।

मामा जी बड़ी देर तक सोचते रहे और सोचते रहे उनके इस तरह गुम–सुम यात्रा का कारण पर हल कुछ भी नहीं मिल रहा था। अन्त में इस जिज्ञासा को मन में दबाते हुए वे अपनी बिटिया से मिलने चले गये। बिटिया के घर अच्छा स्वागत हुआ। जमाई राजा भी मिले। इधर–उधर की बातचीत के बाद उनके मुंह से रेल में मुलाकात की दबी–दबी सी बात निकल ही गई जिसे सुनकर बेटी तो हैरान सी और कमल कुछ अजीब सा अनुभव करता मिला। कमल ने एकदम सवाल ठोंक दिया –"क्या उन लोगों ने अपनी बेटी का ब्याह कर दिया?"

इस अप्रत्याशित प्रश्न के लिए मामा जी तैयार न थे, थोड़ा हैरान से हुए और उन्होंने प्रश्न का प्रश्न रूप में ही उत्तर दिया –"आप ऐसा क्यों पूछ रहे हैं?"

जमाई राजा ने सम्भलते हुए कहा –"अक्सर बेटी का ब्याह करके लोग यात्रा पर जाते हैं, इसीलिए पूछा था?"

पत्नी ने अपने पति से प्रश्न किया– "आप उनकी बेटी को कैसे जानते हैं?"

कमल ने एकदम उसकी ओर मुखातिब होकर कहा – "क्यों क्या वह हमारी शादी पर नहीं आई थी और तुम्हीं ने तो परिचय कराया था।"

पत्नी एकदम हथियार डालते हुए बोली –ओ हो। लेकिन उसकी शादी का विचार क्यों आया आपको?"

"यह भी एक ही रही। अरे बाबा उस वक्त तो वह कुआंरी ही लगी मुझे, तब से अब तक दो तीन वर्ष तो हो गये हैं, क्या उसे शादी नहीं करनी चाहिये थी"?

मामा जी दोनों की बहस को काटते हुए बोले –"ठीक है। ठीक है। शायद ऐसा ही होगा, पर मैंने उनसे पूछा ही नहीं। और अगर ऐसा होता तो भाई आखिर रिश्तेदारी है, वे ज़रूर पूछते। चूंकि ऐसा कुछ हुआ नहीं अभी तक फिर कैसे कहें कि...

"यह भी तो हो सकता है कि सब कुछ जल्दी में हो गया होगा।"

"हां ऐसा भी हो सकता है। वैसे यह लोग दूसरों को खिलाने–पिलाने वालों में नहीं हैं। ज़रूर ऐसा ही हुआ होगा।"

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"यहां दिल्ली में वह कहां गये होंगे?"

"बेटी। वे लोग स्टेशन से थोड़ी दूर तक धर्मशाला में ठहरे हैं। मैंने शक में पड़कर उनका वहां तक पीछा किया था।"

"अपने साथ ही उन्हें भी यहां लाते तो अच्छा होता।"

"नहीं बिटिया। वे लोग इस आदर–सत्कार के काबिल नहीं।"

"आपने बहुत अच्छा किया जो उन्हें यहां नहीं लाये।"

जमाई जी की यह बात सुनकर मामा जी सकपका से गये और कुछ न समझते हुए वह कमल की ओर देखते रहे। इस पर उनका जमाई अपनी बात समझाते हुए कहने लगा– "जिस तरह आप कहते हैं –ऐसे लोगों की मदद करना पाप है। इन्हें अपनी करनी का फल भोगने के लिए खुला छोड़ना चाहिए।" यह कहकर कमल ने अपना ब्रीफकेस उठाया और बोले –"अच्छा पिताजी आप आराम कीजिये मैं आफिस से हो आता हूं"।

घर से निकलते ही कमल ने निधि और राज के घर की राह ली। सारे रास्ते में वह सोचता रहा –ज़रूर वे बेटी को ढूंढने आये हैं। यदि कहीं उन्हें यह लोग मिलें तो गज़ब हो जायेगा। उसकी मदद, उसकी योजना –सब कुछ मटियामेट हो जायेगा। इसलिए उसे इस वक्त सबसे पहले उन्हें सचेत करना होगा। वह इसी तरह सोचता रहा कि गाड़ी निधि के डेरे तक पहुंच गई। कमल लपक के घर में दाखिल हुआ। राज चाय पी रहा था और निधि अपने ही विचारों में खोई बेमतलब सी खुली पुस्तक के पन्ने पलट रही थी।

कमल को एकदम अन्दर आते देखकर राज खड़ा हो गया और बोला– "आइए आइए, कमल साहब कैसे आना हुआ?" निधि भी सम्भल गई और हाथ जोड़ नमस्ते के बाद बैठ गई, चाय आदि की औपचारिकता के बाद कमल निधि से बोला– "मेरा विचार है कि तुम्हें सचेत अथवा सर्तक रहना चाहिए क्योंकि आज कल तुम दोनों की खोज हो रही है।

"हैं। क्या कहा खोज? कौन खोज रहा है हमें?"

दोनों बौखला कर एक साथ बोले।

जिसके जवाब में कमल ने उन्हें सारी जानकारी दी और उस धर्मशाला का पता भी दिया जहां निधि के माता–पिता ठहरे थे। बड़ी देर तक तीनों की बातचीत चलती रही। अन्त में फैसला यह हुआ कि राज को वे लोग नहीं जानते, पर राज ने उनको पहले भी देखा है। इसलिए राज जाकर उन्हें देख आयेगा और अपने ढंग से पूछ भी आयेगा। इस तरह उन दोनों को सचेत करके कमल अपने आफिस चला गया।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पंद्रह

उसी दिन शाम को राज निश्चित पते पर पहुंच गया। धर्मशाला खासी बड़ी थी जिसमें तरह–तरह के लोग थे, ऐसे में उन्हें ढूंढ पाना थोड़ी मुश्किल की बात थी, फिर भी राज ने सबसे पहले सारी धर्मशाला देखने का फैसला किया। अपने इस प्रयत्न में उसे कोई सफलता न मिली। फिर अपने को एक यात्री के रूप में पेश करते हुए वह धर्मशाला के प्रबंधक के पास उसके कक्ष में चला गया। वहां पर उसने ज्यों ही अपना काल्पनिक नाम देकर कमरा बुक किया, पास ही उसे झगड़े वाले कुछ ऊंचे–ऊंचे स्वर सुनाई दिये। वहां उपस्थित सभी लोग उन आवाज़ों की ओर आकर्षित हुए और वह भी उसी ओर मुड़ा –उसने देखा कि एक बुर्जुग सा आदमी दुकानदार से शिकायती स्वर में कुछ कह रहा था। ज्यों ही वह कुछ नज़दीक आया तो उसके आश्चर्य की सीमा न रही क्योंकि शिकायत करने वाला यात्री कोई और नहीं निधि के पिता श्याम लाल ही थे जो दुकानदार से किसी महंगी चीज़ की शिकायत कर रहे थे और दुकानदार उत्तेजित हो रहा था। राज ने बीच में आकर उन दोनों का झगड़ा निपटा दिया। फिर श्याम लाल को अपने कमरे में लाकर चाय पिलाई और बातों–बातों में उनके दिल्ली आने का कारण पूछ ही लिया –"आप यहां किस सिलसिले में आये हैं?"

वृद्ध इस प्रश्न से चौंक सा गया। उसने उसे घूर कर पूछा –"भाई यात्री हूं –हरिद्वार जाना है। अगर में पूछूं कि आप कैसे आये हैं यहां तो?"

"जी हां। आप अवश्य पूछ सकते हैं। मैं बेकार हूं और नौकरी की तलाश में यहां आया हूं। बस हो गई आपकी तसल्ली।"

श्याम लाल ढीला पड़ गया, "माफ करना बेटा, मेरा स्वभाव कुछ गर्म है। अगर तुम्हें मेरा पूछना अच्छा न लगा हो तो माफ कर देना।"

"कोई बात नहीं चाचा जी। जब ज़िंदगी के बेहूदे सवालों को हल

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

करते थके नहीं तो आपके सवालों से कैसे खीज होगी? जाने दीजिये सब चलता है।''

''यह तुमने ठीक कहा। पर यहां से कहां जाने का इरादा है तुम्हारा?''

"अभी दो–तीन दिन यहीं रहूंगा, दो एक इन्टरव्यू देने हैं। उसके बाद भाग्य जहां ले जाये। आप अकेले हैं तो यहीं रहिए मेरे साथ।"

''नहीं बेटा मैं अकेला नहीं। मेरे साथ मेरी धर्मपत्नी है। चलो मैं तुम्हें उनसे मिलवा दूं।"

अन्धा क्या चाहे दो आंखें। वह एकदम तैयार हुआ और दो एक गलियारों को पार करके एक छोटी सी कोठरी में पहुंच कर वृद्ध ने उसे कहा– "आओ बेटा। इधर ही ठहरे हैं हम"।

राज ने अन्दर आते ही शामरानी के पैर छुए और एक आज्ञाकारी बालक की तरह नमस्ते की। तब बूढ़े ने सारी बात पत्नी को विस्तार से सुनाई। सुनकर शामरानी ने राज से कहा– "बेटा, तुम बेकार हो इसलिए उस कमरे पर काफी खर्च आया होगा –नहीं तो तुम कमरा वापिस करके यहीं हमारे साथ आकर ठहरो। हम भी तो यहाँ एक दो दिन ठहरेंगे। फिर हरिद्वार जायेंगे।''

''चाची जी, क्या आपका दिल्ली में कोई संबंधी नहीं जो आप धर्मशाला में ठहरी हैं?''

''संबंधी क्यों नहीं हैं। बहुत हैं। पर यात्रा में चले हैं तो संबंधियों को कष्ट देना उचित नहीं। उस यात्रा का फल भी तो नहीं मिलता।''

''यह दलील बहुत पुरानी हो चली है। अब यह बातें मानी नहीं जाती। आप को अपने किसी संबंधी के घर जाकर ठहरना चाहिए था। खैर!''

"तुम तो मेरे विनय जैसे हो, तुमसे क्या छिपाना, आजकल संबंधी भी किसी बिन बुलाये मेहमान् को पसन्द नहीं करते हैं।''

श्याम लाल अभी तक चुप था, अब बोला –''तुम लोग जाने क्या ले बैठे। कोई चाय–शाय तो पूछी नहीं, बस बहस शुरू हो गई।''

शामरानी सचेत सी हुई और ममता भरे शब्दों में बोली– "आज रात का खाना हमारे साथ ही खाओ बेटा।''

कुछ और जानने के गरज़ से राज ने कोई उत्तर न देकर निमंत्रण स्वीकार कर लिया। शामरानी स्टोव जलाकर खाना बनाने में व्यस्त हुई और

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

राज श्याम लाल के साथ बात करता रहा –चाचा जी। आप कश्मीर में कहां रहते हैं?"

''हब्बा कदल में, क्यों?''

''बस यों ही।''

''और तुम कहां रहते हो?''

''जी मैं नई सड़क पर। हमें राज़दान कहते हैं और आपको?"

''हमें काक कहते हैं। हम कश्मीरी लोग हैं ही कितने, घूम फिर कर कहीं न कहीं कोई न कोई रिश्ता ज़रूर निकल आता है। तुमने राज़दान कहा और नई सड़क का नाम लिया तो मुझे एकदम याद आया कि राज़दानों के यहां तो मेरी बुआ की लड़की ब्याही थी। क्या तुम शिवजी राज़दान की फेमली से हो?"

अब राज के चौंकने की बारी थी कि उसने फटाफट अपने झूठे दिये पते पर स्वीकृति की मुहर लगा ली। इस पर श्याम लाल और उत्साहित होकर पूछने लगा–

''क्या नन्दलाल ने दुबारा शादी की थी?''

इसका क्या जवाब दे राज? उसे जब मालूम ही न था तब भी बड़ी सफाई के साथ उसने कहा– "मेरे पिता जी हमेशा गांव–गांव घूमते रहे नौकरी के सिलसिले में, इसलिए हम बच्चों को उन लोगों की सही जानकारी नहीं है।'' पर श्याम लाल चिन्तित होकर बोला– "उस खानदान में तो केसर की बिज़नेस इस कदर फैली थी कि सात पुश्तों तक नौकरी का सवाल ही नहीं उठता –फिर तुम्हारे पिता को नौकरी क्यों करनी पड़ी?''

इस बात का क्या जवाब दे राज? कुछ देर सोचकर उसने कहा –घरों में बहुत सारे झगड़े हुआ ही करते हैं, किस घर में ऐसा नहीं होता? इसीलिए पिता जी को पुश्तैनी कारोबार छोड़ कर नौकरी करनी पड़ी।''

''जब तक असलीयत सामने नही आती तब तक तो गलतफहमी में रहना स्वाभाविक है। तुमने असलियत बता दी, नहीं तो मुझे उनके बड़े साहूकार होने की ही गलतफहमी रहती। खैर कोई बात नहीं भगवान् शक्ति दे तो आदमी मेहनत–मशक्कत करके दो वक्त रोटी तो कमा ही सकता है।''

राज थोड़ा सा गंभीर हो गया, जिस पर शामरानी ने कहा – "तुम दुखी मत हो बेटा, हर किसी के साथ किस्मत अपने अपने ढंग से मज़ाक

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

करती है। तुम्हें दुःख है कि इतने अमीर होने के बावजूद भी तुम नौकरी की तलाश में भटक रहे हो, मुझे दुःख है कि हर तरह से सुखी होने पर भी सुख की तलाश में हूं। बेटा है तो लेकिन उसकी अपनी दुनिया है। और बेटी (थोड़ी गहरी सांस लेकर) उसकी अपनी दुनिया। अब तुम ही बताओ सुखी कौन है?''

राज भांप गया कि न कहने के उपरान्त भी शामरानी बहुत कुछ कह गई। यद्यपि उसने और कुरेदना अच्छा नहीं समझा फिर भी उत्सुकतावश पूछ ही बैठा, "चाची जी, यदि बुरा न लगे तो आपके बच्चे खुश हैं, तो आपको और क्या चाहिए। फिर किस सुख की इच्छा रखती हैं आप?''

इस पर श्याम लाल बोला, ''वे दोनों अपनी–अपनी घर गृहस्थी में रम गये। हम बूढ़ों की सुध ही नहीं ली। क्या यह दुःख नहीं?''

''अगर आप इसे दुःख मानते हैं तो अवश्य यह दुःख है, नहीं तो यह एक सामान्य सी बात है। बेटे की शादी हुई तो निश्चय ही उसकी ज़िम्मेदारी बढ़ी और बेटी की शादी हुई तो निश्चय वह अपने घर जायेगी आपके पास तो नहीं रहेगी ना, फिर दुःख है तो किस बात का?''

राज की इस बात से दोनों सकपका गये और एकदम बोले, ''वह सब तो ठीक है भाई पर हमारी बिटिया जबसे गई तबसे उसने हमारी कोई खबर नहीं ली।''

''आप मुझे पता दें मैं उन्हें पूछूंगा।''

''पता ही तो नहीं मालूम भाई।''

''क्या मतलब?''

सुनकर दोनों संभल गये। तब शामरानी बोली –''शादी के फौरन बाद हमारा दामाद और बेटी दोनों फौरन चले गये। इसलिए तुम उन्हें कहां ढूंढोगे बेटे।''

''अच्छा तो यह बात है। कोई नहीं उनकी ससुराल से पता मंगा कर उन्हें चिट्ठी लिखिये।''

''हां बेटा अब यही करना होगा। अब रात बहुत हो चुकी। अब सो जाना चाहिए।

"हां। हां। मैंने भी सुबह इन्टरव्यू पर जाना है। अच्छा नमस्कार।''

''नमस्कार।''

कहकर राज रात के ग्यारह बजे अपने घर की ओर चला।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सोलह

रात के लगभग ग्यारह बज गये पर अभी तक राज का कोई पता न था। निधि अन्दर ही अन्दर अनजान आशंका से घबरा रही थी। न जाने क्या–क्या विचार आ रहे थे उसके मन में। तभी रात के सन्नाटे को चीरती हुई डोर बैल बज उठी। आवाज़ सुनते ही वह और भी घबरा उठी। कुछ देर सोचती रही पर घंटी के और ज़ोर से बजने से उसकी तन्द्रा टूटी और उसने लपक कर दरवाज़ा खोल दिया। सामने राज को पाकर उसकी जान में जान आई। पर न जाने क्यों उसकी आवाज़ ही जैसे बन्द हो गई। उसने चाहकर भी राज से कुछ न पूछा। बस केवल टुकुर–टुकुर देखती रही। बड़ी देर तक यह अवस्था रही। तब राज ने मौन तोड़ा– "यह क्या अजनबियों की तरह केवल देखे जा रही हो? क्यों पहचानती नहीं क्या? मैं हूं राज। होश में आओ" कहकर राज ने उसे कन्धे से पकड़कर हिलाया तब कहीं उसको होश आया और बोली, "आ गये तुम।"

"हां मैडम। हम आ गये अपने संबंधियों से मिलकर।"

"सच"।

"हां बिल्कुल सच।"

"कुछ पता चला कैसे आये हैं?"

"कह रहे थे हरिद्वार यात्रा करने चले हैं।"

"मेरे बारे में कोई बात हुई?"

"नहीं। न उन्होंने कहा और न ही मैंने पूछना उचित समझा। वैसे देखने में खासे परेशान लगते थे।"

यह सुनकर निधि ने ठण्डी सांस ली। शायद अब उसे अपने इस तरह भागने से बुरा लगने लगा था। काश! वक्त वापिस मुड़ता और वह अपनी की हुई गलती से तौबा करती।

"क्या सोचने लगी हो अब?"

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"कुछ नहीं। तुम्हारे लिये खाना लगा दूं।"

"नहीं मैं खाकर आया हूं। तुम खाओ।"

"तुमने कहां खाया। झूठ क्यों बोलते हो? चलो थोड़ा–थोड़ा खा लेते हैं।"

"नहीं सच मैंने खाया और वह भी तुम्हारी मां के हाथों से बना हुआ।"

"सो कैसे?"

"मैं उनसे पता करने के बहाने, उनसे झूठ बोला कि इन्टरव्यू के सिलसिले में दिल्ली आया हूं और इसी धर्मशाला में ठहरा हूं। सो उनको मेरे पर थोड़ी दया आई और अपने साथ खाना खिलाया।"

"जो उनको तुम्हारी असलियत पता चलती तो जानते हो क्या होता?"

"जानता हूं, मैंने हर हाल में काफी होशियारी बरती है। सो उन्हें कुछ भी पता नहीं चलेगा। तुम इतमिनान रखो।"

"अच्छा। अब हमें क्या करना चाहिए?"

"हमें अभी यह दो चार दिन बाहर नहीं निकलना चाहिए, समझी।"

"ठीक है। इस बीच यदि हुड़कर की काल आई तो?"

"कोई बात नहीं, कमल से कहकर डेट बदलवाई जा सकती है।

"अच्छा रात काफी हो चली है अब सो जाओ।"

उसने कह तो दिया पर उसकी आंखों रो नींद जैसे रूठ गई थी। अपने बिस्तर पर करवट बदलती रही निधि, और विचारों का तांता सिलसिलेवार चलता रहा –कितनी बदनसीब है वह जो कई महीनों के बाद मां के नज़दीक होने पर भी उनसे नहीं मिल पा रही। यदि वह राज के साथ ब्याही गई होती तो इस समय मां–पापा दोनों उसके मेहमान होते और वह इठला–इठला कर अपने सुखी जीवन का ब्योरा देती होती। पर कभी किया हुआ कोई अहम् फैसला किस तरह जीवन को मोड़ ही देता है दूसरी ओर –यह उसे आज की अपनी लाचारी से पता चल रहा था।

क्या मां–पापा दोनों को उसका घर से भागना बुरा नहीं लगा होगा। कौन जाने कि इन्होंने शुक्र ही मनाया होगा चलो पिंड छूट गया, नहीं तो शादी ब्याह में खर्चे करने पड़ते –लेकिन क्या उन्हें अपनी इज़्ज़त प्यारी नहीं होगी। न जाने किस–किस ने क्या–क्या प्रश्न किये होंगे, किस तरह सहा होगा इन्होंने वह सब। पर मैं भी क्या करती उस वक्त तो भागने में ही अपनी खैर थी। काश! मैं उस समय गर्भवती न होती। तब शायद मैं इस

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तरह न भागती। एक तरह से ठीक ही हुआ। मैंने अपनी मां द्वारा भाभी पर किए गए तरह–तरह के जुल्म खुद देखें हैं। यह लोग इसी काबिल थे। अब इनको भी पता चला होगा कि दूसरों के पास भी दिल नाम की चीज़ होती है। फिर भी मेरे इस तरह भागने से दोनों की कमर ही टूट चुकी होगी। राज कह रहा था कि वे काफी परेशान दिख रहे थे। खैर अब क्या हो सकता है? भुगतने दो उन्हें। मुझे इस तरह छिप जाना चाहिए कि उन्हें मेरी गर्द तक न मिले। ढूंढ–ढांढ के थक हार के आखिर वापिस चले ही जायेंगे कश्मीर किसी दिन।

वक्त हर तरह के ज़ख्म भर देता है। कुछ अरसे में यह भी भूल जायेंगे। मुझे भी इन्हें भूलने का प्रयत्न करना चाहिए। केवल तभी मुझे सफलता मिल सकती है। नहीं तो असफल ज़िन्दगी का कोई महत्व नहीं।

इसी तरह सोचते–सोचते वह कब सो गई उसे पता ही न चला। दूसरे दिन सुबह जब उसकी आंख खुली तो सूरज काफी चढ़ आया था। राज काम पर निकल चुका था। वह अलसाई सी उठी नित्य क्रिया से निपट कर नाश्ता करने लगी। उसे अपने शरीर में काफी कमज़ोरी सी महसूस हुई जैसे उसका अंग–अंग टूट रहा था। उसने पेन किलर लिया और फिर सो गई।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सत्रह

शालू अब पहले जैसी शालू न थी। उसने भी मन में ठान रखी थी कि विनय के गांव पहुंचते ही वह इस रहस्य का पता लगायेगी। इसलिए यह एक दो दिन उसने इस विषय में सोचना बन्द किया। केवल यन्त्र की तरह काम करती रही। इस मे कोई सन्देह नहीं कि शालू के दिल के किसी कोने में सन्देह सुबक रहा था और रह–रह कर प्रश्न किये जा रहा था कि ऐसा असंभव सा परिवर्तन क्यों कर हुआ था सासू जी में, घर में और यहां तक कि उसके पति परमेश्वर में भी। कभी यह विचार भी आता था कि शायद उसे छुटकारा पाने के लिए यह लोग इस तरह पेश आ रहे हैं। क्योंकि इस बात का तो उसको पूरा यकीन हो गया था कि उसके सास–ससुर विनय की दूसरी शादी करना चाहते हैं। उसे सास–ससुर का घर छोड़ यात्रा पर जाना सहज नहीं लगता था। खैर! उनके जाने के बाद उसके पति का भी बहुत अच्छा बर्ताव रहा उसके साथ– जिसकी वह आदी न थी, इस कारण उसे अपनी सुरक्षा की भी चिन्ता होने लगी। वह चौकन्नी रहने लगी और सदा इस प्रतीक्षा में रही कि अब पति तलाक के कागज़ों पर दस्तख्त लेने आयेंगे। यदि ऐसा हुआ तो उसे क्या करना चाहिए? वह घंटों सोचती। वह हस्ताक्षर नहीं करेगी उसने प्रण कर लिया। लेकिन फिर भी न जाने वह अधीर क्यों रहने लगी।

कभी उसके मन में यह भी डर पैदा होता कि शायद विनय उसकी हत्या कर देंगे क्योंकि तभी तो वह दूसरी शादी कर सकेंगे। इस चिन्ता के मारे उसको नींद भी नहीं आती थी। दुश्चिन्ता और असुरक्षा की भावना से शालू दिन प्रतिदिन कमज़ोर होती गई।

किलम गांव आये हफ्ता भर हो गया था पर शालू अभी तक अपनी उलझन से छुटकारा न पा सकी थी। रोज़ यही सोचती कि विनय के आते ही पूछ लेगी। पर तभी डर लगता कि कहीं इस तरह बात तूल न पकड़ जाये। इसलिए कई सवालों के दंश लिए वह अपने होंठ सिये पड़ी रहती।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आज विनय रोज़ से कुछ पहले ही घर लौट आया था, पर शालू को अस्तव्यस्त पाकर हैरान सा रह गया। बड़ी कोमलता से उसने पूछा– "शालू तुम ठीक हो ना?"

शालू को जैसे करंट लग गया वह एकदम सिमट कर बैठ गई और हकलाये स्वर में जवाब दिया –ठीक हूं, ठीक हूं।" उसके इस उत्तर से विनय और भी हैरान हुआ। उसने कहा– "लगता है तुम बीमार हो, क्यों?

"न...न.. मैं ठीक हूं। चाय बनाऊं आपके लिए।"

"ठहरो आज मैं बनाता हूं। तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं लगती आज।"

"नहीं ठीक हूं। मैं बनाती हूं" कहती हुई वह रसोई में चली गई। विनय भी पीछे–पीछे आ गया। वह और भी घबरा गई। यह देखकर विनय ने उसे कंधों से पकड़कर पूछा– "क्या बात है शालू तुम इतना घबरा क्यों रही हो?"

"को... कोई बात नहीं।"

"तुम कहती क्यों नहीं। मैं कोई हौआ थोड़े हूं, जो तुझे खा जाऊंगा। बता ना क्या बात है? तुझे मेरी कसम।"

इतना सुनना था कि शालू फूट–फूट कर रो पड़ी। विनय उसकी यह हालत देखकर और भी परेशान हो गया। थोड़ी देर तक वह रोती रही फिर एक दम चुप हो गई। तब विनय ने फिर कसम दी जिस पर वह रोते–रोते कह उठी – "मैं तुम्हारा कुछ भी नहीं बिगाडूंगी। तुम शादी करो मैं कुछ न कहूंगी, पर मुझे यहां ही पड़ी रहने दो, प्लीज़।"

"तुम्हें किस बेवकूफ ने कहा कि मैं शादी करूंगा। तुम्हें यह वहम क्यों हो रहा है? क्या मैं तुम्हारे साथ प्यार नहीं करता?"

"यह सारे लोग घर के बदल क्यों गये हैं। तुम भी आवश्यकता से अधिक ही...।"

"ओह, तो यह बात है। अच्छा भई कल से डिक्टेटर बनूंगा, ठीक!"

"नहीं। मुझे सब बदला–बदला सा क्यों लग रहा है। मां जी भी मुझ से अलग ही व्यवहार क्यों करती रहीं, बाबू जी भी दूर–दूर से। ऐसा क्यों हुआ विनय?"

सुनकर विनय बड़ी देर तक सोचता रहा। फिर एकदम फूटे नाले की तरह बह चला "पगली वे सब अपनी करनी को रो रहे हैं। तुम्हारे साथ हाथ भी कोई लगाये तो बता दूं उन्हें। तुम्हारा वहम है और कुछ नहीं।"

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"फिर वे लोग बिना कार्यक्रम बनाये चल क्यों दिये? और तुम दो दिन के बाद गांव आये जबकि मुझे मेरे मायके में दूसरे दिन ही चलने को कहा था।

"वह इसलिए कि मेरे मां–बाप तुम्हें इस विपत्ति की सूचना देना नहीं चाहते थे जो उन पर टूट पड़ी है।"

"कौन सी विपत्ति? –क्या कहते हैं आप?"

"हां शालू। मैंने भी नहीं चाहा था कि तुम्हें कहूं। पर अब तुम्हें अजीब–अजीब वहम हो रहे हैं, इसलिए मजबूर होकर तुम्हें कहना ही पड़ेगा।"

"क्या?"

"यही कि निधि नानके नहीं गई है बल्कि किसी के साथ भाग गई है।"

"हैं...?"

"हां शालू! अब मेरे मां–बाप दोनों को स्वयं ही अपने किये की सज़ा मिल चुकी है। इसलिए हो सके तो तुम उन्हें उनकी ज़्यादती के लिए क्षमा कर दो।"

"क्या आप लोगों ने उसे ढूंढने की कोशिश नहीं की?"

"जाते वक्त निधि ने एक पत्र छोड़ रखा था जिसमें उसने लिखा था कि वह बालिग हो चुकी है और अपना भला–बुरा समझ सकती है, इसलिए कोई भी उसक ढूंढने का असफल प्रयत्न न करे। इसलिए हमें चुप रहना पड़ा। वास्तव में वे लोग यात्रा पर न जाकर उसी को ढूंढने चले हैं। समझी तुम?"

"मेरे से इतनी बड़ी बात क्यों छिपाई आपने? क्या मैं इस घर की सदस्य नहीं हूं?"

"है और अवश्य है। लेकिन मेरी मां अपनी करनी के लिए शर्मसार है। वह अब तुम्हारे सामने और शर्मिन्दा नहीं होना चाहती थी। इसीलिए मैं भी चुप कर गया। उसने अपनी जहालत में चाहे कितने सितम किये हों हम पर, पर हमें उसके आदर का विचार करना ही चाहिए। मैं जानता हूं कि वह तुम्हारे पीछे क्या–क्या षड़यंत्र रचती थी। लेकिन तब भी मेरी मां थी, मैं उसको कैसे सज़ा दे सकता था। अब देखो ईश्वर की लाठी कितनी कठिन और कठोर होती है।"

"क्या हमारा फर्ज़ नहीं बनता कि निधि की खोज–खबर निकालें?"

"सुनो! अगर वह किसी के साथ भाग गई है अपने सुख के लिए ही ना, तो उस पर ज़बरदस्ती करके उसे दुबारा इस नर्क में धकलने में क्या तुक है? भूल जाओ। वक्त सबसे बड़ा मरहम है। सब ठीक हो जायेगा।"

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अठारह

दूसरे दिन दोनों शामरानी और श्याम लाल धर्मशाला से निकल कर हरिद्वार की ट्रेन पर सवार हुए। दोनों गुमसुम से अपने विचारों में खोये हुए थे। बस हूं हां से उनकी उपस्थिति का भान हो रहा था। बीवी सोच रही थी – न जाने कब निधि में हमारे बारे में परिवर्तन आ गया। मैं तो चाहे बहू के साथ जैसे भी व्यवहार करती थी पर उसको तो सदा फूलों की तरह सहेजा था। मेरे लाड़ और प्यार का क्या यही नतीजा था। मैं तो उसी के लिए सोच रही थी। उसे इस तरह की बदनामी गले लगाने की क्या ज़रूरत थी, मैं भी तो उसकी शादी करती। पर कौन जानता था कि उसको शादी की इतनी जल्दी पड़ी थी।

और निधि का पिता सोच रहा था –– मुझे सदा इस औरत ने गलत सोचने और गलत करने पर मजबूर किया। बहु पर आये दिन जुल्म ढाते तो यह थकती नहीं थी और न ही मुझे कभी यह विचार आता कि मेरी अपनी ही लड़की मेरे मुंह पर कालख मलेगी। कई बार निधि ने हमें टोकने की कोशिश भी की पर हम पर कभी कोई असर नहीं हुआ। हमने कभी इस बात पर ध्यान नहीं दिया कि लड़की जवान हो गई है और हमें उसकी शादी का कुछ सोचना चाहिए। वक्त पर सोचा होता तो शायद वह हमारा मुंह काला करके भाग न जाती। अब उसे ढूंढू भी तो कहां? और अगर मिल भी ज़ाती है तो उस पर सख्ती भी तो नहीं कर सकता। उसने अपनी चिट्ठी में साफ–साफ लिखा है कि वह बालिग हो गई है इसलिए हमारा उस पर कोई ज़ोर नहीं चलेगा। और फिर हमने उसके लिए किया भी क्या जो उससे नम्रता की उम्मीद रखें। अब इस मेरी बीवी को ज़रूर अक्ल आयेगी, पर वक्त तो चला गया। कहां यह लड़के की दूसरी शादी करवा रही थी और बहू को मारने की योजना बना रही थी और कहां अब खुद मर गई

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

है बदनामी और भय के डर से! मन में आता है कि इसको यहीं भीड़ में छोड़कर कहीं भाग जाऊं। कितनी लालची है यह और अब अपने लालच की चपेट में मुझे भी डुबो गई।

वह और भी न जाने क्या-क्या सोचता कि चलती ट्रेन रूक गई और उसकी बीबी ने उसे बोतल थमाते हुए कहा "ज़रा इसमें पानी भर के लाओ। न जाने कौन सा स्टेशन है।"

उसकी तन्द्रा टूट गई और उसने खिड़की से गर्दन बाहर निकालकर देखा। अन्धेरे में कुछ दिखाई नहीं दिया। चुपचाप बोतल ली और उतर कर पानी भरने चला। वापिस आते समय उसकी नज़र सामने के बुकस्टाल पर पड़ी, सोचा — मैं न जाने क्या-क्या सोच कर परेशान हो रहा हूं क्यों न एक मैगज़ीन खरीद लूं ताकि वक्त भी कट जाये और परेशानी भी दब जाये। वह लपक के स्टाल पर पहुंचा और एक हिन्दी की पत्रिका खरीद ली। इतने में ट्रेन की सीटी बजी और वह वापिस अपनी सीट पर आ गया। इस बीच उसकी पत्नी ने ट्रेन में नमकीन दाल का एक पैकेट खरीद लिया था। सो उसने उसे पैकेट में से थोड़ी सी दाल दी और खुद भी खाने लगी। वह दाल खाता हुआ पत्रिका के पन्ने पलटने लगा कि एक विज्ञापन पर आकर नज़रें अटक गई। वह दाल खाना भूल गया और निर्मिमेष विज्ञापन देखता रहा। विज्ञापन श्रंगारिक प्रसादन का था जिसमें एक युवती अर्ध नग्न हो उस प्रसादन का प्रयोग करती दिखाई गई थी। उस युवती की शक्ल हूबहू उसकी निधि से मिल रही थी। लेकिन उसकी बेटी कभी इस तरह आधे अधूरे कपड़ों में नहीं होती थी, सो मन को विश्वास दिलाया कि दुनिया में एक ही जैसी शक्ल-सूरत के कई लोग होते हैं। यह लड़की बड़ी बेहया है जो इस तरह से अपने अंग दिखा रही है। उसकी बेटी कभी ऐसा कर ही नहीं सकती। और तो और इसकी आंखें तो भूरी हैं, निधि की ऐसी आंखे नहीं। वह तुलनात्मक दृष्टि से अभी परख ही रहा था कि उसकी बीबी शामरानी की नज़र पत्रिका के उस खुले पन्ने पर पड़ी और एकदम उसकी चीख निकलते-निकलते रह गई। वह लाचार सी पति की ओर देखकर बोली — "निधि है। पता देख लो। चलेंगे उसको वापिस लाने के लिए।"

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

श्याम लाल ने पत्नी की बात को बड़े धीरज के साथ सुन लिया तब धीरे से बोला –– "यह निधि नहीं कोई और है। और अगर निधि भी होगी वह अब वापिस उस नर्क में आ न सकेगी। भूल जाओ उसे वह हमारे लिए मर गई है।" इतना कहने के बाद वह फूट–फूट कर रोने लगा और उसकी पत्नी स्तम्भित सी पत्रिका को देखती रही। सारा वातावरण उन पति–पत्नी के लिये जैसे अपरिचित हुआ जा रहा था। ट्रेन अपनी गति से भागी जा रही थी समय उन दोनों के लिए जैसे ठहर सा गया था।

ऊपर बर्थ पर सोया एक मुसाफिर उनकी कुछ बातें सुनकर तथा उनकी अजीब दशा देखकर शंकित सा हुआ। बड़ी देर तक उन्हें ध्यान से देखने के बाद उसने श्याम लाल से कहा –– "मच्छर बड़े हैं। मुझे तो नींद नहीं आती, क्या आप भी ऐसा ही अनुभव करते हैं?"

"हां। आं।"

"कहां जा रहे हैं आप?"

"हरिद्वार"

"मैं भी वहीं जा रहा हूं। मेरा बच्चा बाईस साल का था। वह मण्डल एजिटेशन के दौरान शहीद हुआ। उसी की क्रिया करने जा रहा हूं और आप?"

"हम भी अपनी लड़की की क्रिया करने जा रहे हैं।"

"उसकी मौत कैसे हुई?"

"उसको सांप ने काटा था"। उसकी बीबी ने एकदम कहा –– कहीं उसका पति कुछ और न कहे यही सोचकर।

"कितनी बड़ी थी?'

"यही कोई बीस साल की थी। कहां सोच रहे थे कि उसके हाथ पीले करेंगे और कहां वह दुनिया ही छोड़ गई।" शामरानी सिसक–सिसक कर रोने लगी।

"छोड़िये बहन जी। उसका इतना ही साथ था आपकी किस्मत में। अब क्या पछताना?"

निधि का पिता श्याम लाल बोला –– "आज इतने महीनों बाद यह पत्रिका देखी तो देखता ही रह गया। मेरी बेटी बराबर इसी मॉडल

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

की तरह सुन्दर थी।'' वह भी रोने लगा।

. ''बड़ा जुल्म हुआ आपके साथ। वैसे यह इस कम्पनी की नई मॉडल है और बड़ा तहलका मचाया है इसने विज्ञापन की दुनिया में''।

''आप कैसे जानते हैं इसे?''

"अरे भई व्यापारी हूं और ऐसे लोगों से परिचय तो रखना ही पड़ता है। वैसे हरिद्वार से लौटकर मैं इस कम्पनी में जाना चाहता हूं। सोचता हूं इस पर एक टी.वी. का विज्ञापन बना दूं पर सुना है काफी हाई रेट हैं इसके।"

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उन्नीस

आज पहले विज्ञापन से इतनी ख्याति पाकर निधि लगभग अपना अतीत भूल ही गई थी। उसे एक तरह से बड़ा अच्छा लग रहा था। उसे जैसे विश्वास ही नहीं आ रहा था अपनी किस्मत पर कि रातों रात उसकी किस्मत इस तरह चमकेगी।

आज राज भी प्रसन्न था और सोच रहा था कि एक तरह से तो उसने निधि का साथ देकर अच्छा ही किया। नहीं तो आज भी वह नौकरी के चक्कर में दर–दर की खाक़ छान रहा होता। पर इस खुशी के साथ ही साथ उसके दिल के किसी कोने में मां के साथ अपना विश्वासघात सिर उठा रहा था। मां की याद आते ही उसे लगता कि उसने बूढ़ी मां को छोड़कर अच्छा नहीं किया। न जाने किस हाल में होगी वह। बेचारी न जाने ज़िन्दा भी होगी या। वह अभी न जाने और क्या–क्या सोचता कि निधि ने उसकी तन्द्रा तोड़ डाली ––राज, अब हमें अपना घर खरीदना चाहिए। तुम्हारा क्या खयाल है?''

"आं हां। ठीक है। खयाल कोई बुरा नहीं। लेकिन जब तक कमल साहब न आयें, हमें इस तरह की कोई जल्दी नहीं करनी चाहिए।''

''तुम तो बस कमल साहब के चेले ही बन गये। क्या हमने अपने बारे में कभी सोचा है? – या हमारी प्राइवेट लाइफ भी कमल साहब की ही मोहताज रहेगी? तुम बस''

''देखो निधि तुम एकदम भूल चुकी हो कि कमल साहब ने ही हमें बुरे दिनों में सहारा दिया है, इसलिए हमें ऐसा कोई काम नहीं करना चाहिए जिससे उन्हें दुःख पहुंचे।''

''मेरा मतलब उन्हें दुःख देने का नहीं है, बल्कि मैं सोचती हूं कि अब हमें उन्हें और तकलीफ़ नहीं देनी चाहिए।''

''ठीक है। ठीक है। तुम ऐसा सोचती हो तो करेंगे कुछ। पर

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एकदम ही ऐसा होने से रहा ––कुछ तो समय लगेगा ही।''

''मैं कब कहती हूं कि अभी होगा पर खोजना शुरू करेंगे तो मिलेगा ना। नहीं तो...''

''किसे खोजा जा रहा है हम भी तो सुनें'' कहता हुआ कमल कमरे में प्रवेश कर गया। दोनों सकपका से गये। तब थोड़ा सम्भल कर राज बोला – ''हम सोच रहे थे कि अब हमें एक घर खरीदना चाहिऐ।''

''क्यों इस घर में क्या खराबी है?''

''आखिर कब तक आपके घर में बैठे रहेंगे?'' उत्तर निधि ने दिया।

''यह आप बोल रही हैं। ठीक है जाइए"।

''आप नाराज़ हो गये कमल भाई''। राज ने थोड़ी खुशामद की।

''नहीं राज मैं नाराज़ नहीं हो रहा। बल्कि आप लोगों का फैसला सही है। कहिए कब शिफ्ट कर रहे हैं?''

''अभी तो मकान देखा नहीं। मिल जाये जब।''

''तो मेरी यह तजवीज़ है कि जब तक आपको मकान नहीं मिलता आप पहले की तरह ही यहां रह सकते हैं। अब तो निधि जी आपका स्टैट्स काफी बढ़ गया है, इसलिए मकान भी हैसियत के मुताबिक ठीक जगह पर ढूंढ़ना होगा। चलिए अगर आप इसे एहसान न समझें तो इस मामले में मैं आपकी सहायता कर सकता हूं।''

''आपने समय–समय पर हमारी सहायता की है। अब एहसान जताने की आवश्यकता मैं समझती हूं नहीं होनी चाहिए। पर। आप किस तरह इस मामले में हमारी मदद करेंगे?''

''मैं एक ब्रोकर को जानता हूं उन्हीं से सम्पर्क करना होगा।''

''ठीक है जैसा आप अच्छा समझें''

''वास्तव में मैं आपको सफलता की बधाई देने आया था। क्या ट्रीट न दीजियेगा?''

''आप मालिक हैं। ट्रीट की क्या कही। हुकुम कीजिये क्या लेना चाहेंगे'' राज एक ही सांस में कह गया। इसके उत्तर में कमल ने पकौड़ों की फरमाइश की और निधि किचन में पकौड़े बनाने चली।

इधर कमल राज से कहने लगा कि वह कश्मीर जा रहा है अपने

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

काम के सिलसिले में और वह राज की मां से मिलने की कोशिश करेगा और उसके बारे में सारी जानकारी लेकर आयेगा। इस पर राज ने उसे कहा –

"यदि आपको लगे कि मां दुःखी है तो अवश्य ही उसे अपने साथ लाइये ताकि मैं भी अपना फर्ज़ निभा सकूं।" इस पर कमल बोला–

"चाहता तो मैं भी यहीं हूं किन्तु अगर वह न माने तो।"

"आप उसे मेरी तरफ से कहिए कि मैंने बुलाया है। वह अवश्य आयेगी।"

कमरे में आते–आते निधि के कानों में यह शब्द पड़े। वह बोली, "कौन अवश्य आयेगी? क्या कोई और मॉडल है?"

"अरे नहीं, कमल साहब कश्मीर जा रहे हैं तो मैंने मां का पता देकर कहा कि उसे साथ लेते आयें। वह जब हमारे बारे में जानेगी तो अवश्य आयेगी। तुम्हारा क्या विचार है?"

"ठीक है जब तुम चाहते हो तो मुझे क्यां आपत्ति हो सकती है।"

कहने को तो कह दिया निधि ने पर दिल के किसी कोने में कुछ कचोटने सा लगा। न जाने क्यों? कमल जैसे उसके चेहरे को पढ़ कर जान गया कि उसे प्रसन्नता नहीं हुई। सो वह फिर बोला – "आप लोगों को याद होगा कि कुछ महीने पहले मैं आपसे कह चुका हूं कि मुझे मां जी पर दया आती है जो आप लोगों के भागने से न घर की रही और न घाट की। इसलिए मैं अवश्य उनसे मिलूंगा और तसल्ली दूंगा। यदि मान गई तो अपने साथ लाऊंगा। पर यह तय है कि वह आपके साथ नहीं बल्कि मेरे साथ मेरे घर पर रहेगी। समझे आप।"

निधि समझ गई कि कमल उसी को सुना रहे हैं। उसका चेहरा लाल हो गया और अपनी झेंप मिटाती हुई बोली – "क्यों यहां क्यों नहीं? यहां तो उनका घर है।"

"इस घर की कल्पना वह कब की त्यागने पर मजबूर कर दी गई है और यहां का वातावरण उनकी सेहत के लिए ठीक भी तो नहीं है।"

राज चुपचाप सुनता जा रहा था और अपने आप पर खीजता जा

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रहा था। आज उसे मालूम हुआ कि उसने मां के प्रति अपने कर्त्तव्य को कभी निभाया ही न था, जबकि उसकी मां ने न जाने कौन–कौन से कष्ट उठाकर उसे पाला था, उसे पढ़ाया–लिखाया था, और उसने मां को क्या दिया खाली दुःख और आंसू। अब पछताने से गुज़रा समय वापिस तो नहीं आ सकता था। इसलिए चुपचाप मन ही मन निर्णय लिया राज ने कि कमल मां को लाये तो वह अवश्य उसको लेकर दूर चला जायेगा क्योंकि अब उसे निधि में भी परिवर्तन दिखाई दे रहा था।

कमल ने जाते–जाते फिर राज से मां के विषय में कहा जिसके उत्तर में उसने कहा –– "आप मेरे से बेहतर जानते हैं। यदि ला सकें तो आपका यह एहसान जीवन भर याद रखूंगा।

कमल के जाने के बाद निधि राज से बोली।" यह तुम कमल के सामने एकदम पिघल क्यों जाते हो?"

"इसलिए कि इसी एक बन्दे ने हमारी किस्मत बनाई है। नहीं तो अभी भी न जाने कहां धक्के खाते होते।"

"तो क्या हमारी अपनी कोई कीमत नहीं।"

"कीमत है, पर तभी जब इसने हमारी कीमत बढ़ाई।"

"मैं मानती हूं कि इसने हमें सही गाइड किया। पर यह तो नहीं कि हम इसी के सहारे जियें। हमने अपनी मेहनत से अपनी किस्मत बनाई है, समझे।"

"मैं देख रहा हूं कि अपनी सफलता से तुम काफी कुछ बदल गई हो। पर इतना बदलना ठीक नहीं कि आदमी अपनी औकात ही भूल जाये। तुम जब दिल्ली आई थी उस वक्त तुम्हारी क्या हालत थी। तुम्हें याद रहना चाहिए।"

"मैं यह भाषण नहीं सुनना चाहती। मेरी अपनी सुन्दरता है। कमल नहीं तो कोई और सहायता करता। मेरी किस्मत में चमकना था मैं चमकी बस। अब टी.वी. वालों के भी कन्ट्रैक्ट्स आये हैं तो क्या मैं यहीं इसकी माला जपती फिरूं।"

"पौधा जब जड़ों से अलग होता है तो मुरझा जाता है, समझी।"

"मैं यह सब नहीं मानती। इस ऊंचाई तक पहुंचने के लिए कमल

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मात्र एक सीढ़ी थी जो अब मेरे किसी काम की नहीं। अब मुझे लिफ्ट मिल गई है। मुझे इस सीढ़ी से कोई लगाव नहीं, समझे तुम।''

"तो शायद तुम्हें अब मुझसे भी कोई लगाव नहीं होगा, क्यों?"

''यही समझो। दुनिया तरक्की कर रही है और तुम वहीं लकीर के फकीर बने रहो तो तुम्हें कौन अक्लमन्द कहेगा?''

''तो फिर मझे भी अपना कुछ सोचना चाहिए। नहीं तो कौन जाने कल तुम मुझे निकाल बाहर कर दो।''

''हां यदि तुम यही दकियानूसी बातें करते रहे तो मैं तुम में भी दिलचस्पी लेना बन्द कर दूंगी।"

''कौन सी दकियानूस बातें की मैंने?''

''यही कि मां को लाओ, मेरा फर्ज़ है इत्यादि। जब फर्ज़ था तब नहीं निभाया। अब जब सब कुछ स्थिर हो चला है तो तुम्हें फिर मुसीबतों में गिरने का चाव है, क्यों?''

''तुम्हें मां के आने से क्या कष्ट है? वह भी पड़ी रहेगी बेचारी।"
"वाह रे मेरे मिट्टी के माधव। क्या उन्हें मेरी मॉडलिंग अच्छी लगेगी? क्या उनके संस्कार बदल सकते हैं बुढ़ापे में। तुम क्यों नहीं सोचते कि उन्हें यहां लाकर तुम सुख नहीं दुःख ही दोगे। वह मना करेंगी और मैं मॉडलिंग छोड़ नहीं सकती। आई बात समझ में या कुछ और कहूं।''

राज ने चुप रहने में ही गनीमत समझी। थोड़ी देर बाद निधि किसी और व्यापारी से फोन पर बात कर रही थी — ''अगर रेट आपको ठीक नहीं लगता तो किसी और मॉडल के पास जाइए और अगर आपका विज्ञापन मैंने ही करना है तो मेरे रेट्स कम नहीं होंगे।"

''हां जी, ठीक है। तब दो दिन बाद मैं आपके ऑफिस आती हूं।''

''धन्यवाद।''

वह बात ही कर रही थी कि राज अनमना सा होकर घर से बाहर चला गया।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बीस

रोज़ के अनुसार आज भी शालू अपने नित्य कर्म में लग गई, किन्तु न जाने क्यों वह उदास सी थी। काम तो किये जा रही थी वह पर अभ्यास के कारण ही मन से नहीं। यद्यपि अब पहले जैसा तनावपूर्ण वातावरण नहीं था, वह चाहती तो थोड़ी देर विश्राम करके ही काम निबटाती पर न जाने यन्त्रवत् सी वह काम क्यों कर रही थी। कभी अपनी सासू जी के बारे में सोचती तो मन में बड़ी दया आती उसके लिए। लेकिन फिर साथ ही ईश्वर को लाख–लाख धन्यवाद भी देती और सोचती यदि हालात बदल न जाते तो वह औरत उसके पति की दूसरी शादी करवा ही लेती। फिर याद आती उसे अपने सास–ससुर की योजना जो उन्होंने उसे मारने की बनाई थी तो एकदम सारे शरीर में सिहरन सी फैल जाती। तब कुछ देर वह खो जाती उस काल्पनिक भय में जब उसकी मृत्यु होती तो क्या होता? तब उसके मुंह से हठात् निकलता –– ईश्वर जो करता है अच्छा ही करता है। अभी वह अपने कल्पना जाल में उलझी ईश्वर की करनी सराह ही रही थी कि विनय ने आकर उसकी तन्द्रा तोड़ डाली।

"कौन अच्छा ही करता है, मैं भी तो सुनूं"

"ओह! आप? कब आये ऑफिस से?"

"अभी–अभी आ रहा हूं भई। पर तुम्हें इस तरह खोई–खोई अवस्था में देखकर थोड़ा विस्मय भी हुआ और फिर तुम्हारे बोल सुनकर उत्कण्ठा हुई कि पूछ ही लूं कि अच्छा कौन करता है? जबकि मैं अच्छी तरह से जानता हूं कि मैं सब कुछ अच्छा ही करता हूं। लेकिन तुम्हारे मुंह से सुनना चाहता हूं। कहो ना..."

सुनकर शालू हंस पड़ी और बोली, "मैं आपके बारे में नहीं कह रही थी।"

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

''धत् तेरे की। फिर किस के बारे में जनाब कह रहे थे क्या मेरे अलावा कोई और भी है आपके स्वप्नों में?''

''यह क्या कहते हैं आप'' मीठी सी डांट बताते हुए शालू बोली, ''मैं अपने अतीत के बारे में सोच रही थी। तभी विचार आया कि ईश्वर ने मेरी रक्षा की नहीं तो कब का राम–नाम सत हो गया होता मेरा। क्यों आप इस बात को मानते हैं ना?''

सुनकर विनय का सिर झुक सा गया। उसे थोड़ी देर चुप देखकर शालू बोली, ''मुझे आपसे कोई शिकायत नहीं। सोचती हूं निधि मेरे बचाव में न आती तो अब तक मेरी स्लो पाइज़निंग हो भी गई होती और आपका दूसरा विवाह भी जिसके लिए खासी तैयारियाँ हो रहीं थीं। मैं यह बिल्कुल अच्छी तरह से जानती हूं कि आपसे बहुत कुछ छिपाया भी जाता था इसलिए अन्तिम क्षण तक आपको असलीयत पता ही नहीं लगती।

"निधि के तो बहुत से एहसान हैं मुझ पर। क्योंकि कई बार वह मेरे बदले अपने मां–बाप से विद्रोह कर चुकी थी। मुझे विश्वास है कि उसका इस तरह से घर छोड़कर भाग जाना भी शायद इसी विद्रोह का एक हिस्सा होगा। ईश्वर उसे सुख दे, जहां भी हो खुश रहे। जानती हूं कि जो उसने किया ठीक नहीं है लेकिन यदि वह ऐसा न करती तो उसकी अम्मा का लालच कभी समाप्त न होता"।

अब तक विनय सुन रहा था। लेकिन ज्यों ही उसकी बहन का ज़िक्र आया तो उसकी आंखों में दो बड़े–बड़े आंसू तैर गये और टपक भी पड़े। उसने सिर उठाया और बहुत धीमे से बोला –– ''तुम्हारे उपकार के लिये उसने बहुत बड़ी कीमत दी है''। उसकी आवाज़ इतनी धीमी थी मानों मीलों दूर से आ रही थी। फिर थोड़ा ठहरकर वह बोला –– ''वह बेवकूफ मुझे भी कई बार कहती रही कि तुम्हें अपने साथ लेकर दूर चला जाऊं। लेकिन मैं न समझा। अब सोचता हूं कि न जाने कहां होगी और क्या करती होगी?''

इस पर शालू बोली –– "उसे गये तो कई महीने हो गये। अब तक आपके मन में यह विचार क्यों नहीं आया? मम्मी पापा भी अभी वापिस नहीं आये, क्या पता उन्हें मिल ही गई हो। आपको अपने नानके

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वालों को पत्र लिखना चाहिए था।''

''कई बार विचार आया। पर सोचता हूं शायद अभी मम्मी – पापा उनसे मिलें ही न हों तो ख्वामख्वाह उन्हें भी चिन्ता होगी।''

''आपका कहना ठीक है, लेकिन क्या आपका भी कोई कर्त्तव्य नहीं अपने मां–बाप के लिए? मामा जी को लिखिये कि मम्मी–पापा उनके यहां तो नहीं गये। यदि गये हों तो उन्हें जल्दी घर भेज दें बस। इस तरह थोड़े ही आप कोई उलझन पैदा करेंगे"।

''तो ठीक है आज ही लिखता हूं। देखें क्या पता लगता है?''

''एक बात और''

''वह क्या?''

''हमें श्रीनगर जाकर घर भी जाना चाहिए। क्या पता वे घर लौट आये हों। वैसे भी पिछले कई महीनों से घर उजाड़ पड़ा है। जाकर सफाई वगैरा करेंगे। साथ ही पड़ोसियों आदि का भी रूख देख–परख लेंगे।''

"तुम ठीक कहती हो। आज वीरवार है, शनिवार को श्रीनगर जायेंगे। दो दिन की छुट्टी लूंगा मंगल की शाम को वापिस आयेंगे। अरे हां मैं तुम्हें कहना भूल ही गया।

''क्या?''

''वह इकबाल बहन जी थी ना जो तुम्हारे साथ स्कूल में पढ़ाती थीं।

''हां। तो क्या हुआ उसे?''

''कुछ नहीं, आज दफ्तर में कोई कह रहा था कि उसके भाईयों ने उसे घर से बाहर कर दिया। मुझे याद है कि मकान उसी के नाम है, तुम कहा करती थी"।

''हां मकान तो उसी के नाम है, वे उसे कैसे निकाल सकते हैं?''

''यह मुझे मालूम नहीं। पर उसे घर से निकाला गया यह बात सच्ची है"।

''बेचारी। कितनी बुरी है दुनिया किसी को भी सुखी नहीं देख सकती। पहले ही कम दुःखी थी क्या जो यह मुसीबत भी आई। अब कहां है वह?''

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"उसकी कोई सहेली थी मिस रशमी जो समाज सेविका थी।"

"अरे हां। वह बेचारी भी इक़बाल की तरह ही दुःखी थी। कहते हैं दहेज के लिए उसके पति ने उसको मारने की कोशिश की थी जहां से जान बचाने के लिए वह रातों–रात घर से भागी थी। फिर कभी वापिस घर नहीं गई। आर्य समाज की सहायता से पढ़ लिख गई और अध्यापिका नियुक्त हुई। वह बिल्कुल अकेली रहती है। इकबाल बहन ने अच्छा किया जो उसके पास चली गई। अब दोनों एक दूसरे का सहारा बनेंगी। चलो अच्छा हुआ"।

"क्या अच्छा हुआ?

"क्यों"?

"अच्छा ही तो नहीं हुआ। चार साल उसके साथ रहकर वह लगभग अपने सभी ज़ख्मों को भूल चुकी थी। लेकिन कहते हैं ना कि बदनसीब की बदनसीबी उसे कहीं भी चैन नहीं लेने देती। वही हुआ तुम्हारी इकबाल बहन जी के साथ।

"क्यों क्या हआ?"

"मिसेज़ शर्मा बीमार हो गई और चार महीने तक घर की एक–एक चीज़ बिक गई। लेकिन वह ठीक न हुई बल्कि दिनों–दिन कमज़ोर होती गई। इकबाल बहन दिन–रात उसकी सेवा टहल करती रहीं लेकिन सब व्यर्थ । एक दिन रात के समय मिसेज़ शर्मा मर गई!

"दूसरे दिन उसे दिलासा देने के बदले मिसेज़ शर्मा के वह रिश्तेदार आये जो उसने कभी देखे न थे। उन्होंने मिसेज़ शर्मा की संग्रह की हुई गृहस्थी समेटी और कई हज़ारों का शेष इकबाल बहन से मांगा, जिसके बारे में उन्हें कोई ज्ञान न था। मिसेज़ शर्मा के रिश्तेदारों का कहना है कि मिसेज़ शर्मा की बैंक बैलेन्स कई हज़ार है जो केवल इकबाल बहन को ही मालूम है क्योंकि आखिर में वह बीमार होने के कारण खुद पैसा निकालने बैंक नहीं जा सकती थी। इसलिए उसने बैंक वालों को इकबाल बहन का नाम देकर उसके दस्तखतों से लाने की इजाज़त ले रखी थी।

"अब क्या होगा? कैसे निबटेगी बहन जी इस मुसीबत से?"

"बिल्कुल अन्धेर नहीं है, ज़रूर कोई न कोई रास्ता निकल ही

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आयेगा। पर तब तक बहन जी बहुत दुःखी रहेंगी। इधर से उसके भाई भी उसकी नहीं सुनते न तो घर में आने देते हैं और न ही उसकी कोई मदद करते हैं"।

"अब इस समय वह कहां है?"

"कहते हैं कि आर्य समाज मन्दिर में रह रही है"।

"न जाने गुज़ारा कैसे होता होगा?"

"मन्दिर की साफ–सफाई आदि करती है।"

"क्या आपने उसे देखा?"

"क्यों"

"मेरा विचार है यहां आती, मैं भी तो अकेली हूं। दोनों का दिल लगा रहेगा।"

"यह नहीं हो सकता।"

"क्यों नहीं हो सकता? उसके यहां रहने से हमारे खर्चे में कोई अन्तर नहीं पड़ेगा"।

"यह बात नहीं है।"

"फिर क्या बात है?"

"कहते हैं कई जानकारों और रिश्तेदारों ने उसे अपने साथ रहने के लिए कहा था? लेकिन उस औरत ने किसी की सुनी नहीं। बड़ी आत्मसम्मान वाली औरत है वह"।

"हां यह तो है। उसने सदा डटकर मुश्किलों का सामना किया है। कभी परिस्थिति के आगे घुटने नहीं टेके। लेकिन तब भी न जाने क्यों मेरा मन उससे मिलना चाहता है। श्रीनगर गये तो मैं उनसे अवश्य मिलूँगी"।

"ज़रूर। अच्छा अब उठकर एक कप चाय बना दो प्लीज़"।

"अच्छा।"

शालू चाय बनाने रसोई में गई। इधर विनय अपने मां–बाप के बारे में सोचने लगा। कभी तो उसे अपने मां–बाप पर दया आती और कभी गुस्से से मुठ्ठियां भिच जाती और हटात् मुंह से निकलता – ईश्वर ने उनको सही सज़ा दी। अच्छा हुआ। आज पता चला होगा कि जिगर का टुकड़ा दुःखी हो तो क्या होता है? दूसरों की लड़की

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तो जैसे उनके लिए इनसान ही न थी। अपनी इच्छा से कभी उसे दुःख देते और कभी धीर–धीरे मारने की भी योजना बनाते इसी तरह सोचते–सोचते विनय की कल्पना के दर्पण में निधि का चित्र उभर आया।

मेरी बहन निधि भी तो उन्हीं की सन्तान थी, पर उसने अपनी जान की परवाह किये बिना ही शालू को जीवनदान दिया। वह यदि घर से न भागती तो क्या करती वह जो कुंवारी मां बनने वाली थी। या हो सकता है वह झूठा अभिनय कर रही हो। हे भगवान। सच्चाई क्या है? मुझे कैसे पता चलेगा? – शालू ठीक कहती है कि श्रीनगर कुछ दिन रहकर ज़रूर कुछ न कुछ पता चलेगा। मुझे कम से कम एक हफ्ते के लिए श्रीनगर जाना होगा। शालू को भी साथ ले जाऊंगा ताकि वह भी मायके जाकर थोड़ा चेंज महसूस करे।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इक्कीस

यूं तो हरिद्वार आये शामरानी और उसके पति शाम लाल को महीनों हो चले थे पर वापिस घर जाने से जैसे दोनों को ही भय सा लग रहा था। कभी–कभी अपनी असफलता पर खीज भी आती कि जिस बात के लिए घर से निकले थे, वह तो हुई नहीं। वे आये थे बेटी को ढूंढ़ने पर लोक लाज के लिए अपनी खोज को यात्रा का नाम दिया। पर इतनी लम्बी यात्रा के उपरान्त भी उनकी यात्रा अभी तक खत्म न हुई।

वे सारी दुनिया से बेखबर हरिनाम लेते यहीं किसी कोने में पड़े रहते, पर मजबूरी थी – क्या करते, पैसे समाप्त हो गये थे। इसलिए न चाहते हुए भी घर लौटना उनकी मजबूरी थी।

शामरानी पति से बोली – "तुम घर तो जाओगे। पर यह भी सोचा है कैसे जाओगे?"

"क्यों ? जैसे यहां पहुंचा हूं, वैसे ही वापिस भी जाऊंगा।"

"हां जी। पास में पैसा नहीं। क्या टिकट मुफ्त में मिलेगा?"

"नहीं। टिकट मुफ्त में क्यों मिलने लगा। मैंने विनय को पत्र लिखा है कुछ पैसे भेजने के लिए। पैसे आ जायेंगे तो फिर हमें वापिस चलना होगा।"

"और अगर वह निधि के बारे में पूछे तो क्या जवाब दोगे?"

"देखो यह सवाल तो हमसे ज़रूर ही पूछा जायेगा। ऐसा हम घर से निकलते ही तय कर चुके थे कि वापसी पर लोगों से उसकी मृत्यु की बात बताई जायेगी। इसलिए यह तो सोचने की बात नहीं।"

"तय लोगों को बताने का हुआ था, पर अपने बेटे से क्या कहोगे?"

"उसे क्या कहना। क्या वह यह नहीं समझेगा कि मिलने पर भी ऐसी लड़की को वापिस नहीं लाया जा सकता है।"

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"क्यों तुम्हें निधि की याद नहीं आती। मैं देख रही हूं कि उसके एकदम गायब होने से तुम पर कोई असर नहीं हुआ जैसे वह तुम्हारी बेटी न होकर तुम्हारी दुश्मन थी। कितना सफेद खून है तुम लोगों का। एक तो वह चली गई हमारे बारे में सोचे बगैर दूसरे तुम भी इस बात को इतना मामूली समझते हो जैसे कुछ हुआ ही नहीं। कैसे हो तुम मर्द लोग?"

"बहुत हुआ तुम्हारा भाषण। अब ज़ुबान को लगाम दो। समझी? यह सब तुम्हारी ही अन्तहीन लालच का फल है। यदि तुम सब भूलकर केवल बटोरने में न लगी होती तो घर का यह सत्यानाश न होता।"

"सारे दोष मुझे ही देते हो। क्यों तुम मेरे साथ–साथ वह सब नहीं करते थे जिसके लिए आज यह रोना रो रहे हो। अंगूर खट्टे वाली पॉलिसी छोड़ दो अब, समझे तुम।"

"मैं अपनी उसी हरकत के लिए तो रोता हूं। यदि मैं पहले ही चेत जाता, सोचता किसी की लड़की पर ज़ुल्म करने से पहले मेरे घर में भी ज़वान बेटी है मुझे उसके बारे में सोचना चाहिए तो आज यह नौबत न आती"।

"हां। अब यही कहोगे। यह क्यों नहीं कहते कि तुम अपने कर्तव्य को भूल गये थे।"

"कैसा कर्त्तव्य?"

"पिता का कर्त्तव्य जिसकी इस समय दुहाई दे रहे हो।"

"हे भगवान, मैं यह क्यों भूल गया था कि लड़की जवान है, इसकी शादी करनी होगी। यदि उसकी शादी आम लड़कियों की तरह होती तो जो कलंक वह लगा गई है ऐसा न होता।"

"सचमुच मैं केवल सास बनी थी। मां की ममता की बलि देकर। न जाने अब कहां होगी मेरी लाड़ली।"

"मुझे उसके दूर होने का कोई दुःख नहीं क्योंकि लड़कियां कभी मां–बाप के पास नहीं रहती। वे अपना अलग घर संसार बसाती हैं। पर यह बात ज़रूर खलती है मुझे कि वह मेरी पगड़ी तार–तार करके भाग गई।"

"जिसके लिए हम उसको कभी माफ नहीं करेंगे। और..."

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

''एक बात भग्यवान मुझे तुम्हारी अच्छी नहीं लगती कि तुम हमेशा औरों को सज़ा देने लगती हो – कभी यह भी सोचा है कि लोग भी तुमसे इसी तरह से पेश आ सकते हैं।''

''तो क्या उसकी पूजा करोगे?''

''देखा जाये तो निधि का कोई कसूर नहीं, कसूर हमारा है जिन्होंने कभी उसकी ज़रूरत को ध्यान में नहीं रखा, अब अगर उसने खुद ही किसी से सम्बन्ध बना लिए तो इसकी ज़िम्मेवार वह नहीं बल्कि हमारी गैर–ज़िम्मेदारी है।''

"ठीक है। बोलते जाओ, बोलते जाओ। अब जो वही नहीं है तो बतिया रहे हो। वह होती तो क्या इसी तरह बोलते?''

''छोड़ो भी। अब तुमसे लड़कर भी क्या निकलेगा। अब हमें घर वापिस जाना होगा क्योंकि तुम जानती हो कि अब यहां रहने के लिए हमारे पास और पैसा नहीं है।''

''मेरी मानो तो यहीं कोई छोटा–मोटा काम करके गुज़ारा कर लेंगे।''

''जैसे काम पेड़ों पर फलते हैं कि हाथ बढ़ाया और तोड़ लिया। अरी भागवान। यहां हमें कौन जानता है जो हमें काम देगा।"

''क्यों महन्त जी ने जो धर्मशाला का हिसाब लिखने को दिया था, क्या उससे गुज़ारा न होगा हमारा?''

''वह कौन–सा सदा के लिए है कुछ दिनों का काम है। तब तक शायद विनय भी कुछ भेज दे। इसीलिए कहता हूं कि हमें अब वापिस ही चलना चाहिए।''

''चलो जब की तब देखी जायेगी लो चाय पी लो।"

दोनों अपने–अपने विचारों में गुम चाय की चुस्कियां लेते रहे। दोनों के ही चेहरों पर अलग–अलग भाव आ जा रहे थे। इतने में सामने वाले कमरे में दो मनचले युवकों में कहा–सुनी हो गई। बात बढ़ते–बढ़ते हाथा–पाई की नौबत भी आई। दोनों गुत्थम–गुत्था होकर लड़ रहे थे और सारे आंगन में तमाशियों की भीड़ इकट्ठी हो गई थी। होते–होते लड़ाई में चाकू भी चलने लगे। पुलिस आई और दोनों महारथियों को पकड़ कर ले गई। दस मुंह दस बातें। कोई कहता कि किसी लड़की के पीछे दो दोस्त थे, दो भयंकर दुश्मन बन गये। कोई कहता कि

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दोनों जुआरी थे, पैसा हारने पर एक दूसरे पर दोष मढ़ते गये। पर सराय के उसी कमरे में रहने वाला एक अधेड़ उम्र का आदमी यह कह रहा था –– "कल एक पत्रिका आई जिसमें उन्होंने विज्ञापन में एक खूबसूरत लड़की को देखा तो दोनों रात भर उस लड़की को उड़ाने का मनसूबा बनाने लगे। इसी योजना में दोनों में ठन गई और होते–होते बात चाकू छुरे तक पहुंच गई। है तो यह सौदों वाला खयाल पर वाकई वह ज़ालिम भी किसी बिजली से कम नहीं।" लोगों में किसी ने वह पत्रिका देखने की इच्छा ज़ाहिर की जिस पर उसी अधेड़ आदमी ने कहा –– मैंने भी तो उसी ज़ालिम को एक नज़र देखने के लिए पत्रिका खरीदी है। लो देखो" – यह कह कर उसने एक पत्रिका लाकर दिखाई। तस्वीर उसी लड़की की थी जिसे एक और पत्रिका में शामरानी और शाम लाल ने देखा था।

दोनों ही वह चिर–परिचित शक्ल देख कर स्तम्भित से हो गये। न जाने दोनों के चेहरों का रंग फीका क्यों हो गया। वे अपने मन को यह समझाने में उसी दिन कामयाब हो गये थे कि वह उनकी निधि नहीं क्योंकि वह इस तरह बेहया होकर अर्धनंगी कभी रही न थी। लेकिन माता–पिता की आंखे धोखा नहीं खा सकतीं। फिर यह पहेली है तो क्या है। वह इस तस्वीर को देखकर इतने विचलित क्यों हो रहे हैं। वे अपना झगड़ा भूलकर एक दूसरे को कातर दृष्टि से देखने लगे, जैसे अभी कोई जल्लाद उन्हें ज़िबह करने आ रहा हो।

ऐसे ही देखते–देखते शाम रानी बेहोश होकर गिर पड़ी। हटती भीड़ में से कईयों को बूढ़ी पर दया आई, सो उसे पानी आदि पिलाकर कमरे में लिटाया गया। पति उसकी बेहोशी की कैफियत देने लगा––

"असल में बेचारी बड़ी दुःखी है। जवान बच्चे की मौत का सदमा कम दुखदायी नहीं होता। मैं तो मर्द हूं तो सह गया पर यह मां है कैसे सहन कर लेगी। यह तो आप देख ही रहे हैं। इसकी इसी हालत के कारण इसको इतनी दूर घर से निकाल कर लाया। पर क्या करूं इसका यह ज़ख्म भरते तो देर लगेगी – यह मैं पहले जानता न था। अब परदेस में आप ही लोगों का सहारा है।

भीड़ तो छट गई। पर उसके मन के अन्दर का हा–हाकार और कोहराम समाप्त न हुआ।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बाईस

शालू दिन भर कपड़े धोती रही, और साथ ही साथ सोचती जा रही थी कि अब के जो श्रीनगर गई तो कुछ दिन तो लगेंगे पीछे पति अकेले होंगे। सो इनकी व्यवस्था तो करके ही जाना होगा। कौन जाने सास–ससुर वापिस आये ही हों। फिर तो कुछ दिन उनकी सेवा–टहल भी करनी होगी। इस वक्त अगर मन चाहता भी नहीं, फिर भी दुःखी है –– मेरा वहां रह कर उनकी सेवा करना कर्त्तव्य बनता है। पहले की बात अलग है, अब तो काफी परिवर्तन आया है उनमें, इसलिए अगर विनय जल्दी वापिस आने को कहेंगे भी तो मैं कुछ दिनों के लिए श्रीनगर में रहने की बात करूंगी। आखिर मां–बाप हैं वह हमारे......।''

......वह और भी जाने क्या–क्या सोचती कि विनय आ गया और आते ही आवाज़ लगाई – "शालू शालू कहां हो तुम"। शालू अपनी ख्वाबों की दुनिया से लौट आई और हैरान होकर बोली, ''आज आप इतनी जल्दी कैसे आये?''

''जल्दी क्या कहती हो। घड़ी देखी है पांच बजने वाले हैं। चलो पहले एक कप चाय दो फिर तुम्हें आज का समाचार दूं"।

शालू लपक कर किचन में चाय बनाने चली और मन ही मन सोचने लगी –– न जाने आज क्या समाचार देने वाले हैं? चाय ले जाऊं तो मालूम हो ही जायेगा। कभी अपने मायके वालों की ओर ध्यान जाता शालू का तो कभी और रिश्तेदारों की ओर। पर सोच स्थिर ही न हो पाती। इसलिए जल्दी–जल्दी चाय लेकर उत्सुक मन से वह विनय के पास आ गई और बोली– ''लीजिए चाय और अब दीजिये वह समचार जो कहने वाले थे"।

''अरे बाबा। पहले चाय तो पी लूं। बहुत भूख लगी है। कोई कुल्चा

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

या बाकर–खानी नहीं है।''

''अरे हां। ठहरिये लाती हूं।''

इस तरह कुछ देर दोनों चुप रहे अपने–अपने मन में ताना–बाना बुनते हुए। तब चाय समाप्त करके विनय बोला —–''तुमने उस दिन नानके वालों को पत्र लिखने को कहा था। मैंने उसी समय पत्र लिखा था जिसका उत्तर आज आया।''

''क्या लिखा है?''

''वे मेरी चिट्ठी से बड़े परेशान हुए हैं, क्योंकि उन्होंने श्रीनगर के पते पर कई पत्र डाले हैं, जिनका उनको कोई जवाब नहीं मिला है। अब मेरे पत्र ने उनके मन में सन्देह पैदा कर दिया है कि आखिर मेरे मम्मी–पापा लोग कहां और क्यों गये – क्योंकि इस बीच वे वहां गये ही नहीं हैं। समझी तुम।''

''अब उनको क्या लिखेंगे आप?''

''कुछ नहीं। अब श्रीनगर जाकर घर में देख आयेंगे कि किस तरह के हालात हैं?''

''यह ठीक रहेगा। आप कितने दिनों की छुट्टी लेंगे?''

''क्यों?''

''वैसे ही। मैं अकेली क्या करूंगी वहां''।

''नहीं बाबा। अब तुम्हें वहां अकेले छोड़ने की गल्ती कभी नहीं करूंगा। वैसे भी अब हालात पहले से काफी नारमल हैं।''

''मेरा वह मतलब नहीं। मैं सोचती हूं कि वे हमारे माता–पिता हैं, और इस वक्त दुःखी हैं, सो आपका उनके साथ कुछ दिन रहना ही ठीक रहेगा।

''वह मैं समझता हूं। कुछ दिन ज़रूर उनके साथ रहूंगा। पर मैं तुम्हें वहां कभी भी नहीं छोडूंगा। तुम्हें कुछ दिन तुम्हारी मां के पास छोड़कर फिर लेने आऊंगा।''

''अब पहले जैसी बात नहीं। अब मैं आपकी ओर से आश्वस्त हूं, इसलिए अब इस विषय में चिंता न करें।''

''अच्छा देवी जी। अब परसों शनिवार को तीन बजे की बस से हम एक हफ्ते के लिए श्रीनगर जा रहे हैं। सारा इन्तजाम करके रखो।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"अच्छा।"

फिर दोनों अपने–अपने काम में लगे। रात हो गई, खाना खाया और सो गये।

• • • • • • •

दूसरे दिन विनय दफ्तर से जल्दी घर आया और शालू से बोला––

"शालू। मैं समझता हूं कि इस शनिवार को न जाकर दूसरे शनिवार को श्रीनगर जायें।"

"क्यों क्या बात है?"

"आज पापा का तार मिला है हरिद्वार से"

"क्या लिखा है?"

"पैसे खत्म हो गये होंगे सो और मांगे हैं ताकि वापिस घर आ सकें"

"कितना मांगा है?"

"वह कुछ नहीं लिखा है।"

"तो तुम कितना भेज रहे हो?"

"मैंने दो हज़ार रूपये भेज दिये हैं और साथ ही जल्दी घर आने के लिये भी लिखा है।"

"बहुत अच्छा किया, पर यदि पैसे और भेजते तो उनके लिए आसान होता।"

"मैडम जी। वे जब श्रीनगर पहुंचेंगे, तब भी तो देना ही होगा। पैसे पेड़ों पर तो फलते नहीं।"

"आपका कहना सही है कि पैसे पेड़ों पर नहीं उगते पर यह भी तो ध्यान रखना है कि परदेस में अगर ज़रूरत पड़ी तो क्या करेंगे?"

"अब तो वे आ ही रहे हैं। कुछ दिनों की तो बात है। फिर और देंगें।"

"ठीक है अब हमें कब जाना होगा? इतने दिनों का बन्द पड़ा घर झाड़ना बुहारना भी तो है।"

"हां। तुम ठीक कहती हो। मैंने कहा ना अगले शनिवार को चलेंगे।"

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"अच्छा। आप चाय पियेंगे ना?"

"हां। लाओं एक कप। तैयार है क्या?"

"बनाने में कितनी देर लगती है। आप बैठिये मैं अभी लाई" इतना कहने के बाद शालू लपक कर चाय बनाने चली। इधर विनय मन ही मन अपने माता–पिता के बारे में सोचता रहा न जाने....

वह इतना विचारों में खो गया था कि उसे पता ही नहीं चला कि कब शालू चाय लेकर सामने खड़ी हुई। थोड़ा हाथ से कन्धा हिलाने पर उसकी तन्द्रा टूटी। कुछ चौंक कर उसने चाय का गिलास पकड़ लिया और चुपचाप चाय की चुस्कियां लेने लगा। कुछ देर तक शालू भी चुपचाप उसे चाय पीते देखती रही। तब तंग आकर उसने फिर टोका –– "क्या सोचे जा रहे हैं अकेले–अकेले? हमें न बताइएगा?"

"अ–हां। अरे कुछ नहीं।

"फिर भी। जनाब ज़रूर ही किसी गम्भीर समस्या पर सोच रहे हैं। क्यों?"

"तुम्हारा कहना ठीक है। मैं सोच रहा था कि आदमी की फाल्स प्रस्टीज उसे दूसरों की नज़र में कितना गिरा देती है।"

"मसलन"

"यही कि जब मां आयेगी तो किस तरह तुमसे पेश आयेगी? और जब उसे मालूम होगा कि तुम्हें सब कुछ मालूम है तो उसका क्या हाल होगा?"

सुनकर शालू चुप ही रही। वह अभी सास के बर्ताव को भूली न थी। सोचा यदि कहेगी कि ऐसे लोगों के कई चेहरे होते हैं तो मां है निश्चय ही बुरा लगेगा। इसलिए चुप बैठना ही ठीक समझ कर वह सुनने लगी। विनय और भी न जाने क्या–क्या कहता रहा पर शालू ने कोई उत्तर नहीं दिया। इस पर थोड़ा खीज कर विनय ने फिर कहा –– "तुम कुछ कहती क्यों नहीं।"

"मैं क्या कहूं। आपके माता–पिता हैं। आप जो उचित समझें कहें या करें इसमें बोलने वाली मैं कौन होती हूं।"

"मैं जो कुछ करना चाहता हूं वह कर नहीं सकता क्योंकि आ जा के बात तुम पर ही उठेगी। भले ही तुमने कभी कुछ कहा ही

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

न हो। नहीं तो मैं साफ–साफ कह देता कि उनके यहां आने की आवश्यकता नहीं है। मेरे बची–खुची खुशी में आग लगाने के लिए।''

''मेरे विचार से आपको ऐसा करना नहीं चाहिए। आखिर वह आपके माता–पिता हैं और आप उनकी इकलौती संतान।''

"तब भी कुछ नहीं करना चाहिए जब कि माता जी मेरी दूसरी शादी करवा के धन कमाना चाहती थी।''

"वह वक्त चला गया और उसका दण्ड भी वे अब भोग चुकी हैं। इसलिए इस ओर आपको परेशान् रहने की ज़रूरत नहीं।''

''फिर भी मेरे विचार से तुम्हें ऐसा शो करना चाहिए जैसे तुम्हें कुछ भी पता नहीं है।''

''क्यों?''

''वह इसलिए कि मां तुम्हें सच्चाई के बारे में राज़दार नहीं बनाना चाहती थी। अब अगर पता लग जायेगा कि राज़ बेपर्दा हो गया है तो उसे बहुत हीनता अनुभव होगी। इसीलिए कहता हूं प्लीज़ वैसा ही करना।''

''मुझे तो इसमें कोई तुक दिखाई नहीं देती। फिर भी यदि आप इसी में प्रसन्न हैं तो यही सही।''

''हालांकि अब वह दम नहीं। फिर भी चुप रहकर तुम देखती जाओ आगे क्या–क्या योजनायें हैं इनकी।

''बहुत अच्छा। तो अब दूसरी शनिवार को''।

"हां। अब मैं थोड़ी देर बाज़ार हो आता हूं। एक दो लोगों से मिलना है।''

''ठीक है, आती बार यह थोड़ा सा सामान भी लेत आइए'' कह कर शालू ने एक छोटी सी लिस्ट हाथ में थमाई।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तेईस

आज कुछ सालों के बाद कमल कश्मीर की वादी में आया है। शायद शादी के बाद पहली या दूसरी बार। रिश्तेदारों में जो सुनता है तो ज़रूर मिलने आता है। ससुराल वालों ने सुना तो उन्होंने दावत पर बुलाया।

सारा दिन यार–दोस्तों में व्यस्त रहने के बाद ज्यों ही वह ससुराल पहुंचा तो वहां कुछ और लोगों से मिलना हुआ। सब की कुशल इत्यादि पूछी और इसी दौरान शालू का भी प्रसंग आया। उसके बारे में पूछने पर पता चला कि पहले उसके सास–ससुर बड़े अजीब थे, परन्तु अब पिछले पांच छः महीनों से वे हरिद्वार की यात्रा पर गये हैं। तब से शालू अपने पति के साथ किलम में रह रही है। इतना सुनने के बाद उसके मन में जिज्ञासा पैदा हुई कि पूछें उसकी ननद निधि कहां है पर कुछ सोचकर चुप रहा। तब इधर–उधर की बातों के उपरान्त आखिर उसने पूछ ही लिया अपनी सालियों से – "क्या शालू की ननद की शादी हो गई। इस पर जवाब मिला "कहां हुई अभी। सुना है वह आजकल शिमला अपने नानके गई है। वहां कोई जॉब मिला है।"

यह उत्तर सुनकर कमल एकदम हैरान हो गया। यह जान कर कि यहां उसके भागने के बारे में किसी को कुछ भी मालूम नहीं। खैर कुछ देर बाद उसने अपने सालों से कॉलेज के साथी राज के बारे में पूछा–

"वह तुम्हारे साथ राज बख्शी नाम का लड़का पढ़ता था ना कॉलेज में"।

"हां जीज़ा जी।"

"वह कहां है आजकल? तुम कहते थे ना बड़ा इन्टेलिजैन्ट बन्दा है पर गरीब है। क्या हुआ उसका?"

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"लगभग छः महीने हुए कि वह एकाएक गायब हो गया। कुछ लोग कहते हैं कि वह गरीबी से काफी तंग आया था और कुछ कहते हैं कि नौकरी की तलाश में बाहर किस्मत आज़माने गया है। असल बात क्या है किसी को मालूम नहीं।"

"उसके घर में और कौन–कौन है?"

"उसकी एक विधवा मां ही है बस। उसने किसी तरह से राज को बी.ए. करवाई थी।

"अब वह अकेली हो गई होगी।"

"हां जीजा जी। वह बेचारी उसके जाने के बाद लोगों के घरों में छोटा–मोटा काम करके अपने पेट की अग्नि को शान्त करने लगी है। लेकिन पिछले दो महीनों से उसे कुछ दिखाई नहीं देता। इसलिए अब इधर दिखाई नहीं देती।"

"फिर उसका गुज़ारा कैसे होता है?"

"कभी कोई दया करके दो रोटियां दे जाता है या कभी मन्दिर में मिल जाता है। बड़ी बदनसीब है बेचारी।"

"मुझे उसके पास ले चलोगे?"

"क्यों जीजा जी?"

"ऐसे लोगों की सहायता करना हमारा धर्म है। इसलिए मैं उसे किसी अनाथालय में भर्ती करा दूंगा और क्या?"

"ठीक है जीजा जी। आज शाम को हम रामजी के मन्दिर चलेंगे। वहीं होती है वह"।

"ठीक है।"

तब दिन भर अपनी बिज़नैस के चक्कर में कमल घूमता रहा। पर दिन में भी कई बार उसे विचार आता रहा राज की मां का और वह सोचता रहा कि कैसे उसे वह अपने साथ ले चलेगा। कभी सोचता कि उसे कहेगा चल अम्मा तेरे बेटे ने तुझे बुलाया है। कभी सोचता इस तरह ठीक न होगा। पहले उसका विश्वास जीतना होगा। वह तो मुझे जानती नहीं, कैसे चलेगी साथ। खैर। यह तो उससे मिलकर ही तय होगा कि क्या करना चाहिए।

तब शाम को घूमने के बहाने उसने अपने छोटे साले को अपने

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

साथ लिया और चल पड़े रामचन्द्र के मन्दिर की ओर। संध्या का समय था लोग आरती के लिए जलते दिये हाथ में लेकर आरती कर रहे थे। कमल भी पीछे वाली पंक्ति में खड़ा हो गया। आरती हो रही थी और वह दोनों हाथ जोड़े मन्दिर के परिसर में किसी को तलाश रहा था। पर दिखाई कोई नहीं दिया। तब अधीर होकर उसने साले के कान में धीभे से कहा – कहां है वह बुढ़िया?"

साले ने सुनकर हाथ के इशारे से दूर नल के सामने ढ़ेरों गन्दे बर्तनों से जूझती एक कमज़ोर सी बुढ़िया की ओर इशारा किया। वह उसी समय उस ओर चल पड़ता किन्तु चलती आरती में ऐसा संभव न था, इसलिए उसे आरती समाप्त होने की प्रतीक्षा करनी पड़ी। इतनी देर में आठ बजने लगे थे सो धुंधला फैला हुआ था, इसलिए किसी अजनबी को पहचानने में वक्त लग सकता था। इसके अलावा यह विचार भी उसके मन में आया कि साले के सामने उससे मिलना ठीक न होगा, अतः आरती के समाप्त होते ही वह वापिस घर की ओर मुड़ा। रास्तें में साले ने पूछ लिया–

"आप तो उस बुढ़िया से मिलना चाहते थे, फिर मिले क्यों नहीं?"

"नहीं। अब तो बड़ी देर हो गई है घर के लोग इंतज़ार कर रहे होंगे।" कहकर दोनों ही जल्दी–जल्दी घर की ओर चल पड़े। घर पहुंचते ही उसका ससुर से सामना हुआ। वे पूछ बैठे–"जमाई राजा कहां से आ रहे हैं?"

"ज़रा रामचन्द्र के मन्दिर तक गया था।"

"क्यों किसी से मिलना था क्या?"

"नहीं बस यों ही ज़रा आरती देख रहा था।"

"वैसे अब तो कोई पूजा–पाठ आरती इत्यादि पर विश्वास करता नहीं। हमारे ज़माने में तो इस मन्दिर की बड़ी धूम थी। इसी मन्दिर के परिसर में हमारे संघ की शाखा लगती थी। पर अब यह बात कहां। इस मन्दिर में फिर भी थोड़ी बहुत चहल–पहल है। बाकी शहर के मन्दिरों में तो भूत बोलते हैं।"

"ऐसा क्यों?"

"क्योंकि या तो सरकार की धांधली या हमारी बेरुखी के कारण

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

धर्म–कर्म की बातें अब प्रायः समाप्त ही हो चली हैं।''

''मैं समझा नहीं।''

''आजकल तो गांव–कस्बों में मन्दिर जलाए जाते हैं लेकिन सरकार कोई पूछताछ नहीं करती। हम बोलते हैं तो हमारी आवाज़ को डरा–धमका के दबा दिया जाता है। मैं कहता हूं कि अगर यही हालत रहे तो कश्मीरी पण्डितों को कश्मीर छोड़ कर भाग जाना होगा और यहां यकीनन पाकिस्तान बनके रहेगा"।

''आप यह सब किस आधार पर कह रहे हैं?''

''तुम तो आज कई सालों बाद आये हो ना। तभी मालूम नहीं। अरे यहां रहना तो लगभग अब असम्भव हो गया है। आये दिन मुसलमान लोग हमारी बेइज़्ज़ती करते हैं"।

''क्यों करते हैं ये ऐसा?''

"उनका कहना है कि कश्मीर के मुसलमान को उसका हक मिलना चाहिए जो वह अब पाकिस्तान की मदद से ले रहा है। जिस कश्मीर में भाईचारे का यह आलम था कि कभी एक दूसरे को मारने का स्वप्न तक नहीं आता था उसी कश्मीर में मुसलमान युवक ने गन उठाई है हाथ में और सफाया कर रहा है वह हिन्दुओं का। अब जिस–जिस को अपनी इज़्ज़त प्यारी थी वह लोग अपने बाल–बच्चों को लेकर कश्मीर छोड़ गये और रह गये हम जैसे ज़मींदार लोग जिनको बाग़ और ज़मीनें अपनी जान से भी प्यारे हैं। और मैं कहता हूं एक दिन बलि दी जायेगी हमारी भी।''

यह सब सुनकर कमल ने अपने ससुर से गम्भीर होकर कहा– "जान है तो जहान है। आप सारे लोग तैयार रहें, वक्त रहते हम कश्मीर की सीमा से बाहर जायेंगे। ज़िन्दा रहे तो सब कुछ फिर मिलेगा"।

''मगर जायेंगे कहां?''

"मेरे पास दिल्ली में। फिर जब हालात ठीक हो जायेंगे तो वापिस आइयेगा"।

कहते तो तुम ठीक हो पर बरसों की मेहनत से कमाई गई पुरखों की सब छुटपुट सम्पत्ति, घर–द्वार छोड़कर क्या करेंगे?"

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"बाद में यह सब कुछ छीन के ले जायेंगे पहले ही उन्हें हवाले कर दीजिए। क्या पता हालात ठीक होने पर वे वापिस भी दें।"

इस पर सारे घर में विचार–विर्मश हुआ और मिल्ट्री वालों की मदद से एक ट्रक मंगवाकर घर का थोड़ा बहुत सामान लेकर जाने की योजना बनाई गई।

यह सब इतनी जल्दी इसलिए हुआ कि कमल के ससुर को कुछ दिन पहले ही एक गुमनाम चिट्ठी मिली थी मुस्लिम आतंकवादियों (जो अपने आपको इस्लाम के मुजाहिद कहते थे) की ओर से जिसमें बताया गया था कि उसका सारा परिवार हिट लिस्ट पर है क्योंकि उस पर मुखबिर होने का शक है।

रात भर यह सारी बातें होती रहीं और सुबह सवेरे कमल मन्दिर गया राज की मां से मिलने। पर मंदिर में पहुंचते ही उसे भीड़ दिखाई दी। पूछने पर पता चला कि रात को ढ़ाई बजे के करीब किसी ने बर्तन मांझने वाली बुढ़िया पर गोली चलाई और बुढ़िया वहीं ढेर हो गई। निराश और हताश वह वापिस घर को मुड़ा। ससुराल पहुंचते ही कमल ने सबसे पहले अपने ससुराल–जनों के साथ भागने की तैयारी की और उनका सामान बांधने में मदद करने लगा।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चौबीस

पूरे एक हफ्ते के बाद आज कमल वापिस दिल्ली अपने घर आया था। उसकी पत्नी उसको देखकर बेहद खुश हो रही थी क्योंकि उसके साथ उसके माता–पिता भाई बहन सभी साथ आए थे। उनसे मिलने के बाद जब उसे कश्मीर की हालत का पता लगा तो उसे चिन्ता होने लगी अपने मां–बाप इत्यादि के बारे में। दिन भर तो वह उन्हें खिलाने पिलाने में व्यस्त रही। रात को जब पति से मिली तो पूछ बैठी–– ''तुम तो ले आये हो इन्हें यहां। मगर इनका गुज़ारा कैसे होगा? कहां रहेंगे यह लोग? इसके बारे में भी सोचा है कुछ या नहीं।''

जवाब में कमल ने बेपरवाही के साथ कहा– ''तुम्हारे मां–बाप हैं मैं वहां संकट से बचाकर ले आया। अब तुम जानों उन्हें सैट कैसे करना है।''

सुनकर उसे और भी चिन्ता हुई और चिंतित स्वर में बोली, ''मैं क्या कर सकती हूं तुम्हारी सहायता के बिना।''

''फिर परेशान होना छोड़ दो। ईश्वर मालिक है जो होगा देखा जायेगा।''

''सो तो ठीक है लेकिन कब तक यह लोग हमारे पास ठहरेंगे?''

''क्यों इन्हें अपने पास रखना तुम्हें अच्छा नहीं लगता क्या?''

''मेरे अच्छे लगने का सवाल नहीं है।''

''फिर और क्या है?''

''मेरी मां पुराने संस्कारों की औरत है, वह कभी लड़की के घर रहना पसन्द नहीं करेगी। इसीलिए चिन्तित हूं।''

''एक दो दिनों में इसका भी इन्तज़ाम हो जायेगा।''

''कैसे?''

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"इनको एक किराये का मकान दिलाकर! बाकी तुम्हारे भाई को कहीं नौकरी दिलाकर इनकी पैसे इत्यादि की भी परेशानी हल हो जायेगी।"

"किराये का मकान क्यों? क्या यह लोग हमारे पुराने फ्लैट में नहीं रह सकते?"

"ज़रूर रह सकते हैं पर अभी वह खाली नहीं। कुछ दिन लगेंगे उसे खाली करवाने में।"

"कौन रहता है वहां?"

"क्यों तुम्हें तुम्हारी बहन की ननद के बारे में बताया नहीं था।"

"हां। हां। मैं भूल ही गई। फिर वह बेचारी जायेगी कहां?"

"उस बेचारी को किसी दूसरी जगह शिफ्ट करा देंगे और क्या?"

"ठीक है यह काम जितनी जल्द हो सके कर लेना, अच्छा।"

"ठीक है सरकार अब सो जाऊं क्या?"

कमल की इस बात पर वह थोड़ा सा मुस्कराई और बोली – "ठीक है सो जाइए।"

दिन भर के व्यस्त होने के कारण वे दोनों ही काफी थक गये थे इसलिए एकदम खर्राटें भरने लगे।

सुबह काफी धूप निकलने के बाद ही उनकी आंख खुली। तब नित्य क्रिया से निबट कर कमल ने हल्का सा नाश्ता लिया और निकल गया।

कमल के जाने के बाद उसकी पत्नी अपनी मां से शेष रिश्तेदारों के बारे में पूछने लगी। और मां भी उसके सवालों का जवाब क्रम से देने लगी। बातों के बीच प्रंसग आया शालू का। मां ने उसके बारे में विशेष कोई जानकारी नहीं दी जिस पर बेटी ने पूछा– "उसकी ननद थी न निधि – उसका क्या बना? कहीं उसकी शादी हुई कि नहीं?"

मां बोली – मेरे खयाल से अभी उसकी शादी नहीं हुई, क्योंकि यदि शादी होती हमें भी न्योता ज़रूर मिलता।

"फिर क्या वह पढ़ती है या नौकरी करती है?"

"शायद कुछ नहीं करती।"

"क्या मां तुम्हें कुछ भी मालूम नहीं शालू पीहर नहीं आती क्या?"

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"अरे हां। शालू की सास बहुत बदल गई है। अब शालू सुखी है और किलम में अपने पति के साथ रहती है। तुम्हारी बुआ ने यही बताया था। पीछे सुना था कि उसके सास–ससुर हरिद्वार चले गये हैं।"

"तब तो शालू ननद के साथ रहती होगी।"

"नहीं रे। वह नानके शिमला चली गई है पढ़ने।"

"अच्छा। कोई ट्रेनिंग वगैरा करती है क्या?"

"पता नहीं, अब शालू आयेगी पीहर तो पता चलेगा।"

"क्या पता चलेगा?"

"यही कि वह शिमला क्या करने गई है?"

"वाह री मेरी भोली अम्मा। निधि नानके नहीं गई है बल्कि घर से भाग गई है समझी तुम। और उसके मां–बाप हरिद्वार नहीं गये हैं बल्कि जगह–जगह उसे ढूंढ़ने गये हैं।"

"क्या" सुनते ही मां की आंखें हैरानी से फैल गई और उसने पूछा– "तुम्हें कैसे पता चला?"

"बस पता चला कि यहीं दिल्ली में उसी लड़के के साथ रहती है जिसके साथ भाग गई थी।"

"तुम्हें मेरी कसम है सच कहती है ना।"

"हां मां। पहेलियां बुझाने का मुझे कोई शौक नहीं।"

"यह हैं दानवीर कर्ण की सन्तान। किसी को भी कष्ट में देखते हैं तो दौड़ते हैं मदद को। ट्रेन में निधि और राज को बदहवास हालत में देखा तो ठहरा आये अपने पुराने घर पर। रहने के लिए दिया और उस लड़के को नौकरी दिलवा दी। अब वे लोग यहीं दिल्ली में ही रहते हैं"।

"क्या तुझसे कभी मिलने आई वह?"

"नहीं मां उसे अभी यह भी मालूम नहीं कि किसने और क्यों उसकी मदद की थी। मिलने का सवाल ही कहां पैदा होता है।"

"सच में बड़े भावुक हैं हमारे जंवाई बाबू। देखो ना हमें कष्ट में देखा तो ले आये। भगवान इन्हें सदा सफल बनाये रखे। लम्बी उमर दें।"

मां के इस प्रकार कहने से बेटी के दिल में एक संदेह सा पैदा हुआ। कहीं मां को मेरा इस तरह कहना बुरा तो नहीं लगा..."

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पच्चीस

अपने कुछ एक काम निपटा कर कमल, राज के पास चला गया। आशा के विपरीत उसने राज को घर में अकेला पाया। राज उदास–उदास अपने लिए चाय बना रहा था कि डोर ब्यल बज उठी, दरवाज़ा खोला और कमल को देखते ही प्रसन्न हुआ। पर उसकी बड़ी दाढ़ी और उदास चेहरा देखकर कमल को बड़ी हैरानी हुई, उसने पूछा – ''अमां राज साहब। यह आपके चेहरे पर बारह क्यों बज गये हैं? ठीक तो हैं ना आप?''

राज–– ''नमस्ते कमल साहब। आइए अन्दर तो आइए। सच मानिये मैं अभी आप ही के बारे में सोच रहा था। कब आये हैं आप कश्मीर से।''

कमल–''तोबा–तोबा इतने सवाल एक साथ। लेकिन मेरे सवाल का जवाब नहीं दिया, क्यों भई?''

राज–– "मैं समझा नहीं।''

कमल–– "मैंने आपकी बीमार शक्ल और बढ़ती दाढ़ी के बारे में पूछा था।''

राज–– "अच्छा। मुझे खुद मालूम नहीं परन्तु दो तीन दिन से न जाने क्या हो गया मुझे। मैं बस रोना चाहता हूं। सोचता हूं, मां को अकेला छोड़कर मैंने अच्छा नहीं किया। न जाने कैसी होगी वह? क्या आप उससे मिले?''

कमल मन ही मन उसकी हालत देखकर रिश्तों की गहराई का अनुमान लगा रहा था कि तीन दिन पहले उसकी मां मर गई है और तीन दिनों से ही उसकी यह हालत है। वह अभी न जाने और क्या सोचता कि राज ने दुबारा पूछा – "क्यों कमल भाई साहब आप मेरी मां से मिले?''

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वह कहना तो सब कुछ चाहता था पर न जाने क्यों उसे संकोच हो रहा था। बड़ी देर तक गुमसुम उसे देखता रहा और फिर बड़ी कठिनाई से बोल पड़ा – "हां यार। तेरी मां को देखा, और चाहा भी कि अपने साथ लाऊं पर यह तकदीर को मंजूर न था।"

राज–– "क्यों क्या हुआ? क्या उसने मेरे पास आने से इन्कार कर दिया?"

"नहीं ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। एक दिन पहले उसे देखा। दूसरे दिन सुबह उसे अपने साथ लाने गया। पर पहुंचते ही क्या देखा कि मां इस संसार में नहीं। रात को ही किसी आतंकवादी ने उसे गोली मार दी थी।"

"क्यों मारी थी गोली – उसने किसी का क्या बिगाड़ा था?"

"आजकल कश्मीर के हालात ही ऐसे हैं कि मिलिटैंट बेगुनाह लोगों को मार रहे हैं। लोग कश्मीर छोड़कर भाग रहे हैं। मेरे ससुराल वाले भी दिल्ली आये हैं कश्मीर छोड़कर और मैं यही कहने आया था कि मुझे इस फ्लैट की ज़रूरत है अब। इसलिए कहीं शिफ्ट करो। तुम लोग मकान ढूंढ रहे थे ना। क्या बना उसका?

"इधर निधि बहुत बिज़ी रहने लगी है। कभी बैठकर बात करने का मौका ही नहीं मिलता।"

"अब आज ही उससे बात करके शिफ्ट करो। यहां मेरे ससुराल वाले आकर रहेंगे।

"ठीक है। मैं उसे कहूंगा।"

"अच्छा मैं चलता हूं।"

"ठहरिये एक कप चाय तो पीते जाइए।

"नहीं भई, इस वक्त जल्दी है, फिर कभी सही।"

कमल के निकलते ही राज़ फूट–फूट कर रोया। उसके मन में एक ही बात कचोट रही थी अपनी बूढ़ी मां के प्रति अपना बर्ताव। वह सोच रहा था कि निधि जैसी लालची लड़की के चंगुल में फंसकर वह अपने कर्त्तव्य को भी भूल गया। इसी लिए वह कभी सुखी नहीं रहेगा। इधर उसे निधि में भी आकाश–पाताल का अन्तर दिखाई दे रहा था। पहले वह उसे प्यार करती थी। पर अब उसकी स्थिति एक

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नौकर से ज़्यादा कुछ न थी। सुबह घर के दस काम निपटा कर ऑफिस जाता और शाम को लौट कर निधि की चाकरी करता यह सब कभी–कभी उसके अहं को ठेस पहुंचाता और निधि अपने घंमड में मस्त थी। उसे राज की तड़प से जैसे कोई मतलब नहीं था। पहले तो दिन रात वह अपने चहेतों की भीड़ में घिरी रहती – और कभी यदि थोड़ा समय मिलता भी तो उसे टाल कर किसी यार–दोस्त से बात करती। कोई पराया या कोई फैन घर आता तो राज का परिचय अटैन्डैन्ट के रूप में कराती।

जब सब्र की इन्तिहा होती है तो इन्सान इन्कलाबी बन जाता है। मां के अन्त के बारे में सुनकर राज का भी यही हाल हुआ।

वह उस घड़ी को कोसने लगा जिस घड़ी उसकी मुलाकात निधि से हुई थी और धीरे–धीरे बढ़कर प्रेम के उफ़ान तक पहुंच गई थी। इतना सोचते ही उसे हैरानी सी हुई अपने आप पर–– वह तो सीधा सादा एक गरीब लड़का था तो निधि के जाल में कैसे फंस गया? काश उसे निधि न मिली होती तो वह अवश्य ही अपनी मां के प्रति अपने कर्त्तव्य को निभा पाता।

क्या मिला उसे निधि का साथ देकर बरबादी और जन्म भर के आंसू। निधि के दिमाग में अपनी सफलता का फितूर चढ़ गया है। वह कमल की सहायता को एहसान न मानकर अपना हक मानती है – कहती है कमल उसकी सफलता की सीढ़ी है बस और कुछ नहीं। उसे भी तो बता दिया कि अगर उसने मां के बारे में सोचा तो उसे भी छोड़ देगी। जिस दिन यह बात हुई बहुत बुरा लगा था राज को, किन्तु इस समय जब मां ही नहीं रही तो उसे लगा निधि की सोच और लालच ने ही उसकी मां का अन्त करा के उसका गला घोंट दिया है। उसे अब निधि में किसी तरह का भी कोई आकर्षण नहीं लगा। बड़ी घृणा सी हो गई उसे निधि की चमक–दमक वाली दुनिया से। यहां से भागने के लिए राज अब छटपटाने लगा। बड़ी देर तक सोचने के बाद उसने निधि को सदा के लिए छोड़ने का निर्णय लिया!

वह चाहता तो अभी चला जाता पर इन्सानियत के नाते उसने निधि को कमल का फ्लैट छोड़ने की बात कहके ही जाना उचित

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

समझा। फिर बेदिली से तैयार होकर वह अपने आफिस गया। यहां भी वह सारा दिन मन से काम न कर सका। एक ही सोच उसे सताने लगी कि घर छोड़कर भी तो उसे पकड़ा जायेगा क्योंकि निधि को इस आफिस के बारे में सब मालूम था। अब वह क्या करे। सोचा रिज़ाइन करे। मगर कमल की भलाइयों का वह इस प्रकार बदला चुकाना नहीं चाहता था और फिर नौकरी छोड़कर वह खायेगा क्या? यह भी तो खटका था उसके मन में।

ऑफिस टाइम के बाद एक पार्क में जाकर राज सोचने लगा। बड़ी देर तक सोचने के बाद वह इसी नतीजे पर पहुंचा कि कमल को अपने दिल की बात कहकर उसी से राय मांग लेगा। यह निर्णय उसे सही लगा तो आश्वस्त हाकरे वह घर की ओर चला।

घर पहुंचते ही उसका सामना काम वाली बाई से हुआ जो सोड़ा तथा गिलास सजा कर बैठक में जा रही थी। पूछने पर पता चला कि एक बहुत बड़े सेठ आये हैं जो बीबी जी के साथ ड्राइंगरूम में बैठे हैं। ड्राइंगरूम में पहुंचते ही राज को धक्का सा लगा। उसने निधि को अर्धनग्नावस्था में सेठजी की गोद में पाया। आगन्तुक शराब की चुस्कियां लेता हुआ निधि के लहराते बालों से खेल रहा था। इतने में निधि की नज़र उस पर पड़ी तो वैसे ही लेटे–लेटे वह राज से रूखे स्वर में बोली – "कहां थे तुम अभी तक? आओ। अब मेरी ओर आंखें फाड़े क्या देख रहे हो। सेठ जी के लिए एक और ड्रिंक बनाओ"।

"ले लेंगे डारलिंग ले लेंगे। पहले यह तो बताओ यह कौन है"

"सेठ साहब आजकल नौकरों को भी ठाठ सूझते हैं। यह मेरे टुकड़ों पर पलने वाला एक मामूली सा नौकर है।"

राज का सुनना था कि उसकी हालत एकदम पागलों जैसी हो गई। वह तीर की तरह घर से बाहर निकला और बड़ी देर तक सड़कों पर भूखा–प्यासा घूमता रहा। तब फिर कमल की याद आते ही उसे अपने फर्ज़ की याद आई और वह फिर वापिस आकर घर में दाखिल हुआ। इस समय निधि नाइटी में थी। बाल खोले शायद नहाई थी। गुन गुना रही थी – लगता था बड़ी खुश है। राज को देखते ही उसके सामने आई और बड़े प्यार से बोली–– "यह तुम्हें क्या हो जाता

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

है आजकल? मैले कुचैले कपड़े, बढ़ी हुई दाढ़ी। तुम्हारी यह सूरत देखकर ही मैंने सेठ को तुम्हारा गलत परिचय दिया। जानते हो क्यों? अगर मैं ऐसा न करती तो मुझे उसकी फिल्म मैं रोल न मिलता। और तुम्हें मालूम है पचास हज़ार का कन्ट्रैक्ट है।"

राज ने कुछ नहीं कहा। फिर थोड़ी देर बाद कहा – "दिन को कमल साहब आये थे और कह रहे थे कि कश्मीर के बुरे हालात के कारण उनके ससुराल वाले दिल्ली आये हैं, इसलिए उनको यह फ्लैट एक हफ्ते में खाली चाहिए।"

"उसे भी इसी वक्त मरना था। जहां साल भर इस फ्लैट में निकाला है छः महीने और इन्तज़ार नहीं कर सकता वह। मैं खुद इस गन्दे फ्लैट से शिफ्ट करना चाहती हूं। पर क्या करूं फ्लैट ही नहीं मिलता। खैर देखती हूं क्या कहता है वह। तुमने उसे यह नहीं बताया कि अभी फ्लैट खाली नहीं हो सकता" बोलते–बोलते उसने राज की ओर मुड़कर पर राज वहां नहीं था – कभी का जा चुका था।

फिर वह सारे फ्लैट में राज को ढूंढ़ती रही पर वह नहीं मिला। उस के कमरे में जाकर देखा, उसकी सारी चीज़ें वहीं थीं। इसलिए उसके इस तरह जाने से वह आशंकित न हुई। अपने रोज़ के नियम के अनुसार उसने डिनर लिया और सो गई।

इधर राज वहां से निकल कर सीधे बोट क्लब में आकर देर रात तक अपने आगे के कार्यक्रम पर सोचता रहा। सुबह सवेरे ही वह कमल से मिलने चला। उसके घर पर कमल के अन्य लोगों को देखकर राज को अपनी असहायता पर बड़ा दुःख हुआ। खैर किसी बहाने कमल से मिलकर उसने सारी बात सच्ची–सच्ची कह दी और साथ में यह भी कहा कि अब वह निधि के साथ रहना नहीं चाहता, इसलिए इस्तीफा देकर दिल्ली छोड़ना चाहता है। पहले तो कमल ने उसको समझाना चाहा लेकिन उसका खण्डित पौरूष कुछ भी बात समझने से इन्कार करता रहा। फिर न जाने क्या सोच कर कमल ने राज से कहा – "अगर तुम्हें अच्छा लगे तो मेरा कानपुर वाला काम तुम संभालो। यहां मैं अपने साले को तुम्हारी जगह अप्पाइन्ट करूंगा"। अन्धा क्या चाहे दो आंखें – राज बहुत प्रसन्न हुआ और कमल से पता और आर्डर लेकर उसी रात कानपुर चला गया।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

छब्बीस

आज राज को गये पूरे आठ दिन हुए। जिस दिन घर से चला गया था थोड़ा अनमना सा था। पर उस समय निधि को उसका इस तरह से चला जाना कोई विरोधी प्रतिक्रिया नहीं लगी थी। बस सोचा कि थोड़ी देर में घूम फिर कर वापिस आयेगा जैसे पहले भी कई बार हुआ था। जा ही कहाँ सकता है। लेकिन अब निधि थोड़ा सा परेशान रहने लगी यह सोच कर कि कहीं राज मां को लाने काश्मीर न चला गया हो। यदि वह मां को इधर लाया तो अवश्य ही अच्छा नहीं करेगा। खुद तो बोझ है ही ऊपर से बूढ़ी भी। नहीं यह हो नहीं सकता। अच्छा भला चल रहा था, न जाने उसे मां का लाड़ क्यों याद आया? बोर हो चुकी हूं मैं इस आदमी से। वैसे भी यह मेरे काम में एक खासी रूकावट बन गया है। पर अब उसका पता कैसे चलाया जाये? कमल को फोन करती हूं। शायद उसे कुछ मालूम हो – इतना सोचते ही उसने नम्बर डायल कर दिया। फोन किसी स्त्री ने उठाया। इसलिए आशंकित सी होकर उसने फोन रख दिया, पर कुछ देर बाद फिर नम्बर मिलाया। इस बार कमल घर ही थे सो फोन उठाया। तब आश्वस्त हो निधि ने राज के बारे में पूछा जिसका उत्तर कमल ने बिलकुल अनजान बनकर इस तरह दिया –

"क्या बात है। आप परेशान सी लग रहीं हैं?"

"नहीं ऐसी कोई बात नहीं। मैंने सोचा आपसे पूछूं कि ऑफिस के काम से आपने राज को कहीं भेजा तो नहीं?"

"नहीं निधि जी। मैंने उसे कहीं भेजा नहीं, बल्कि पिछले एक हफ्ते से उसे ऑफिस में भी नहीं देखा गया।"

"आपने फोन भी नहीं किया।"

"फोन क्यों करता। वह साहब तो इस्तीफ़ा देकर गये हैं। मैंने

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

समझा आपसे पूछकर ही ऐसा किया होगा। क्योंकि अब तो आप लोगों का स्टैट्स दफ्तरी नौकरी का नहीं है ना।''

''आपका कहना ठीक है, मैं स्वयं उसे इस्तीफा देने की बात करती थी। पर उसने मुझे बताया तक नहीं। क्या आपने उसका इस्तीफा स्वीकार किया है?''

''मैं किसी को क्यों कर रोकूंगा। जगह खाली हो गई तो एक दूसरा आदमी काम पर लग गया।"

"तो अपको उसके बारे में और कुछ मालूम नहीं।"

''क्यों क्या हुआ?''

''वह पिछले एक हफ्ते से गायब है।''

''अच्छा''

"हां और क्या। मैं बहुत परेशान हूं। मेरी मदद कीजिए।''

"आप तो खुद लोगों की मदद कर सकती हैं, भला आप को मदद की क्या ज़रूरत पड़ गई?''

"अब आप ही बताइए कि मैं अकेली क्या–क्या करूं। आपने भी फ्लैट खाली करने को कहा है और मेरा और कोई इन्तज़ाम अभी हुआ नहीं। क्या करूं?''

"देखिये निधि जी पहले की बात और थी और अब की बात और है। तब फ्लैट खाली पड़ा था और आपको भी ज़रूरत थी। अब इस फ्लैट के दावेदार आ गये हैं रहने के लिए और मैं समझता हूं आप भी ^ब मजबूर नहीं हैं।"

'आपका कहना सही है। पर मैं क्या करूं, कहां जाऊं, राज भी नहीं है।"

''सब बातें, अपनी जगह सही हैं। मेरा मांगना भी और आप की मजबूरी भी। आप तो रिसोर्सफुल हैं इससे कहीं शानदार फ्लैट आप घण्टों में अरेंज कर सकती हैं। पर मेरी इज़्ज़त का सवाल है। मेरे ससुराल वाले दिल्ली रहने आये हैं, और यह फ्लैट उनकी लड़की का है। इसलिए मुझे दुबारा कहने पर मजबूर न करें। मेहरबानी करके इस संडे तक फ्लैट खाली करें। आज वीरवार है इसलिए आपको तीन दिन की मुहलत दे रहा हूं। बुरा मत मानियेगा। यह मेरी मजबूरी है।"

कमल का इतना कहना था कि निधि को दिन में ही तारे नज़र आने लगे। मन किया कि दुबारा प्रार्थना करे शायद मान जाये। पर

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कामयाबी के गर्व ने ऐसा करने नहीं दिया। बड़ी देर तक सोचती रही तो रात को उसे अपने नये प्रोड्यूसर की याद आई और उसे फोन किया – ''चोपड़ा साहब क्या आप मेरे रहने के लिए एक कोठी की व्यवस्था कर सकते हैं?''

''क्यों क्या हुआ? आप तो अच्छी भली रह रही हैं।''

''जिसका यह फ्लैट है उसने संडे तक खाली करने को कहा है। अब आप ही बताइए कि इतने कम समय में मैं क्या कर सकती हूं?''

''तो कोई बात नहीं है सोनियों, आओ मेरे गेस्ट हाऊस में कयाम करो।''

''आप मज़ाक कर रहे हैं।''

''लो जी मैं मज़ाक क्यों करने लगा। जब तक आपका कोई इन्तज़ाम नहीं हो जाता आप इधर ही आयेंगी। कल मैं ट्रक भेज रहा हूं सामान के लिए, रहिए।

''सच में चोपड़ा साहब आपने मेरी सबसे बड़ी परेशानी को हल किया है। मैं आपकी एहसानमन्द हूं।''

''सो तो है। ज़रूर।

जल्दबाज़ी में वह सेठ का इशारा समझ न सकी और खुशी–खुशी सामान बांधना शुरू किया। इस समय उसे सब कुछ अच्छा ही लग रहा था क्योंकि वह जब यह फ्लैट छोड़ देगी उस वक्त राज उसके साथ नहीं होगा। अच्छा ही है कि उसे मुफ्त में पिंड छूट रहा है। अपनी इसी धुन में उसने कमल का नम्बर भी घुमाया और इन्तज़ार करने लगी। इधर कमल घर नहीं थे, सो फोन काल उनकी पत्नी ने रसीव की।

''हैलो। कौन?''

''मैं निधि।''

''कौन निधि?''

''आप नहीं जानती उन्हें मालूम है। फिलहाल इतना कह दीजिए कि संडे नहीं में कल ही उनका फ्लैट खाली कर रही हूं। मेहरबानी करके चाबियां ले जाइएं।''

सुनते ही मिसेज़ कमल बहुत खुश हुई क्योंकि उसे अपने मायके वालों के लिए कोठी की आवश्यकता थी ही। साथ में निधि भी समझ गई कौन है। सो उसने भी कह दिया – ''थैंक्यू वेरी मच। सच में

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

फ्लैट की हमें बहुत ज़रूरत आन पड़ी थी, नहीं तो आपको खाली करवाने के लिए नहीं कहा जाता। आप कहां जा रही हैं?''

''मुझे वैसे भी यह फ्लैट अब स्यूट नहीं करता था, सो बड़े दिनों से तलाश में थी। अब तो मुझे एक कोठी मिल गई और जा रही हूं।''

''कहां मिली है?''

यह तो उसको भी मालूम नहीं था। थोड़ी देर के लिए वह सकपका सी गई। जब एकदम कुछ न सूझा तो झूठ ही कह दिया-- "मोती बाग में"।

''अच्छा। वे आयेंगे और उन्हें मैसेज दे दिया जायेगा।'' कहते ही मिसेज़ कमल ने चौंगा रख दिया। पर फोन रखते-रखते अपनी मां से कश्मीरी में कुछ बताया जो निधि सुन रही थी।

उसका सुनना था कि निधि के पांव के नीचे से धरती खिसकती दिखाई दी। उसकी सारी खुशी हवा हो गई। उसे याद आई अपने पुराने जीवन की। जब यही आवाज़ उसकी बड़ी इज़्ज़त करती थी और अब अपने लिए ''फरेबी'' इत्यादि शब्द सुनते ही उसे अपने आप से घृणा सी हो गई। वह उदास हो गई। सोचने लगी – उसने सच में ही अपने मां-बाप के साथ, अपने भाई-भाभी के साथ तथा उनके रिश्तेदारों से फरेब ही तो किया है। – अब वह चाहकर भी किसी को अपना मुंह तक नहीं दिखा सकती। राज था जो ऐसे मौकों पर तसल्ली दिया करता था उसका भी कोई पता नहीं सब कुछ खोकर उसे क्या मिला – झूठी शान और दबदबा। यह दबदबा भी वहीं तक है जब तक उसकी जवानी है। उसके बाद – क्या होगा उसके बाद?

बड़ी देर तक निधि सोचती रही। तब एकदम न जाने क्या सूझी उसे। उसने टेपरिकॉर्डर ऑन कर दिया और चलती धुन पर थिरकने लगी। जब नाच-नाच कर थक गई तब अपने-आप से बोली – जब तक आनन्द लिया जा सकता है ले लो। फिर जब कभी बुरे दिन आयेंगे तो देखा जायेगा। अभी तो मैं जवान हूं, सुन्दर हूं, कई दिलों की धड़कन हूं! बाद में देखा जायेगा।

इस प्रकार वह फिर से सामान बांधने लगी और कल की नई दुनिया के स्वप्नों में खो गई।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सत्ताईस

आज कानपुर आये राज को लगभग एक महीना हो गया। इस बीच उसकी जान पहचान दफ्तर के लोगों के अलावा और भी कई लोगों से हो गई। अपने सरल स्वभाव के कारण सब उसे चाहते थे। यह रिपोर्ट कमल को दिल्ली में भी मिल गई थी। कमल ने उसे निधि के फ्लैट खाली करने के बारे में फोन पर बताया था और साथ ही यह भी बताया था कि वह अब बुरी तरह से लालच में फंस चुकी है, जो अन्त में उसके लिए अच्छा नहीं होगा। सुनकर राज को बड़ा अफसोस हुआ। और बार–बार यह विचार आया कि जाकर उसे समझाये, पर तभी उसका वह बर्ताव भी याद आया जब उसने किसी सेठ के सामने उसे नौकरों की तरह फटकारा था। तब बड़ी वितृष्णा हुई थी उसे निधि से। वह मन ही मन कमल का धन्यवाद करने लगा, जिसने वक्त पर उसकी मदद की और कानपुर भेज दिया। यह ठीक है कि इसी निधि के कारण ही वह अपने कर्त्तव्यों को भूल कर, मां को अकेला छोड़कर निधि के साथ भाग गया था जिसका फल यह मिला कि उसकी स्नेहमयी मां मर गई। अब वह दुबारा उस कीचड़ में नहीं फंसेगा – नये सिरे से ज़िन्दगी जीने की कोशिश करेगा। इसी विचार को मन में लिए वह शान्ति से अपना गुज़ारा चलाता रहा। एक कमरा किराये पर लिया था जिसके एक कोने में स्टोव और दो एक बर्तन रखे थ, और एक कोने में एक चारपाई तथा ज़रूरत के थोड़े से कपड़े। और शेल्फ़ पर रखी थी नई–नई किताबें। बस यही थी राज की नई दुनिया!

दिनभर दफ्तर में केवल अपने काम से काम। शाम को घर पर चाय, खाना आदि करके सन्ध्या के समय मुहल्ले के मंदिर में जाना—– यह राज की दिनचर्या थी। बहुत सारे कश्मीरी पंड़ित आतंकवादियों

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

के ज़ुल्म से बचने के लिए भाग कर इधर भी आये थे, सो रातों को देर तक वह उन उखड़े–बिखरे विस्थापितों की व्यवस्था का प्रयत्न करता रहता इसलिए उन लोगों में भी राज काफी लोकप्रिय हो गया था। उसकी इस तरह की रिपोर्ट कमल को बहुत अच्छी लगी। एक दिन वह बिना सूचना दिये ही कानपुर के ऑफिस में पहुंच गया। वहां राज से मिला और बहुत प्रसन्न हुआ। दफ्तर से निकलते ही स्वयं ही कमल ने राज से कहा – ''क्यों दोस्त अपने घर नहीं ले जाओगे मुझे?''

"अवश्य ले जाता, किन्तु वहां आपके लायक कोई सुविधा नहीं। इसीलिए बोलने में झिझक हो रही है।"

''नहीं मुझे कोई असुविधा नहीं होगी। मैं आज रात तुम्हारे साथ तुम्हारी चारपाई पर ही सोना चाहता हूं।" सुनकर कुछ झिझक के साथ राज बोला "वैसे आप से मेरा कुछ भी छिपा नहीं, इसलिए आपको अपने झोंपड़े में ले जाते हुए मुझे शर्म भी नहीं आनी चाहिए। जो कुछ है सब आपका ही तो है। चालिए अवश्य चलिए" और कमल राज के साथ उसके ठिकाने पर चल पड़ा। डेरे पर पहुंचते ही राज ने फटाफट स्टोव पर चाय चढ़ाई और कमल को दीवान पर बिठाया। मामूली सी सजावट, मुख्तसर से कपड़े। पर सब कुछ साफ सुथरा – जो राज की तबीयत का परिचय था।

कमल को यहां पहुंच कर बड़ा आनन्द महसूस हुआ। चाय की चुस्की लेते हुए कमल ने पूछा – "यहां जो कुछ मैं देख रहा हूं वह तो दिल्ली वाले राज से काफी अलग है। ऐसा क्यों?''

राज ने बात को समझा नहीं फिर भी जवाब दे ही दिया – ''यह तो आप मानते ही हैं कि घर की सजावट या सुन्दरता स्त्री के हाथों में होती है। यह तो बस बसेरा है कमल जी। बस गुज़ारा हो ही जाता है।''

''तुम मेरी बात नहीं समझे हो दोस्त। मेरा मतलब चार दीवारी सजाने से नहीं था, बल्कि मैं तो कह रहा था कि यहां पूरा स्कून है, शान्ति है जो दिल्ली में नहीं थी।''

बात को अब समझते हुए राज पछतावे की हंसी हंसता हुआ बात

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

टालने की कोशिश करने लगा। इस फीकी हंसी के पीछे राज के छुपे दर्द को समझते हुए कमल बोला – "ठीक है मेरे भाई नहीं बोलना चाहते हो तो मत बोल। पर अन्तर तो साफ नज़र आता है। सोचता हूं तेरा जैसा नौजवान घर से भागने की गलती नहीं कर सकता, फिर तुम क्यों भागे निधि के साथ?"

एक ठंड़ी सांस लेकर राज बोला, "वह मेरा बचकानापना था, जिसके लिए मुझे बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ी मां की असमय ओर क्रूर मृत्यु के रूप में। अब सोचता हूं कि अपने उन्हीं पापों का प्रायश्चित कर लूँ।"

"क्या तुम्हें निधि की याद नहीं आती?"

"उसका आसमान असीम है। उसकी ख्वाहिशों की मैं कब का भेंट चढ़ गया हूं। मेरे जैसे मामूली से इन्सान का वह क्या करेगी?"

"तो क्या तुम्हारा प्यार झूठा था?"

"झूठा तो नहीं कह सकता। हां, एक तरह का भ्रम था, छलावा था जिसके हटते ही मैं वास्तविकता की धरती पर औंधे मुंह गिरा हूं। अब जब तक मैं संभल जाऊं वह बहुत दूर निकल चुकी होगी।"

"तुम्हारा इच्छा नहीं कि जानो उसने तुम्हें कितना ढूंढा होगा?"

"इसका अन्दाज़ा मैं बहुत अच्छी तरह से लगा सकता हूं कि मेरे गायब होने से उसकी सारी मुश्किलें हल हो गई होंगी। तो भला मुझे वह क्यों ढूंढेगी?"

सुनते ही एक लम्बी सांस लेकर कमल बोला – "तुम्हारा कहना सही है दोस्त। अब उसके तेवर ही कुछ और हैं। मासूम सी शक्ल में एक खूंख्वार, लालची औरत है निधि। जब तुम दोनों को मैंने पहली दफ़ा देखा था तो सोचा था कि इसके मां–बाप सख्त किस्म के लोग होंगे इसलिए इसे भागना पड़ा होगा। मुझे बड़ी मासूल लगी थी वह। सोचा चलो इसकी मदद की जाये। सच मानों जो मुझे इस अन्जाम की जरा भी भनक होती, मैं कभी भी सहायता न करता। खैर जो हो गया, सो हो गया। अब तुम्हारा क्या इरादा है?"

"इरादा कैसा? अभी अपनी भूल का प्रायश्चित करना है।"

"कैसे?"

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"यहां आए हुए अपने असहाय विस्थापित लोगों का हाथ बटा कर। मुझे लगता है कि इससे मेरी मां की आत्मा को शांति मिलेगी।

''उसके बाद''।

"उसके बाद कुछ साहित्य सेवा करके।"

"कैसे?

"मैं निधि जैसे चरित्रों से भोले–भाले इंसानों को बचाने के लिए साहित्य सृजन करूंगा। रही मेरे व्यक्तिगत जीवन की बात, सो जिस पर आप जैसे मित्र की कृपा हो उसे सोचना नहीं चाहिए"।

''यह तो कहने की बातें रहीं। आखिर तुम करना क्या चाहते हो?''

"अभी तो कुछ नहीं। जब समय आयेगा अवश्य आपको बताऊंगा"।

''चलो ऐसे ही सही। तुम्हारे बाद निधि से वह फ्लैट खाली करवा के उसमें अपने ससुराल वालों को बसाया है। तुम्हारे स्थान पर अपने साले को नियुक्त किया है। अब तुम पूछोगे कि निधि कहां गई? उसका जवाब भाई मेरे पास नहीं।

''मैं ऐसा कभी नहीं पूछूंगा क्योंकि मैं जानता हूं कि उसने मेरी तरह ही अब किसी धनी को बेवकूफ़ बनाया होगा।''

''सच बताना दोस्त। क्या वह बच्चा तेरा ही था जिसे निधि ने गर्भ गिरा कर समाप्त किया था?''

"आपने यह एक बहुत ही व्यक्तिगत सवाल पूछा है। पर आपको अधिकार है। इसलिए कह दूं कि मुझे भी नहीं मालूम।"

''ऐसा क्यों?''

"क्योंकि निधि का सम्पर्क केवल मुझसे ही नहीं कई औरों से भी था। परन्तु मेरे भावुक होने का उसने सही फायदा उठा लिया।"

''मुझे माफ करना तुम्हें काफी दुःखी कर दिया। पर यकीन मानो आज मेरी एक जटिल गुत्थी सुलझ गई।"

''यानि''

''मैं हमेशा अपराध बोध से दबा जा रहा था कि मेरे कारण तुम्हारे बच्चे की मृत्यु हो गई। अब ऐसा कोई पछतावा नहीं होगा। तुम शादी करो और अच्छी तरह से जीवन गुज़ारो। भूल जाओ निधि को।

"भूलना इतना आसान नहीं लेकिन भूलना ही हम दोनों के लिए

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ठीक होगा।"

"क्यों भाई आज खाना नहीं खाना क्या?"

"हां। अवश्य खाना है और दो मिनट में बन जायेगा।"

"आज बाहर खा लेते हैं। कल यहां खायेगे।"

"नहीं कमल भाई, आज यहां खा लेते हैं कल बाहर खायेंगे। आप यकीन जानिये मैं एक बहुत अच्छा कुक हूं। आखिर दिल्ली में भी तो मैं ही खाना बनाता था।"

"अच्छा?"

"और क्या?"

"चलो भाई तुम जीते और मैं हारा।"

इतने में राज ने एक मैगज़ीन कमल के हाथों में देकर कहा–

"आप तब तक इसे पढ़िये जब तक मैं खाना बनाता हूं।" इतना कह कर वह बाज़ार चला गया और कमल उसकी इस छोटी सी दुनिया का अवलोकन करने लगा।

साफ़–सुथरा कमरा। शैल्फ पर सजाई पुस्तकें और एक कोने में रसोई का सामान। एक तख्तपोश जिस पर कमल बैठा था। साथ ही खिड़की की दहलीज़ पर सटाया हुआ टेबल लैम्प। बैड के सिरहाने गीता और रामायण की प्रतियां। सामने दीवार पर लगाई गई एक मात्र शिव जी की फोटो। बस इतनी सी पूंजी थी राज के पास।

यह सब देखकर कमल इतना प्रभावित हुआ कि वह सोचने लगा–– कितना भोला है यह राज। तभी तो निधि के चंगुल में फंस गया। नहीं तो काफी तरक्की करता यह। कर्मठ और अपने कर्त्तव्य को निभाने वाला मेधावी युवक। यह ऐसा ही नहीं रहेगा ज़रूर तरक्की करेगा। मैं इसकी मदद करूंगा।

अभी कमल सोच ही रहा था कि राज एक प्याली चाय लेकर हाज़िर हुआ और बोला – कमल जी जब तक खाना तैयार हुआ जाता है, थोड़ी चाय की चुस्की लीजिए।"

"अरे हां। चाय की ज़रूरत महसूस हो रही थी। अच्छा किया जो लाये। पर खाना कब तक दोगे?"

"बस आधे घंटे में।"

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दोनों चाय पीने लगे। चाय पीते पीते कमल बोला - "माफ करना राज, तुम्हारी डायरी देखी। एक दो कविताएं पढ़ी भी। बहुत अच्छा लिखते हो। पर छपवाते क्यों नहीं हो?"

"कविताएं लिखना तो मेरा बचपन से चला आ रहा है। सच कहूं तो इन्हीं कविताओं ने मुझे निधि से मिलाया और इतना सब कुछ हुआ। अब अगर छपवा दीं तो न जाने क्या होगा?"

"कुछ नहीं होगा अब। तुम इकट्ठी कर लो कविताएं। मैं छपवा दूंगा इन्हें। फिर देखते हैं कि क्या होगा।"

राज को यह सुनकर बड़ा अच्छा लगा। उसने आगे बढ़कर अपनी ताज़ा कविता कमल को बड़े उत्साह से सुनाई।

कमल ने भी बड़ी दाद दी और वायदा किया कि जरूर वह उसका कविता संग्रह छाप देगा।

इतने में खाना तैयार हुआ। दोनों मित्र खाना खाने लगे जो सचमुच में बड़ा स्वादिष्ट था। कमल को इस नवयुवक में अनेक गुणों का भंडार दिखाई देने लगा। उसने बार-बार एक ही बात दोहराई "अब तक कहां थे मेरे मित्र? मैं तुम्हें प्रसिद्धि की बुलन्दियों तक पहुंचा कर ही दम लूंगा।"

बहुत रात बीत चुकी थी। दोनों साथ-साथ सो गये।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अट्ठाईस

लगातार तीन दिन तक परिश्रम करने के उपरान्त आज शालू को घर सजाने की तसल्ली हुई। घर की सफाई के साथ ही साथ पर्दे धोये, बर्तन चमकाये तथा हर तरह का सामान सजा के रखा, ताकि उसके सास–ससुर आयेंगे तो उन्हें किसी तरह की कोई तकलीफ न हो। जब यह सारा काम हुआ तब उसे अपने मां–बाप से मिलने की चिन्ता हुई। उसने विनय से मायके जाने की इजाज़त ली जिसके जवाब में विनय स्वयं भी ससुराल जाने को तैयार हो गया। इस प्रकार दोनों ही पति–पत्नी शालू के मायके चले गये।

बड़ी देर के बाद बेटी और दामाद को पाकर वे लोग बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने हाल–चाल पूछने के उपरान्त वहीं रात को खाना खाने के लिए अनुरोध किया। इस प्रकार विनय शालू के भाई और पिता के साथ बात–चीत में लगे रहे और शालू अन्दर मां के साथ काम में हाथ बटाने चली गई।

कुछ इधर–उधर की बातों के बाद मां ने एकदम निधि का प्रंसग छेड़ दिया जिसे सुनकर शालू सकपका गई किन्तु जल्दी ही विषय बदल कर अपनी सास पर ले आई। पर उसकी मां भी काफी अनुभवी थी। सो बोली – "बेटी, यह तो उनकी बेरूखी के ब'द भी तुम परदादारी में लगी हो। जब वे तुमसे हमदर्दी करते तो तुम क्या न करती उनके लिए।

"मैं समझी नहीं मां।"

"न समझने वाला तो कुछ भी नहीं है बेटा। हमें मालूम है कि उन लोगों ने तुम्हें मारने तक में कोई कसर नहीं छोड़ी थी और तुम हो कि उन्हीं का पर्दा किये जा रही हो।

"कौन सा पर्दा, तुम क्या कहती हो मां?"

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

''पर्दा नहीं तो क्या है यह – निधि कहां है? कौन सी ट्रेनिंग कर रही है। तुम्हें तो मालूम होगा। भाभी हो ना उसकी, बोलो।''

शालू को काटो तो खून नहीं। एकदम चुप हो गई वह। उसे चुप देखकर उसकी मां बोली – "गाज जब अपने सिर पर गिरी तो कैसे सीधी हो गई तुम्हारी सास? सौ चूहे खाकर बिल्ली हज को चली अब। मैं भी कहूं कि उसमें इन्सानियत कहां से आ गई जो तुमसे स्नेह करने लगी। पर बात असल में कुछ और ही थी।"

''क्या बात थी – मुझे तो कुछ भी पता नहीं?''

"नहीं है ना पता तो सुन। वह मां की लाड़ली तुम्हारे सास–ससुर को कालिख पोत गई है। भाग गई है वह किसी लड़के के साथ। समझी तुम।"

''तुम्हें किसने कहा? मां गलत है यह। वह नानके गई है और अपने मां–बाप के साथ वापिस भी आ रही है।"

"तो ठीक है। तोरण–द्वार सजा दो उसके स्वागत के लिए।

''ऐसा क्यों कहती हो मां?''

"इसलिए कि वह नहीं आयेगी। उसने न जाने किसके साथ मुंह काला किया होगा।"

''क्या कहती हो मां?''

"तुम्हें यकीन नहीं आता है ना तो जाकर अपनी मामी से पूछ जिसने दिल्ली से चिट्ठी में लिखा है कि निधि किसी मुसटण्डे के साथ दिल्ली में रह रही है।

"अच्छा?"

"हां। पर हमें क्या, अगर तू अपने पति के साथ खुश है, तो सब ठीक है। बाकी जाये भाड़ में। अच्छा तो बता कब आ रहे हैं तेरे सास ससुर?"

''परसों 13 तारीख को।''

''तो ठीक है मैं भी बेहया निधि को देखने ज़रूर आऊंगी।"

उसके बाद मां–बेटी में बड़ी देर तक इधर–उधर की बातें चलती रहीं, जब तक खाना बना तथा खाया गया। उसके बाद शालू विनय के साथ वापिस चली आई। पर मन हल्का होने के बजाय काफी भारी

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

था। अन्दर से यही सोच रही थी शालू कि क्यों हुआ यह सब?

विनय के बार–बार पूछने पर भी वह कुछ भी बता न पाई। केवल अपनी लाचारी पर रो पड़ी।

आखिर बड़ा कुरेदने के बाद वह केवल इतना कह पाई है कि रीता के पति कमल ने निधि को दिल्ली में देखा है। सुनकर विनय को पहले तो बहुत बुरा लगा। वह सोचने लगा उन्हें उनके घर जाना ही नहीं चाहिए था। पर बहुत सोचने के बाद वह इसी नतीजे पर पहुंचा कि बात जब निकल ही चुकी है तो वे लोग किस–किस का मुह बन्द करेंगे। पहले उसे शक़ हुआ शायद शालू ने ही उन्हें कहा होगा। पर तभी विचार आया तब वह इस तरह परेशान नहीं होती और रोती भी नहीं। खैर। अब तो इस सच्चाई को झेलना ही है और कोई चारा भी तो नहीं। जब उसके मां–बाप आयेंगे तो क्या जवाब होगा उनके पास। यह देखने के लिए अब अधिक समय नहीं है। वे लोग आयेंगे तो अपने आप उसकी ज़िम्मेदारी समाप्त होगी, इसलिए तब तक चुप रहने में ही भलाई है। इतना सोचने के बाद विनय शालू से बोला– ''कहीं तुम्हारे मुंह से ऐसी कोई बात तो नहीं निकली।'' भोली शालू पति का इशारा समझ नहीं पायी, बोली – "यह कौन सी अच्छी बात थी जो मैं जाकर कहती। मुझे तो अफ़सोस इस बात का है कि निधि के भाग जाने की खबर का पर्दाफाश कैसे हुआ और तुम हो कि...''

"बस, बस। अब माफ भी कर दो भाई। यह तो करनी का फल है। जिसने किया वह भुगते तुम क्यों परेशान होती हो। आज नहीं तो कल दुनिया इस तरह की बातें तो करेगी ही। तुम या मैं इस सिलसिले में कुछ भी तो नहीं कर सकते। चलो अपने हाथों से प्यारा सा एक कप चाय तो बना दो। बड़ा मन कर रहा है।" शालू चाय बनाने चली और विनय इस समस्या से छुटकारा पाने का तरीका सोचने लगा।

चाय आ गई। चाय पीते–पीते भी विनय सोचता रहा। पर कुछ हल होता नहीं दीखा। सो शालू से पूछ लिया, ''और क्या कहते थे वे लोग।'' शालू कुछ समझी नहीं। वह बोली ''कौन लोग?'' "अरे वही तुम्हारी अम्मा और अन्य लोग और कौन?''

''किस बारे में?''

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"वही निधि के बारे में।''

अब समझ आई शालू को और वह एकदम चुप हो गई। इस पर विनय को थोड़ी देर के लिए फिर शक हो गया कि कहीं शालू ही ने तो नहीं कहा होगा। खैर जो भी हो – अब किया भी क्या जा सकता है? "मैं सोचता था यदि वह कोई पता वगैरा लिख भेजते तो जाकर निधि को ले आते" विनय बोला। इस पर शालू बोली – "इतने समय के बाद उसे जाकर लाना ठीक होगा क्या?

'क्या ठीक न होगा। कम से कम सबकी मर्ज़ी से और बाकायदा जाती तब और क्या?'

'हां यह ठीक है चलो कल उनसे पूछते हैं। अब वक्त निकाल कर तुम्हीं उनसे पता वगैरा ले आओ।''

''क्यों तुम क्यों नहीं। चिंता तो हम दोनों को है"।

''नहीं मेरा जाना इसलिए ठीक नहीं लगेगा क्योंकि मैने इस बारे में उनसे कोई बात नहीं की। तुम से बात हो गई है इसलिए तुम्हें बताने में ना तो उन्हें कोई हर्ज होगा नहीं तुम्हें कोई आपत्ति होगी"। इस तरह दोनों पति–पत्नी ने यह फैसला किया कि दूसरे दिन जाकर पता लाया जायेगा।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उन्नतीस

चाहे तर्क से या कुछ और कारणों से निधि के पिता अपने आपको यह समझाने में सफल हो गया था कि मैगज़ीन वाली तस्वीर उसकी बेटी निधि की नहीं। लेकिन मन के किसी अनजान कोने से इस बात की गवाही का इन्कार हो रहा था। हूबहू वही चेहरा–मोहरा वही कद–काठी कैसे हो सकता है दो लड़कियों का। अवश्य ही यह तस्वीर निधि की हो सकती है। उसे बचपन से ही फिल्मों का बड़ा शौक था। ज़ाहिर है वह इन्हीं लोगों के पास गई होगी।

श्यामलाल ने पत्नी के होश में आने की प्रतीक्षा की। उसके होश में आते ही उसने अपनी पत्नी पर भी अपना शक प्रगट करते हुए कहा – "तेरा क्या खयाल है। क्या वह तस्वीर वाली सूरत हूबहू निधि से नहीं मिलती?"

पत्नी ने हताश व निराश स्वर में जवाब दिया – "तस्वीर उसे मिलती नहीं – उसी की है। मां की आंखे धोखा नहीं खा सकतीं।"

"फिर तुमने क्या सोचा है? जायें उससे मिलें?"

"उसका पता कहां मिलेगा?"

"जिस पत्रिका ने अपनी मशहूरी के लिये निधि की तस्वीर छापी है उसके दफ्तर में जाकर पता लगाया जा सकता हैं"

"तो लगाओ पता।"

"सुना है यह दफ्तर दिल्ली में है। उधर जाने के लिए पैसे खर्च होंगे जो हमारे पास नहीं।"

"कल ही तो मनीआर्डर मिला है तुम्हें विनय का।

"ठीक है भागवान्। वह पैसा तो वापिस कश्मीर जाने के लिए मिला है। और कम है।"

"तो तुम्हीं अकेले जाओ और उससे मिलकर आओ। मैं यहीं तुम्हारी

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रतीक्षा करूंगी।''

''ठीक है। मैं आज ही रात की गाड़ी से दिल्ली चला जाऊंगा।''

यह सुनकर पत्नी को ज़रा स्कून सा मिला, थोड़ी देर में पूरी तरह ठीक होकर कहने लगी – ''तो रात को खाने के लिए दो एक फुलके साथ रख देती हूं।''

यह कह कर वह फुल्के बनाने लगी। और श्यामलाल सोचता रहा – सीधे ''लिरिल'' के दफ्तर जाकर पता लगाऊंगा। अगर वही हुई तो ज़रूर मुझसे मिलकर प्रसन्न होगी। माफी मांगेगी इस तरह से भागने पर। मैं कहूंगा कि उसके भाग कर अच्छा ही किया कि उसकी मां की भी आंखें खुल गई और उसे उस लड़के के साथ विधि के अनुसार विवाह करने को भी कहूंगा। वह ज़रूर मान लेगी मेरी बात। और जब उसे अपनी मां के बारे में पता चलेगा वह भागी–भागी मां से मिलने भी आयेगी। आखिर खून का रिश्ता है कैसे भुला पायेगी उसे। मैं उसे अपने साथ यहां हरिद्वार लाकर मां से भी मिलाऊंगा। तब सब काम आराम से होंगे–

''लो। यह थोड़ा सा खाना। रास्ते में खा लेना और जल्दी वापिस आना।''

वह न जाने और क्या–क्या सोचता परन्तु पत्नी की बातों से विचार बिखर गये और बोला– ''उसे मैं अपने साथ लाऊंगा तुमसे मिलने के लिए।''

''वह नहीं आयेगी।''

''क्यों नहीं आयेगी?''

''इसलिए नहीं आयेगी क्योंकि अब उसका हमारे गरीब घर में मन न लगेगा।''

''गलत। वह ज़रूर आयेगी। तुम देख लेना।''

इस तरह नई उम्मीद लेकर श्यामलाल चल पड़ा निधि से मिलने। दिल्ली पहुंच कर 'लिरिल' वालों का पता ठिकाना मालूम किया। दूसरे दिन पते पर पहुंच गया। वहां निधि के बारे में मालूम किया। जवाब मिला हां एक मॉडल है और यहीं दिल्ली में रहती है'। श्याम लाल ने निधि से मिलने की इच्छा बताई और अपने दूर से आने का वास्ता

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दिया, तब मैनेजर साहब को दया आई उस पर और आफिस में लिखे पते की नक्ल श्यामलाल के हाथ में थमा दी।

तब पिता अपनी पुत्री को खोजने चल पड़ा। सारा दिन बसों पर खाक़ छानता रहा पर अपने मकसद में कामयाब न हुआ। तब थक हार के एक चाय के ढाबे पर पसर गया। बड़ी देर तक वह वहां से उठा ही नहीं तो ढाबे के मालिक को चिन्ता हुई कि कहीं यह आदमी मर तो नहीं गया – इसलिए उसके पास जाकर उसे हाथों से हिलाया तो उसकी क्षीण सी आवाज़ सुनी। तब और नज़दीक आकर उससे पूछा – "भाई तुम उठते क्यों नहीं अब तो दुकान बन्द करने का समय भी आ गया।" इस पर उसने थकी मजबूर सी नज़र डालकर कहा––

"ठीक है भाई उठते हैं, पर यहां कोई धर्मशाला वगैरा है क्या? दूर से आया हूं और थका हुआ हूं।"

"धर्मशाला तो बहुत दूर पड़ेगी। किसी होटल में क्यों नहीं जाते?"

"भाई गरीब आदमी हूं इतना पैसा मेरे पास नहीं।"

"तो ठीक है। कुछ थोड़ा खा पी लो तब इसी दुकान के थड़े पर रात भर पड़े रहना।"

तब श्याम लाल उठा और दाल रोटी का आर्डर देकर फिर पसर गया। थोड़ी देर में खाना खाया और दुकान के बन्द होते ही उसके थड़े पर आसन जमाया। जगह तो उसको मिल गई पर आंखों से नींद गायब थी। मन में तरह–तरह के विचार उठ रहे थे। इतनी बड़ी दिल्ली में निधि को कैसें ढूंढे। जो पता सुबह दफ्तर से मिला था, उसी को खोजते–खोजते तो सारा दिन बीत गया तब भी पता मिला नहीं। अब वह करे तो क्या करे। वह इसी परेशानी में था कि सामने से आती कार की चकाचौंध सें उसकी थकी हारी आंखें चुंधिया गईं। कार धीमी गति से जा रही थी और उसमें हो रही बातचीत की ध्वनि उसके कान में भी पड़ गई और वह आवाज़ उसको अपनी बेटी की आवाज़ जैसी लगी। वह उस कार के पीछे दौड़ पड़ा पर कार की धीमी गति उसको मात दे गई। तब लुटा–पिटा सा वह वापिस अपनी जगह पर आ गया। जहां पर एक शराबी आकर बैठ गया था। श्यामलाल ने वापस आते ही उससे सवाल किया – "भाई तुम मेरी जगह पर क्यों आकर बैठ

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गये हो?''

''क्योंकि यह जगह मेरी है।'' जवाब शराबी ने दिया।

''सो कैसे''?

''सो इस तरह कि यहां आकर मैं रोज़ अपनी महबूबा से मिलता हूं।''

उसे शराबी का यह अटपटा सा उत्तर समझ में नहीं आया। इसलिए वह चुप रहा। पर शराबी ने उसे चुप न रहने दिया, वह बोला–

''वह हर शाम यहीं से गुज़रती है। उसकी खूबसूरत शक्ल देखता हूं तो तबियत खुश हो जाती है।''

''तुम उसके साथ क्यों नहीं रहते।''

"अरे क्या कहते हो तुम। वह मुझ फकीर के साथ क्यों रहने लगी। हज़ारों दिलों की मल्लिका है वह। देखना चाहते हो उसकी तस्वीर – लो देखो।'' इतना कहकर शराबी ने वही मैगज़ीन वाली तस्वीर अपने मैले से झोले से निकाली जो श्याम लाल हरिद्वार में देख आया था। अजीब तरह की हालत हो गई श्याम लाल की। काटो तो खून नहीं। खैर तभी कुछ समय पश्चात् उसने शराबी से पूछा– "तुम्हें मालूम है कहां रहती है यह?'' इस पर शराबी दुःखी स्वर में बोला – "वहीं तो मालूम नहीं है।" खोदा पहाड़ और निकला चूहा वह भी मरा हुआ। तब एक किनारे पर बैठता हुआ वह बोला– "देखो भाई मैं परदेसी हूं। यहां कोई जान–पहचान नहीं इसलिए रात गुज़ारनी है इसीलिए यहां बैठा था।"

''तो बैठो ना मैंने मना थोड़े ही किया है।'' शराबी ने मस्ती में कह दिया और एक ओर पसर गया। शराबी के सो जाने के बाद भी श्याम लाल को नींद नहीं आई। वह सोचने लगा– हो न हो यह निधि का कोई साथी है। तभी तो उसने उसकी तस्वीर सम्भाल के रखी हैं। पर तभी हरिद्वार वाले दो गुण्डों की लड़ाई भी याद आई और उस यात्री का कहा हुआ उनका मनसूवा भी याद आया। उसे सिहरन सी हुई और एकदम क्रोध से मन ही मन फट पड़ा वह – क्या ज़रूरत थी निधि को इतना ज़लील होने की। अब अगर वह मिल भी गई तो क्या हमारे साथ रहने के काबिल रही होगी वह? तभी एक और

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विचार आया – मुझे उससे मिलना नहीं चाहिए। मैं कल वापिस हरिद्वार जाऊंगा और वहां से सीधे कश्मीर। उसके बारे में वही बात दोहराई जायेगी जो हम दोनों ने घर से निकलते ही सोच रखी थी। वैसे भी क्या गलत है इसमें। हमारी वाली निधि तो सच में ही मर गई है। इसी उधेड़बुन में कब उसकी आंख लग गई उसे पता नहीं चला। सुबह जागते ही वह भौंचक्का सा हो गया। "क्योंकि दिन बहुत गुज़र चुका था। ढाबे वाला अपना ढाबा शुरू कर रहा था और वह शराबी न जाने कब ज़ा चुका था। ढाबे वाले को उस पर दया सी आई सो उसने उसे गरम–गरम चाय का एक कप पिला दिया जिससे उसकी बूढ़ी हड्डियों में जान सी आई। थोड़ी देर के बाद वह चलने को हुआ कि ढाबे वाले ने रोका और कहा – "पंड़ित जी। थोड़ी देर में ग्राहक आने वाले हैं जिनसे तुम पता ले सकते हो क्योंकि वे लोग भी वहीं काम करते हैं जो पता तुम्हारे पास है। इसलिए अभी बैठों बाद में चले जाना।" आभार प्रकट करते हुए श्याम लाल बैठ गया। अजीब दुविधा में था–– एक मन कह रहा था अब मिलें नहीं बल्कि भागें यहां से। पर दुसरा मन कह रहा था आये हो तो एक नज़र उसे देखते जाओ। बैठ तो वह गया पर उसे अपना आप किसी चोर से कम न लगा। अपने को सिमटाता हुआ वह एक ओर जाकर बैठ गया ताकि ढाबे वाले की दुकान का हर्ज न हो। चार छः बाबू किस्म के लोग आये और ढाबे वाले ने उसे बुलाया – "ओ पंड़ित जी। आओ यही हैं वे लोग जो तुम्हें बता सकते हैं। पूछो इनसे।" फिर उन की ओर देखता हुआ बोला – "ढूंढ के थक गये हैं, इनके पास तुम्हारी फिल्म यूनिट का पता है, इसलिए इनकी मदद करो। आओ पंडित जी, तब वे सभी श्यामलाल के इर्द–गिर्द जमा हो गये और श्याम लाल ने कहा– "मैं निधि देवी से मिलना चाहता हूं।"

उन लोगों में एक बोला – "सुनो बाबा। हमारे यूनिट में कोई देवी नहीं है।"

श्याम लाल ने आस नहीं छोड़ी, दुबारा बोला "वही जिसकी तस्वीर पत्र–पत्रिकाओं में छपती है।"

"ओ तो तुम्हें मैड़म चांदनी से मिलना है।" इतना कहकर वह

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

श्यामलाल को ऊपर से नीचे तक देखने लगा। कुछ देर बाद फिर बोला वह---

''क्या तुम भी उसके फैन हो?'' श्याम लाल ने कोई जवाब नहीं दिया। तब वह आदमी फिर बोला, ''मेरी सुनो तो लौट जाओ। वह नौजवानों, रईसज़ादों को घास भी नहीं डालती तुम क्या चीज़ हो"। श्याम लाल को यह सुनते ही बड़ा गुस्सा आया, पर तभी अपने पर संयम करके वह बोला,

''एक नज़र देखने में न तो उसका कुछ जायेगा और न ही तुम्हारा नुक्सान होगा बेटा। इतनी दूर से आया हूं तो देखकर ही जाऊंगा।"

''बाबा मैं तो तुम्हारे लिए ही कह रहा था। मुझे क्या है मैं ले चलता हूं उनकी ही शूटिंग है आज। चलो मिलेगी तो तुम्हारी किस्मत।"

कुछ देर तक वे खाते–पीते रहे। फिर उठकर उन्होंने श्याम लाल को अपने साथ लिया। बैठ तो गया वह उनकी बस में किन्तु मन में कई बार विचार आया कि उसे उनके साथ मिलकर कुछ नहीं मिलेगा? व्यर्थ में ही परेशान होगा वह – खैर फिर भी इस विचार से कि उसे देखकर उसकी लड़की को अपने किये पर पछतावा हो। वह न जाने क्या–क्या सोच रहा था कि साथ बैठे एक साथी ने उसकी ओर देखकर सवाल दागा "बड़े मियां यह बताओ तुम कैसे दीवाने हुए?" सवाल से वह चौंक गया किन्तु तभी अपने आप पर काबू पाकर उसने भी कह दिया, ''सुन्दरता तो ईश्वर की देन है भाई और सुन्दरता का आकर्षण स्वाभाविक है।

इस पर उसी साथी ने फिर कहा – "पर तुम तो मियां उसके बुजुर्गों की उम्र के हो। इसीलिए पूछा था।"

इस पर दूसरा साथी बोला, "क्यों बुजुर्गो की इच्छाएं नहीं होती क्या?"

"ना ऐसी बात नहीं मेरे भाई। मैडम तो जवानों को नहीं पूछती ज़ालिम तो इसे मिलेगी क्या?" यह सुनकर श्याम लाल गुस्से से कांपने लगा पर बोला कुछ नहीं। श्याम लाल के बदलते रंग देखकर दूसरा साथी बोला, ''वह तो मियां की किस्मत रही। अपने को वहां ले जाने में दिक्कत कैसी?'' इस पर सभी साथी बोले – ''ठीक है। ठीक है।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अब जल्दी चलो वक्त हुआ जा रहा है।"

थोड़ी देर में बस फाटक के अन्दर पहुंच गई। सभी लोग बस से उतरे। श्याम लाल को भी सहारा देकर उतारा गया। चूंकि सभी को काम पर जाना था सो श्याम लाल को एक बड़े हॉल में बैठा कर वे सब चले गये। श्याम लाल वहां का वातावरण देखकर हैरान परेशान देखता रहा इधर'उधर। वह मन में सोचे जा रहा था–– कितना बदकिस्मत था मैं जो अपने फैसले खुद न कर सका। हर बात बीबी की सुनता रहा? पैसे बटोरने में इस कदर मसरूफ रहा कि पता ही नहीं चला कब मेरे अपने ही घर में आग लग गई। अब यहां आकर और भी बड़ी मूर्खता कर बैठा। अव्वल तो निधि सामने आयेगी नहीं – और अगर आ भी गई तो क्या मैं उसे सहन कर सकूंगा? मैं उससे कह दूंगा कि उसका हमारे घर में अब कोई स्थान नहीं। हमारे लिए वह कब की मर चुकी है। बेहया कहीं की – "अरे ताऊ चलो वहां शूटिंग होगी। वहीं देख सकोगे मैडम चांदनी को चलो जल्दी चलो" – किसी ने आकर उसके विचारों को छिन्न–भिन्न कर दिया और विवश हो वह भी जल्दी–जल्दी उठा और बताई जगह पर बैठ गया। इतने में कैमरों की लाइट्स इत्यादि के जंगल में उसे निधि दिखाई दी जिसने कपड़ों के नाम पर केवल एक जांगिया और ब्रा पहनी थी। बाल काटे हुए और होंठों पर लिपस्टिक लगाई हुई थी। उसे देखते ही श्याम लाल को शर्म महसूस हुई उसकी नज़रें झुक गई। वह पसीने–पीसने हो गया कि साथ बैठे एक आदमी ने उससे कहा – "भाई अगर ऐसा देख नहीं सकते तो क्यों आते हो ऐसी जगह?" श्याम लाल ने उसकी बात का कोई जवाब नहीं दिया और थका हारा सा खड़ा हुआ। जाने को मुडा ही था कि इधर ले आने वाले साथियों में से एक ने आकर उसे पकड़ लिया और कहा –– "चलो बड़ी मुश्किल से मैड़म ने तुम्हें इन्टरव्यू देना मंजूर किया है आओ"। अब श्याम लाल की बुरी दशा हुई मन तो भागना चाहता था यहां से और यह लोग मिलवाना चाहते थे उसे – क्या करे वह? खैर बड़ी मुश्किल से अपने पर काबू पाकर श्याम लाल उसके साथ हो लिया। अन्दर पहुंच कर उसने देखा वह अब आधे कपड़ों में है। थोड़ा मन को सहारा मिला। इतने में लाने

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वाले ने कहा -- "मैड़म यही है वह बन्दा जो कश्मीर से चल कर आपसे मिलने आया है।"

मैडम ने एक पत्रिका पढ़ते–पढ़ते ही कहा "कौन है, सामने आओ"। इस पर श्याम लाल ने थरथराई जुबान में कहा – "मैं आपके सामने ही हूं मैडम।" मैडम ने आंखे उठाकर देखा तो एकदम पीली पड़ गई, काटो तो खून नहीं। बड़ी देर तक दोनों एक दूसरे को देखते रहे। सारी यूनिट में खलबली सी मच गई। श्याम लाल की आंखों में आंसू की धारा बहे जा रही थी और मैड़म हतप्रभ सी हो उसे एकटक देखे जा रही थी। तभी यूनिट के मालिक ने पैक अप करने का आर्डर दिया और सामने आकर बोला – "मैडम अब चलो।"

मैडम को इस हालत में देखकर वह श्याम लाल पर बरस पड़ा – "तुम्हें किसने यहां आने दिया। आ जाते हैं न जाने कहां–कहां से। जाओ भाई दया करो जाओ।" फिर अपने लोगों को इशारा करके कहा – अरे कोई है इसे बाहर निकालो। लोग आगे बढ़े और श्याम लाल को बाहर निकाला। इधर मैडम थोड़ी देर के बाद सम्भल कर बैठ गई।

श्याम लाल को न जाने क्या सूझी वह रात को फिर उसी ढाबे के थड़े पर आकर बैठ गया। फिर वह शराबी आया – फोटो निकाली उसके साथ बतियाने लगा फिर रात के अन्धेरे को चीरती हुई कार की रोशनी में उसने देखा – कार के अन्दर उसकी निधि किसी के साथ खिलखिलाकर हंस रही थी। इसके बाद उसने कल रोश्नी में ही दिल्ली छोड़ने का निर्णय लिया और सोने की कोशिश करने लगा। अभी कुछ ही वक्त गुज़रा होगा कि दो लोग उसे उठाकर ज़बरदस्ती अपने साथ ले गये। कुछ देर के बाद उसने अपने आपको एक शानदार कोठी के हॉल में पा लिया। ट्यूब लाइट्स की दूधिया रोशनी में उसकी आंखें चुंधिया गयीं। उन दो आदमियों ने उसे वहां पटक दिया और न जाने कहां गुम हो गये। हैरान और परेशान सा श्याम लाल इधर–उधर देखने लगा। मन में थोड़ा डर भी गया, क्योंकि इस माहौल में वह पहली बार फंसा था। इतना तो वह भी समझ गया कि यह जगह शूटिंग वाले लोगों से सम्बन्धित है। – पर किसके? उसकी बेटी के अथवा उस आदमी के जिसने भिखारी समझ उसे बाहर निकाल

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दिया था। उसने दिमाग पर ज़ोर डाल कर एक–एक वस्तु को देखना आरम्भ कर दिया, पर तब भी उसकी समझ में कुछ न आया। अन्त में नियति पर सब कुछ छोड़कर वह निढाल हो गया।

इतनी शानदार जगह और इतना सन्नाटा – वह अपने आपको कैदी समझने लगा। बड़ी देर के बाद उसे कदमों की चाप सुनाई दी। उसने आवाज़ की दिशा में गरदन घुमाई तो अपनी बेटी को नाइट गाऊन में अलसाई सी मुद्रा में अपनी तरफ आते देखा। घृणा के मारे उसने अपनी आंखे बन्द कर ली लेकिन कितनी देर तक। फिर खोल दीं और निधि को सामने पाया जो उसकी इन बच्चों जैसी हरकतों को देखती हुई मज़ा ले रही थी। ज्यों ही उसने उसकी ओर देखा तो वह बोली, "क्यों पंड़ित जी भर ली तिजोरी उस बेज़बान की हत्या करके कि नहीं...?"

"आंखें क्या मिचमिचाते हो। कर ली बेटे की दूसरी शादी कि नहीं। यहां कैसे पहुंचे और क्यों आये हो यहां? अभी रुपयों की और भूख है क्या, बोलो कितने दूं – हज़ार, दस हज़ार, पचास हज़ार बोलो बोलो, किसी की जवानी बरबाद होती है तो हो जाये, कोई परवाह नहीं तुम बोली लगाओ बस।" और यह कहते हुए उसने नोटों की एक दो गडियां अपने बाप की ओर फेंकी और नफ़रत से बोली – "उठाओ और दफ़ा हो जाओ यहां से, फिर अपनी मनहूस शक्ल कभी न दिखाना समझे।" इससे पहले कि श्याम लाल अपनी सफाई में कुछ कहे मैडम ने ताली बजाई और वही दो आदमी यम दूतों की तरह प्रकट हुए। तब वह बोली – "इस बूढ़े को जहां से लाये हो वहीं पटक दो और देखो यह पैसे पड़े हैं इसके। इसकी झोली में भर दो जाओ।" फिर उन दो आदमियो ने अपनी मालिकन के हुक्म की तामील करते हुए वे पैसे उसकी कमर में बांध दिये और किसी बेजान बोझ की तरह उठाया और चलते बने। श्याम लाल की समझ में कुछ भी न आया। बस स्तम्भित होकर मूर्खों की तरह आंखे फाड़–फाड़ कर देखता रहा।

जब वे लोग उसे उसी ढाबे के थड़े पर छोड़ गये तो उसी चेतना लौट आई। वह केवल इतना ही सोच पाया कि जो कुछ हुआ इतनी जल्दी में उसके लिये अच्छा न हुआ। कमर में कपड़े से बंधे नोटों

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

से जैसे उसकी कमर दुःखने लगी। उसने उन नोटो को फाड़कर फैंकना चाहा लेकिन तभी अपनी तंगदस्ती का खयाल आते ही उसने वे नोट सम्भाल कर रखे और सुबह सवेरे दिल्ली छोड़ने का संकल्प किया। रात बहुत बीत चुकी थी लेकिन उसकी आंखों से नींद गायब थी। केवल एक ही विचार बार–बार आता कि हरिद्वार में पत्नी ने कहा था कि अब वह हम गरीबों के साथ रहना पसन्द न करेगी। तो क्या ऐशो–आराम ही ज़िन्दगी की सच्चाई है, कर्त्तव्य या रिश्ता कुछ नहीं। क्या वह मां–बाप को भी भूल गई, जिन्होंने रातों की नींद और दिनों का चैन उसके लिए कुर्बान कर दिया। अब जाकर उसकी मां को क्या बतांऊगा? क्या वह यह सच्चाई जानकर सहन कर सकेगी? पर तभी उसे एक और विचार आया – यह तो उसकी मां का लालच ही है जिसने निधि की इस तरह की बेरूखी को जन्म दिया है। वह जुल्म न करती बहु पर तो लड़की इस तरह से हाथ से न जाती। क्या कभी मां ने बेटी के जवान होते हुए अरमानों की टोह ली थी जो हर मां का कर्त्तव्य होता है? तभी तो बेटी ने मुझे खरी–खोटी सुनाई। कहां मैं सोचता था कि मुझसे डरेगी और माफी मांगेगी कहां उसने भिखारी की तरह से टुकड़ा फैंक कर रूसवा कर दिया।

चलो अच्छा ही हुआ जो मैं उसकी मां को साथ नहीं लाया, नहीं तो न जाने आज क्या होता। यही सोचते–सोचते कब सुबह हुई – उसे वक्त का पता ही नहीं चला। फिर उसने अपनी पोटली सम्भाली और बस स्टैंड की ओर चल पड़ा। ट्रेन तो रात को जायेगी पर अब तो जैसे यहां रहा ही नहीं जाता इसलिए बस से हरिद्वार जाऊंगा– ऐसा सोच कर वह बस में बैठ गया।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तीस

एक दिन राज अपने दफ्तर में काम कर रहा था कि एक आदमी उसके पास आया जो देखने में सुन्दर था, उसी की उम्र का लगता था। वह कश्मीर से आया था आतंकवादियों से अपने और अपने परिवार के प्राण बचाकर। शरणार्थी था और नौकरी की तलाश में आया था। उससे सारा हाल जानकर राज उसकी सहायता करना चाहता था पर अपने दफ्तर के नियमों के अनुसार उसे यहां वह अधिकार प्राप्त नहीं थे। यदि वह उसे किसी छोटे–मोटे काम पर लगा भी लेता तो कोई कुछ न कहता पर उसके अपने असूल उसे ऐसा करने से रोकते थे। तब बहुत सोचने के बाद उसने उसे अपने डेरे का पता दिया और कहा – "यह लीजिए मेरा ठिकाने का पता है, मैं स्वयं एक माइग्रैन्ट हूं, इसलिए आपके लिये वहीं बैठकर समाधान सोच लेंगे।" वह आदमी पता लेकर चला गया और राज दिन भर व्यस्त रहने के कारण उसे भूल ही गया। शाम को नित्य की तरह थका हारा जब वह घर पर पहुँचा, वहां उसे दरवाज़े के सामने विद्यमान पाया, तब उसे सुबह वाली सारी बात याद आई। राज ने कमरा खोल कर उसे बिठाया और स्वयं बाज़ार दौड़ा। वह आदमी यह सब देखकर हैरान हुआ, उसके लौट आने की प्रतीक्षा करने लगा।

कुछ देर बाद राज खाने–पीने का सामान लेकर आया और आते ही स्टोव पर चाय धर दी। इतना करने के बाद वह आगंतुक से बोला, "देखिये कैसा भुलक्कड़ हूं मैं आपको घर आने के लिए कहा भी और खुद भूल गया। क्षमा कीजिए। लीजिए पहले चाय पियेंगे फिर बातें होंगी"। वह आदमी उसकी सरलता और सादगी से प्रभावित हुए बिना न रह सका। वह सोचने लगा कि कितना अच्छा आदमी है। यह चाहता तो मुझे एक रूखा जवाब देकर अपना काम करता, कौन रोकता उसे लेकिन इसने अपनी भूल के लिए क्षमा भी मांगी और एक प्यारे मेहमान

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

की तरह खातिरदारी भी की कौन करता है इतना आज के ज़माने में। उसे सोचता देखकर राज ने पूछा – "भाई साहब, किस सोच में पड़े हैं आप लीजिए चाय तैयार है।"

हैरानी से उसे देखता हुआ वह चाय की प्याली उठाने लगा। तब राज बोला, ''अभी तक आपने अपना नाम नहीं बताया – क्या नाम है आपका?''

''मुझे योगी कहते हैं।''

''श्रीनगर में कहां रहते हैं आप?''

''मैं हब्बाकदल का रहने वाला हूं। बी.ए. पास हूं। आप जनते हैं कि हम लोग कैसे कश्मीर छोड़ कर आये हैं?''

''क्या श्रीनगर में कोई काम करते थे?''

''जी नहीं। मैं बेकार हूं।''

''आपके साथ कोई और भी है क्या?''

''जी हां। मैं और मेरी बूढ़ी मां। अपना सब कुछ छोड़ कर किसी तरह अपनी जान बचा कर आये हैं।''

''वहां के कुछ मुसलमान लोगों ने मुझे मुखबिर समझ कर मेरा नाम अपने हिट–लिस्ट में दर्ज किया है यही सुनकर हम मां बेटे रात को किसी तरह भागने में सफल हो गये।''

''आपको कैसे पता लगा कि आप हिट लिस्ट में हो?''

''मुझे मेरे अपने एक मुसलमान दोस्त ने कहा था।''

''कौन था वह?''

''वह हमारी यूनिवरसिटी में एक दादा टाइप का छात्र था।''

''कहीं आप अशरफ की बात तो नहीं कर रहे हैं?''

"हां, हां वही आप कैसे जानते हैं उसे?''

''वह मेरा क्लासफैलो था।''

''क्या आप भी वहीं पढ़ते थे?''

"हां मैं भी वहीं पढ़ता था। पर मैं आतंकवादियों द्वारा निकाले जाने से पहले ही निकला था वहां से।"

''क्यों?''

''यही वहां के बिगड़ते हालात के कारण''।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"आपने अच्छा किया जो पहले ही निकल आये, वहां तो अब हालात बड़े ही खराब हो गये हैं।"

"खैर जो होना था वह हो गया। अब क्या करने का इरादा है?"

"यही कोई छोटी-मोटी नौकरी मिल जाये ताकि मां के साथ गुज़ारा हो सके।"

"कहां ठहरे हैं आप लोग?"

"अभी तो फिलहाल एक मंदिर में ठहरे हैं। वहीं आपको देखा और आपके दफ्तर का पता किया और आपके पास आ गया।"

"आपने अच्छा किया जो आये, अब जब तक आपकी कुछ व्यवस्था हो जाती है आप मां समेत मेरे साथ इसी कमरे में रह सकते हैं।"

"आपको असुविधा होगी।"

"मुझे असुविधा नहीं होगी बल्कि मां के आ जाने से यह सूना कमरा घर बन जाएगा।"

"फिर भी।"

"कोई फिर भी नहीं, बल्कि अभी जाइए और ले आइए उन्हें। उसके बाद कुछ करने की योजना बनाई जायेगी। उठिये ले आइए मां को"

इस तरह योगी अपनी मां को भी राज के कमरे में ठहराने के लिए लेने चल पड़ा। इधर उसके जाने के बाद राज को दो और चारपाइयों की व्यवस्था करनी पड़ी। सारी व्यवस्था करते समय उसे एक ही बात बार-बार याद आती रही और वह बात थी अशरफ की। अशरफ उर्दू डिपार्टमैंट का छात्र था और निधि का दोस्त था। निधि अक्सर उसके साथ सिनेमा आदि भी देखती। बड़ी देर तक दोनों की बातें होती रहती कैन्टीन में – ऐसा याद आते ही उसकी कल्पना न जाने कहां से कहां पहुंच गई। उसे याद आया वह दिन भी जब निधि ने उसे बताया था कि अशरफ अच्छा लड़का नहीं और तब एक दिन वे दोनों खूब लड़े थे और अशरफ एक ही बात बार-बार कहता – "हम तो ऐश करने वालों में हैं बोझ ढोने वालों में नहीं, समझी।" जिसके जवाब में निधि अपना आपा खोकर गालियां भी बकने लगी थी। ऐसा क्यों किया था निधि ने। कहीं वह उसकी शिकार तो नहीं हुई थी।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उसके बाद निधि का झुकाव उसकी (राज की) ओर हुआ था, तब एक दिन उसने अपने मां बनने की बात कही थी और वह बहुत घबराया था, मां को अकेली छोड़कर निधि की इज़्ज़त बचाने चला श्रीनगर से भागकर। तब एकाएक उसे विचार आया – कहीं निधि अशरफ़ के बच्चे को उस पर मढ़ तो नहीं रही थी। ओफ ओ, हे भगवान बड़े संकट से बचाया मुझे। तेरा लाख–लाख धन्यवाद। वह न जाने और भी क्या–क्या सोचता कि दरवाज़े के खुलने की आवाज़ से उसकी तन्द्रा टूटी। योगी की मां से मिलते ही राज को बहुत स्कून सा मिला न जाने क्यों? उसे लगा जैसे उसकी अपनी मां उसके पास आई हो। उसने बड़े प्यार से उसे चारपाई पर बिठाया और फटाफट चाय बनाकर पिलाई। तब मां दोनों बच्चों के लिए खाना बनाने का उपक्रम करने लगी।

इस तरह कोई एक सप्ताह बीता होगा कि राज ने अपनी दौड़–धूप से योगी को भी एक फैक्ट्री में नौकरी दिलाई। अब दोनों भाइयों की तरह रहने लगे। योगी उसे भैया कहता और राज योगी को छोटे भाई की तरह मानता था। मां दोनों को देखती और ईश्वर को धन्यवाद देती। एक महीने के बाद उन्होंने वह कमरा छोड़ दूसरे मुहल्ले में दो कमरों का सेट किराये पर लिया।

इस बीच राज ने अपना कविता संग्रह पूरा कर लिया था जिसमें कुल सौ कवितायें थीं। अब यही सोचता कि पुस्तक तो तैयार हो गई पर इसे छपाने के लिए उसे पहल करनी चाहिए या कमल का इन्तज़ार करना चाहिए। इधर तब से कमल ने उसकी कोई खोज–खबर नहीं ली थी। कई बार उसके मन में आया कि वह स्वयं ही कमल को पत्र लिखे पर तभी यह भी विचार आया कि कहीं वह उसे स्वार्थी न समझे। दफ्तर में भी उसके बारे में पता करने की कोशिश की, मगर कोई सफलता नहीं मिली। बिना प्रतीक्षा के तो कोई चारा नहीं था। सो कविता संग्रह सन्दूक के हवाले करके मन मार कर बैठा रहा राज।

तब एक दिन सहसा कमल दफ्तर में पहुंचा और राज की प्रतीक्षा करने लगा क्योंकि पुराना कमरा तो वह छोड़ चुका था। जब राज आया तो उसे वहां देखकर प्रसन्न भी हुआ और हैरानी भी। उसने कहा

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

– "आपने अपने आने का पता दिया होता तो मैं आपको लेने स्टेशन आ जाता – कब आये आप?"

"मैं आज ही आया हूं और पहले तुम्हारे ही पास गया था, पर पता लगा कि तुमने वह कमरा छोड़ दिया है। फिर यहां आकर जम गया। कहो कैसे हो?"

"ठीक हूं। अभी आपने चाय नाश्ता किया नहीं होगा। चलिए घर चलते हैं।"

"भई। मैंने नाश्ता किया है। अभी घर नहीं चलेंगे, शाम को तुम्हारे साथ ही चलेंगे। अभी फिलहाल मैं किसी काम से आया हूं, सो करने दो।"

"फरमाइए।"

"मेरे साथ चलो, तुम्हें एक प्रसिद्ध अखबार के सम्पादक से मिलाता हूं।"

"वह बाद में भी हो सकता है। अभी आप मेरे साथ घर चलिए। नहा धो कर फिर जायेंगे।"

"अभी काम ही करें तो ठीक रहेगा।"

"नहीं अभी घर चलना ठीक रहेगा, चालिए।"

"अच्छा भई चलो।"

दोनों रिक्शा पर घर चले। घर पहुंचकर कमल, राज के नये घर को देखकर हैरान हो गया। घर पहुंच कर राज ने मां से कमल को मिलाया और कहा – "यह मां है, और मेरा छोटा भाई काम पर गया है वह शाम को आयेगा।"

चूंकि कमल ने राज की मां को देखा था और यह भी मालूम था कि वह अब जीवित नहीं, फिर यह वृद्धा कौन है – यह उसके लिए जिज्ञासा रही? यही समझ कर योगी की मां ने शुरू से अब तक की सारी कहानी सुनाई, जिसे सुन कर कमल राज के चरित्र से और भी प्रभावित हो गया। वह मन में सोचने लगा कि अच्छा ही हुआ जो यह हीरा निधि के बन्धन से आज़ाद हो गया। उसके पास रहता तो यह कुछ भी नहीं कर पाता। कहां इसको मां, भाई से घर का सुख मिल गया और कहां निधि पाप के पंक में गले तक डूब गई है।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पूरे तीन दिन राज के पास रहकर कमल ने उस के कविता संग्रह की छपाई की व्यवस्था की। तब तीसरे दिन वापसी पर उसने राज से कहा – "मेरे विचार से तुम्हारी ज़िन्दगी अब शान्ति से गुज़र रही हैं और परमात्मा ने चाहा तो वह दिन दूर नहीं जब तुम आकाश की बुलन्दी को छू लोगे।"

"आपके जैसे पथ–प्रदर्शक हों तो सभी कुछ सम्भव है।"

"क्या तुम निधि के बारे में जानना नहीं चाहोगे?"

"बीती बातों को याद करने से क्या फायदा?"

"ठीक कहा तुमने। लेकिन सब को अपनी करनी का फल यहीं मिलता हैं। यही बताने के लिए कहा था। सुनोगे?"

"आप यदि सुनाना ही चाहते हैं तो सुनाइए।"

"निधि अब ज़रूरत से ज्यादा पीने लगी है, जिस कारण उसको होश नहीं रहता इसलिए अच्छी–अच्छी एडवरटाइज़िंग कम्पनियों ने उसे काम देना बन्द कर दिया है। अब वह गरीबी में दिन गुज़ार रही है।"

"गलती किस से नहीं होती। उसकी मदद करनी चाहिए।"

"नहीं ऋषि महोदय। वह बला सहायता के योग्य नहीं। उसने हमेशा छल और प्रपंच से अपना स्वार्थ सिद्ध किया है, इसलिए वह भूखी मरेगी नहीं मैं तो मदद करने से रहा –तुम्हीं जा के करो ना उसकी सहायता। करोगे?"

"वैसे इंसानियत यही कहती है कि उसकी मदद की जाये।"

"खबरदार अगर ऐसी कोई हरकत की तो – इस तरह तुम एक दोस्त खो दोगे, समझे तुम। फिर मैं कभी तुम्हारा नाम भी न लूंगा।"

"आप नाराज़ न हो जायें। आपको कभी शिकायत का मौका न दूंगा।" इस तरह स्टेशन बतियाने के बाद कमल ट्रेन पर सवार हुआ और राज वापिस घर आ गया।

सारी रात राज सो न सका। निधि तकलीफ में है उसकी मदद करनी चाहिए। फिर उसे कमल के शब्द याद आये। उसे कमल पर बड़ी श्रद्धा थी। वह किसी भी कीमत पर कमल को खोना नहीं चाहता था। निधि ने जब नौकर की तरह से दुत्कारा था और वह बाग में वक्त गुज़ारने चला था – यदि उस वक्त कमल न होता तो क्या होता

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उसके साथ? यदि इस वक्त वह इज़्ज़त से अपना गुजारा कर रहा है तो यह इसी कमल की कृपा है। नहीं तो निधि ने उसे कहीं का नहीं रखा था। और इतने समय तक कभी निधि ने उसे खोजने की कोशिश की जो वह उसके लिए मरा जा रहा है। उसी के कारण वह अपनी बूढ़ी मां को अकेले छोड़ कर उसके साथ भागा था और उसने इस सबका क्या सिला दिया उसे – दुत्कार कर घर से बाहर निकाल दिया। अब ईश्वर की कृपा से उसे मां भी मिली है और इज़्ज़त भी। क्यों खोये वह यह सब। नहीं वह अब और बेवकूफ नहीं बनेगा। उसने सिर झटक दिया और अपने लिखने की मेज़ पर कविता लिखने का प्रयास करने लगा।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इक्तीस

दूसरे दिन घर के कामों से निपट कर शालू मां के पास निधि का पता पूछने की गर्ज़ से गई। लेकिन उसकी मां कोई पता न दे सकी क्योंकि पत्र में केवल निधि के दिल्ली में होने की बात लिखी थी, पता नहीं लिखा था। तब उसकी मां ने कहा, "कोई बात नहीं तुम्हारी मामी को उसका पता लिखने के लिए पत्र लिख देंगे, सो दो तीन दिनों तक पता भी मिल जायेगा।"

"तुम तो कहती थी कि तुम्हारे सास–ससुर आ रहे हैं, शायद उनको मिली हो कहीं। मेरे विचार से बेटी तुम उन्हीं का इन्तज़ार करो, शायद गुत्थी अपने–आप सुलझ जाये।"

"भगवान करे ऐसा ही हो।"

फिर इधर–उधर की बातें चली मां–बेटी में कुछ देर। उसके बाद शालू ने मां से अपने घर जाने की आज्ञा ली।

घर पहुंचने के बाद उसने कुछ कपड़े धोये। फिर सब्ज़ी काट कर रसोई में खाना बनाने के लिए चली ही थी कि दरवाज़े पर दस्तक हुई। दरवाज़ा खोला, सामने विनय को पाकर कुछ हैरान सी हुई और बोली – "आप आज इतनी जल्दी कैसे आये?"

"क्यों"

"यूं ही पूछा आपने सुबह जाते हुए कहा था कि रात को देर से आयेंगे इसलिए।"

"लो मैं वापिस जाता हूं, क्यों?"

"नहीं ऐसी कोई बात नहीं। आज मैं मम्मी के घर गई थी। सोचती हूं कि अभी तक अगर नहीं आई होती तो आपको यहां दरवाज़ा बन्द मिलता।"

"यह तो तुमने ठीक कहा, मगर तुम जल्दी कैसे वापिस आई?"

"सासू मां और बाबू जी के कमरे के पर्दे थोड़े गन्दे थे। इसलिए विचार आया कि घर आ कर धो लूं। आयेंगे तो क्या कहेंगे, इसलिए जल्दी आई।"

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"अब वे इतनी जल्दी नहीं आयेंगे।"

"क्यों?"

"उनका पत्र आया है जिसमें उन्होंने अभी वापिस नहीं आने की बात लिखी है।"

"ऐसा क्यों लिखा उन्होंने? कहीं पैसे कम तो नहीं हुए?"

"पता नहीं। पर मेरा मन कह रहा है कि वे लोग यहां आने की हिम्मत नहीं जुटा पाये अभी। खैर जो भी है तुम चाय का एक कप बना के दो प्लीज़, बहुत सिरदर्द है।"

शालू चाय बनाने रसोई में गई। इधर विनय सोचने लगा – क्या कुछ दिन और वहां रह कर वे लोगों के सवालों के जवाब दे पायेंगे? – चाहे अभी आयें या साल भर बाद जवाब तो उन्हें देने ही पड़ेंगे सवालों के। फिर इस तरह दर–ब–दर फिरने का क्या मतलब? खैर जो मन में आयेगा वही तो करेंगे वे, किसी की कब सुनते हैं अगर किसी की बात सुनते तो कभी यह नौबत न आती। इतना कुछ होने के बावजूद भी अभी होश नहीं आता। वह और भी कुछ सोचता कि शालू ने आकर उसकी तन्द्रा तोड़ डाली – "लीजिए चाय"।

"हां हां, लाओ।"

"क्या सोच रहे थे आप?"

"कुछ नहीं। अच्छा बताओ तुम निधि का पता लाई?"

"नहीं पता उन्हें मालूम नहीं। उन्होंने उसे दिल्ली में एक दो बार देखा था बस।"

"तब क्या होगा?

"कुछ नहीं, मम्मी कहती थी कि मामी को पत्र लिखकर पता लगाने के लिए लिखेंगी। तब दो चार दिन में पता भी आ जायेगा।"

"ठीक है। मैं समझता हूं कि हमें अब वापिस गांव जाना चाहिए।"

"क्यों क्या छुट्टी खत्म हो गई।"

"अभी एक हफ्ता और है। इस बीच मकान के लिए किरायेदार ढूंढ लेंगे क्योंकि बिना इन्सानों के मकान खण्डहर बन जाता है।"

"क्यों क्या अभी आपके माता–पिता आयेंगे नहीं?"

"कहा ना वे अभी नहीं आयेंगे और मेरे विचार से हम व्यर्थ में ही प्रतीक्षा कर रहे हैं। जब उनको आना होगा तो उन्हें अपने साथ गांव ले

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जाकर, मकान खाली करवा देंगे। ठीक है ना।''

''जैसी आप की मर्ज़ी।

''तो बोलो अगले हफ्ते किस दिन के लिए टिकट बुक करवाऊं?

''अपको जिस दिन अच्छा लगे।''

''क्यों तुम्हारी कोई मर्ज़ी नहीं।''

''मुझे क्या है यहां रहूंगी तो आपके साथ और गांव में रहूंगी तो आपके साथ। इसलिए मेरे लिए एक ही बात है।''

''ठीक है पहले इस हफ्ते में किरायेदार ढूंढ़ने की कोशिश की जाये।''

''ठीक है। अब मैं खाना बनाने जा रही हूं।''

''चलो आज मैं भी तेरे साथ खाना बनाऊंगा।''

''नहीं। आप पड़ोसियों में जाकर किरायेदार ढूंढिये तब तक।''

''हां। यह भी तुमने ठीक कहा'' कहकर वह बाहर निकल गया।

शालू को इतने दिनों की अपनी कड़ी मेहनत व्यर्थ दीख रही थी। पर अब करे भी तो क्या? दिल के किसी कोने में दुबारा गांव के शान्त वातावरण में लौटने की खुशी भी हो रही थी और किसी दूसरे कोने में सास–ससुर के न लौटने के विषय में उत्सुकता भी। –– वे अभी क्यों नहीं आयेंगे? क्या उन पैसों में उनका गुज़ारा होगा? न जाने कहां होंगे? क्या करते होंगे? यह इंसान भी बड़ी अजीब चीज़ है। जब विपत्ति पड़ती है तो कैसे सब कुछ भूल कर अपने को बचाता फिरता है। लेकिन कब तक बचाते फिरेंगे वे लोग अपने आपको। अपनी बेटी ने तेवर दिखाये तो दोनों की सिट्टी पिट्टी गुम हो गई। क्या उनको अपने जुल्म याद आते होंगे जो उन्होंने मुझ पर किये हैं। खैर सच्च ही कहा है किसी ने कि ईश्वर के घर में देर है अन्धेर नहीं। बेटे को कैसे झूठी सच्ची बातें बनाकर अपने वश में कर लिया था। करने चले थे बेटे की दूसरी शादी पर खुद ही बरबाद हो गये। वाक़ई वे चले थे और धन–बटोरने पर खुद ही कंगाल हो गये। वह कहते हैं ना चले थे ऊन लेने पर सिंर मुंडा कर आ गये। उनका तो सिर मुंड गया है, वे कैसे वापिस आयेंगे। चलो अच्छा ही हुआ। जो सास की खिच–खिच और झिख–झिख से छुटंकारा मिल गया। लेकिन जो भी हुआ अच्छा नहीं हुआ। न तो वे अब घर के रहे और न घाट के बेचारे – सोचते–सोचते उसने खाना बनाया और अब कमरे में आकर टी.वी. देखने लगी। कोई कार्यक्रम चल रहा था जिसमें एक विज्ञापन आया क्रीम का जो स्त्री दिखाई गई थी उसे देखकर शालू

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ठगी सी रह गई। उसकी शक्ल सूरत निधि से एकदम मिलती जुलती थी। फर्क केवल इतना था कि टी.वी. वाली स्त्री के बाल कटे हुए थे और ड्रेस कुछ अलग तरह की थी – आधी सी, अधूरी सी। आंखें भूरी और चमकदार। यह सब निधि में नही। पर बाकी चेहरा मोहरा सब निधि से मिलता था। वह प्रोग्राम देख ही रही थी कि दस्तक हुई और विनय वापिस आ गया। आते ही उसने बुझे से मन से कहा – "चलो खाना दो।"

"इतनी जल्दी।"

"हां जल्दी सो जाना चाहता हूं। काफी थक गया हूं।"

शालू ने खाना परोसा। खाते–खाते विनय कहने लगा – "अब तो यहां रहा भी नहीं जायेगा हमसे। सब बेगाना सा लगता है। जिसे देखो वहीं खोजी नज़रों से देखता है जैसे हमने कोई चोरी की है।

"क्या हुआ? अभी तो आप ठीक थे।"

"मुझे कुछ नहीं हुआ। मैं मोहल्ले में चुन्नी लाल की दुकान पर गया था तो वह पूछने लगा–'क्या बात है साहब आपके पिता जी नज़र नहीं आते, क्या वे हरिद्वार से वापिस आये? मैंने जवाब दिया, "अभी कुछ दिन और रह लेंगे फिर आयेंगे।' इस पर उसने कहा– 'क्यों साहब वे वहां रहने गये थे या यात्रा करने? साल से ज़्यादा ही हुआ होगा! अभी तक यात्रा समाप्त नहीं हुई क्या? मुझे नहीं मालूम, उन्होंने अपने पत्र में यही लिखा है।

"सुनकर चुन्नी लाल चुप तो हो गया पर दूसरा व्यक्ति जो कुछ सामान खरीदने आया था बोला, 'आज की सन्तान से आदमी जितना दूर रहे उतना ही अच्छा है। क्योंकि अब तो बड़े–बूढ़े, जवानों को बोझ लगते हैं।' मुझे उसका इस तरह कहना बड़ा बुरा लगा। मैं बोला – 'क्या मतलब है आपका?' इस पर चुन्नी लाल बोला 'यह साहब आपकी बात नहीं अपना रोना रो रहे हैं।' इस पर वह आदमी बच्चों की तरह रो पड़ा। मुझसे यह सब देखा न गया और मैं उठ के चला आया। अब जल्दी से कोई किरायेदार ढूंढो और चलो।"

"मैं ढूंढूं?"

"हां अपने मायके जाकर उनसे हैल्प लो।"

इस तरह बातचीत के बाद विनय सो गया। शालू भी बड़ी देर तक किचन साफ करती रही, तब लगभग रात के ग्यारह बजे सो गई।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बत्तीस

श्याम लाल बस में तो बैठ गया किन्तु बस तो अपने समय पर ही जानी थी, इसलिए उसे बस में लगभग आधा घण्टा प्रतीक्षा में बैठना पड़ा। इस बीच उसे ऐसा लगता जैसे हर कोई उसे घूरता जा रहा है, जब कि दिल्ली जैसे व्यस्त शहर में ऐसी बात सम्भव नहीं। खैर वह अपने विचारों में खो गया न जाने क्या ताना–बाना बुने जा रहा था – कभी सोचता कि यदि पत्नी को सारी सच्चाई सुना देगा तो वह सहन न कर पायेगी। लेकिन तभी यह भी विचार आता कि उसे तो सारी बात बतानी ही होगी। उसी ने तो यह आग लगाई है। निधि भी न जाने उन दोनों के स्वार्थ के बारे में क्या–क्या कह गई। मुझे वे रुपये लेने नहीं चाहिए थे, मैंने लिये क्यों? लेकिन उसने तो हां या ना करने का मौका ही कहां दिया। खैर, दोष तो इन्सान के कर्म का है पैंसों का क्या दोष। दस हज़ार हैं; छोटा सा कोई काम शुरू करूंगा वापिस नहीं जाऊंगा कश्मीर। न जाने लोग कैसी–कैसी बातें करते होंगे।

तभी थोड़ी देर बाद उसके विचार बदल जाते, सोचता –– कश्मीर वापिस जाकर आराम से बुढ़ापे के दिन गुज़ारूंगा। थोड़े पैसें हैं और वक्त–वक्त पर विनय भी दे जाया करेगा। लेकिन मेरा उस गऊ जैसी बहू पर हुक्म जताने का क्या हक है। क्या मेरी पत्नी अब उसी ठाठ से वहां रह सकती है जिस ठाठ से वह रहती थी? उसका तो काश्मीर वापिस जाने का मन ही नहीं करता। वह मुझे छोटा–मोटा कोई काम करने के लिए कहती थी अब जबकि मैं भी लोगों की खोजी नज़रों से डरता हूं तो क्या मुझे वापिस जाना चाहिए? श्याम लाल न ज़ाने और भी क्या–क्या सोचता कि कंडक्टर ने उसे हिलाकर किराया मांगा। वह होश में आकर उसको हैरानी से देखने लगा। जिस पर कंडेक्टर बोला "क्यों बाबू आंखे फाड़–फाड़ कर क्या देख रहे हो, किराया नहीं देना क्या?"

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"हां भई हां, किराया – कितना किराया है?"

कंडक्टर उस पर हंस दिया और बोला, "बुढ़ऊ दिन को ही पी रखी है क्या? हरिद्वार जाना है ना तुम्हें?"

"हां।"

"तो किराया दो।"

"हां तो कितना दूं?"

"एक सौ"

"अच्छा, यह लो।"

इस तरह से कन्डक्टर किराया लेकर दूसरी सवारी के पास गया। उसने कन्डक्टर से पूछा – "क्या यह पाग़ल है?" कन्डक्टर ज़रा सा मुस्करा कर आगे बढ़ा। बोल श्याम लाल के कानों में भी पड़े परन्तु वह चुप रहा और कोई समय होता तो ज़रूर वह उसे बता देता लेकिन इस वक्त तो वह भी नियति के हाथों मजबूर था। कितना लाचार बन जाता है आदमी जब किस्मत ही साथ न दे। सारे सफ़र में उसने सीट की बैक पर आंखें बन्द किये लोगों की बातें सुनी। बस में लोगों की बातें और बच्चों का शोर सुना भी पर कुछ भी प्रतिक्रिया नहीं की। शायद यह शोर उसके अन्दर के हाहाकार से बहुत ही कम था। बीच में एक दो बार वह बस से उतरा भी लेकिन यंत्रवत्। हरिद्वार शाम के अंधेरे में पहुंचा। बस से उतरा तो सीधा धर्मशाला की ओर चल पड़ा। धर्मशाला पहुंचते ही वह दम से चारपाई पर कटे वृक्ष की तरह गिर पड़ा। कई बार शामरानी ने उठाने की कोशिश की पर वह यह कहकर पड़ा रहा कि वह बहुत थका हुआ है और सोना चाहता है। पत्नी चाय बनाकर लाई और वह बिना किसी हील–हुज्जत के पी गया जैसे चाय पीना उसकी मजबूरी थी। तब चाय पीकर वह दुबारा पसर गया। जितनी देर वह सोया रहा उतनी देर उसकी पत्नी ने उसकी पोटली खोली, कपड़े धोये। पैसे पति के पहने वास्कट की अन्दर की जेबों में थे इसलिए अभी पत्नी को उनका चिह्न मिला नहीं। तब खाना बना कर वह उसके जागने का इंतज़ार करने लगी। श्याम लाल भी पूरे तीन घंटे गहरी नींद में रहा तब रात के उस साढ़े दस बजे वह जाग गया। पत्नी ने खाना लाकर सामने रखा तो बेमन से खाता रहा। पत्नी हैरान उसे देखती रही। न उसने कोई बात की और न पूछा कैसी हो? बस अपने में खोया मशीन की तरह

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खाता रहा। तब पत्नी ने टोक कर पूछा – "बहुत आराम किया अब बात भी करोगे या यों ही चुप रहोगे?" तब भी वह पत्नी के बहुत सारे सवालों को अपनी हूं, हां में टालता रहा। पत्नी ने पूछा – ''जिस काम के लिए गये थे वह कर पाये या नहीं? श्यामलाल जैसे चौंक सा गया वह उसकी ओर बेवकूफों की तरह देखने लगा।

''इस तरह' मुझे क्या घूर रहे हो। मैं पूछती हूं कि निधि मिली या नहीं?''

श्याम लाल के मन में आया कि कहे कि तुम्हारी लालच ने हमें नंगा करके रख दिया है। पर तभी मन में न जाने क्या बात आई कि वह कह न सका। वह इधर–उधर की बातें करने लगा, लेकिन पत्नी भी घूम–फिर कर इसी प्रश्न पर ज़ोर देती। इस बार भी श्याम लाल ने उसे यह कहकर टाल दिया – ''देखो रात काफी बीत चुकी है। अब हमें सोना चाहिए। बाकी भी तो मुसाफिर हैं इस धर्मशाला में, उन्हें हमारा इस तरह रात को शोर करना शायद ठीक न लगे, बाकी बातें कल उजाले में नहीं कर सकते क्या?'' और चारपाई पर लेट गया। नींद उसे क्या आनी थी वह तो आते ही पूरी कर चुका था। यह केवल टालने का एक बहाना था जिसे उसकी पत्नी भी अब तक समझ चुकी थी। शामरानी ने भी उसे और कुछ न पूछ कर चुपचाप लेट जाना ही ठीक समझा। उसने बिजली बन्द करके सोने की कोशिश की पर नींद उसकी आंखों से कोसों दूर थी। मन में एक ही सवाल रह–रह कर उठता कि ज़रूर कुछ अनहोनी घट गई है पति के साथ नहीं तो उसका यह रवैया अभी तक कभी भी देखने में नहीं आया। या तो वह अपनी नाकामी से खीझे गया है या पैसे कम होने के कारण अच्छी तरह से खा–पी नहीं सका है, तभी कुछ अस्त–व्यस्त सा है। मैंने तो कहा था कि साथ चलूंगी, नहीं माना, साथ होती तो बुढ़ापे में तकलीफ न होती। पर यह भी क्या करता पैसे जो थोड़े थे। खैर कल तक आराम करने से शायद थकान जायेगी फिर सभी बातों का सही जवाब दे पायेगा। मुझे सब्र करना चाहिए। दिल्ली जैसे बड़े शहर में बिना पते के निधि कहां मिल सकती थी। उस वक्त तो बड़ी शेखी दिखाई अब जो ढूंढ़ न सका उसको तो खीझ आ गई है मन में। लगभग एक डेढ़ साल हो गया निधि को हमसे अलग हुए, अब उसका मिलना क्या और न मिलना क्या? अब घर जाने की

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ठानी है इसने जो मुझे अच्छा नहीं लगता। कैसे रोकूं इसे। कहा था यहीं कोई छोटा–मोटा काम ढूंढ लो पर यह न जाने क्यों नहीं मानता। कश्मीर जाकर किस–किस की नज़र का सामना कर सकेंगे हम लोग। अब तक तो निधि की फोटो कश्मीर में भी पहुंची होगी तो क्या उसकी असलियत छिपा सकेंगे हम। खैर कल जागते ही मैं फिर एक बार समझाने की कोशिश करूंगी। भगवान करे कि यहीं रहना मान जाये। तब जीवन के बाकी दिन यहीं पर मुंह छिपाते गुज़ार लेंगे। रहा बेटा और बहु – उन्हें भी धीरे–धीरे समझाया जायेगा। इस तरह सोचते–सोचते रात कैसे बीत गई उसे पता ही नहीं चला। सुबह सवेरे उठ कर ज्यों ही वह नित्य क्रिया के लिए उठी तो सामने वाली चारपाई को खाली पाया। केवल सिरहाने के नीचे पति की वास्कट तह की हुई देखी। एकदम कमरे से बाहर निकल आई और बाहर नल के नीचे पति को नहाते हुए देखा। वापिस अन्दर आते ही न जाने उसे क्या सूझी कि उसने उसकी वास्कट सिरहाने के नीचे से खींच ली। जेबें भारी सी लगीं। देखने के लिए जेब में हाथ डाला ही था कि पति को सामने खड़ा देखा। पति एकदम व्यंग्य से बोले – "सारा सत्यानाश तो अपने ही हाथों कर दिया है तुमने लेकिन तुम चोर भी हो यह अभी तक मालूम न था।"

शामरानी ने हाथ वापिस खींच लिया और वास्कट अपनी जगह रख दी। आंखों में मोटे–मोटे दो आंसू आये पर लुढ़के नहीं। वह एक टक पति की ओर देखने लगी हैरान सी परेशान सी क्योंकि अभी तक उसके पति ने कभी भी इस तरह बात नहीं की थी। एक ज़माना था कि वह गर्जती थी और उसका पति उसके सामने मिमियाता था और अब वक्त ऐसा आया कि पति ताने मार रहा है और वह सब सुनने के लिए मजबूर है। श्याम लाल आगे बढ़ा और कुर्ता–पाजामा पहना और तब वास्कट उठाई और उसकी जेबों से निधि के फेंके दस हजार रुपये सामने फैला दिये। तब कहा – "मैं कल से सोच रहा था कि तुम्हें कहूं या न कहूं कहीं तुम सहन कर सकोगी या नहीं लेकिन आज तुमने मेरी परेशानी हल कर दी अपनी लालच और चोरी की हरकत से। देखो यह नोट तुम्हारी बेटी की इज़्ज़त के नीलाम होने के एवज़ में लाया हूं। तुम कहती थी ना यहीं रहेंगे, ठीक है। यहीं कोई छोटा सा कारोबार करके दिन गुज़ारते हैं। अब कश्मीर वापिस जाकर भी

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

क्या करेंगे। खुश हो तुम। उठो नाश्ते आदि का इन्तज़ाम करो।" शामरानी परेशान बेवकूफों की तरह उसे देखती रही। उसकी तो कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था। वह सोच रही थी कि इसके पास एक साथ इतने सारे रुपये कैसे आ गये। विस्फारित नेत्रों से उसे देखती हुई वह जैसे जड़ हो गई। तब श्याम लाल ने अपने स्वर को संयत बनाकर धीमे से कहा – "सच कहता हूं कि जो तुम पूछोगी सब बताऊंगा क्योंकि तुम्हारी हैरानी वाज़िब है। मैं समझता हूं तुम्हारी इस हालत को। जब यह रुपये मुझे दिये गये उस वक्त मेरी भी यही हालत हुई थी। अब जो हुआ वह तो भुगतना ही पड़ेगा हमें। इसीलिए कहता हूं कि पहले चाय पानी का कुछ हो जाये फिर सब विस्तार से कहूंगा।

तब शामरानी कुछ होश में आई और यन्त्रवत उठी, आटा गूंथ लिया रोटी बनाई, थोड़ी सब्जी भी बनाई तब दोनों ने नाश्ता किया। नाश्ते के दौरान दोनों अपने–अपने मन में गुत्थियां सुलझाते रहे। इस बीच श्याम लाल ने सारे नोट संभाल कर अपनी एक मात्र अटैची में रख दिये। अटैची को अपने पास ही रखा। तब बर्तन इत्यादि धोने के बाद शामरानी आकर बैठ गई। श्याम लाल ने उसे शुरू से लेकर अन्त तक अपनी दिल्ली यात्रा का हाल सुनाया और शामरानी के चेहरे पर सुनते–सुनते कई भाव आये और कई गये। अपनी कहानी के अन्त में श्यामलाल ने निधि की कही बातें भी सुनाई और फिर उसने कैसे बाप को अपने सामने से हटा दिया यह भी सुनाया। तब शामरानी की आंखों में आंसू आये। और एक दम बोली, "मैं अब समझी कि तुम कल इस तरह क्यों चुप थे? तुमने तो सहन कर लिया पर मैं वहीं तड़प–तड़प कर मर जाती।"

"मरा तो मैं भी हूं। बस केवल तुम्हारी ज़िम्मेदारी मुझे यहां खीच लाई। अब तुम्हीं बताओं हमें क्या करना चाहिए? कश्मीर वापिस जायें या यहीं मेहनत मज़दूरी करके दिन बितायें।"

"मैं तो पहले ही बताती थी कि कश्मीर वापिस जा नहीं सकते। अब थोड़े से पैसे तो हैं। यहीं कुछ करके गुज़ारा कर लेंगे।"

"और विनय को क्या कहेंगे?"

"विनय छोटा नहीं, सम्भाल लेगा अपनी गृहस्थी। उसे अपने वहीं रहने का लिखो।"

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"वह कारण पूछेगा तो जवाब क्या देंगे?"

"वह क्या कारण पूछेगा। कारण तो उसे मालूम है और अब निधि की असलियत तुम क्या समझते हो कश्मीर न पहुंची होगी।"

"सो तो है।"

"फिर उसे इस तरह लिख दो कि अभी हम चार धाम की यात्रा पर जा रहे हैं। अभी आयेंगे नहीं।"

"झूठ क्यों लिखेंगे। असलियत ही लिखें तो क्या हर्ज है?"

"उसे कहने में हर्ज नहीं, किन्तु बहू भी तो वहीं है।"

"देखो भागवान्। रस्सी जल गई पर अपनी ऐठन न छोड़ दी तुमने। बहू भी तो घर की एक सदस्य है, यदि उसे भी सही कहा गया तो कौन सा आसमान फट जायेगा। अब यह बात छिपने वाली नहीं और तुम भी सुनो बहू के साथ तुमने जो अभी तक किया निश्चय ही यह उसी का फल है। अब तो डरो परमात्मा से। अब तुम्हारी मनमानी नही चलेगी। समझी?"

और कोई समय होता तो वह भी न जाने क्या–क्या सुनाती किन्तु वक्त की नज़ाकत को देखते हुए शामरानी ने चुप रहना ही ठीक समझा।

दूसरे दिन बैंक में रुपये रखकर श्यामलाल कश्मीरी समिति के दफ्तर गये और वहां अपने लिए काम की अर्ज़ी दे आये। कुछ दिन दोनों पति पत्नी इस तरह से रहे जैसे कुछ हुआ ही न हो। एक हफ्ते बाद श्यामलाल को समिति की ओर से पत्र मिला जिसमें एक दुकानदार के पास हिसाब किताब रखने का काम मिलने की बात कही गई थी जिसके लिए उसे 1500 रुपये महीना वेतन था। देखकर श्याम लाल की बाछें खिल गई। वह तैयार होकर समिति के दफ्तर गया। काम मिलने पर पहले उसने सस्ते में एक कमरा किराये पर ढूंढ लिया और कुछ दिनों बाद धर्मशाला से उस कमरे में रहने के लिए आ गया।

इधर बेटे को भी सारी बात सच्ची–सच्ची लिखकर अपने यहीं रहने की भी बात लिखी। जिस दिन उसने यह चिट्ठी डाकघर में डाल दी उसी दिन से वह हल्का सा अनुभव करने लगा। इधर शामरानी भी पहले से काफी बदल चुकी थी। वह भी दिन भर सिलाई कढ़ाई का काम करती और थोड़ा–बहुत कमाने की कोशिश करती। दोनों पति–पत्नी शान्ति से रहने लगे जैसे उन्हें लक्ष्य की प्राप्ति हो चुकी हो।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तेंतीस

आज शालू को श्रीनगर आये लगभग डेढ़ महीना हुआ। पिछले महीने वह सास–ससुर के कश्मीर आने के लिए घर की सफाई आदि के लिए गांव से आई थी। लेकिन अभी तक वे आये नहीं। इस बीच विनय कई बार गांव गया था नौकरी के लिए आज शनिवार है और विनय घर आ रहा है। वह सोचने लगी कि वह ज़रूर सास–ससुर के बारे में विनय से बात करेगी। पता लगायेगी अभी तक वे लोग आये क्यों नहीं? वह अवश्य चिट्ठी लिखती लेकिन उसे उनका पता मालूम नहीं था। पर मन में तरह–तरह की आशंकाएं थीं – न जाने क्या बात है, कहीं बीमार तो नहीं हैं? इधर मायके से कई बार बुलावा भी आया किन्तु इसी आशा से कि कहीं वे लोग यात्रा से लौट न आयें, वह घर से बाहर भी नहीं गई।

आज उसने विनय की पसन्द का खाना बनाया और उस की प्रतीक्षा करने लगी। शाम को कोई सात बजे विनय आया। चेहरा उतरा हुआ था। शालू ने चाय बनाई सामने रखी, पर उसका चेहरा देखकर कारण पूछने की हिम्मत न कर सकी। थोड़ी देर तक चाय की चुस्कियां लेने के बाद विनय बोला, "शालू इस तरह किलम से शहर और शहर से गांव, काफी मंहगा पड़ता है। ऊपर से फिजूल की मेहनत भी करनी पड़ती है और कुछ नहीं, सोचता हूं तुम भी मेरे साथ किलम ही चलो।"

"और मां बाबू जी आयें तो।" शालू ने सवाल दाग दिया। इस पर विनय बड़े ठंडे स्वर में बोला, "वे अब नहीं आयेंगे।"

"पर क्यों?"

"वह तो मुझे मालूम नहीं। हां उन्होंने पत्र लिखा है।" कहते हुए उसने जेब से लिफाफा निकाला और पत्नी को थमा दिया।

बड़ी देर तक शालू पत्र पढ़ने लगी। श्याम लाल ने सारी घटना

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विस्तार से लिखी थी और अन्त में अपने कश्मीर वापिस लौटने में अपनी असमर्थता जताई थी। पत्र समाप्त करके शालू की आंखें भर आयीं। दो बड़े-बड़े आंसू अनायास ही गालों से लुढ़क गये। विनय यह देखकर हैरान रह गया। न चाहते हुए भी पूछ बैठा – "अरे तुम रो रही हो उन्हीं लोगों के लिए जिन्होंने तुम्हें ज़िन्दा ही मार डाला था। क्यों रो रही हो तुम?"

"मैं..... मैं कहां रो रही हूं?" फिर हाथों से आंसू पौंछती हुई और फीकी सी हंसी हंसती हुई शालू बोली – "निधि को वे सारे जुल्म सहन नहीं हुए तभी तो उसने ऐसा कदम उठाया है। नहीं तो वह ऐसी न थी। मुझे उसके लिए कुछ अजीब सी बेचैनी अनुभव हो रही है।"

"पर मुझे कोई बेचैनी नहीं हो रही। वह अगर डट कर मां-बाप की मनमानी को रूकवाती, तब और बात थी। पर ऐसा उसने किया नहीं उल्टे मौके का फायदा उठया और मां-बाप को जीते-जी मार डाला उसने, समझी तुम।"

"वह माता-पिता को क्या समझाती वे छोटे तो न थे। इसमें उसका कोई दोष नहीं यदि उसने ऐसा किया। आजकल कोई भी काम बुरा नहीं समझा जाता। अगर निधि ने मॉडलिंग की तो कौन सा पहाड़ टूट पड़ा। मैं तो बुरा नहीं मानती। हां अगर वह सही तरीके से घर से जाती तो शायद कोई भी उसके काम को बुरा न कहता।"

"अब आया ना ऊंट पहाड़ के नीचे। तुमने भी वही बात कही जो में कहता हूं। यदि उसने सही तरीका अपनाया होता तो इस वक्त जो ज़िल्लत हम लोगों को हो रही है, वह न होती।"

"ऐसा करने के लिए भी मेरे हिसाब से वह दोषी नहीं।"

"क्यों भला?"

"वह इसलिए कि उसे मां-बाबू जी से इस काम के लिए कभी इजाज़त न मिलती।"

"यह तुम ठीक कहती हो। लेकिन समझ नहीं आता कि उसने बच्चे का क्या किया। कहां रखती होगी उसे?"

"औरत जब कुछ करने पर आती है तो बच्चे का मसला उसके

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लिए आम बात बन जाती है क्योंकि बच्चा पालना तो औरत की नियति है। और फिर बच्चे के लिए केवल मां ही नहीं बाप भी तो उतना ही ज़िम्मेवार होता है।"

शालू के तर्क के आगे विनय कुछ कमज़ोर सा पड़ गया। तब कुछ देर सोचने के बाद वह बोला – "लेकिन शालू, बाबू जी ने अपने पूरे पत्र में उसके साथी का कहीं ज़िक्र ही नहीं किया है।"

"हां, मैंने भी पढ़ा लेकिन क्या यह ज़रूरी है कि काम के वक्त वह भी वहीं हो। उसका तो कोई काम हो सकता है। हमें इन बातों पर सोचने से कोई लाभ नहीं होगा।"

"चलो हम इन बातों को छोड़ अपने बारे में सोचते हैं। मैं समझता हूं मां–बाबू जी अब कभी तुम्हें तंग करने नहीं आयेंगे। इसलिए जल्दी से यह मकान किसी किरायेदार के हवाले करके हमें गांव वापिस जाना चाहिए। क्यों ठीक है ना?"

"ठीक है, जैसे आपको अच्छा लगे। पर अभी तो कोई किरायेदार आया नहीं। उसके लिए क्या किया जाये?"

"सुनो तुम सारा सामान अन्दर के कमरे में रखवा दो और बाकी सभी कमरे खाली करवा के रख दो। अंदर के कमरे की चाबी साथ लेंगे और बाहर के कमरों की चाबी तुम अपने मायके छोड़ आओ, जब कोई योग्य किरायेदार मिलेगा तो वे लोग उसे मकान खोल के दे देंगे। मुझे तो अब यही उचित लगता है। किलम जाकर शान्ति से रहेंगे इस तनाव से दूर"।

"कहते तो आप ठीक ही हो, लेकिन क्या इस तनाव से हमको वहां मुक्ति मिलेगी। मैं समझती हूं कि ऐसी बातें तो मनुष्य के मन पर छा जाती हैं जिनका निदान स्थान बदलने से नहीं होता? हां एक बात ठीक है कि स्थान बदलने से आदमी की सोच में थोड़ा फर्क ज़रूर आ जाता है। क्या हम भूल जायेंगे कि निधि भी हमारे परिवार की एक आवश्यक अंग थी? हां परिस्थिति से समझौता कर लेंगे"।

"तुम्हारा कहना सही है शालू पर यह जो परिचित लोगों की चुभती नज़रें हैं, वे लगता है जीते जी ही मार डालेंगी। कम से कम इस ज़िल्लत से तो छुटकारा मिलेगा ही गांव में।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हां यह ठीक है। मेरे विचार से हम लोगों को निधि के लिए घृणा का भाव छोड़ देना चाहिए। जो भी है वह हमारी अपनी है।''

''तुम्हारी यही फिलास्फी मुझे समझ नहीं आती। अरे भई उसने हमसे नाता तोड़ दिया है, वह हमें चाहती नहीं तो हम ही उसके पीछे क्यों भागें।''

''मैंने भागने के लिए नहीं कहा।''

''फिर तुमने क्या कहा?''

''मैंने तो यह कहा कि जो हुआ उसे उसकी भूल समझकर भुलाया जाये। और कुछ नहीं।''

''चलो जैसा तुम कहोगी वैसा ही होगा। अब बताओ वापिस अपने गांव कब जायेंगे?

''जब आपकी इच्छा हो मैं तैयार हूं। मगर मैं सोचती हूं कि यदि आपके पास मां–बाबू जी का पता हो तो एक बार चल कर उन्हें यहां आने के लिए मनायें।''

''जब वे स्वयं नहीं आना चाहते तो तुम क्यों उन्हें बुलाना चाहती हो?''

''वे हमारे बुज़र्ग हैं। हमें उनके पास जाकर प्रार्थना करनी चाहिए क्योंकि वे अब टूट चुके हैं, हमें धैर्य–दिलासा देना चाहिए।''

''ठीक है इस शनिवार को हम हरिद्वार के लिए चल देंगे।''

इतना फैसला होने के बाद दोनों ने खाना खाया और सो गये।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चौंतीस

अधिक पीने के कारण निधि की सेहत ढीली रहने लगी। इधर से काम भी कम मिलने लगा। जिन भनोत साहब के बंगले में रहती थी वह भी उससे दूर–दूर रहने लगे थे। यह वही भनोत साहब थे जिनके पीछे निधि ने अपने वफादार साथी राजू को धिक्कारा था, नौकरों जैसा बर्ताव किया था। इन्हीं भनोत साहब ने निधि को शराब पीने की लत डाली थी। पहले–पहले तो सब कुछ ठीक लगता था किन्तु अब केवल एक वर्ष में भनोत साहब का जी निधि से जैसे भर गया था। अब बात–बात पर झुंझलाना भनोत साहब की आदत बन गयी थी और निधि को इस तरह के बर्ताव की आदत न थी, वह पूरी तरह से भनोत पर निर्भर रहने लगी थी। वह ही निधि के कनट्रैक्टस देखा करते और वह जहां चाहते वहां उसे भेजते थे। निधि स्वयं कोई फैसला नहीं कर सकती।

पहले राजू उसकी जी हजूरी में था। जब शूटिंग से थकी–हारी आती तो वह आगे चाय का प्याला हाज़िर करता, लेकिन अब तो उस तरह के माहौल का सवाल ही पैदा नहीं होता। कभी–कभी घंटों वह राजू के लिए छिपके रोती और अपने–आपको दोषी ठहराती परन्तु प्रकट तौर पर वह उसका नाम भी नहीं ले सकती थी क्योंकि भनोत साहब ने मना कर रखा था।

भनोत की अपनी गृहस्थी थी जहां वह हफ्ते के अन्त तक रहते और शनिवार व रविवार निधि के पास फ्लैट में गुज़ारते। इस दौरान कभी उनके बिज़नेस पार्टनर होते और कभी बिज़नैस के ही अन्य मेहमान, जिनका निधि को मनोरंजन करना पड़ता। पहले–पहले तो यह महफिलें आर्कषक लगती थीं किन्तु अब बहुत जल्दी थकान आ घेरती तो घुटन अनुभव होती। पर कहीं बनीत साहब नाराज़ न हो जायें –

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इसी डर से निधि सारे काम यन्त्रवत् करती थी।

अब उसका रूप भी ढलने लगा था। वह इस सबकी आदी नहीं थी। वह तो राजू या कमल दोनों पर हकूमत करती थी पर अब वे मज़े कहां?

उसने कई बार कमल से मिलने की कोशिश भी की पर हर बार निराश हो जाना पड़ता। कमल स्वयं ही उससे मिलना नहीं चाहता था, और तो और जिन लोगों से उसने निधि को पहले–पहले काम दिलाया था, उनके पास जाकर उसको काम दिलाना भी बन्द करवा दिया। कारण और कोई नहीं केवल उसका अधिक पीना और बेसुध पड़ जाना था जो इस बाज़ार में नहीं चलता। लेकिन अब तो वह आदी हो चुकी थी पीने की। बिना पिये वह कुछ कर ही नहीं सकती थी।

निधि को याद आई अपने पिता की। कैसे पता लगा–लगा कर वह गरीब उससे मिलने आया था और उसने उसको कैसे बेइज़्ज़त करके निकाल दिया था। उसकी आंखों में पश्चाताप के आंसू अग्ये और लुढ़क गये! फिर न जाने क्या हुआ कि वह अपने को सम्भाल न सकी। बांध टूट गया और वह बिलख–बिलख कर रोने लगी। नौकर–चाकर हैरान हो एक दूसरे का मुंह ताकने लगे। उनमें से एक ने भनोत साहब को, जो थोड़ी देर पहले अपने किसी मेहमान का दिल बहलाने के लिए आये थे, जाकर निधि की हालत बयान कर दी। भनोत साहब को बड़ा बुरा लगा, वे गुस्से में भर कर निधि के पास गये और उसे बेदर्दी से बालों से पकड़ कर कहा – "यह क्या त्रिया चरित्र है। मैं तुम्हें रोने के लिए नहीं पाल रहा समझी तुम। यह नाटक छोड़ कर जल्दी–जल्दी नहा धोकर सही मेकअप करो। उठो जल्दी करो नहीं तो कस्टमर भाग जायेगा।" निधि की तन्द्रा टूट गई और वह वास्तविक संसार में आ गई। सब कुछ भूलकर यन्त्रवत् उठकर हुक्म की तामील करने चली।

आज न जाने क्यों उसका मन यह सब करना नहीं चाहता था। ऐसा लगता जैसे उसकी आत्मा को बहुत तकलीफ होती है। एक ज़माना था जब उसे यह सब करने से गर्व अनुभव होता था। तब

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक अजीब सी कैफियत थी--एक नशा सा छाया था उस पर अपनी सुन्दरता का। होते-होते उस सुन्दरता का घमंड भी होने लगा था। उस घमण्ड़ के पीछे उसे अपनी इस अवस्था की कल्पना भी न थी। उस समय उसे लगता मानों वह स्वर्ग की अप्सरा है और उसके शरीर में कभी थकान् आयेगी ही नहीं। अपने उसी अन्धे गरूर में उसने राज को भला-बुरा कहा था और वह घर छोड़ कर चल दिया। राज की याद आते ही उसकी आंखों में आंसू आ गये। आज उसे राज का महत्व मालूम हो गया था। राज ने कभी उस पर ज़बरदस्ती नहीं की थी। हमेशा उसके हुक्म को मानता रहा वह। पर उसने कभी उसकी कदर न की। 'न जाने कहां भटकता होगा वह?' उसके मुंह से अनायास ही निकल पड़ा। पर क्या उसकी इस जिज्ञासा का कहीं कोई हल था उसके पास? कोई नहीं। बड़ी देर तक वह राज के बारे में सोचती रही। उसे याद आया वह दिन जब उसने उस भोले-भाले आदमी को अपनी दीवानगी का शिकार बनाया था। कितना अच्छा समय था वह भी। न घर की चिन्ता और न बाहर का गम, हर ओर से तो सुरक्षित थी वह। घर में लाडली और कॉलेज के लड़कों की स्पप्न सुन्दरी। अशरफ़ ने तो उसको अपनी हवस का शिकार बनाकर जीने लायक नहीं रखा था। और उसने किस खूबी से राज को बलि का बकरा बना दिया था – ऐसा याद करते ही उसके मुरझाये चेहरे पर एक फीकी सी मुस्कान आई। राजू अपनी मां को छोड़कर उसकी इज़्ज़त बचाने के लिए उसके साथ भाग लिया!

ट्रेन में एक और दिल फेंक युवक मिला था जो उसके साथ विवाह करने का इच्छुक था। पर विवाह न हो सका – खैर तब वह फिर अस्फुट स्वरों में बड़बड़ाने लगी 'इधर भी मेरी सुन्दरता ही रक्षक साबित हुई। नहीं तो न जाने कहां धक्के खाती फिर रही होती'।

ज़िन्दगी की गाड़ी फिर से चलने लगी, लेकिन एक बलिदान देकर "आह। बच्चा गिराना पड़ा। काश वही बच्चा होता तो ज़िन्दगी इस नर्क की ज़िन्दगी से अलग होती। – निधि की आंखें बरसने लगी। यह तो वह भी समझ सकती है कि वह स्वयं वह बच्चा नहीं चाहती थी। फिर भी उसके अन्दर की ममता जैसे हाहाकार कर उठी। उसे

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अपने आप से नफ़रत होने लगी। निःसन्देह उसके शरीर पर कीमती श्रृंगार और बढ़िया इतर है, लेकिन उसकी ज़ख्मी आत्मा की बदबू जैसे उसके नथुनों में समाये जा रही थी। उसका सिर दर्द के मारे फटा जा रहा था। पर वह भनोत साहब के 'मेहमान' का 'मनोरंजन' किये बिना ज़रा भी आराम नहीं कर सकती थी। अपनी इस मजबूरी पर निधि का मन विद्रोह कर उठा। उसने आव देखा न ताव एकदम सारा मेकअप उतार कर बाथरूम में नहाने चली। बड़ी देर तक नहाने के बाद वह जब वापिस अपने कमरे में आई तो सामने भनोत को सिगरेट पर सिगरेट पीते देखा। उस की आग्नेय दृष्टि का सामना न कर सकने से निधि और भी झुंझुला गई। तौलिये से बाल समेटते हुए वह उसकी जैसे परवाह न करती हुई ड्रेसिंग टेबल के सामने बैठ गई।

उसका इस तरह का बर्ताव भनोत साहब को बिलकुल अच्छा नहीं लगा। वह क्रुद्ध स्वर में बोला," क्या मैं तुम्हारी आज की बेहूदा हरकत की वजह जान सकता हूं?"

"कैसी हरकत? मैं समझी नहीं।"

"क्या यह भी मुझे ही समझाना होगा कि तुम्हें इस वक्त क्लांइट के पास होना चाहिए था। क्यों?"

"मेरा मन किया कि मैं नहाऊं इसलिए नहाने आ गई। तो कौन सी मुसीबत आई?"

"अपने टोन पर काबू रखो समझी। न तो तुम पहले या बाद में सकती थी।

"इस वक्त नहाने पर बन्दिश है क्या?"

"हां है।"

"ऐसा क्यों?"

"क्योंकि आसामी इसी वक्त मिली है और नहाया किसी भी वक्त जा सकता है, समझी।"

"मेरे सिर में दर्द हो रहा था इसीलिए नहाई।"

"अब नखरे छोड़कर एकदम तैयार हो जाओ। मैं तुम्हें अपने साथ ले जाऊंगा। चलो जल्दी करो।"

"आज में न जा पाऊंगी।"

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"तो आज क्या तेरा बाप जायेगा?"

"देखो। मैं तुम्हारी बीवी नहीं जो इस तरह मेरे साथ बोले तो। मेरी मर्ज़ी नहीं है। मैं नहीं जाऊंगी।"

"यहां तुम्हारी मर्ज़ी को कौन देखता है। मैंने तुम्हें पालने का ठेका ले रखा है क्या? बड़ी मुश्किल से क्लाइंट ढूंढता हूं और मेंढ़की को जुकाम हो रहा है। गौर से सुनो -- अब तुम्हारे हुस्न में वह कशिश खत्म हो चली है जो तुम्हारे पास लोग दौड़े चले आते थे। अब तो इसी तरह से चलना होगा। चलो।"

मजबूर और असहाय निधि गिरती-उठती तैयार होने चली और मुंह से अस्फुट बोल भी निकल रहे थे :

"तुम्हीं गिद्दों ने नोच-नोच कर तो मेरे शरीर को छलनी कर दिया है। अब कशिश क्या खाक रहेगी? मैं मर भी तो नहीं जाती। मैं कहती हूं कि मैं मरूंगी तो फिर तुम्हें हराम की कमाई कौन कमाके देगा?"

इस बात को सुनकर भनोत बेशर्म सी हंसी हंस कर बोला, "अभी तो फिलहाल तुम्हारी हड्डियों में दम है, जब निकल जायेगा तो तुम्हारी जैसी किसी और बेवकूफ चिड़िया को दाना डाल कर फंसाया जायेगा, समझी"।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पैंतीस

राज कुछ दिनों से बुखार के कारण फैक्ट्री नहीं जा सका, इसलिए घर पर बैठे हुए वह अपने साहित्य सृजन में मस्त रहा। मां भी बड़े यत्नों से उसकी सेवा करती रही, जिसे देखकर उसे ऐसा लगता जैसे उसकी अपनी मां है जो उसकी बीमारी से बेहाल हुई जा रही है। तभी वह सोचता कि कितना अभागा है वह जो अपनी मां की सेवा न कर सका यदि वह इस वक्त होती तो ज़िन्दगी कुछ और होती। जिसके लिए उस देवी को छोड़ कर भागा था उसका भी साथ उसकी किस्मत में न था। खैर योगी की मां भी कितनी दयामयी है जो उसकी अपने बेटे से बढ़कर सेवा करती है। यही सोचते–सोचते एक कराह सी उसके होंठों से निकली – "मां"

"बोलो बेटा। क्या चाहिए।"

"कुछ नहीं।"

"क्या सिर दबा दूं?"

"नहीं मां। इधर बैठो मेरे पास।"

"इधर ही तो हूं बेटा।"

"क्या आपने खाना खाया?"

"हां, क्यों?"

"झूठ बोलती हैं आप। आप तो यहां से उठी ही नहीं तो खाना कैसे खाया आपने?"

"बेटा आज मेरी तबीयत नहीं कर रही थी।"

"देखो मां आप भूखी रहेंगी तो कैसे चलेगा? उठिये कुछ खा लीजिए।"

"बेटा पहले तुम्हारे लिए दूध लाती हूं। तुम दूध पियो तो मैं कुछ खाऊं। हां।"

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"मैं बीमार हूं, आप मेरे साथ–साथ भूखी रहती हैं। यह ठीक नहीं?"

"मगर डॉक्टर ने कहा है कि दूध पीना तुम्हारे लिए ज़रूरी है। तुम जो नहीं पीते तो मेरी भी भूख खत्म हो जाती है। हां।"

"अच्छा ले आइए दूध, पर थोड़ा सा"।

मां दूध लाई और राज आंखें मीचे फटाफट निगल गया। ऊपर से एक इलायची मुंह में रखी कहीं उल्टी न आये और मां से बोला, "अब तो कुछ खाइए।"

मां भी उसकी बात न टालकर चाय पीने लगी।

राज इस औरत में इतनी ममता देखकर प्रभावित हुए बिना न रह सका। वह सोचने लगा–– यह मेरा भाग्य ही अच्छा था जो भगवान् ने मां की कमी को पूरा कर दिया। वह न जाने और भी क्या–क्या सोचता कि योगी बड़ी प्रसन्न मुद्रा में आ गया और बोला, "भैया, कुछ पैसे दो।"

राज उसके इस तरह बोलने से हैरान सा हुआ और बोला, "किस खुशी में?"

"खुशी ही तो है यह देखो।" कहकर उसने एक रजिस्टर्ड लैटर निकाली और राज को पकड़ा दी।

राज ने पत्र पढ़ा, यह प्रकाशक का पत्र था जिसमें लिखा था कि उसकी किताब छप गई है और कमल साहब ने दस हज़ार कापियां देश के अलग शहरों में भेज दी हैं। पुस्तक की खासी बिक्री हो रही है। इसलिए राज को रायलटी के रूप में 50,000 रुपया भेजा जा रहा है।

यह सब पढ़कर निश्चय ही राज में स्फूर्ति सी आ गई और वह कमज़ोरी के बावजूद चारपाई छोड़ कर कुर्सी पर बैठ गया और मां दोनों भाइयों की बातों व हरकतों से हैरान सी रह गई। उसने पूछा–

"क्या बात है दोनों उछले जा रहे हो?"

"मां तेरा लाडला एक बहुत बड़ा लेखक बन गया है।" यह योगी के बोल थे। इसके बाद राज भी बोला – "मां यह सब आपकी दुआओं का फल है।"

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मां बलायें लेती हुई बोली, ''बेटा तू निश्छल हृदय है। ईश्वर तुम्हें सदा सुखी रखे। पर अभी लेट जा नहीं तो फिर बुखार आयेगा।''

''नहीं मां अब इसे बुखार नहीं आयेगा। यह तन्दरूस्त हो गया। क्यों भैया?''

''जा पगले। मां ठीक कहती है। मैं लेट जाता हूं।''

''अच्छा बहाना है ताकि मिठाई खिलाने की बात न बने।''

''नहीं, नहीं। पेटूमल तू जा और मिठाई ला।"

''नहीं आज मंगलवार है, पहले मैं महावीर के मन्दिर जाऊंगी" मां बोली, "तब तुम लोग जो करना चाहते हो करना।''

इसके बाद मां मन्दिर चली गई और वे दोनों फिर पत्र पढ़ने लगे। योगी बोला, "भैया आप तो छिपे रूस्तम निकले। पता ही नहीं चला कि कहां और कब यह दिल को छू लेने वाली कवितायें लिखते थे।"

योगी बिना रूके बोले जा रहा था और राज मन्द–मन्द मुस्करा रहा था। उसके दिल में इस समय अजीब सी हलचल हो रही थी। वह सोच रहा था कि उसकी खुशी के इस अवसर पर कोई भी ऐसा साथी नहीं रहा जिसको उसने अपना समझा था, एक मां थी, वह भी निधि की चिन्ता में उससे छूट चुकी थी, और वह निधि जिसके लिए उसने अपने कर्त्तव्यों से मुंह मोड़ा था, उसने भी उसे दुत्कार कर दूध में पड़ी मक्खी की तरह बाहर निकाल फेंका था। उस समय यदि कमल उसकी सहायता न करता तो इस समय न जाने वह क्या होता और कहां होता। फिर एक ठंडी सी सांस लेकर वह इसी निश्चय पर पहुंचा कि उसके असली हमदर्द तो यही है – योगी, मां, और कमल जिन लोगों से उसका कोई खून का रिश्ता नहीं। वह न जाने और भी क्या–क्या सोचता कि पोस्टमैन की आवाज़ ने उसकी तन्द्रा को भंग कर दिया। यह तार था कमल की ओर से भेजा हुआ। एक बधाई का तार जिसे लेकर उसकी आंखों में स्नेह युक्त खुशी के आंसू आ गये। इस बीच योगी ने चाय बनाई और मां के आने पर तीनों ने चाय पी और लड्डू खा लिए। फिर बड़ी देर तक कमल के विषय में बातें चलती रहीं। इन्हीं बातों के दौरान मां ने कहा – "बच्चो ईश्वर कभी सच्चे इंसान का साथ नहीं छोड़ता। अगर एक दरवाज़ा बन्द होता

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

है तो दस दरवाज़े वह ऊपर वाला खोल देता है। मगर उसकी इस सहायता को पहचानने वाली सद्भावना चाहिए। ईश्वर भी उसी की सहायता करता है जो अपनी मदद आप करने की ताकत रखता हो। राज में यह ताकत है तभी उसकी ईश्वर ने सुन ली है।"

"नहीं मां मेरी सहायता यकीनन ''कमल साहब ने की है। नहीं तो इस दुनिया में मेरे जैसे सैंकड़ो, हज़ारों लोग गुमनाम ज़िन्दगी जी रहे हैं।

मां उसकी इस बात का जवाब देते हुए बोली, ''यह भी बेटा एक विशेष गुण है जो सबमें नहीं होता।''

''क्या?''

''यही कभी अपनी ढींग न हांक कर दूसरे का उपकार मानना। इसी को नम्रता कहते हैं।"

''नहीं मां। मैं सच कहता हूं कि यदि कमल साहब की सहायता न होती तो मुझे यह सफलता कभी न मिलती, मैं तो बचपन से लिखता आया हूं। पर अब तक यह सब सम्भव न हो सका।''

''मां। आपके आर्शीवाद से ही हुआ और सदैव आपके आर्शीवाद की ही आवश्यकता है। ज़िन्दगी की ठोकरों से इतना पस्त था कि कभी मैं भी पहचाना जाऊंगा – इसकी कल्पना भी न कर सका था।"

''तुम्हारी अपनी योग्यता है। शेष कमल साहब या मेरे आर्शीवाद – यह सब निमित्त मात्र ही है। भाग्य में जो होना होता है होकर रहता है, चाहे हज़ार विघ्न ही क्यों न आयें।''

''आपका कहना शायद ठीक ही होगा। नहीं तो कहां मैं जिसका न दर है और न दीवार! आप जैसी मां और योगी जैसे भाई के योग्य भी कहां था मैं।"

''यह तुम्हारा बड़प्पन है बेटा जो इस तरह सोचता है। वास्तविकता तो यह है कि हम ठुकराये हुए मां बेटों को तुम मिले तो किस्मत चमक उठी। चलो, तुम्हें आज मैं अपनी कहानी सुनाती हूं –

"हम लोग कश्मीर में 'बड़गाम' के है। मेरे पति ने पहले दो शादियां की थीं। एक तो बच्चे के जन्म के साथ ही मर गई। बच्चा कोई चार दिन जिया और वह भी मर गया। तब दूसरी शादी की। उसकी

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लगातार चार बेटियां हुई पर बेटा कोई नहीं। इस तरह वह बेटे का मुंह देखने के लिए तरसती रही। तब बड़े बुजुर्गों ने तीसरी शादी की सलाह दी और एक गांव 'मुरन' से मुझे ब्याह कर लाया गया। मेरी सौतन मेरा बड़ा खयाल रखती, मुझे बहन की तरह रखती। यह सब मेरी जिठानियें और देवरानियों को पसन्द नहीं आया। आये दिन छोटी–छोटी बातों पर झगड़े होने लगे। होते–होते एक डेढ़ साल में मेरी सोत भी मुझसे नाराज़ रहने लगी – कारण केवल इतना था कि आयु में छोटी होने के कारण मेरा शरीर निखरने लगा था और हमारे पति का झुकाव मेरी ओर अधिक रहने लगा। वह अपने को उपेक्षित अनुभव करने लगी इसलिए चिड़चिड़ी भी रहने लगी। धीरे–धीरे वह मुझसे कट गई और अकेली, अलग–अलग रहने लगी। मैं अपनी ओर से बड़ी कोशिश करती उसको प्रसन्न रखने की परन्तु उसका उल्टा ही प्रभाव उस पर पड़ता और वह बहुत कुछ कहती गालियां तक देती थी मुझे। एक दिन जब मैंने उसको अपने गर्भ की खबर दी। पहले तो वह थोड़ा प्रसन्न हुई पर थोड़ी देर बाद ही न जाने उसे क्या हुआ – वह रो पड़ी और बहुत समझाने व मनाने पर भी चुप न हुई। तब दूसरे दिन मकान के पिछवाड़े सब्ज़ियों के बाग में बने कुएं पर उसके कपड़े देखे गये। बहुत तलाशा गया नहीं मिली। तब मेरी जिठानियों व देवरानियों ने मुझे दोषी कहते हुए उसके कुएं में डूबकर मरने की खबर दी। मेरे पति ने कुआं साफ करवाया और उसकी लाश निकाली गई। उसकी लाश का निकलना था कि उसकी बेटियां जिनमें तीन तो शादी शुदा थी मुझ पर बिगड़ गई, और न जाने क्या–क्या कह गई। मैं अपनी ओर से सफाई देती रही। लेकिन मेरी किसी ने नहीं सुनी। उनकी चाचियां और ताईयां उन्हें बराबर उकसाती रहीं और इस तरह मजबूर होकर मेरे पति को मुझे वापिस 'मुरन' भेजना पड़ा। वहीं योगी का जन्म हुआ। इसके पिता अपने घर वालों से छिपकर मुरन आते रहे जब तक योगी आठ–नौ साल का हो गया उसके बाद सुना कि उन्हें दामादों ने मिलकर विष दिया था।

"पति के मर जाने के बाद मेरा घर पर अधिकार बिल्कुल ही समाप्त हो गया। न उनहोंने कभी बुलाया मुझे और न ही मैंने कभी

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

घर जाने की हिम्मत की। योगी 18, 19 साल का हुआ कि मेरे पिता जी की भी मृत्यु हुई और मेरे भाइयों व भाभियों को भी मुझ से जैसे विरक्ती सी हुई। वे भी इसी प्रतीक्षा में रहने लगी कि मैं कब उनका पिण्ड छोड़ती हूं। तब किसी ने मेरे बड़े भाई को यह सूचना दी कि मेरे पति ने मरने से पहले बादामों के दो बाग योगी के नाम कर दिये थे। तब भाई अदालत में उस अधिकार के लिए लड़े और किसी तरह मुझे वे दो बाग और ज़मीन से फसल का तीसरा हिस्सा मिल गया। इस भाई ने मुझे अपने साथ ही रखा और योगी के साथ उसका बेटा पढ़ता रहा। इन दोनों बच्चों ने मैट्रिक की परीक्षा दी, पास हुए मेरी भाभी मुझ पर अपनी दया दर्शाती रही जैसे मैं उसके दम पर पल रही थी। मैं किस्मत की मारी सब चुपचाप सहती रही और उसके घर नौकरों की तरह काम करती रही। एक दिन मुहल्ले के एक मुसलमान भाई गुलाम नबी ने बातों–बातों में मेरी भाभी से कह दिया, 'अगर इसके बादामों के बागों की आमदनी न होती तो तुम लोग भी ऐसे ही रहते जैसे तुम्हारी देवरानियां हैं, वह तो कहो कि पंडित जी ने वक्त पर अपनी अक्ल से काम लिया और इस तरह तुम्हारी ऐश भी हुई और इस पर मिन्नत भी।' मेरी भाभी को लगा था कि मैं सो रही हूं लेकिन मैं सब सुन रही थी। मेरी भाभी ने जवाब दिया, 'यह तुमने मेरे सामने कह दिया सो कह दिया अब इसको न सुनाना, समझे। इसका बेटा अब जवान हो गया है और तेज़ भी, अगर उसे पता चल गया तो ठीक न होगा।' योगी तब बी.ए. में पढ़ता था। शहर में आतंकवादियों का दबदबा था और फिर हमारे गांव में भी जनूनी जहादियों के नारे लगने लगे–काफिरो भाग जाओ।' इसी बीच एक दिन योगी के एक मुसलमान दोस्त फारूक ने उस को एक लिस्ट दिखाई जिसमें योगी का नाम भी था और लिखा था कि यह हिन्दुस्तान के फौजियों को आतंकवादियों के समाचार देता है। यह मुखबिर है इसलिए इसको अगले जुमा को गोली से उड़ाया जायेगा। योगी ने जब यह खबर पढ़ी तो वह बौखला गया। उसने अपने दोस्त से सलाह मांगी। जिस पर फारूक ने सीधे और साफ शब्दों में कहा– "अगर तुम्हारे मामा ने ही मौलवी साहब से यह न कहा होता कि योगी मुखबिर है तो कोई कुछ

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

न करता, पर अब कुछ नहीं हो सकता। मैं तो तुम्हारा दोस्त हूं इसलिए तुम्हारी मौत नहीं देख सकता। तुमसे गुज़ारिश है कि मां को लेकर जम्मू चले जाओ। हमें मालूम है तुम निर्दोष हो पर जिन्होंने तुम्हारे मामा से यह झूठी खबर सुनी है वे नहीं मानते। इसलिए तुम यहां से चले जाओ। तुम्हारे जाने के बाद तुम्हारे मामा व ममेरे भाई का क्या हशर होगा वह तुम्हें ज़रूर पता चल जायेगा। मगर इस वक्त तुम्हारी जान को खतरा है, तुम आज ही रात को मां को साथ लेकर चले जाओ।"

"फिर क्या था योगी सहमा–सहमा रात होने का इन्तज़ार करने लगा, रात होते ही मुझे बाजू से पकड़ कर पिछवाड़े सब्ज़ियों के बाग तक ले गया और कान में धीरे–धीरे रोते हुए सब कह दिया। मेरे हाथ पांव फूल गये, काटो तो खून नहीं। घबरा कर मैंने पूछा, 'तो अब क्या करेंगे हम'? इस पर घर के पीछे की तरफ उसी फुलवारी की दीवार फांद कर योगी मुझे अन्धेरे में मिलिट्री कैम्प तक ले गया। न पाऊं में जूती और न सिर पर दुपट्टा। इसी तरह हम पहुंच गए वहां जहां हमारे जैसे और भी कई लोग थे जिनके बारे में ट्रक का इन्तज़ाम हो रहा था। रात के कोई ग्यारह बजे हमें दो–दो पीस डबलरोटी के मिले और एक गिलास पानी का। भूख किसको थी। खैर किसी तरह निवाला निगल लिया और रात के गहराने की प्रतीक्षा होती रही, सभी अपने आप में गुम सुम बैठे थे। जो जहां था वहीं पड़ा रहा? तब रात के दो बजे होंगे जब हमें ट्रक में बिठाया गया। सर्दी के दिन थे और कपड़ा कोई नहीं – लेकिन उस वक्त किसी को भी सर्दी का आभास नहीं हो रहा था। सभी बदहाल और बदहवास से नियति के हाथों मजबूर थे। एक दूसरे पर जानवरों की तरह गिरते–पड़ते रहे और ट्रक आगे चलता रहा। ऊपर से तिरपाल इस तरह बान्धा गया था, मानों सामान ले जाया जा रहा हो। काज़ीगुण्ड में काफी फायर सुनाई दिए लेकिन वापिसी फायरों के बीच ट्रक आगे बढ़ता रहा। सुबह कोई पौने पांच बजे जवाहर टनल पार किया गया और धुंधली लौ में ट्रक से तिरपाल उठाया गया। अब इतमिनान की सांस लेकर हम लोग आगे सफर करते रहे। बहुत हद तक डर कम हो गया था लेकिन तब भी

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

किसी के गले से आवाज़ नहीं निकल रही थी। सब आंखें फाड़े एक दूसरे को देख रहे थे। कोई किसी का सम्बन्धी न होकर भी सब एक दूसरे से जैसे बन्ध से गये थे। रामबन में आकर हम लोग ट्रक से उतरे और मुंह हाथ धोने के लिए इधर–उधर सहमे–सहमे से चलने लगे। थोड़ी देर में किसी ढाबे वाले को हम पर दया आई और उसने सब लोगों को आलू की सब्ज़ी और फुलके खिलाये। वह खाना सच में ही उस समय बड़ा ज़रूरी था। जान में जान आ गई। तब सोचा जाने लगा कि अब आगे क्या होगा? फिर जम्मू पहुंच कर वहां के शिव मन्दिर में कोई 12 चौदह दिन रह कर कुछ लोगों के साथ दिल्ली आये। वहां पांच छः महीने रहे। उधर योगी किसी प्राइवेट स्कूल में पढ़ाता रहा – पर गुज़ारा नहीं होता था, तब इसी तरह काश्मीरी समाज वालों ने यहां कानपुर लाया। इधर मन्दिर में तुमको देखा और योगी बोला कि तुम्हारे पास जाकर काम मांगा जाये, शायद सहायता हो ही जाये। और वह तुम से मिल लिया और इस तरह मेरी जीवन की इस ढलती दोपहरी में तुम्हारे यहां अपनेपन की छाया नसीब हुई। अब बेटा न ही मैं और कहीं जाऊंगी और न ही तुम्हें कहीं जाने दूंगी।" –राज मां की राम कहानी सुनते–सुनते न जाने किन विचारों में खो गया था। आंखों से आंसू बहे जा रहे थे। मां ने जब उसकी कोई प्रतिक्रिया नहीं अनुभव की तो उसकी ओर देखा और बोली – "यह क्या तुम रो रहे हो। अब तो सब समाप्त हो गया। तुम मिले तो सभी दुःखों का अन्त हो गया। चलो पोंछो यह आंसू और बताओ कि इस खुशी के मौके पर क्या खाना पीना पसन्द करोगे?'

इस तरह मां के टोकने पर राज संभल गया और कुम्हलाई हुई सी मुस्कराहट ओढ़ कर बोला – "जो तेरा मन करे मां वही बना।" और योगी को अपने साथ लेकर बाहर चल दिया।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

छत्तीस

दो दिन की बस और ट्रेन की यात्रा के बाद शालू और विनय हरिद्वार पहुंच ही गये आखिर। स्टेशन पर नहा–धोकर धर्मशाला की ओर चल पड़े वहां से उनका पता लेकर उन्हें मिलने चले। पता तो उनके पास था ही सो ज़्यादा मुश्किल न हुई। आंगन में ही शालू ने सास को नल के सामने कपड़े धोते हुए देखा। वह दौड़कर उनके पास पहुंची, पैर छुए। सास हतप्रभ सी होकर उसे निहारने लगी। विनय ने भी आगे बढ़ कर मां को गले से लगाया, इस प्रकार तीनों लोगों की आंखें गीली हुई। शालू ने अनुभव किया कि आज सास में पहले जैसी अक्कड़ नहीं उसने आगे बढ़कर कहा, "मां जी लाइए मैं धो देती हूं।" इस पर शामरानी बोली "नहीं बहू। सफर से आई हो, थकी हो। रहने दो धुल जायेंगे। आओ चलो तुम्हें तुम्हारे ससुर जी से मिला दूं।"

तीनों अन्दर कमरे में चले गये। श्याम लाल बच्चों को देखकर आश्चर्य चकित हुआ और बोला, "तुम लोग यहां किस तरह आये हो भई?"

इस पर विनय बोला, "पिता जी जब आप आये ही नहीं और आपकी चिट्ठी मिली तो शालू ने कहा हम जाकर उन्हें अपने घर लायेंगे। सो आ गये हैं।"

"नहीं बेटा अब हमारी वापसी मुमकिन नहीं।"

"क्यों मुमकिन नहीं?"

"क्योकि अब बात छिपी नहीं बल्कि सारी दुनिया जान चुकी है। हम लोग कश्मीर में लोगों की चुभती नज़रों और सवालों का सामना न कर सकेंगे। सोचा था, वापसी पर कह देगे कि लड़की मर गई। पर अब यह झूठ चलेगा नहीं क्योंकि वह कमबख़्त तो हम दोनों को ही मार गई।"

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"काश, सच में ही मर गई होती" एक ठंडी सांस लेकर शामरानी बोली, "यहां जीवन के बचे–खुचे दिन गुज़ार लेंगे, क्योंकि यहां कोई हमें जानता नहीं। वहां अपने लोगों में कौन–सा मुंह लेकर जायेंगे? नहीं बेटा यह अब हमारे बस की बात नहीं।" फिर श्याम लाल ने दिल्ली में निधि से मिलने की घटना सुनाई :

"मैंने सोचा था कि जाकर उसे भी अपने साथ ले आऊंगा। गया भी। ढूंढते–ढूंढते उसके पास पहुंच भी गया पर उसको मुझ पर दया न आई, उस बेशर्म ने धक्के मारकर मुझे अपने बंगले से निकाला। सच विनय वह हमारी निधि नहीं हो सकती। वह तो कोई और ही थी। हमारी निधि तो उसी दिन मर गई थी जिस दिन उसने घर की दहलीज़ पार कर दी थी।" फिर बहू की ओर मुढ़कर बोले श्याम लाल, "हमें माफ कर देना बेटी। हमें अपनी करनी की काफी सज़ा मिल गई। अब तुम मन में मैल न रखना। हो सके तो कभी–कभी याद किया करना।" श्यामलाल के ऐसा कहने पर शामरानी शालू के पैरों पर गिर पड़ी और शालू परे हट गई और बोली "यह आप लोग क्या कर रहे हैं? क्या बच्चों से माफी मांगी जाती है? आप हमारे माता–पिता हैं। आप को ऐसा करना अच्छा नहीं लगता। चलिए घर चलें वहीं मिलजुल कर रहेंगे।"

"तुम्हें पहचानने में मैंने बड़ी देर कर दी बेटी। अब चाहते हुए भी मुझसे ऐसा नहीं हो सकता", शामरानी की आवाज़ में बहुत दर्द था।

"क्यों नहीं हो सकता?"

"इसलिए कि मैं लोगों के तानों व जल्लादी नज़रों का सामना नहीं कर सकती।" यह कहते हुए शामरानी के आंसू बांध तोड़कर बह चले। चारों लोग बड़ी देर तक रोते रहे। तब श्याम लाल ने कहा – मैं तुम लोगों के जज़्बात की दिल से कदर करता हूं बेटा और इसीलिए कहता हूं कि अगर हमें कुछ साल और जीते देखना चाहते हो तो हमें घर जाने के लिए मजबूर न करो। हम यहीं रहेंगे और तुम लोग घर वापस जाओ।'

"तब हम भी यहीं रहेंगे पिताजी।"

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"तुम लोगों के यहां रहने का मतलब होगा लोगों को बदनामी करने का मौका देना। चलते रहने दो गाड़ी को जिस तरह से चल रही है।"

"यानी?"

"यानी तुम वहां कश्मीर में रहोगे और हम यहां। जब कभी तुम्हारा मन हमसे मिलने की इच्छा करेगा तो चले आना कुछ दिन। मैं समझता हूं कि यही ठीक रहेगा हमारे लिए। क्यों बच्चों की मां – तुम भी बोलो।"

"ठीक ही तो है। बहू अब तुम्हें मुझसे डरने की ज़रूरत नहीं। मैं अपने पापों का प्रयश्चित करना चाहती हूं और इच्छा करती हूं कि तुम मुझे क्षमा करोगी।"

इस तरह बड़ी देर तक बातें करने के बाद शामरानी ने आज अपने हाथों चावल सब्ज़ी पकाई और पहली बार प्यार से शालू को खाना खिलाया। दूसरे दिन विनय उनके लिए कहीं अच्छा सा दूसरा किराये का एक कमरा ढूंढने निकल पड़ा।

"है तो यह सारा प्रभु का लिखा हुआ लेख लेकिन मूर्ख मनुष्य इस पर भी अपना अधिकार जमाता है।" शामरानी न जाने किन यादों में खोई बोले जा रही थी। शून्य में खोई नज़रें जिनमें न निराशा है और ना ही कोई उम्मीद बस खोखली सी लक्ष्यहीन सी दृष्टि। इधर शालू आज की सास और दो वर्ष पहले की सास की तुलना कर रही थी मन ही मन। उसे लग रहा था जैसे उसकी सास ने चोला ही बदल लिया है – न तो पुराना वह जोशीला रंग रूप और न ही पहले जैसी कतरनी सी चलती तीखी जुबान। शामरानी न जाने क्या बड़बड़ा रही थी और शालू न जाने सोचते–सोचते कहां पहुंच गई थी। दोनों अपनी–अपनी दुनिया में गुम कमरे में आमने–सामने बैठी थीं। थोड़ी देर बाद शामरानी को न जाने क्या विचार आया। बोली – शालू बेटी सोना चाहती है तो सो ले मैं तब तक कपड़े धो लाऊं नल से। सुनते ही एकदम शालू की तन्द्रा टूटी और उसने उत्तर दिया, "मां जी मैंने धो लिये हैं।"

"जब आप खाना पका रहीं थीं तब।" सुनकर शामरानी उसे प्यार

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

से देखने लगी और शालू को उसका इस तरह देखना एकदम अजीब सा लगा। बोली – ''इस तरह क्या देख रहीं हैं मां जी?"

शामरानी ने जवाब दिया, ''सोचती हूं कि तुम जैसे नगीने की समय पर पहचान क्यों न कर सकी? मैंने तुम्हारा दिल बहुत दुखाया है मुझे माफ करना बेटी।"

शालू बोली, ''कोई बात नहीं मां अब सब ठीक हो गया। अब आप खुश रहने की कोशिश करें।

"हां बेटी मैंने ज़िन्दा रहना है अपना पोता पालना है, समझी तू?"

सुनकर शालू को हैरानी हुई कि मां जी को कैसे पता चला कि कोई नया जीव आने वाला है। वह झेंप गई और बोली,'' मां जी आप शीर चाय पियेंगी?

"हां बेटी। बनाओ बड़े दिन हो गये पिये हुए"।

इधर यह लोग बातें कर रहे थे, उधर विनय पिता के साथ बस्ती में कमरा ढूंढ रहे थे। सुबह से शाम होने को आई पर अभी तक उन्हें कमरा नहीं मिला था। कहीं पर किराया अधिक तो कहीं पर कमरे में सीलन, अन्धेरा। खैर देखते–देखते वे ऐसी कॉलोनी में आ गये थे जहां कमरे अच्छे थे पर किराया सैंकड़ों में था। मरता क्या न करता चार सौ भाड़े पर उन्होंने एक कमरा और एक छोटी सी कोठरी किराये पर ली। अब वह खुशी–खुशी वापिस आये। यहां दोनों सास–बहू मां–बेटी की तरह चाय पी रहीं थीं। ससुर को पहली बार ऐसा दृश्य देखने को मिला। वह बस चुपचाप खड़ा देखता ही रहा। इधर विनय को इस दृश्य की कल्पना भी नहीं थी। वह बोला – यह क्या हो रहा है मां? शामरानी चाय पीते–पीते बोली – शीर चाय बनी है पी लोगे?

वह कुछ कहें इसे पहले ही श्याम लाल बोले – नेक़ी और पूछ–पूछ। लाओ दो कप इधर भी दो। हम भी पियें।" शालू ने उठकर दो कप उनकी ओर भी बढ़ाये। इस प्रकार चारों शीर चाय पीते रहे। पीते–पीते श्याम लाल बोले –'' क्या ही अच्छा होता यदि पहले से ही यह माहौल होता?" जवाब में उसकी पत्नी बोली – "तब मेरा दिमाग खराब जो था। अगर हम लोग इस तरह रहते तो निधि हमें छोड़कर

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

न जाती।"

"तुमने फिर उस नामुराद का नाम लिया? अब इस खुशी के माहौल में उस कमबख्त का क्या काम? वह हमारे लिए मर गई, सुना तुमने।" वातावरण गम्भीर सा होने लगा। यह देखकर विनय बोला – "बाबू जी गढ़े मुर्दे उखाड़ने से क्या होगा? इन्हें बताइए ना कहां लिया है आपने कमरा और कब जा रहे हैं हम वहां?

"अच्छा, कमरा मिल गया?" आंसू पोंछती हुई शामरानी बोली, "तब ठीक है। अभी यह लोग यहीं हैं। कमरा सजाने में मदद मिलेगी, क्यों शालू बेटी?"

"हां मां। आज ही चलते हैं देखने"।

"चलो बेटी जैसा तुम कहो।"

विनय को उनका इस तरह बोलना बड़ा अच्छा लगा। वह एकदम चाय पीकर खड़ा हुआ और बोला, " चलो तुम्हें दिखाऊं।"

इस पर श्याम लाल बोला, "हो आओ तुम तीनों, तब तक मैं थोड़ा आराम करूंगा।"

इस प्रकार तीनों चले। वहां पहुंचकर शामरानी को न जाने क्या सूझी, उसने आगे बढ़कर शालू को अपनी बाहों में लिया और बोली, "भगवान करे अब तुम लोग भी ऐसा ही मकान यहां बनाओ, जिसमें हम सारे इकट्ठे रहेंगे।"

विनय ने सुना और बोला, "यहां ही क्यों मां किसी और जगह क्यों नहीं?"

"यह हरिद्वार है बेटा पवित्र नगरी! उस पर हम सब को मिलाने वाला स्थान। इसलिए यह मेरे कश्मीर से भी महत्वपूर्ण है। मैं यहीं अपने पोते को खिलाऊंगी।"

विनय और शालू दोनों एक दूसरे को हैरानी से देखने लगे।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सैंतीस

आज पूरा एक हफ्ता हुआ निधि को बीमार हुए। पर बीमारी ऐसी कि ठीक ही नहीं होती। भनोत साहब भी कई दिन हुए आये ही नहीं। बस डॉक्टर आता है और देख कर दवाईयां लिख कर जाता है। दवाईयां भी इतनी मंहगी कि धीरे–धीरे निधि के पैसे खत्म हो रहे हैं। यही सोचकर वह बहुत परेशान है। उसने कई बार आया से पूछा भनोत के बारे में पर वह बेचारी कुछ जाने तो जवाब दे। वह भी करूणा से अपनी मालकिन को असहाय निहारती रही। बड़ी सोच के बाद उसने भनोत का नम्बर मिलाया और जवाब में ठहरने के लिए कहा गया, शायद किसी और ने रसीवर उठाया होगा। थोड़ी देर के बाद भनोत की आवाज़ आई – हैलो, कौन बोल रहा है?"

"हैलो – मैं निधि बोल रही हूं।"

"क्यों फोन किया तुमने? क्या बात है?"

"मैं पिछले एक हफ्ते से बीमार हूं और आपने पूछा तक नहीं।"

"देखो तेरे नख़रों के इलावा भी मुझे और काम हैं। समझी तुम।"

"वह तो मैं समझ गई हूं।"

"तो फिर अब क्या है?"

"मेरे पैसे खत्म हो रहे हैं। इसीलिए फोन किया था, कुछ दवाइयां लानी थीं"।

"ठीक है आज शाम को मैं खुद आ रहा हूं। अब फोन रख दो।"

निधि को अपनी इस लाचारी पर रोना आ रहा था। मगर कर भी क्या सकती थी। इसके अतिरिक्त और कोई चारा न था। उसके मन में वितृष्णा सी हुई। भनोत की याद आते ही जैसे वह घृणा से कांप गई, लेकिन करे भी तो क्या, उसने तो अपने सभी सहारे अपने हाथों समाप्त कर डाले हैं। अगर उसने फिर से ठीक होना है तो उसे सारे अपमान भुला कर उसी की शरण जाना होगा। इसीलिए इस वक्त निधि की वाणी धीमी और शान्त थी

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

–जबकि मन में झंझावात् उठ रहे थे। काफी सोचने के बाद उसने आया से दलिया बनाने को कहा –काश उसने अपनी इस दशा के बारे में कभी सोचा होता तो शायद इस तरह की लाचारी न होती। उसने सोचा अबकी बार ठीक होते ही वह बनोत का बंगला छोड़ देगी। अब उसे धन का लालच न था इसलिए घर छोड़ देने में किसी तरह की कोई परेशानी उसे न होगी बस बिस्तर से उठने तक उसे बनोत से दोस्ती का बर्ताव करना ही होगा। फिर जब वह ठीक होकर एक रात गायब हो जायेगी तब लालची बनोत के होश ठिकाने आ जायेंगे। ऐसा सोचते हुए उसके पीले चेहरे पर स्कून की लहर सी दौड़ गई बराबर प्रतिशोध लेते वक्त उस मनुष्य की तरह जिसने प्रतिशोध लेने की प्रतिज्ञा की हो। उसके पीले चेहरे पर मुस्कान भी उभर आई। वह अभी न जाने क्या–क्या सोचती कि आया दलिया लेकर आई उसे सहारा देकर तकिये के साथ बिठा दिया और चम्मच लेकर खिलाने लगी। निधि ने मना किया और कहा "लाओ आज मैं खुद ही खाऊंगी।" फिर वह स्वयं ही वह बेस्वादा दलिया खाने लगी।

खाते–खाते उसे याद आये वे दिन जब कश्मीर में वह एक बार बीमार पड़ी थी और इसी तरह खाने में रूचि न थी तो मां ने कई तरह के व्यंजन बनाये थे, पर उसे किसी में भी स्वाद न आया था। तब मां ने कहा था– "अगर थोड़ा सा भी खालेगी तो मैं इनाम दूंगी" इस तरह इनाम के लालच में वह धीरे–धीरे खाने लगी थी। इस समय न जाने कहां वह मां होगी और कहां होंगे बाबू जी– उसने एक ठंडी सांस ली –आया ने पुछा –"क्या हुआ मेम साहब?"

"कुछ नहीं। थोड़ा थक गई। बस इतना ही, यह बर्तन ले जाओ।"

"नहीं मेम साहब थोड़ा खा लो, तभी तो ताकत आयेगी। आपने तो कुछ खाया ही नहीं।"

अच्छा, और उसने दो तीन चम्मच और खा लिये और बर्तन सरकाते हुए कहा –"बस मैरी इतना ही। इससे ज़्यादा न खाया जायेगा।"

मैरी ने सारे बर्तन समेट सिंक में रखकर वापिस आई और निधि को आराम से बिस्तर पर लिटा दिया और चादर डाल दी। निधि सोचने लगी–– ज़रुरत आदमी को कुछ भी करने को मजबूर करती है। उस वक्त न अक्कड़ रहती है और न मान–अपमान की बात। पैसा एक एसी चीज़ है

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जिसके लिए रिश्ते भी ज़ंग खा जाते हैं। पैसे की चमक दमक ने ही तो मुझसे मेरी विवेक बुद्धि भगा दी। हाय! मैंने अपने उसी साथी को दुत्कारा जिसने केवल मेरे लिए अपनी मां तक को छोड़ा था। काश! ऐसा न हुआ होता तो आज मेरी यह हालत भी न होती। यह आया भी मन से चाहती है या नहीं पर मेरी सेवा करती है। कैसी अजीब है यह दुनिया मृगतृष्णा की तरह हो गये हैं यह रिश्ते –जो असली हैं वे दिखाई नहीं देते और जो नक्ली हैं लोग उसी को पाने की होड़ में अपने आपको नष्ट करते हैं। वह न जाने और भी क्या–क्या सोचती कि उसने सुना – "हेलो निधि कैसी हो तुम?" आवाज़ तो भनोत की है, पर इतना नम्र स्वर –यकीन नहीं आता। उसने धीरे से आखें खोली और भनोत को अपने सिरहाने बैठे अपने सिर पर हाथ फेरते अनुभव किया। उसकी लाचार आंखों में झर–झर आंसू बहने लगे। भनोत ने अपने रुमाल से उसकी आंखें पोंछ लीं और काफी अपनेपन से बोला,"यार! तेरी बीमारी ने तो अपनी कमर ही तोड़ डाली। इतनी मंहगी दवाइयां और इतना मंहगा इलाज बाप रे। ऐसा ही रहा तो बहुत जल्दी दिवाला निकलेगा मेरा। अब बस भी कर यार। तुम बीमार अच्छी नहीं लगती। बस जल्दी–जल्दी ठीक हो जा अब।"

निधि के मन में आया कि कह दे–– क्यों उसके बीमार होने से कमाई में फर्क पड़ा क्या? लेकिन सम्भाल लिया उसने अपने आप को। अब निधि ने भी चाल चलनी शुरू की – "मैं कब चाहती हूं कि बीमार पड़ी रहूं।"

उसके इस तरह कहने पर भनोत को भी न जाने उस पर क्यों दया आई, बोला, "ठीक हैं। बीमार होना आदमी के वश की बात नहीं। दो तीन दिन आराम करो। चंगी हो जाओगी।"

"समझ गई। पर अगर ठीक न हुई तब तक तो... "देखो बिस्तर पर पड़ी रहोगी तो सड़ जाओगी। कुछ चला फिरा करो तो आलस नहीं रहेगा।"

"हुं हुं।" उसके मुंह से अनायास ही निकल गया, जिसे भनोत को गुस्सा आया, बोला– "देखो इन नखरों की बात मेरे साथ चलेगी नहीं। मैंने यतीमखाना नहीं खोला कि यतीमों को पालता रहूं। समझी? और –और तुम्हें क्या हुआ है, थोड़ा सा बुखार है बस? बुखार उतरने में जन्म नहीं बल्कि कुछेक दिन लगते हैं। और कुछ दिन तो तुम्हें दे रहा हूं और क्या

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

करूं। बोलो?"

निधि ने देखा कि इस तरह भनोत के साथ बात करने से बात ही बिगड़ सकती है इसलिए चुप हुई और आंखे बन्द कर दीं ताकि भनोत चला जाये। लेकिन वह तो फुर्सत से बैठने आया था। वह उठकर निधि के कमरे से बाहर आया और मैरी को काफी बनाने के लिए कहा। वापस आकर निधि की किताबों को उलटने–पलटने लगा। इसी तरह उसके हाथ निधि की डायरी लगी जिसमें उसने अपने पिता के बारे में लिखा था कि उसने पिता को धक्के दे कर कैसे कोठी से बाहर निकाला था। पढ़ कर भनोत को विस्मय हुआ कि इतनी सुन्दर स्त्री कैसे इतना बदसूरत स्वभाव रख सकती है? उसके मुंह पर अस्फुट सा स्वर उभरा– "कितनी भयानक स्थिति होगी वह?"

फिर इसी तरह आगे भी पढ़ता गया। एक स्थान पर निधि ने अपने उसी काम के लिए बहुत अफसोस ज़ाहिर किया था और अपने पिता के प्रति अपने को कसूरवार ठहराया था। यह पढ़ते ही उसके मुख से निकल गया, "स्ट्रेंज"। फिर वह सोच में डूब गया–– अब निधि अपनी ज़िन्दगी से तंग आई लगती है। इससे अब और लाभ नहीं उठाया जा सकेगा। वैसे भी अब जवानी के नाम पर इसके पास बीमारी और खूबसूरती के नाम पर केवल बीमार जिस्म है। कोई इस पर खर्च करे भी तो किस लालच से? मुझे भी अब इसको आज़ाद करना चाहिए। क्यों न मैं इसको जाने के लिए कह दूं– मगर! इस वक्त कहना ठीक न रहेगा। उतर जाने दो इसका बुखार फिर कहूंगा। ऐसा निश्चय करने के बाद भनोत ने डायरी बंद की। यथा स्थान रखी और दरवाज़े की ओर मुड़ा। निधि दरवाज़े पर टेक लगाये खड़ी थी उसने पूछा, "क्यों कुछ मिला क्या?"

वह हैरान होकर देखता रहा उसकी ओर। थोड़ी देर के लिए कुछ न कह सका क्योंकि उसकी चोरी पकड़ी गई थी। घबराये स्वर में बोला वह– "कुछ नहीं। मैं देख रहा था कि कहीं तुम्हारा किसी से कोई अप्वाइन्टमैंट तो नहीं। तब फोन से उसे तुम्हारी बीमारी का कह कर रोक लूं।"

"अच्छा।" निधि ने भी ताड़ते हुए उसी स्वर में जवाब दिया।

"तुम्हें बुखार है तुम उठी क्यों?"

"ऐसे ही बाथरूम तक गई थी।"

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इतने में मैरी काफी के दो मग़ ट्रे में सजाकर लाई। भनोत बोला– ''चलो काफी पियें तुम्हें भी इससे आराम होगा और मेरी भी थकान मिट जायेगी'' कहते हुए उसने आया से ट्रे ले ली और बैडरूम की ओर चला। निधि भी पीछे–पीछे वहीं आ गई। उसे उसकी डायरी पढ़ लेना अच्छा नहीं लगा था काफी गुस्सा आया था उसे, मगर वक्त की नज़ाकत देखकर निधि अपना गुस्सा पी गई।

बिस्तर पर बैठ कर उसने काफी का मग लिया और घूंट–घूंट पीती रही। भनोत कॉफी सिप् करते हुए बोला, ''अगर बुखार कम हो तो एक पिक्चर हो जाये।''

''नहीं'', पिक्चर के लिए मन का उत्साह होना ज़रूरी है जो मेरे पास नहीं। मैं सच कहती हूं मैं बीमार हूं थकी हूं, टूटी हूं। इसलिए प्लीज़ बुरा न मानना ठीक होते ही चलेंगे।''

''कोई बात नहीं। फिर भी बात तो कर सकती हो ना?''

''तुम टॉन्ट क्यों करते हो।''

"नहीं। मैं टॉन्ट नहीं कर रहा। सच कहता हूं। तुम..."

अभी वह कुछ कहता कि निधि ने बात काट दी – ''आगे तो तुम्हें फुर्सत होती नहीं आज आये भी तो मैं बीमार हूं। कैसी किस्मत है मेरी। मुझे स्वयं अपनी किस्मत पर गुस्सा आता है। पर क्या करूं लाचार हूं।"

''कोई बात नहीं, तुम ठीक हो जाओ फिर चलेंगे। इस वक्त मुझे एक काम याद आ गया, वही कर लेता हूं।''

''ठीक है।''

''बाइ'' कहकर भनोत साहब चले गये। इधर निधि को भी जैसे राहत सी मिल गई। आज पहली बार उसे बनोत की उपस्थिति सहन नहीं हो रही थी। अपने आप में यह परिवर्तन देखकर निधि हैरान हो गई। वह अपनी इस बीमार हालत का ज़िम्मेदार बनोत को ही मान रही थी। उसी ने उसको किसान की मुर्गी की तरह निचोड़ा था। काश वह पहली जैसी निधि होती जो सुन्दर थी, शर्मीली थी, प्यारी सी थी। अब तो अपनी सुंदरता को बेच–बेच कर वह बेशर्म बन गई थी। अब उसके पास प्यारी सी आवाज़ न थी बल्कि बेसुरी सी आह थी – सच कितनी बदल गई थी वह! उसका मन किया कि भाग जाये कहीं वापिस न आने के लिए। पर अशक्त थी भाग नहीं

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सकी। उसे इस चकाचौंध से नफरत होने लगी थी।

निधि ने निश्चय कर लिया कि वह अब बहुत दिनों तक भनोत की कठपुतली नहीं बनी रहेगी। थोड़ा ठीक होते ही वह थोड़ी नकदी लेकर भाग जायेगी। पढ़ी–लिखी तो वह है ही इसलिए कहीं भी जा कर अपने सर छिपाने लायक इन्तज़ाम कर ही लेगी। उसे बड़े–बड़े खर्चों की आदत पड़ गई है तो उसे इस माहौल से बाहर तो नहीं मिल सकेंगे। उसे अपनी आदतों पर कन्ट्रोल करना होगा। उसने अपने पीने की आदत को बिल्कुल खत्म करने की कोशिश की थी लेकिन सफल न हो सकी, नतीजा यह हुआ कि वह और बीमार हो गई। डा. ने थोड़ा–थोड़ा पीने के लिए कहा, तो उसे मजबूरन दवा के तौर पर शराब लेनी पड़ी। इसे भी वह धीरे–धीरे बस में लाने लगी। इस बीच भनोत दो तीन बार आया भी और कभी नाराज़ होकर कभी गुस्सा होकर वापस चला गया था। उसकी हालत देखकर वह उसे ज़बरदस्ती भी नहीं कर सकता था। लेकिन उसको अब निधि भारी बोझ लगती थी, वह भी उससे पिंड छुड़ाने के लिए तरकीब सोचने लगा। इधर निधि अपनी हालत के सुधरने का इंतज़ार करने लगी।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अड़तीस

कमरा देख आने के बाद आते ही शामरानी बोली, "बड़ा अच्छा माहौल है वहां साफ–सुथरी जगह है और अलग–थलग। मैं समझती हूं कि अगर मुहूर्त हो तो आज ही क्यों न जाया जाये।"

"खयाल बुरा नहीं" श्याम लाल बोले "तो फिर बांधो सामान। "मैं रिक्शा लेकर आता हूं, विनय ने एकदम तैयार होकर कहा और सारे लोग मिल कर सामान बांधने लगे। इस बीच शालू ने चाय बनाई सब लोगों ने पी ली और चल पड़े नये बसेरे की ओर।

पहुंचते ही शामरानी व शालू कमरा सजाने लगीं और बाप बेटा बाज़ार से साग सब्ज़ी लाने के लिए चल पड़े।

"तुम्हारे साथ होने से काम एकदम निपट गया", सास बोली शालू से।

"क्यों, आप भी तो साथ–साथ काम कर रही थी?"

"सो तो है। लेकिन अगर अकेली होती तो यह पूरे एक हफ्ते का काम था कि नहीं?"

शालू ने सुनकर बात टालने की गर्ज़ से कहा– "मां जी। इन खिड़कियों और दरवाज़े पर पर्दा लगायें तो कैसा रहे?"

शामरानी न जाने किन विचारों में खोई थी। तब शालू ने दुबारा अपने शब्द दोहराये जिन्हें सुनकर शामरानी बोली, "बहुत बढ़िया लगेगा। लेकिन जिसका पर्दा ही उठ गया हो, उसके नंगे हालात को वे पर्दे ढ़क सकेंगे क्या?"

"आप बीती बातें भूलकर वर्तमान में क्यों नहीं आतीं? इन बातों को लेकर दुःख तो अवश्य होता है पर हमारे हालात सुधर नहीं सकते। भगवान के लिए अपने को सम्भालिए। ईश्वर पर छोड़ दीजिये सब कुछ। वही हमारी नैया के खेवनहार हैं।" शालू बोलती रही और शामरानी आश्चर्य से बहु को देखती रही, अन्यमनस्क सी न जाने किन–किन अवस्थाओं में भटकती रही

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शामरानी! यह देखकर शालू ने उठकर तेल की शीशी से थोड़ा सा एक कटोरी में डाला और सास के पास जाकर बड़े प्यार से उसके सिर की मालिश करने लगी। शामरानी ने मना नहीं किया बल्कि बड़ी प्रसन्न होकर बहु की सेवा का आनन्द उठाती रही। खामोशी से दोनों औरतें अपने-आप में खोई हुई थीं। इतने में विनय और श्याम लाल सामान लाये। उनके आते ही शालू का हाथ रूक गया और शामरानी भी सामान्य अवस्था में आ गई और पति से बोली, "क्या-क्या लाये?

"बस! घर का थोड़ा सा सामान ही और क्या?"

"सब्ज़ी क्या लाये?"

"सब्ज़ी तो कड़म का साग, शलगम और मटर हैं और थोड़ा मीट भी लाये हैं।"

"अच्छा किया। शालू बेटी मीट की यखनी बना दो और कड़म सादा। ठीक है ना"

"ठीक है मां जी। आप पहले चाय पियेंगी या कड़म काट देंगी।"

"तुम पहले इन लोगों को चाय पिलाओ। तब तक में कड़म काट देती हूं फिर हम दोनों इकट्ठे चाय पियेंगी।

"अच्छा मां जी" कहकर शालू आदेशानुसार काम करने लगी। इधर विनय को इन दोनों के संबंधों में सुधार देखकर बड़ा आनन्द अनुभव हो रहा था। वह सब कुछ भूल कर केवल उन्हीं की बातें सुन रहा था और उन्हीं के काम देख रहा था। विनय सोच रहा था -यदि पहले से ही इसी तरह चलता तो रोना ही किस बात का था। कितना बदलाव आ गया है मां में। शालू में भी-नहीं वह तो पहले से ही समर्पित थी। खैर! अब तो हमें वापस कश्मीर जाना होगा। तब क्या करेगी मां। ज़रा पूछता हूं। "मां! अब तो मेरी छुट्टियां समाप्त होने वाली हैं। ऐसा करते हैं कि मैं अकेले जाता हूं। फिर कुछ दिनों के बाद शालू को भी ले जाऊंगा।"

"नहीं बेटा। इसे भी साथ ही ले जाओ। वहा भी बड़ी देर का घर छोड़ा है। व्यवस्था करने में मदद मि[illegible]ी और बहु भी थोड़ी फुर्सत की सांस लेगी।"

सुनकर शालू मन ही मन सोचने लगी -"क्या इस औरत को भी मेरे आराम व मेरी फुर्सत का एहसास होने लगा। यह जो मुझे विष देकर

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

धीरे–धीरे मारना चाहती थी। खैर! वह ज़माना और था और यह समय कुछ और। स्वर्ग–नरक सब यहीं है मनुष्य के आस–पास, बस अनुमान की बात है। शालू को विचारमग्न देखकर विनय बोला, "क्या सोच रही हो तुम?"

"कुछ नहीं।"

"तब भी।"

"सच कुछ नहीं।"

"फिर भी सोच किस बात की थी?"

"सोच रही थी कि यहां का मौसम अपने कश्मीर के मौसम से कितना अलग है?"

विनय समझ गया कि शालू ने बात को टालना ही उचित समझा है फिर भी वह इस मेल–जोल के व्यवहार को जाने न देना चाहता था। बोला, "शालू तुम इस तरह सोचती अच्छी नहीं लगती। यदि कोई कष्ट है तो उसका निवारन होना ज़रूरी है।"

"बात कुछ भी नहीं आपको शायद भ्रम हो गया है।"

यह लोग बातें कर ही रहे थे कि श्यामलाल ने पंचांग देखकर कहा– "बेटा मैं पंचांग देख रहा था सो तुम लोगों के वापस जाने का मुहूर्त कल नहीं परसों सुबह दस बजे का है। इसलिए तुम लोग तैयारी करो।"

"मेरा विचार था कुछ दिन और यहां रहने का किन्तु मेरी छुट्टियां समाप्त होने वाली हैं। इसलिए जाना ही पड़ेगा।"

इस तरह वापस जाने की तैयारी में शालू ने पहले सब के कपड़े धो लिए। तब उन्हें तह लगाकर रखा। अपने कपड़ों को सूटकेस में भर दिया। इस तरह करते कराते मुहूर्त वाला दिन भी आ पहुंचा। सुबह से खाना–पकाने के बाद शालू ने इस घर को व्यवस्थित कर लिया, तब नहाई। इतने में उसकी सास ने एक खाने की पोटली बनाई और शालू को थमाई यह कहकर कि रास्ते में बाहर का न खाना क्योंकि उसमें मिलावट होती है इसलिए जो आने वाला जीव है उसे गंदी चीज़ें नहीं खिलाना। सुनकर शालू थोड़ा शर्माई और पोटली को बैग में रखकर सास व ससुर के पैर छुए। पहली बार उनके मुख से आशीर्वाद लिया और चल पड़ी रेलवे स्टेशन की ओर। विनय ट्रेन में शालू को बिठाकर बाहर से अखबार लाने चला–ट्रेन के छूटने में अभी समय था। प्लेटफार्म पर उसको अपने मुहल्ले का एक

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लड़का मिला, पूछने पर उसने बताया कि उसके पिता जी पूरे हुए थे और वे लोग उनके फूल लेकर हरिद्वार आये थे। विनय ने कहा– "चलो अच्छा हुआ श्रीनगर तक तो साथ है अपने किसी का।" इस पर वह लड़का परेशान सा उसे देखता रहा और कुछ देर बाद बोला, "श्रीनगर में अब क्या रखा है? वक्त पर भागे होते तो कुछ बचाकर साथ भी लाये होते पर पिता जी मानते न थे कश्मीर छोड़ना। रात को भागना पड़ा जान बचाने के लिए। पिताजी यह सदमा सहन न कर सके और जम्मू में आकर पूरे हो गये," कह कर वह लड़का रो पड़ा। विनय की समझ में कुछ भी न आया। वह उसे तसल्ली देने लगा –"देखो भाई। इसं दुनिया में जो भी आया है उसको एक न एक दिन जाना ही होता है। इसलिए इसमें पछताने की कोई बात ही नहीं। अब यह बात ठीक है कि तुम्हें उनकी कमी महसूस अवश्य होगी। पर वक्त सबसे बड़ा मददगार है। वक्त के साथ–साथ तुम यह गम अवश्य ही भूल जाओगे।"

लड़का उसकी सान्त्वना के बोल सुनकर अवश्य ही कुछ सम्भल गया किन्तु उसकी समझ में न आया कि वह बन्दा कैसी बातें कर रहा है? क्या इसे इसकी बरबादी का कुछ भी मालूम नहीं या यह पगला गया है –वह बोला –"आपके साथ और कौन है?"

"तुम्हारी भाभी है।"

"और"

"और कोई नहीं। तुम्हारे साथ कौन है?"

"मां"

"तो चलो तुम्हारी मां से मिलते हैं"। वे दोनों उस डिब्बे की ओर चले कि ट्रेन छूटने लगी। इस डिब्बे को भी अपने डिब्बे के साथ ही पाकर विनय ट्रेन पर चढ़ गया। सीट पर उस लड़के की मां थी जो बड़ी ही दयनीय अवस्था में थी। फटी पुरानी साड़ी पहने और बिखरे हुए बाल। वह विस्फारित नेत्रों से विनय को देखने लगी। और बोली, "क्या आप लोग भी उसी रात भागे थे कश्मीर से?"

विनय क्या जवाब दे उसे कुछ समझ न आई। उसने कहा– "किस रात को?"

"उसी रात को जब आपका और मेरे पति का नाम हिट लिस्ट में आ

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गया था और वह गुमनाम चिठ्ठी?''

''मैं कुछ नहीं समझा। आप विस्तार से बतायेंगी तो शायद कुछ कह सकता हूं।''

"24 दिसम्बर को एक चिठ्ठी उनके नाम आई थी जिसमें आपको और इनको भारतीय सरकार का मुखबिर कहा गया था, इसलिए 27 की रात को आप दोनों को कत्ल करने की बात थी। वे वह चिठ्ठी देखकर बहुत घबराये फिर रात को आपके घर गये पर वहां ताला देख जल्दी ही वापस लौट आये और उसी रात को हम तीनों मिलिट्री की एक ट्रक में जम्मू आये। वहां आकर ही इन्हें घबराहट के मारे बुखार आता रहा तब तीसरे दिन ही पूरे हो गये" –कहते–कहते वह रो पड़ी। बड़ी देर तक उसे चुप करवाने के बाद भी विनय के मन में उथल–पुथल मच गई। वह सोचता गया कि इस तरह के आसार तो समझ आ रहे थे पर इतनी जल्दी सब कुछ बदल जायेगा –यह अनुमान न था। थोड़ी देर बाद उसे शालू का विचार आया तब ट्रेन के अन्दर से ही वह अपने डिब्बे की ओर चला। अपने डिब्बे में आते ही उसने शालू को बड़ा परेशान पाया, पूछा –''क्या हुआ, परेशान क्यों हो?''

''आप कहां रह गये थे"। "ट्रेन चल पड़ी इसीलिए परेशान थी क्या?''

''हां।''

''मैं ट्रेन पर चढ़ा तो था फिर यहां तक आते–आते थोड़ा समय लगा।"

थोड़ी देर बाद शालू बोली, ''आपको मालूम है, यहां यह लोग कहते हैं कि रघुनाथ मुहल्ला श्रीनगर में बम फटा और हमारे मकान के साथ ही बगल में मिर्ज़ा वालों का मकान भी जलाया गया है।"

''किसने कहा तुमसे?''

''यह सामने बैठे दो लोग बाबू जी का नाम लेकर कहते थे कि उनका मकान जलाया गया है। आप भी पूछो ना।''

विनय उन लोगों की ओर बढ़ा और बोला– ''क्या यह सच है कि श्याम लाल कौल का मकान जलाया गया?''

''हां और क्या? मैंने खुद देखा उतने बड़े मकान को जल कर मिट्टी में मिलते हुए। लेकिन कहते हैं कि इन दिनों वहां कोई रहता नहीं था।"

''क्यों?''

''वे कहीं गये हुए थे पिछले ही एक दो हफ्तों से। कहा जाता है कि

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आतंकवादी श्याम लाल जी के लड़के को हिन्दुस्तानी मुखबिर समझते थे। शायद इसीलिए घर जलाया गया।" सुनते ही विनय को जैसे झुर–झुरी सी हुई। रोंगटे खड़े हुए यह सोच कर कि अगर वह वहां होता तो शायद मारा गया होता। अब घर जाकर करना भी क्या है? वे लोग उसे मारने के लिए किलम भी आ सकते हैं। वापस हरिद्वार जाये या नहीं। कुछ देर तक सोचने के बाद विनय ने निश्चय किया कि वे लोग पहले दिल्ली चलेंगे उसके बाद सोचेंगे कि क्या करना है। उसने वापस अपनी सीट पर आकर शालू से कहा –तुमने ठीक सुना है। अब क्या करना होगा। तुम्हारे मायके वाले सुना दिल्ली आये हैं कहां रहते हैं वे?"

"मुझे तो मालूम नहीं। पर सुना है पहाड़गंज में मामा की लड़की के मकान में रहते हैं।"

"तुम्हें उसका अड्रेस मालूम हैं ना"

"हां"

"तो मालूम करेंगे। तब उनसे मिलकर सब बातों का पता चलेगा। तभी आगे का कोई प्रोग्राम बनाया जायेगा।"

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उन्तालीस

दिल्ली आते ही विनय और शालू पहाड़गंज के पते पर चल दिये। बड़ी देर तक ढूंढने के बाद आखिर घर मिल ही गया। वहां एक तो मामा जी वाले रहते थे दूसरे शालू के मायके वाले भी कश्मीर से भागकर वहीं रहते थे। थोड़ा बहुत सुस्ताने के बाद शालू ने अपनी मां से पूछा– ''यहां कब आये हो आप लोग?''

''अभी दस एक दिन पहले ही जान बचाकर आये हैं। अब जब तक कोई जगह मिलेगी रहने की तब तक यहीं रहेंगे।''

''हरिद्वार जाने से पहले तो मैं आप लोगों से मिलने गई थी। सब ठीक–ठाक था, अचानक यह सब हुआ कैसे?''

''यों तो बहुत दिनों से डर–डर कर जी रहे थे वहां –इतना तो तुम्हें मालूम ही है। तुम्हारे जाने के बाद दो बार गुमनाम धमकी की चिट्ठी आई जिसमें कश्मीर से जाने के लिए कहा गया था। नहीं गए तो 'तुम्हारे भाई और पति दोनों को जान से मारने की' धमकी दी गई थी। फिर भी हम घर छोड़ने को तैयार न थे। तब एक दिन जलूस निकला जिसमें बड़े अजीब और भयंकर किस्म के नारे लगाये जा रहे थे–– "असि गछि आसुन पऽकिस्तान, बटव रोंस तॅ बटॅन्यव सान" (हमें चाहिए पाकिस्तान, पंडितों के बगैर (मगर) पंडितानियों के साथ)। सामने वाले दर वाले भी हमारे साथ ही आये हैं। उनकी कुन्ती जो अस्पताल में नर्स थी, को एक दिन बीमार को देखने के बहाने उठा के ले गये और तीसरे दिन उसकी लाश आंगन में फेंक गये। लाश के माथे पर एक चिट लगी थी कि अगर उन्हें विनय का पता नहीं दिया तो बाकी लोगों का भी यही हश्र होगा। हम घबराये और रात होते ही एक मिलिट्री ट्रक में जम्मू आ गये। वहां शिवालय में एक हफ्ता रह कर यहां आये हैं।

''यहां क्या करोगे?''

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"देखते हैं, कोई छोटी–मोटी नौकरी मिल जाये तो जान बच सकती हैं।"

"क्या कश्मीर का कारोबार व प्रापर्टी यूं ही छोड़ दोगे?"

"बेटी इस समय तो जान की पड़ी है। जान रही तो प्रापर्टी फिर से बनेगी। जब हम ही न रहे तो प्रापर्टी का क्या करेंगे?"

"तो क्या हम अपनी जन्म भूमि से ही संबंध तोड़ देंगे?"

"हालात ही ऐसे हैं कि जन्म भूमि से नाता नहीं रहा। तुम अपनी चाबी ले जाओ और प्रापर्टी संभालो– अगर उन लोगों से बच गई तो।"

"क्या मतलब?"

"बेटा सुना है कि हमारे जाने के बाद तुम्हारा और हमारा दोनों के मकान जलाये गये हैं।"

"फिर हम कहां जायें?"

"मेरी मानो तो यहीं रहो और छोटा मोटा काम ढूंढो।"

"उनकी नौकरी का क्या होगा?"

"नौकरी प्यारी है या जान?"

अब तक चुप विनय बोल पड़ा "नहीं मां जी जान ही प्यारी है। मैं तो कश्मीर जाऊंगा ही नहीं?"

"और तुम्हें कम से कम इस वक्त जाना भी नहीं चाहिए क्योंकि वे लोग तुम्हारी तलाश में हैं।"

"तब मेरे लिए क्या उचित होगा?"

इस सवाल का जवाब शालू के भाई ने दिया, "तब तो दूल्हा भाई आपको व शालू को जम्मू जाना पड़ेगा। वहीं पिता जी भी हैं और वहीं से आप अपनी प्रापर्टी का क्लेम भी कर सकते हैं।"

"लेकिन पिता जी मिलेंगे कहां?"

"वे इस समय पुरखू शरणार्थी कैम्प में है।"

"तब हम एक दो दिन में जम्मू के लिए रवाना होंगे।"

इस तरह तय करके उन सब लोगों ने इकट्ठे खाना खाया और एक ही बड़े कमरे में आड़े–तिरछे होकर पसर गये। सुबह होते ही विनय रेलवे स्टेशन टिकट के लिए चल पड़ा। रिज़रवेशन हाल में कमल की दृष्टि उस पर पड़ी और उसने नाम से बुला कर उसे रोका और पूछा, "आप यहां

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कैसे? सब ठीक–ठाक है ना?"

पहले तो विनय ने उसे पहचाना ही नहीं। पर फिर थोड़ी देर के बाद उसने पूछा, "आप कमल हाशिया तो नहीं?"

"ठीक पहचाना आपने। कहां जा रहे हैं? सब ठीक है ना?"

"अभी तक तो ठीक ही है, आगे की ईश्वर जाने। आप शायद कश्मीर की विपत्ति के बारे में जानते नहीं।"

"क्यों, क्या मैं कश्मीरी नहीं।"

"नहीं वह बात नहीं है। आप तो सालों से कश्मीर से बाहर रहते हैं ना इसलिए पूछा था।"

"आप ठीक कहते हैं। मुझे कश्मीर की विपत्ति का ज्ञान है पर समाचारों इत्यादि से, वास्तव में प्रत्यक्षदर्शी नहीं। क्या आप भी कश्मीर छोड़ आये हैं?"

विनय ने कहा –"छोड़ा तो नहीं था। पर अब घर तक जला दिये गये हैं, तो छोड़ना ही पड़ा। वैसे मेरे माता–पिता हरिद्वार में रहते हैं, उन्हीं से मिलने गये थे वापसी पर घर जलने का समाचार मिल गया।"

"आप क्लेम कर सकते हैं। सरकार को देना ही पड़ेगा।"

"इतना ही होता तो गनीमत थी, लेकिन सुना है कि जहादी जनूनियों को मेरी तलाश है।

"क्यों?"

"पता नहीं। सुना है मुझे कत्ल करने की योजना है।"

"तब तो मैं कहूंगा कि आपको वापस जाना नहीं चाहिए।"

"यही सोच के जम्मू जाने का फैसला किया है ताकि वहां अपने और लोग हैं उनसे मिला जाये और आगे की सोची जाये।"

"हां। इस तरह ठीक है। मेरे लिए कोई सेवा?"

"धन्यवाद। अभी तो कहीं स्थान बनायें फिर आपसे प्रार्थना की जा सकती है।"

"अवश्य। संकोच न करें।" इतना कहने के बाद कमल चल पड़ा अपनी कार की ओर और विनय रिज़रवेशन ऑफिस की ओर। विनय मन ही मन सोच रहा था कि जब इस भले आदमी ने निधि का हाथ मांगा था तो मुझे अच्छा नहीं लगा था। काश उस वक्त थोड़ी भी अक्ल आई होती

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तो इस वक्त जो ज़िल्लत उठा रहे हैं वह न होती। निधि का भी घर बस जाता ओर हमारी भी रिश्तेदारी होती। पर....

इधर कमल भी अपनी जगह सोच रहा था –इस भले आदमी पर तो चारों ओर से मुसीबतों के पहाड़ टूट पड़े हैं। लोग तो अब घर से बेघर हो गये हैं पर यह बेचारा तो सालों पहले से विस्थापित हो गया –बहन की मेहरबानियों से। क्या इसे मालूम हो गया होगा अपनी बहन के बारे में, शायद नहीं। अगर मालूम भी हुआ होगा तो क्या करेगा– क्या जीना छोड़ देगा? बड़े निराले हैं ज़िन्दगी के रंग! इसकी बहन ने सुख भोगने के लिए किस तरह इन लोगों को जीते जी मार दिया? क्या निधि स्वयं सुखी रह पाई? जिस राज के माथे पर अपना कलंक थोप कर अपने साथ भगा लाई क्या उसने उसको सुख दिया? नहीं उसे तो ग्लैमर चाहिए था और इस समय अब प्यार के एक बोल के लिए तरस रही है। कैसी विडम्बना है? यदि विनय को पता चलेगा कि इसकी घर की सारी सच्चाई मुझे मालूम है तो मर ही जायेगा बेचारा जीते जी। और ऊपर से अब भुगतेगा त्रासदी विस्थापन की। सच कहा है किसी ने कि जीवन एक अनबूझ पहेली है।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चालीस

अपने दफ्तर में राज को कमल की एक चिठ्ठी मिली जिसमें लिखा था कि विस्थापित कश्मीरी लोग आने वाली माघ अष्टमी के दिन लड़कियों की शादियां कर रहे हैं। इन शादियों का आयोजन जम्मू, दिल्ली तथा नागपुर तीन स्थानों पर कर रहे हैं। चूंकि नागपुर में तुम्हारा अच्छा विश्वास है इसलिए यह कार्य भार तुम्हें सम्भालना होगा। इस आयोजन में कम से कम 20 जोड़े होने चाहिए जिनकी विधिवत् शादी कराई जायेगी। यह अपनी जाति के संरक्षण का प्रश्न है इसलिए मुझे आशा है कि तुम ना नहीं करोगे।

चिठ्ठी पढ़ने के बाद राज विचार करने लगा –है तो यह एक अच्छा काम मगर सम्पन्न कैसे किया जाये? पहले इसके लिए बीस लड़कियां ढूंढनी होंगी। अपने शरणार्थी कैम्प में ही विवाह योग्य कुछ ज़िम्मेदार युवक हैं और शेष के लिए यहां के समाज में भी टोह लगानी होगी। यह सब सोचने के बाद उसने इस बात पर भी विचाार किया कि इतना बड़ा काम वह अकेला नहीं कर सकता, इसलिए उसने विनोद समेत कैम्प के सभी युवक सदस्यों को बुलाया और योजना तैयार की। पहले लड़कियों का चयन किया गया अर्थात् उन लड़कियों की लिस्ट बनाई गई जो विवाह के योग्य थीं और आश्चर्य यह कि लड़कियां बीस से अधिक मिलीं। अब दौर शुरू हुआ लड़कों की लिस्ट का जो उपरोक्त सूची से चार कम थे। यह शेष चार कहां से लाये जायें? इस पर बड़ी देर तक बहस हुई, परिणाम स्वरूप स्थानीय दो व्यवसाई लड़के तैयार हुए फिर भी दो की कमी पाई गई। खोज जारी रही कि इतने में अष्टमी का पुण्य अवसर आ भी गया। दिल्ली से कमल तथा दो अन्य कश्मीरी नेता आये थे। यहां की व्यवस्था देखकर बहुत प्रसन्न हुए। पर दो की कमी क्यों रहे इस पर विचार होने लगा। सहसा कमल को विचार आया कि राज को भी यदि इस महायज्ञ में सम्मिलित

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

किया जाये तो आयोजन और भी प्रभावपूर्ण रहेगा। इसलिए उसने जाकर राज की मुंह बोली माता के पास जाकर उन्हें सारी बातें समझा दीं जिसके उत्तर में मां ने कहा, "राज ही अकेला क्यों, दो की कमी है ना तो मेरे दोनों बेटों को शामिल कर दो।" इस प्रकार कमल ने उलझन को सुलझा दिया। पूरे समय पर सभी दूल्हों को तैयार किया गया और शिवालय में एक पंक्ति में बैठी दूल्हनों के पास लाया गया। तब सभी की अग्नि और पवित्र मंत्रों से सामूहिक शादी हो गई। सभी दुल्हनों को एक जोड़ा सोहाग चिह्न (डेजिहोंर) और दो सोने की चूड़ियां तथा एक चेन दी गई। दहेज के तौर पर स्थानीय लोगों ने अपनी ओर से बर्तन, कपड़े इत्यादि दे दिये।

विवाह के उपरान्त कमल ने सभी लोगों को प्रीति भोज दिया। वह बहुत प्रसन्न था यह देखकर कि राज निर्दोष था। तभी उसकी नाव किनारे लगी और निधि अपने कर्मों का फल भोग रही है।

राज की दुल्हन रतना शक्ल सूरत से कोई विशेष आकर्षक न थी, पर पढ़ी लिखी और समझदार किस्म की लड़की थी, कश्मीर के एक गरीब घराने की लड़की जिसने सदा ही तंगी देखी थी। पिता एक प्राइमरी स्कूल के अध्यापक तथा विमाता लड़ाकू किस्म की एक अनपढ़ औरत। इस कारण रतना का बचपन तथा किशोरावस्था विमाता के बच्चे पालने में स्वाहा हो गया था। स्वभाव से गंभीर तथा कर्त्तव्य के प्रति समर्पित। रतना ने राज की ज़िन्दगी में प्रवेश करते ही उसके प्रति एक वास्तविक साथी का कर्तव्य निभाना शुरू किया। इस दृष्टि से दोनों मियां–बीवी के विचार मिलते थे। पहले ही दिन पति ने अपने अतीत से रतना को अवगत कराया पर उसके चेहरे पर एक भी शिकन न आई। और जब रतना ने भी राज को अपना अतीत बताया तो राज को उसके साथ गहरी सहानुभूति हुई क्योंकि उस बेचारी का अतीत विमाता के कारागार का अन्धा सफ़र था, जहां बाहर की दुनिया का कोई लेना देना न था।

इधर योगी की दुल्हन अल्हड़ किस्म की लड़की थी जो शक्ल सूरत से भी सुन्दर थी और बनाव सिंगार का भी शौक रखती थी। कश्मीर के एक ज़मींदार घराने की लाडली लड़की पुष्पा ने कोई विशेष पढ़ाई न करके मौज मस्ती की ही ज़िन्दगी बिताई थी। उसके भाइयों व रिश्तेदारों को हमेशा यह भय रहता था न जाने कब उसको आतंकवादी उठाके ले जायेंगे

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और अन्त में इसी डर के कारण उन लोगों को सब कुछ छोड़ कर कश्मीर से पलायन करना पड़ा। लेकिन उस पर इस सब का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। इतना होने के उपरान्त भी वह अपने में मस्त है जैसे उन लोगों को कभी कुछ हुआ ही न था। पुष्पा के पति ने उसे अपनी हालत पर ध्यान देने को कहा, जिसका उत्तर उसने इस प्रकार दिया, "मरने से पहले ही मरना कहां की अक्लमंदी है? जान बचाकर आए हैं और अब अवसर मिला है आराम से जीने का, उसे तो जी लें और वैसे भी सब कुछ भगवान पर निर्भर करता है। हम इसके बारे में सोच सोचकर क्यों जीवन को व्यर्थ गंवायें?। फिर चिन्ता कैसी जो होगा देखा जायेगा!"

मां दोनों बहुओं के स्वभाव में आकाश पाताल का अन्तर अनुभव करती थी और सोचने लगी कि उसे अब दोनों को अलग करके, स्वयं हरिद्वार जाना चाहिए। पर यह सब करना इतना आसान न था। वह बहुत सोचती रही। अन्त में विचार करके वह राज के पास गई और कहा –बेटा, मैं समझती हूं कि तुम दोनों भाइयों को अब अलग हो जाना चाहिए।" यह सुनकर राज तो पहले हैरान हुआ लेकिन फिर कुछ सोचकर उसने उत्तर दिया, "ठीक है मां जो तुम चाहो। लेकिन तुम्हें मेरे साथ ही रहना होगा।" इस पर मां बोली, "चाहती तो मैं भी ऐसा ही हूं लेकिन वह ठीक न होगा, योगी बुरा मानेगा। इसलिए मुझे हरिद्वार जाना चाहिए जहां से कभी तुम्हारे पास और कभी उसके पास आया करूंगी।" राज को मां का यह फैसला ठीक लगा सो वह बोला, "अब बताओ मुझे क्या करना होगा?"

थोड़ा सोच कर मां बोली, "पहले तुम अपनी पत्नी को लेकर घूमने जाओ उसके बाद वह भी जायेगा। इधर मैं उसके लिए कमरा ढूंढूगी और आती बार दोनों अपना–अपना घर सम्भालो।"

राज ने कहा– "जाने से पहले तुम हम सबको अपने पास बुलाओ और कह दो ताकि अलग होते वक्त किसी को बुरा न लगे।"

"यह भी ठीक है।" इतना कहकर मां चली गई और राज सोचने लगा–– योगी की बीवी शोख–चंचल लड़की है और इस तरह की लड़कियां त्याग–व्याग नहीं जानतीं–मानती। ठीक ही है, यदि अलग रहें तो बच्चे होंगे तो स्वयं ही समझदार बन जाएगी।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इक्तालीस

माँ ने सोच लिया कि वह आज योगी को अपने यहां बुलायेगी और आगे की बात समझायेगी। इसीलिए वह सोने से पहले योगी के कमरे की ओर चली। योगी को पुकारने ही वाली थी कि उसकी बीवी की आवाज़ कान में आई, ''मुझे समझ नहीं आता कि तुम कब तक श्रवण कुमार बने रहोगे... देखो अपनी भी तो ज़िन्दगी है। हमें अपने सुख के लिए भी तो सोचना है, पर नहीं तुम्हें तो निवाला भी निगलना है तो भैय्या से पूछे बिना निगल नहीं सकते। यह कैसी गुलामी है, कभी मां है और कभी भैय्या–भाभी। तंग आ गई मैं तो।'' मां जैसे सकते में आ गई अपनी बहु के चुभते हुए शब्द सुनकर। फिर जैसे तैसे मां ने ऊंची आवाज़ में खांसना शुरू किया, ताकि योगी और पुष्पा सुन सकें। थोड़ी देर में योगी बाहर आ गया और मां को देखकर पानी–पानी हुआ, और धीमे से बोला, ''मां यहां कैसे? क्या नींद नहीं आई?''

"नहीं बेटा तुमसे कुछ ज़रूरी बात करनी थी इसीलिए इधर आई। क्या तुम्हारे पास पांच या दस मिनट होंगे मेरी बात सुनने के लिए?"

''ठीक है चलिए आप अपने कमरे में, मैं भी वहीं आता हूं।''

''अच्छा'' कहकर मां अपने कमरे की ओर चल पड़ी। योगी वापस कमरे में आया और पत्नी से बोला,'' न जाने मां क्या कहना चाहती है इस वक्त? कहीं उसने तुम्हारी बकवास सुन न ली हो।''

''अच्छा। मेरी बातें बकवास हो गईं और तुम्हारी मां का इस समय बुलाना महत्त्वपूर्ण। वाह! बड़ी देवी है न तुम्हारी मां। उसे इस वक्त हमारी बातें सुनने का क्या अधिकार है?''

''अच्छा–अच्छा। अब अपनी बकबक बन्द करो और सो जाओ मैं मां से मिलने जा रहा हूं।''

''जाओ, जल्दी जाओ, मम्मी के आज्ञाकारी बेटे जो हो। जाकर उसकी उंगली पकड़ लो। जाओ।''

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

योगी उसकी किसी बात की परवाह न करके मां के कमरे की ओर चल दिया। इससे उसकी बीवी को काफी गुस्सा आया और वह भी दबे पांव वहीं पहुंच गई। कमरे में आते ही मां ने कहा– ''आव बेटा, इधर बैठो मेरे पास।''

''सो तो ठीक है मां। लेकिन तुम्हें आधी रात को ही क्या ज़रूरत पड़ गई। क्या सुबह न बुला सकती थी?''

''क्यों बेटा क्या मुझे तुम्हें इस वक्त बुलाना नहीं चाहिए था? तुम्हें इस समय बुलाने की खास वजह है। यह बात राज के सामने मैं तुमसे नहीं कह सकती थी, इसीलिए।''

''अच्छा। जल्दी–जल्दी कह डालो क्या कहना है?''

''ठीक है। तुम्हें मालूम है कि राज के हम दोनों पर बड़े एहसान हैं जिनको हम दूसरा जन्म लेकर भी चुका नहीं सकते। मानते हो ना इस बात को?''

''बिल्कुल। अब जो कहना है कह डालो।''

''मैं सोचती हूं कि अब तो तू घर वाला बन गया है। इसलिए तुम्हें अब और एहसान लेने की कोई आवश्यकता नहीं। अब हमें राज को मुक्त करना चाहिए। क्या मैं ठीक सोच रही हूं?''

थोड़ी देर सोचने के बाद योगी बोला– ''हां मां यह तो ठीक कह रही हो तुम। पर राज से यह बात कहे कौन?''

''तुम अपने लिए एक कमरा और रसोई ढूंढो तो मैं कह दूंगी तुम दोनों को बुलाकर। वह मेरा कहना टालता नहीं और तुम भी जैसे रहना–सहना चाहोगे अपनी मर्ज़ी से रह लोगे। क्यों?''

यह बात सुनते ही योगी को शक हो गया कि शायद मां ने पुष्पा की बातें सुनी हैं। इसीलिए ऐसा फैसला लिया उसने। पर पूछे कैसे? वह सोच में पड़ गया। यह देखकर मां ही बोली, ''जब तक लड़का किसी काबिल होता है, कुछ कमाने धमाने लगता है तब तक उसे सम्भालना मां–बाप का फर्ज़ होता है। उसके बाद जब उसकी पत्नी उसके जीवन में आती है तो मां–बाप का यह फर्ज़ पूरा हो जाता है। क्योंकि बेटे को सम्भालने वाली आई होती है। यही सोच कर मेरे मन में तुम्हारे राज से अलग होने की बात आई और मैं समझती हूं यही उचित समय है जिससे तुम दोनों भाइयों में

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आपसी मेल–मिलाप भी रहेगा और प्यार भी। तो बोलो क्या कहते हो?"

"ठीक है मां। जैसा तुम उचित समझो।"

"अब रहा मेरा सवाल, सो बैटा मेरी उम्र हो गई है, इसलिए मैं हरिद्वार जा कर भगवत् भजन करूंगी। जब मन करे तुम्हारे पास आया करूंगी और इच्छा हो तो राज के पास जाया करूंगी।"

"यह तो अच्छा फैसला नहीं हुआ। तुम हमारे साथ क्यों नहीं रहोगी?"

"वह इसलिए कि इससे राज दुःखी होगा। उसके साथ रहती हूं तो तुम्हें बुरा लगेगा। इसलिए बेहतर यही है कि मैं तुम दोनों में समान रूप से बंट जाऊं।"

"तेरी मर्ज़ी मां। मैं क्या कह सकता हूं।"

"तो कल नाश्ते पर मैं यह फैसला तुम दोनों और तुम्हारी बीवियों के सामने दोहराऊंगी। अपनी तैयारी करना, समझे! अब जाओ सो जाओ।"

योगी ने आराम से मां के कमरे का दरवाज़ा बन्द किया और सामने पत्नी को देखकर उसे बड़ा गुस्सा आया। लेकिन पुष्पा सब सुन चुकी थी इसलिए बड़ी प्रसन्न थी। उसने पति के गुस्से को कोई महत्त्व नहीं दिया। योगी आकर बिस्तर में दुबक गया। पुष्पा उसको तरह–तरह से तंग करने लगी। उकता कर योगी बोला, "अब तो तुम्हारे मन की मुराद पूरी हो गई। अब तुम तो खुश हो। भले ही मेरी वर्षों की तपस्या खाक में मिल गई हो, तुम्हें क्या?"

दूसरे दिन सुबह चाय के समय सभी लोग इकट्ठे थे तो मां ने सबको सामने बिठा कर कहा– "बच्चों अब तुम दोनों की अपनी–अपनी ज़िम्मेदारी सम्भालने का समय आ गया, इसलिए मैं चाहती हूं तुम दोनों अलग होकर अपनी–अपनी गृहस्थी सम्भाल लो। उसी तरह प्यार भी रहेगा और एक दूसरे के प्रति आदर भी।

"क्यों मां, इस तरह हममें प्यार नहीं है क्या?" राज झट से बोला।

"नहीं बेटे। मैंने ऐसा नहीं कहा। दोनों अपनी तरह से, आराम से जी लोगे बक़–बक़ और झिक–झिक़ के बगैर और क्या?"

एक ठंठी सी सांस भर कर राज बोला, "ठीक है मां। जैसा तुम कहोगी वैसा ही करेंगे, लेकिन तुम मेरे साथ ही रहोगी।"

"नहीं बेटा, इस तरह काम नहीं चलेगा। मैं जाऊंगी हरिद्वार और तुम

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लोग अपना–अपना घर चलाओगे।''

''तुम हमारे साथ क्यों नहीं रहोगी?''

''मेरी उमर अब घर सम्भालने की नहीं है बेटा। अब तक ज़रूरी था। अब घर सम्भालने वालियां आ गईं। अब मुझे छुट्टी चाहिए।''

''छुट्टी क्यों? अब तो तुम्हारे सेवा लेने के दिन आये हैं। हम तुम्हारी सेवा करेंगे मां।''

''बेटा मेरी सेवा यही है कि मुझे हरि का नाम लेने दो और परलोक सुधारने दो अब। और यह यहां नहीं हरिद्वार में ही संभव होगा''

''तो यह तुम्हारा आखिरी फैसला है?''

''हां बेटा। मैं अब कोई मुहूर्त देखकर हरिद्वार जाऊंगी।''

राज ने थोड़ी देर समस्या पर विचार किया तब धीमे से बोला, ''ठीक है मां। मैं तुम्हारे वहां रहने का इंतज़ाम करता हूं।''कहकर राज उठके चला गया। राज की पत्नी रसोई में खाना बनाने चली। योगी और उसकी पत्नी वहीं बैठे रहे। योगी की पत्नी मन ही मन प्रसन्न हुई, इस बात से कि मां की व्यवस्था भी राज के सिर पर आ गई और वह और उसका पति मुक्त हुए। फिर भी उसके अन्दर एक और विचार कुलबुलाने लगा कि अगर राज और उसकी पत्नी कहीं और जाते तो उसे बना– बनाया घर मिलता। पुष्पा ने बात उछाल ही दी, ''मांजी, यदि राज भैय्या कहीं और कमरा ढूंढते, तो अच्छा रहता।''

उसकी इस बात से मां को उस पर और उसके नीच स्वार्थ पर गुस्सा आया पर गुस्से पर काबू पाकर वह शान्त स्वर में बोली, ''एक तो तुम्हारा काम एक कमरे से चल जायेगा दूसरे जब रत्ना बीच में नहीं बोली तो तुम्हें भी नहीं बोलना चाहिए। यह दोनों समझदार हैं, सही फैसला कर लेंगे। तुम्हें चिंता करने की आवश्यकता नहीं।''

मां की बात सुनकर योगी बोला, ''मा मेरी नज़र में मेरे दफ्तर के पास एक कमरा है, मैं वहीं ट्राई करता हूं।''

''पानी आदि का इन्तज़ाम है क्या वहां?''

''हां मां। हर तरह की व्यवस्था है, सबसे बड़ी सुविधा बाज़ार भी सामने है, किसी चीज़ के लिए दूर न जाना पड़ेगा।''

''तब ठीक है।''

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"मैं अभी जाता हूं" योगी जाने को उठा कि मां ने आवाज़ दी "बेटा पुष्पा को भी साथ ले जाओ यह देख परख लेगी क्योंकि रहना तो इसी ने है। जाओ बेटी देख आओ।"

उन दोनों के चले जाने के बाद मां रत्ना से बोली, "क्यों बेटी तुमने कुछ न कहा। क्या तुम्हें मेरा फैसला पसन्द है?"

इस पर रत्ना मां के सामने आई और हंसते हुए बोली, "मुझे क्या बोलना था मांजी। आपने जो फैसला किया हमारे भले के लिए ही किया होगा।"

"मुझे मालूम है तुम कभी कुछ नहीं कहोगी। अच्छा एक कप कहवा बना दो सिर भारी सा है।"

"अच्छा मांजी।"

मां सोचने लगी –कितनी सुलझी हुई है, काश पुष्पा भी ऐसी ही होती। तब शायद मैं यह फैसला भी नहीं करती। खैर! अब इस फैसले से मैं खुश हूं। कम से कम यह दोनों पुष्पा की चालाकियों के शिकार तो न होंगे। न जाने लालच इंसान को इतना नीच क्यों बना देता है। बचपन में ससुराल से सताई गई हूं और उसके बाद अपनी ही भाभी व भाई से। –चलो उनका भी भला हो यदि जीवित हों तो! मैं रात को ही निकल भागी नहीं होती तो उन्होंने योगी को समाप्त करने में कोई कसर उठा न रखी थी। –अब किस्मत देखो एक देवता जैसा बेटा मिला पर मैंने बेटे का घर बसाने के लालच में अपने ही सुखों पर कुल्हाड़ी मारी। काश पुष्पा भी रत्ना की जैसी होती। बहुत बड़ी गलती की मैंने जो यह बहू लाई। लेकिन यह तो किस्मत का खेल है। मुझे मेरे लालच की सज़ा मिल गई। अब चाहकर भी यहां दुबारा आना भाग्य में न होगा क्योंकि मैं योगी के घर कभी भी जाना नहीं चाहूंगी और मुझे जाना भी नहीं चाहिए। पुष्पा के मन में बड़ों के प्रति प्रेम या श्रद्धा–आस्था का कोई भाव नहीं। रत्ना तो प्यार का सागर है इसके पास आना चाहूं भी तो पुष्पा के अपमान का डर है।

राज वापस आकर बड़ी देर तक देखता रहा मां को और उसके चेहरे पर विचारों के उतार–चढ़ाव को। लेकिन वह अपनी सोच में इस कदर खोई हुई थी कि उसको राज के आने का पता ही नहीं चला। तब राज थोड़ा सा खांस दिया और मां की तन्द्रा टूटी – "अरे, कब आये बेटे?"

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

''अभी मां। पर तुम तो अपने ही विचारों में खोई थी।''

''क्या इन्तज़ाम हो गया?''

''हां मां। टेलीफोन पर ही सब हुआ। कमरा भी बुक हुआ बिल्कुल गंगा घाट के सामने है, बस अब जाकर डेरा जमाने की बात है।''

''बहुत अच्छे अब इस महीने की 20 तारीख को अमावस्या है, सो व्रत वहीं जाकर तोड़ूंगी।''

''इतनी जल्दी मां?''

"हां। शायद कल परसों तक योगी को भी कमरा मिल जायेगा। मैंने सोचा था न जाने कितना वक्त लगेगा, इसीलिए तुम्हें घूमने की सलाह दी थी।''

''जब तुम लोग ही चले गये तो घूमने में क्या मज़ा आयेगा और फिर रत्ना भी घूमने के हक में नहीं।

''चलो जो तुम लोग अच्छा समझो।''

''अच्छा योगी कहां गया है?''

''वे दोनों मकान देखने गये हैं।''

इतने में रत्ना ने सामने कहवे की चाय धर दी। वे दोनों कहवा पीने लगे। इतने में योगी और पुष्पा भी आये। आकर मकान मिलने की सूचना दी। पर पुष्पा का मुंह उतरा हुआ था। कारण पूछने पर उसने बताया, ''यह दो तीन दिनों में ही जाने का कह रहे हैं। कमरा तो बहुत बड़ा है पर सामान मेरे पास कुछ नहीं, क्या ले जाऊंगी वहां?''

इस पर राज ने कहा, ''जो जो चीज़ तुम्हें चाहिए –उठाकर ले जाओ।''

मां ने बीच में ही टोका, बोली, ''नहीं। जो चीज़ तुम्हारी है –ले जाओ और जो ज़रूरत होगी बाज़ार से खरीद लो, समझे।''

मां का स्वर गंभीर था जिससे राज और योगी दोनों समझ गये कि मां को पुष्पा की बात अच्छी नहीं लगी। फिर भी राज बोला, ''मां तुम भी अजीब हो। यहां की चीज़ कब से मेरी तुम्हारी हो गई। ले जाने दो ना यह बच्ची है अभी, कैसे जमायेगी। यह भी तो सोचना है हमें। नहीं पुष्पा जो तुम्हारी इच्छा हो ले जाओ।''

मां ने फिर ज़रा सख्त आवाज़ में कहा – "यह सब कर सकती है

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

समझदार है और फिर किसी का एहसान लेना कहां की अक्लमंदी है? मैं खुद दूंगी जो इसने लेना है। एक तो वह यह सब कुछ ले जायेगी जो अपने साथ लाई है। दूसरे पति की वह चीज़ें जो उसकी हैं। उसके अलावा एक भी चीज़ नहीं। समझे।''

मां की इस गरज ने सब के मुंह बन्द कर दिये। लेकिन पुष्पा को यह बात अच्छी नहीं लगी, वह बोली, ''यह फैसला मेरे लिए ही क्यों है, रत्ना के लिए क्यों नहीं। मैं यहीं रहूंगी और वही उस कमरे में जाये।''

''ठीक है तुम यहीं रहो वह ही जायेगी लेकिन अपना सभी कुछ लेकर जायेगी। तुम्हारे पास तब भी वही चीजें होगी जो तुम्हारी हैं। अब फैसला तुम्हें करना है कि तुम जाओगी या रत्ना जायेगी।''

मां के इस जवाब ने उसकी सारी चालाकी पर पानी फेर दिया। तब न जाने क्यों वह रूआंसी आवाज़ में बोली, ''ठीक है, मैं ही जाऊंगी कम से कम तब तो लोगों को रात को मेरे कमरे के बाहर कान लगाने को न मिलेगा। मैं जानती हूं मेरे ही साथ इस तरह का व्यवहार क्यों किया जाता है? मैं पूछती हूं कि अपने पति से भी अपनी भलाई–बुराई की बात करना मना है क्या?''

राज यह पहेली नहीं समझा, वह बोला, ''कमरे की बात और इस वक्त। यह तो कोई तुक नहीं।''

इस पर योगी बोला, ''अगर आप ना ही समझें तो अच्छा होगा। मैं जानता था कि किसी दिन ज़रूर विस्फोट होगा।''

इस पर राज बोला, ''वह क्यों भाई।''

''वह इसलिए कि यह औरत हमेशा कुछ न कुछ बकती रहती है, जो मां से सहन न हुआ तो उसने यह तरकीब सोची। मैं अभी तक चुप था पर यह मालूम न था कि अपनी बकवास की आदत से यह यहां भी बाज़ न आयेगी।''

इस पर सब चुप रहे और अपने–अपने काम में लगे। योगी चुप निहारता रहा कभी मां को और कभी बीवी को और पुष्पा अपराधी भाव से पति को नीची नज़रों से देखती रही।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बयालीस

दिल्ली से चल कर विनय और शालू जम्मू पहुंचे। यहां आकर उन्होंने पुरखूं कैम्प खोजना शुरू किया। इस काम में उन्हें दो दिन लगे। यह दो दिन यह लोग शिवालय की धर्मशाला में ठहरे। पहली बार सास ने जो खाने की पोटली थमाई थी हाथ में घबराहट और बौखलाहट के आलम में बिल्कुल ही अनछुई बैग़ में पड़ी रही। मुंह सूखा हुआ, बाल बिखरे हुए, फटे हाल वे लोग जब शिवालय में पहुचें तो दोनों को नहा धोकर ताज़ा दम होने की आवश्यकता अनुभव हुई। ज्यूं ही शालू ने तोलिया आदि के लिए वह बैग खोला त्यों ही पोटली से बदबू का भभका आया। सारा बैग उल्टा दिया उसमें पड़े कपड़े धूप में डाल दिये। पोटली हरिद्वार से सम्भाल कर आखिर कचरे के डिब्बे में डाली गई। उसके बाद नहा धो कर भूख का एहसास हुआ।

विनय बाहर बाज़ार में एक ढाबे से दाल रोटी का एक पैकेट बनाकर लाया और इस प्रकार दिल्ली के बाद उन लोगों ने खाना खाया।

जब दोनों सुस्ताने के लिए फर्श पर पसर गये तो शालू बोली, 'हुआ तो हमारे साथ बहुत बुरा है, लेकिन अपने हालात पर नज़र डालो तो लगेगा बहुत अच्छा हुआ।''

विनय सुनकर हैरान हो गया और उठकर बैठ गया। कौतूहल से बोला, ''सो कैसे?''

शालू निर्विकार भाव से बोली, ''हमें हमारी बदनामी का डर था, सो इस वक्त सबको जान के लाले पड़े हैं, कौन किसकी फिक्र करेगा? इस प्रकार हम भी अनचाहे जवाबों व सवालों से बच जायेंगे।''

सुनकर थोड़ी देर विनय चुप रहा। तब कुछ देर के बाद बोला, ''कुछ समय के लिए तो ठीक है। लेकिन बात दब नहीं सकती कभी न कभी तो उभरेगी ही। खैर! अब क्या किया जाये।''

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"ठीक है बात जब उभरेगी तब तक तो ज़माना बदल चुका होगा। समझे आप? वह कहते हैं ना कि वक्त सबसे बड़ा मददगार है।"

"चलो तुम्हारी बात मान्ते हैं, बताओ अब क्या करना होगा?"

"पहले तो अपनी जली हुई प्रापर्टी का क्लेम करेंगे। फिर रिलीफ के लिए दरखास्त देंगे। उसके बाद कहीं एक कमरा किराये पर लेंगे –तब धीरे–धीरे घर बनायेंगे।"

"यह तो तुमने पूरे साल का टाइमटेबल बनाके दिया। क्या तब तक मां और पिता जी को पत्र न लिखेंगे?"

"पत्र ज़रुर लिखेंगे मगर अपनी कुछ व्यवस्था होने के बाद। नहीं तो उनको भी हमारी चिन्ता लगेगी।"

"क्या पुरखू नहीं चलना तुम्हें अपने पिता जी से मिलने?"

"ज़रुर चलना है, मगर क्या उनका पता मिल गया?"

"हां।"

"कहां से?"

"इधर ही सुबह एक सज्जन आये थे और बातों–बातों में उन्होंने उनका पता दे दिया।"

"तो चलो आज ही जाते हैं।"

"ठीक है। तैयार हो जाओ।"

"मुझे क्या तैयार होना है, मैं तो तैयार ही हूं आप चलो बस।"

चाय पीने के बाद वे लोग मैटाडोर से पुरखू कैम्प पहुंच गये जहां आतंकवादियों द्वारा संत्रसित विस्थापित कश्मीरी पंडितों ने शरण ली थी। वहां उनको ढूंढने में ज़्यादा समय नहीं लगा। अपने पिता जी से मिलकर शालू बहुत रोई और विनय भी उदास हुआ। पिता जी ने बताया, "यह तो महा माया की दया है हम पर बेटी, नहीं तो हम दुबारा कभी न मिलते। जिस दिन एक गुमनाम चिट्ठी मेरे घर आई, उसी दिन मुझे वहां रहने में खतरा नज़र आने लगा। देवी मां की कृपा से तुम लोग पहले ही चले गये थे, नहीं तो आतंकवादियों ने तुम लोगों को समाप्त करने में कोई कसर बाकी न रखी थी। तुम्हारा मकान जलने की खबर सुनते ही हम सब कुछ छोड़ कर रात के अंधेरे की प्रतीक्षा करने लगे। रात होते ही हम मिलिट्री के एक ट्रक में निकल भागे। थोड़ा सा ज़रूरत का समान उठा लिया बस!

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अभी हम काज़ीगुण्ड भी न पहुंचे थे कि अपने मकान के भी जलने की ख़बर सुन ली। अब पिछले दो महीनों से इसी कैम्प में हूं। बाकी लोगों को दिल्ली भेजा है। कोई छोटा–मोटा काम मिले तो सब एक ही जगह रहेंगे। क्या तुम लोगों ने रिलीफ के लिए दरखास्त दी है? यहां के तहसीलदार को कुछ रकम देकर ही जल्दी कुछ व्यवस्था होगी नहीं तो महीनों लग सकते हैं। पुरानी कहावत है कि किसी की उल्टी दूसरे की गिज़ा होती है। इन क्रूर हालात में भी जबकि हमारे पास तन ढ़ापने तक के कपड़े नहीं हैं यह लोग रिश्वत से हाथ नहीं खींचते। तुम बैठो में तहसीलदार से मिलकर आता हूं।''

अंधेरे कमरे के एक कोने में चार छः ज़रूरत के बर्तन थे और एक कोने में एक लोहे के बक्से के ऊपर थोड़ा सा बिस्तर। शेष में एक दरी बिछी थी, जिस पर यह लोग बैठ गये थे। शालू के पिता के जाते ही मियां–बीवी कमरे पर ध्यान देने लगे। उन्हें यहां रहना ठीक नहीं लगा, शालू बोली, ''अगर पिता जी यहां रहने को कहें आप नहीं मानना।''

''ऐसा क्यों भई?''

''इसलिए कि यहां पर हम कुछ नहीं कर सकेंगे।''

''करना क्या है?''

''पढ़े लिखे तो हम हैं, क्या हमें अपने पढ़े लिखे होने से कोई लाभ नहीं उठाना चाहिए?''

''लाभ तो ज़रूर उठाना चाहिए, मगर कैसे?''

''किसी प्राइवेट फर्म में, फैक्ट्री में या फिर किसी बड़े व्यवसाई के पास रहकर चार पैसे कमा कर इज़्ज़त की ज़िन्दगी जी सकते हैं हम।''

''ऐसा काम यहां रहकर भी तो किया जा सकता है।''

''नहीं यहां सम्भव नहीं है।''

''क्यों संभव नहीं है?''

''यह काम शहर में ही हो सकता है इस गंदे घुटन भरे कैम्प में रहकर नहीं।''

''यहां रहने से किराया बच्र सकता है और फिर शहर यहां से है ही कितनी दूर? रोज़ मैटाडोर आती जाती है।''

''यहां रहकर हम कोशिश ही नहीं करेंगे और इस तरह हम प्रगति करने के बदले पिछड़ ही जायेंगे।''

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यह लोग बात कर ही रहे थे कि शालू के पिता एक वृद्ध सज्जन को अपने साथ ले आये जो पहनावे से डोगरा लगता था, पास आकर पिता जी बोले– "बच्चो इनसे मिलो यह हैं मिनाकी राम जी। अपने तहसीलदार चमनलाल जी के पिता, मैंने इनसे तुम्हारे बारे में बात की है। यह कहते हैं कि तुम दरखास्त दे दो जिसमें कश्मीर का पता भी लिख दोगे जहां से तुम भाग आये हो। यह वह दरखास्त अपने बेटे द्वारा दफ्तर तक पहुंचा कर जल्दी ही तुम्हारे लिए रिलीफ तय करवा देंगे– लेकिन उसके लिए तुम्हें इनको पांच सौ रुपये देने होंगे"। विनय हैरान हो गया कि विस्थापितों की मदद करने की बजाय उनसे रिश्वत ली जाती है। फिर ससुर के इशारे को समझ कर हामी भर दी। तय यह हुआ कि जो चमन लाल जी पहली रकम इनको दिला देंगे उसमें से ही इनके पांच सौ इन्हें दिये जायेंगे। इसके बाद विनय ने दरखास्त लिखी और मिनाकीराम जी को दी। मिनाकीराम अगले हफ्ते की तिथि देकर चले गये।

इधर शालू के पिता ने विनय से कहा– "बेटा जब तक कुछ व्यवस्था हो जाये यहीं रहो।" जिसका उत्तर विनय और शालू दोनों ने इस प्रकार दिया "इस छोटी सी जगह में आप अकेले को भी तंगी होती होगी, उस पर और हम दो, न आप आराम से रह सकेंगे और न हम। इससे अच्छा यही है कि शिवालय जम्मू में हमें एक कमरा मिला है, वहीं हमने अपना सामान भी रखा है, इसलिए वहीं जायेंगे जब तक कोई और इन्तज़ाम होगा।" तब थोड़ी देर के बाद वे दोनों वापस जम्मू शहर आये।

• • • • • • •

रात भर विश्राम करने के बाद दूसरे दिन शिवालय में कश्मीरियों की एक गोष्ठी में यह लोग कई और विस्थापितों से मिले और अपने भविष्य के विषय में विचार विमर्श किया। इस गोष्ठी में जम्मू में ही बसे एक कश्मीरी पंडित ने विनय को रघुनाथ बज़ार मार्किट में चौधरी क्लाथ हाउस के पास हिसाब किताब रखने के लिए कहा जो विनय ने सहर्ष स्वीकार किया और इस तरह हफ्ते भर में विनय को मुंशी का काम मिल गया और घर की नाव संघर्ष की धारा पर चल पड़ी।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शालू गर्भवती थी, इसकी तो उसको खुशी थी। पर यह अवस्था आई भी तो कब जब घर था न द्वार। इस बात का मलाल उसे अधिक था। विनय ने स्थिति से समझौता कर लिया था और शांत भाव से घर में नये प्राणी की प्रतीक्षा में था। कभी सोचता था उसके लिए जीवन हमेशा चुनौतियों से भरा था। शादी हुई तो अपनी ही मां ने कभी सुख से रहने नहीं दिया अपने लालच के कारण। अब वह बदली ज़रूर पर घर का आमूल परिवर्तन करके। बहन ने हालात से मजबूर होकर अपना रास्ता नापा। क्या-क्या मुसीबतें झेली हैं शालू ने। तब भी कभी शिकायत न की। अब जो नये भाग्य का उदय हो रहा है तो परेशानियों और संघर्षों ने घेर लिया है। वह जानता था कि उसकी बीवी कमज़ोर है उसे ताकती दवाइयों की ज़रूरत है। पर पैसों के अभाव में वह चुपचाप देखकर भी अनदेखा कर रहा था।

इधर सातवें महीने में ही शालू की कमज़ोरी उस पर हावी हो गई और उसे अस्पताल में भर्ती करवाना पड़ा। अब सेवा के लिए किसी की सहायता चाहिए थी जो यहां नहीं मिल सकती थी, इसलिए मजबूर होकर उसे मां को बुलाना पड़ा। कुछ दिनों बाद मां के साथ-साथ बाबू जी भी आये और दो महीने शालू की सेवा होती रही। तब कहीं जाकर अक्तूबर में शालू मां बन गई एक नन्हें से बालक को जन्म देकर।

शालू के अस्पताल से आने के दो चार दिन बाद ही मां-बाबू जी वापस हरिद्वार जाने की ज़िद करने लगे। तब शालू ने दो हफ्ते और रहने की प्रार्थना की। इस प्रकार लगभग एक महीना और रहकर वे लोग वापस हरिद्वार चले गये।

अब मियां-बीवी फिर से अकेले हो गये, पर अब रौनक थी बच्चे की। विनय दुकान पर जाता तो शालू बच्चे को लेकर बैठती। शालू खाना आदि पकाती तो विनय बच्चे को खिलाता। इसी तरह दिन बीतते चले गये।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तितालीस

आज निधि को अपनी स्थिति सामान्य लग रही थी। उसने सवेरे ही नहा धो कर तैयारी कर ली थी स्थिति का जायज़ा लिया ताकि भागने में आसानी रहे। उसे मालूम था कि भाग कर उसको इतनी सुविधा न मिलेगी, लेकिन फिर भी वह इस माहौल से दूर भागना चाहती थी। उसे अब धन दौलत से जैसे नफ़रत सी हो गई थी। अब बनाव सिंगार में भी कोई खास रूचि नहीं थी। सादी सी साड़ी और सादा सा मेकअप यही तो था अब उसके पास।

अपने सभी बैंक अकाउन्टस इत्यादि सुबह से चैक कर रही थी और साथ ही साथ टेलीफोन पर शेष जानकारी भी हासिल कर रही थी। अपनी परिचारिका को अपनी कुछ साड़ियां और ज़ेबर देकर छुट्टी कर दी। कुछ ज़ेबर और साड़ियां एक सूटकेस में भर दीं। अब जाने ही वाली थी कि भनोत साहब गाते–गाते आ गया। यह देखकर निधि को पहले तो बहुत गुस्सा आ गया लेकिन फिर यह सोचकर कि कहीं उसे उसकी योजना की भनक न लगे, उसने उसका मुस्करा कर स्वागत किया। भनोत साहब ने बाहें खोलकर उसको बाहों में भर लिया न चाहते हुए भी निधि विरोध नहीं कर सकी। भनोत बोला– "आज तो मेरी जान फिर से लचीली लग रही हो। आज चलोगी।शायद कोई आसामी मिले।" सुनकर पहले तो निधि क्रोध से ददक उठी परन्तु अपने को तुरंत सम्भालते हुए वह बोली, "आज नहीं कल चलते हैं।"

"कल क्यों आज क्यों नहीं?"

"इसलिए कि आज अभी सम्भाल लूं अपने को अच्छी तरह। तुम कल किसी को यहां ही लाओ।"

कुछ सोचकर भनोत बोला, "चलो यही सही। अच्छा चाय नहीं पिलाओगी कहां है तुम्हारी मेड?"

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

''वह यहां नहीं है। अपने घर गई है एक दिन की छुट्टी लेकर। कोई बात नहीं अब तो मैं ठीक हूं। खुद बनाऊंगी तुम्हारे लिए", कहकर वह उठी और रसोई की ओर चल दी। इधर बनोत बोतल ढूंढने लगा। पर मिली नहीं तो बोला– ''भई जाम–वाम नहीं होगा क्या?'' "डा. ने मना किया है, इसलिए मैंने सब दफ़ा कर दिया है।''

''क्यों?''

''इसलिए कि अग़र बोतल सामने रही तो अपने को रोक न सकूंगी।''

''कम से कम मेरे लिए तो रख देती मुझे तो मनाही नहीं थी।''

''तुम कब आते हो यहां, जो यह विचार आता मुझे? कल जब आओगे तो अपने लिए लेते आना।''

''चलो यह भी ठीक है।'' भनोत ने भारी मन से जवाब दिया। इतनी देर में चाय बन गई और दोनों चाय पीने लगे। तब जाते–जाते बनोत उसके गालों पर चुम्बन देकर बोला – "चलो असामी तो कल होगी। आज मेरा मनोरंजन कर लो।''

इस पर निधि बोली, "मैं वाकई अभी एक दो दिन के लिए मनोरंजन के लायक नहीं। नहीं तो आज ही तुम्हारे साथ चलने में हर्ज क्या था।"

''खैर कोई बात नहीं, असामी से पहले मुझे वसूलना चाहिए। ठीक है। आता हूं दो दिन के ब़ाद तुम तैयार रहना। अच्छा चलता हूं।

''बाइ''

उसके जाते ही निधि ने एक लम्बी सांस खींची और सोचने लगी –मैं फिर इस दलदल में फंसने वाली नहीं अब। मुझे आज की रात को ही यहां से जाना चाहिए। नहीं तो यह जानवर कल को फिर आ धमकेगा। फिर जाना मुश्किल होगा। पर जाऊं तो जाऊं कहा? –बड़ी देर तक सोचने के बाद उसने रात की ट्रेन से जयपुर जाने की सोची। वहां अपनी किस्मत आज़मायेगी। अगर कुछ बना तो वहीं रह लेगी नहीं तो आगे दूसरे शहर में कोशिश करेगी। इतना पैसा तो उसके पास था ही जितने में उसके दो तीन महीने आराम से कट जाते। इसलिए उसने रात के लिए हल्का सा खाना बनाया और अपना हल्का सा सामान पैक किया। तब अंधेरे में कोई आठ बजे के करीब उस कोठी को सदा–सदा के लिए छोड़ दिया।

रेलवे स्टेशन आकर वेटिंग रूम में डेरा डाला तब जयपुर की गाड़ी में

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कुली की मदद से बैठ गई। निश्चित समय पर गाड़ी चल पड़ी और रात के कोई ग्यारह बजे रेलवे कर्मचारी उससे टिकट मांगने लगा तो उसने झूठ कह दिया कि उसका बैग जिसमें टिकट था, खो गया है, इसलिए उसे टिकट नया दिया जाये। तब उस कर्मचारी ने उसका जयपुर का टिकट बनाया और उसे दिया।

वह अपने बर्थ पर सोई थी कि उसने सुना दो लोग आपस में बातें कर रहे थे– "देखो जो औरत ऊपर बर्थ पर सोई है उसकी शक्ल दिल्ली की मशहूर मॉडल चांदनी से मिलती है"। दूसरे ने जवाब दिया, "अरे बेवकूफ क्या वह तुम्हारे जनता क्लास में सफर करेगी? तुमने भंग ज़्यादा ही पी रखी है आज। यह तो कोई घरेलू औरत लगती है।"

"मैं सच कहता हूं। मैंने उस मॉडल को करीब से देखा है। बिल्कुल इसी के जैसी है। हां फर्क इतना ही कि उसका पहनावा माडर्न था और इसका पहनावा सादा शुद्ध भारतीय।"

"चलो अपनी सोचो अगर उसने सुन लिया तो शाहमत आयेगी समझे। अब चुप करो।"

अभी वह कुछ और भी कहते कि कोई स्टेशन आया। और वे चाय वगैरा लेने लगे। निधि को भी चाय की ज़रूरत महसूस हुई उसने उनको ही कहा– "भैय्या हमारे लिए एक कप लेना यह पैसे हैं।"

उन्होंने चाय का कप पकड़ाया और वह धीरे–धीरे पीने लगी और सोचने लगी काश वह सच में ही घरेलू होती। पैसा और फैशन किस कदर उसे एक साधारण लड़की से बाज़ारी औरत बना गया, पता ही नहीं चला। होश तब आई जब सब कुछ लुट चुका था। सोचते–सोचते उसकी बड़ी–बड़ी आंखों में आंसू आये। अब उस माहौल से भाग कर तो निकली है, लेकिन लगता है कि उसकी सुन्दरता उसे आगे बढ़ने न देगी। इसी सुन्दरता के बल पर तो वह इतराती थी कभी और अब यही सुन्दरता उसे मंज़िल से भटका देगी। तब थोड़ी देर के बाद उसने प्रण सा कर लिया कि नौकरी करेगी नौकरी न मिली तो मज़दूरी करेगी लेकिन उस माहौल में वापस किसी कीमत पर भी न जायेगी। इसके बाद उसकी आंख लग गई। न जाने कितनी देर वह सोती रही, एक सन्तुष्टी भरी नींद। जब आंख खुली तो ट्रेन जयपुर के रेलवे स्टेशन पर लग रही थी।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गाड़ी के रूकते ही उसने कुल्ली को अन्दर बुलाया और अपना सामान लाद कर किसी सस्ते होटल के लिए पूछा, "यहां नज़दीक में किसी सस्ते से होटल ले चलो।"

कुली ने जवाब दिया – "बीबी जी पास ही एक धर्मशाला है, वहां तक ले जाऊंगा मगर सत्तर रुपये देने होंगे।"

"ठीक है चलो।"

इस तरह निधि एक धर्मशाला में पहुंच गई। वहां कुछ देर के लिए कमरे की व्यवस्था करके अपना सामान लगाने लगी। इतनी देर में दूसरे कमरे से एक युवती आ गई और उसने पूछा––

"आपने कहां जाना है मैडम?"

उसने सामान लगाते हुए कहा –"जाना तो कहीं नहीं है बहन, नौकरी की तलाश में आई हूं। जब तक कहीं ठिकाना मिले, यहां रहूंगी।"

"आप की क्वालिफिकेशन क्या है?"

"मैं कश्मीर यूनिवर्सिटी की ग्रेजवेट हूं, एम.ए. कर रही थी कि वहां से भागना पड़ा।"

"आपके मां–बाप इत्यादि कहां हैं?"

"वे सब नहीं रहे, बस मैं ही हूं।"

"गोया आप भी मईग्रेन्ट हैं।"

"हां और क्या?"

"तब आप कल सुबह सनातन धर्म सभा पर जाइए। वहां ज़रूर कुछ न कुछ व्यवस्था हो जायेगी।"

निधि ने गन्तव्य का पता लिखा और दूसरे दिन तैयार होकर उधर चल दी। वहां जाकर कुछ और कश्मीरी विस्थापित लोगों से मिलकर उसे कहीं काम मिलने की उम्मीद बंध गई।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चुवालीस

दूसरे दिन बड़ी तैयारी करके भनोत निधि से मिलने आया। पर बंगले पर ताला देखकर दूसरी चाबी से ताला खोल कर अन्दर चला गया। पर अन्दर सब कुछ अस्त–व्यस्त देखकर उसे कुछ अजीब सा लगा। तब शराब की बोतल खोल कर पैग पर पैग एक दो घंटे पीता रहा। जब बड़ी देर हो गई तो उसका माथा ठनका। वह निधि के बैडरूम में गया तो उसके बिस्तर पर एक कागज़ देखा। उसने कागज़ उठा कर खोला और सकते में आ गया –यह एक पत्र था जिसमें निधि ने लिखा था –मैं तुम्हारा फ्लैट और तुम्हारा सारा सामान यहीं छोड़कर सदा–सदा के लिए जा रही हूं। मुझे ढूढंने की कोशिश न करना –निधि।

गुस्से में फुफकारता हुआ वह घर की एक–एक चीज़ पटकता रहा तब कुछ देर बाद वह सोचने लगा उस हरामज़ादी ने मुझे धोखा दिया। जब बीमार लाचार थी –यहीं मेरे खर्च पर मेरी छाती पर मूंग दलती रही। अब फिर ठीक होकर भाग गई। जोयगी कहां –गई होगी किसी आशिक के पास। मगर मैं भी उसे छोड़ने वाला नहीं। पुलिस को इतिला दूंगा कि मेरा पैसा चोरी करके वह भाग गई है। साथ में उसकी फोटो भी छपवाऊंगा होश ठिकाने आयेंगे साली के जब पकड़ी जायेगी। –ऐसा सोचकर बनोत साहब अपने घर की ओर चल दिया।

इधर कुछ दिनों बाद *नवभारत दैनिक* में निधि ने भनोत की दी हुई दलील को पढ़ा। वह सोच में पड़ गई –क्या करे और क्या न करे। उसे अपनी सूरत से घृणा होने लगी। उसने एक ब्यूटी पार्लर में जाकर ऐसा रूप बनाया जिससे निधि की सुन्दरता की दूर–दूर की भी कोई समानता नहीं थी–– बाल भूरे रंगवा दिये जिनमें कुछ सफेद बाल भी झांकने लगे थे। प्लेन ग्लास की ऐनक पहनी। मुंह थोड़ा–थोड़ा पीला और उस पर एक भद्दा सा तिल लगवा लिया। थोड़ा कूबड़ बनाकर भी चलने लगी और इस तरह

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

काम ढूंढने में उसको और भी दिक्कतें आई। अन्त में एक प्राइवेट स्कूल में वार्डन की जगह मिल ही गई। और इस तरह निधि स्कूल होस्टल में रहने लगी।

निधि अब नियम में रहने लगी–– बाहरी चक्काचौंध से एकदम दूर, शांत और स्थिर वातावरण में! धीरे–धीरे निधि स्वस्थ होने लगी तन और मन से! उसकी दिनचर्या बड़ी साधारण थी। सुबह उठकर होस्टल का प्रबंध का काम, उसके बाद अपनी नित्य क्रिया इत्यादि। उसके बाद अध्ययन तब शाम के समय होस्टल का एक और चक्कर। लोगों से वह बहुत कम मिलती–जुलती थी। होस्टल की लड़कियां अक्सर निधि के विषय में अपनी धारणा कुछ इस प्रकार रखतीं थीं –घमण्डी, तेज़ और नकचड़ी। लेकिन उसे इन बातों की परवाह नहीं थी। उसे एक ही गम और डर खाये जा रहा था कि कहीं भनोत को उसके यहां होने का पता लगा तो वह उसकी मिट्टी पलीद कर देगा। शायद इसीलिए चाहते हुए भी वह किसी से मिलती–जुलती न थी। अपने काम से काम रखने वाली वह किसी के व्यर्थ के पचड़े में नहीं पड़ती थी। स्कूल के प्रबंधक उससे बहुत प्रसन्न थे क्योंकि उनको साफ सुथरा काम चाहिए था और उसके रहते होस्टल की लड़कियां एकदम अनुशासन में थीं।

एक दिन वह होस्टल का हिसाब देख रही थी कि एक लड़की रमा उसके पास आ गई और बोली, ''मैडम मेरे मामा जी मुझे लेने आये हैं कृपया उन्हें अन्दर आने की आज्ञा दें।''

निधि ने अपनी ऐनक साफ करते हुए कहा –''तुम्हें कैसे पता लगा कि वह आये हैं– क्या तुम उनसे मिली हो कहीं।''

''नहीं मैडम। उन्होंने रेलवे स्टेशन से फोन किया था।''

''कब''

''दिन के समय''

''क्या नाम है तुम्हारे मामा जी का?

''प्रेम भनोत।''

सुनते ही निधि को करंट सा लग गया। उसे अपने स्वप्न महल ढहते से दिखाई देने लगे। लेकिन थोड़ी देर में अपने को सम्भाल कर उसने फिर पूछा –''कहां रहते हैं –क्या काम करते हैं?''

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रमा को बेतुका सा सवाल लगा। उसके मन में आया कि कह दे कि वह अपने घर में रहते हैं और अपना काम करते हैं, लेकिन डर के मारे कह न सकी। तब निधि ने दुबारा अपने सवाल दोहराये। रमा ने जवाब दिया– "दिल्ली में रहते हैं और बिज़नेस करते हैं।"

सुनते ही निधि और भी परेशान हो गई। सोच में पड़ी कि क्या करे पर नियम के अनुसार वह उसको होस्टल आने के लिए रोक भी नहीं सकती थी।

उसने थोड़ी देर सोच कर चौकीदार को बुलाया और कहा– "देखो इस लड़की के मामा जी! आये हैं उन्हें अन्दर आने दो।"

"अच्छा मैडम।"

चौकीदार चला गया और साथ में रमा भी। इधर निधि अपने काम में व्यस्त हो गई। कोई एक घण्टे के बाद वह लड़की अपने मामा के साथ मैडम से मिलने आई। निधि इतनी व्यस्त थी कि उसे उनके आने का कोई पता न चला। तब रमा ने दरवाज़े पर दस्तक देते हुए कहा– "मैडम क्या मैं अन्दर आ सकती हूं।"

निधि ने ऐनक सम्भालते हुए जवाब दिया–"हाँ। आओ। क्या बात है?"

"मैडम, मैं आज रात मामा जी के साथ जाना चाहती हूं।"

"क्यों?"

"वह इतनी दूर से मुझसे मिलने आये हैं इसलिए कहिए तो उनको आपसे मिला दूं। "मामाजी" लड़की ने कहते हुए अपने मामा को भी बुला लिया। निधि ने आवाज़ को और भी खुरदुरी और गंभीर बनाते हुए कहा– "होस्टल के नियम तो आज्ञा नहीं देते।"

इस पर मामा जी बोले, "मैडम हम जानते हैं। लेकिन आपका होस्टल मुझे भी तो यहां रहने की इजाज़त नहीं देगा ना। इसलिए गुज़ारिश करता हूं कि आज इसको मेरे साथ भेज दीजिए ताकि अपनी मामी से भी मिल ले। कल इसी वक्त वापस यहां छोड़ जाऊंगा।"

रमा ने भी मिन्नत की –"प्लीज़ मैडम।"

निधि ने धीमे से कहा –"ठीक है विज़िटर्स रजिस्टर पर हस्ताक्षर कीजियेगा" कह कर निधि उठकर अन्दर के कमरे में लंगड़ाते हुए गई।

इधर मामा जी के साथ रमा कालेज होस्टल से बाहर आ गई। बाहर

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आते ही मामा जी बोले– ''यह तुम्हारी वार्डन लंगडी है क्या?''

''नहीं तो।''

''फिर लंगड़ाती क्यों थी?''

''कभी–कभी इसे मोच आती है इसलिए, बूढ़ी भी तो है।''

''मगर जवानी में बड़ी खूबसूरत रही होगी।''

''वह कैसे?''

''इसके नयन नक्श तो यही कहते हैं। बहुत हद तक तो यह एक मशहूर मॉडल से मिलती है।''

रमा सुनते ही खिलाखिला कर हंस पड़ी। यह और मॉडल, कुछ तो लिहाज़ करिये मामा जी। यह तो सन् सत्राह का मॉडल ज़रूर कहलायेगी, ऐतिहासिक खण्डहर।''

खैर, मामा जी भी लड़की की बात से सहमत हो गये। लेकिन बड़ी देर तक उनके दिल में उथल–पुथल चलती रही निधि के लिए। हालांकि उसे भागे पूरे दो साल हो चुके थे। सोचते–सोचते एकाएक वह लड़की से पूछ बैठे– ''सुनो तुम्हारी इस मैडम का नाम क्या है?''

''संगीता आनन्द।''

''कब आई है तुम्हारे होस्टल में?''

''इसको आये कोई साल भर हुआ, क्यों?''

''कुछ नहीं यूं ही।''

इसके बाद मामा जी ने कोई और सवाल नहीं किया। बस अपने में गुम हो खामोश रहे। बड़ी देर तक बाज़ार घूमने के बाद मामा जी और रमा होटल पहुंचे।

• • • • • • •

इधर निधि भनोत से परेशान सोचती रही। एक बार उसने भनोत को कहा था कि वह मरेगी तो फिर उसकी कमाई कौन करेगा? जिसका उत्तर भनोत ने दिया था यह कहकर –''तुम्हारी तरह ही किसी और बेवकूफ चिड़िया को दाना डाला जायेगा''। कहीं रमा भी उसी की तरह जाल में तो नहीं फंसाई जा रही है। यह विचार आते ही उसने लड़की के घर का एड्रैस

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और फोन नं. मालूम किया। लड़की के घर फोन मिलाया तो रमा की मां से सम्पर्क हुआ। उसने बताया "आपकी लड़की रमा आज आपके भाई प्रेम भनोत के साथ होस्टल से बाहर रात भर के लिए गई है। मैंने सोचा कि आपको इंफार्म कर दूं। इसीलिए फोन किया था।"

वापस उत्तर आया– "मेरा कोई भाई नहीं। क्या आप बता सकती हैं कि वे कहां गये हैं?"

"कह रहे थे किसी होटल में जाकर मामी से भी मिलेगी।"

"अच्छा। धन्यवाद।"

निधि को लगा कि उसका शक सही है। इसलिए उसने होस्टल के अन्य कर्मचारियों से इस मामले में सहायता मांगी। होस्टल का क्लर्क दीवाना बोला –"मैं अभी जयपुर के सारे होटलों से सम्पर्क करता हूं। कहीं न कहीं तो पता लग ही जायेगा।" इसी तरह रात भर कोशिश करने के बाद दीवान ने पुलिस की सहायता से भनोत तथा रमा को ढूंढ निकाला और पुलिस ने उन दोनों को अपनी हिरासत में ले लिया। इतनी देर में रमा के मां–बाप भी आये और बताया कि भनोत उनका कोई सम्बंधी नहीं बल्कि एक उठाईगीर है जो लड़कियों को बहला–फुसला कर उनका कारोबार करता है।

भनोत पकड़ा तो गया लेकिन उसकी यह गत किसने बनाई? यह उसके लिए फिलहाल एक रहस्य ही रहा।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पैंतालीस

रात भर के सफर के बाद राज व रत्ना मां को लेकर हरिद्वार पहुंच गये। राज ने पहले ही फोन पर कमरे की व्यवस्था कर ली थी इसलिए वे लोग सीधे बताये पते पर ही पहुंच गये। यहां आकर मकान मालिक से चाबी लेकर कमरा खोला और दोनों मियां–बीवी कमरा साफ करने लगे। मां को इसी मकान के दूसरे किरायेदार के पास बैठने को कहा गया था।

मां बरामदे में सामान की ही एक गठरी पर बैठ गई थी। थोड़ी देर में एक औरत आ गई। वह भी कश्मीरी थी, बोली –''क्या आप भी मयग्रन्ट हो?''

मां ने सिर हिला कर हामी भरी। तब मां को अपने कमरे में ले गई। वहां पर उसने उसे अपने कश्मीरी मुहल्ले की पूरी जानकारी दी और अन्त में मां के बारे में भी जानने की इच्छा प्रकट की। मां ने संक्षिप्त में कहा, ''मैं यहां प्रभु भज़न के लिए आई हूं। हम कानपुर में रहते थे कश्मीर से जान बचाकर भाग कर। यह मेरा बेटा और बहु हैं। यह लोग मुझे यहां पर कमरा वगैरा ठीक–ठाक करके वापस जायेंगे।'' इस पर उस औरत को सन्तोष न हुआ, बोली, ''क्यों वहां इनके पास आपके लिए जगह न थी क्या? पर क्या करें आजकल ज़माना ही ऐसा आ गया है कि जिस मां ने इतना बड़ा किया उसी मां को सहन नहीं किया जाता।'' – "न....न, ऐसी बात मत कहो बहन। यह लोग वैसे नहीं है।''

''मुझे मालूम है कैसे हैं? यह आप की ममता है तभी ऐसा कहती हैं। नहीं तो क्या आप पहली मां हैं जो इस तरह बच्चे होने के बावजूद भी, यहां प्रभु शरण में आई हैं। यह आप के साथ ही नहीं बल्कि तमाम दुनिया में ऐसा ही बर्ताव चलता है। सुना आपने। मां की तो यही विडम्बना है कि वह अपने बच्चों के बारे में कभी बुरा कहना तो दूर बुरा सोचती तक नहीं है।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुझसे क्या छिपाना, मैं खुद इसी तरह के गम की सताई हुई हूं। बड़े खानदान की हूं पर इस वक्त कुछ भी नहीं। मेरे बच्चे मुझे कश्मीर में ही छोड़कर रात में भाग गये। सुबह आंख खुली तो क्या देखती हूं– सारा घर खुला पड़ा है, वे तीनों भाई अपनी–अपनी बीवियों और बच्चों समेत गायब थे। मैं बहुत घबराई, अकेली डर भी गई। तीन दिन और तीन रात के बाद मुहल्ले का ही एक मुस्लमान लड़का अशरफ शाम के वक्त मेरे पास आया। वह मेरे दूसरे लड़के का दोस्त था और बोला, 'मैंने ही आपके बेटे चमन और उसके भाइयों को यहां से जाने को कहा थां। जाते वक्त चमन ने कहा था कि आपको भी जाने को कहूं।' मेरे एतराज़ करने पर वह बोला, 'अगर वे लोग यहीं रहते तो अब तक मारे गये होते, मैं आपको भी जाने को न कहता, लेकिन इसलिए कहता हूं कि आज की रात इस मुहल्ले के सभी हिन्दू घरों में आग लगाई जायेगी। आप यहां रहेंगी तो आग में जल कर मर जायेंगी। तब मैं अपने दोस्त चमन को क्या मुंह दिखा सकूंगा? इसलिए मेरी मानो अपनी ज़रूरत की कुछ चीज़ें अपने साथ उठाकर मेरे साथ आइए– मैं आपको मिलिट्री कैम्प तक ले जाता हूं। वहां से वे लोग आपको जम्मू पहुंचायेंगे।''

"यह सुनकर मैं सकते में आ गई। कुछ समझ नहीं आई कि क्या करूं। तब बैग में अपने दो चार कपड़े और एक गड़वी पीतल की लेकर जिन कपड़ों में थी उसी तरह निकल पड़ी। मेरे बेटे का वह मुसलमान दोस्त मुझे छिपते–छिपाते कैम्प तक ले आया। खुदा अशरफ को उम्र दराज़ करे। जिन रास्तों से हम लोग चले थे, वे मेरे लिए बिल्कुल अनजान थे इसलिए कई बार मन में आया कि कहीं यह मुझे धोखा तो नहीं दे रहा है। लेकिन वह एक सच्चा मुसलमान था, उसने अपना कौल निभाया। इस तरह रातों–रात हम जम्मू पहुंचे। वहां कोई आठ महीने कैम्पों में रहकर मैंने बच्चों को बड़ा ढूंढा लेकिन वे लोग नहीं मिले। तब एक स्वयं सेवी संस्था हम पच्चास लोगों को वहां से यहां लाई। यहां आये साल भर हो गया, इस बीच एक सेंटर में सिलाई कढ़ाई का काम मिला, तब से किराये के इस कमरे में रहती हूं।''

"बहन, तुमने सच ही कहा है। आज कल बच्चे मां–बाप की चिन्ता नहीं करते बल्कि मां–बाप को बोझ समझते हैं। लेकिन इन बच्चों के लिए

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यह बात सही नहीं।''

''क्यों सही नहीं?''

''क्योंकि यह बच्चे मेरे अपने जाये नहीं हैं।''

''फिर कौन हैं यह?''

''मेरी ही तरह गर्दिश के मारे।''

''क्या तुम्हारा अपना कोई बच्चा नहीं?''

''हां। है क्यों नहीं।''

''क्या वे भी मेरे बच्चों की तरह लापता हैं?''

''नहीं। लापता तो नहीं है। पर पता होने के उपरान्त भी लापता ही हैं।''

सुनकर उस औरत ने एक ठंडी सांस ली, फिर बोली, ''भगवान की माया, इसमें गिला कैसा और शिकायत कैसी?''

यह लोग बातें कर ही रही थीं कि रत्ना आई और बोली, ''मांजी चलिए चाय तैयार है।''

''अच्छा बेटी। ''कहकर मां अपने कमरे में आई। चाय पीकर तीनों गंगा घाट पर घूमने चले गये। रत्ना ने सब्ज़ी खरीदी और वापस डेरे पर चल दी।

राज मां से बोला, ''अब आगे तुम्हारा क्या प्रोग्राम है मां?''

मां बोली, ''अभी तो शान्ति से हरिद्वार का वायु सेवन करूंगी। तब कुछ समय बाद कोई काम ढूंढूंगी।

''क्यों तुम्हें इस उमर में काम ढूंढने की क्या आवश्यकता है। मैं हर महीने खर्च के लिए पैसे भेजा करूंगा।''

''तुम्हारा कहना सही है बेटे। मगर मैं भी बैठे–बैठे तंग आ जाऊंगी अभी यह बहन, जिसके पास मैं बैठी थी, कह रही थी कि सेंटर वाले काम देते हैं सिलाई बुनाई का। वक्त काटने के लिए अगर मैंने भी थोड़ा सा काम किया तो हर्ज ही क्या है?''

''ठीक है मां जैसा तुम्हें अच्छा लगे। एड्रस मैंने डायरी में लिख छोड़ा है। मुझे बराबर चिट्ठी भेजती रहना ताकि मुझे तुम्हारे बारे में पता लगता रहे। जब ज़रूरत समझो मुझे अपने पास बुलाना या स्वयं मेरे पास आना।''

''वह तो सब ठीक है लेकिन योगी का भी ध्यान रखना। तुम खुद तो

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बुरा नहीं है पर बीवी में ज़रा बचपना है। समय पर वह भी ठीक हो जायेगी। तुमसे मेरा पता मांगे तो नहीं देना, तुम्हें मेरी कसम है।''

मां का स्वभाव तो सरल है, इतना तो वह जानता था लेकिन योगी के लिए मन में इस कद्र दुःख होगा इसका आभास उसकी बातों से ही लगा उसे। राज ने कहा –''अगर योगी को तुम्हारा पता नहीं दिया तो उसको दुःख होगा मां।''

''नहीं उसे कोई दुःख नहीं होगा।''

''क्यों ऐसा सोचती हो मां?''

''वह इस वक्त सब पुष्पा के कहे मुताबिक करेगा, क्योंकि उसमें तुम्हारी तरह सहनशक्ति नहीं। वह तुम्हारी तरह उचित अनुचित नहीं सोचता बेटे। उसे एक दिन ज़रूर मेरी याद आयेगी, वह ज़रूर मेरे पास आयेगा। लेकिन अभी नहीं।''

''फिर कब?''

''थोड़ा सा ठोकर खाने के बाद जब उसे अपनी पत्नी के अलावा भी कुछ और देखने की फुर्सत होगी।''

''तुम बहुत नाराज़ हो उससे। यह अच्छा नहीं।''

''नहीं बेटा। तुम गलत समझते हो। मैं उससे नाराज़ नहीं बल्कि उसको खुली छूट देकर ज़िन्दगी परखने का अवसर दे रही हूं, बस।

''जब उसे स्वयं ही चेतना आयेगी वह अवश्य आयेगा और यही मैं भी चाहती हूं। इसलिए तुम्हें मौन रहने को कह रही हूं।''

''चलो ठीक है जो तुम अच्छा समझो मां। बड़ी देर हो गई है रत्ना खाने पर हमारी प्रतीक्षा कर रही होगी।''

''हां हां, अब चलना चाहिए। सच! भगवान ने तुम्हें पत्नी भी तुम्हारे योग्य ही दी है।''

''सब भाग्य की बात है।''

''सचमुच।''

'मैं कल वापस कानपुर जाऊंगा और रत्ना हफ्ता भर यहीं रहेगी, जब तक तुम्हारी यहां के लोगों से जान पहचान बढ़ेगी। फिर अगले इतवार को आकर ले जाऊंगा। क्यों ठीक है ना?''

''ठीक तो है मगर क्या इसे तुम्हारा यह फैसला मंजूर होगा?''

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"अगर कहूं कि इसी ने मुझसे ऐसा करने को कहा था तो।"

"मुझे मालूम है कि साधारण सी दिखने वाली यह लड़की कितनी अच्छी है। ज़रूर इसी ने कहा होगा।"

"तो तुम क्या कहती हो?"

"अगर इसको मेरे साथ रहने की इच्छा है तो मेरे सर आंखों पर। मैं क्यों मना करने लगी। पर ध्यान रहे यह मेरी गुलाम नहीं तेरी पत्नी है। तुम्हें इसके प्रति सदा वफ़ादार रहना चाहिए, समझे?

"मुझे मालूम है। इसीलिए अगले हफ्ते आकर इसे ले भी जाऊंगा ना।"

"तब भी मैं इससे पूछ ही लेना चाहती हूं।'

"तुम्हारी इच्छा।"

डेरे पर आकर तीनों ने खाना खाया। रत्ना ने बर्तन वगैरा धो लिये तब मां के पास बैठ गई तो मां बोली, "रत्ना राज कल वापिस जा रहा है और कहता है कि तुम दो चार दिन मेरे पास रहोगी। तुम्हें हर्ज तो न होगा बेटी?"

"हर्ज कैसा? आप लोगों ने जो ठीक समझा वैसा किया, इसमें हर्ज की बात कहां से आई।"

"तो तुम्हारी इच्छा है यहां कुछ दिन रहने की?"

"हां मांजी। जब तक आप ज़रा आसपड़ोस से वाकिफ हो जायेंगी, फिर मुझे भी जाने में कोई चिन्ता न होगी। नहीं तो ध्यान इधर ही रहेगा न वहां की भलाई होगी और न यहां की।"

"चलो तुम्हारी मर्ज़ी। अब बड़ी देर हो गई है, अब सो जाना चाहिए।"

इतना कहकर मां फोल्डिंग बैड पर सो गई और वे दोनों ज़मीन पर बिस्तर बिछा के सो गये।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

छयालीस

आज तीसरे दिन भी शामरानी गंगा घाट पर वह जवान सी औरत दिखाई दी। इधर सब लोगों से शामरानी की जानकारी थी, परन्तु इसे ही वह नहीं पहचानती थी। शायद नई आई होगी चाल–ढाल से तो कश्मीरन ही लगती है पर कौन जाने यह औरत किस जाति से संबंध रखती है। उसके मन में उससे बात करने की बड़ी इच्छा हुई। पर तीन दिनों से लगातार उसे देखती आई है। वह तो अपने काम में मस्त देखी गई। आस–पास में काई दिलचस्पी नहीं। शामरानी तो उसे बोलना चाहती है पर बोले कैसे? बड़ी देर तक सोचती रही आखिर में उसने पूछ ही लिया।

"क्या आप लोग नये आये हो यहां?"

"जी हां।"

"कहां से आये हो, कश्मीर से?"

"जी हां। क्या आप भी...?"

अभी वह पूछने ही लगी थी कि शामरानी बीच में ही बोली, "हां–हां हम भी कश्मीरी हैं। हमें भी भगा दिया है मिलिटन्टों ने। आपके साथ और कोई है क्या?"

"जी हां। मेरी सासू मां हैं।"

"कहां रहते हो?"

"अगली गली के तीसरे मकान में एक कमरा किराये पर लिया है। आइए ना। इसी बहाने मांजी से मुलाकात हो जायेगी।"

"ठीक है, चलो। परदेस में कोई अपनी भाषा बोलने वाला मिल जाये तो बड़ा सहारा हो जाता है।"

"आप के साथ और कौन–कौन हैं?"

"बस मेरे पति हैं। परमात्मा रखे बच्चे भी हैं लेकिन वह जम्मू में हैं। तुम यहां सास के साथ ही रहोगी क्या?"

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"नहीं। कुछ दिनों के लिए साथ आई हूं। मैं कानपुर में रहती हूं।"

"वहां और कौन–कौन है?"

"मेरे देवर–देवरानी तथा मेरे पति हैं।"

"फिर क्या तुम्हारी सास यहां अकेली रहेगी?"

"इनकी इच्छा हुई भगवत् भजन की सो यहां आई हैं, नहीं तो यह भी हमारे साथ ही रहती वहां।"

बातों ही बातों में दोनों डेरे पर पहुंच गई। अन्दर जाकर रत्ना बोली, "यह देखिये मांजी कौन आया है?"

मां अपनी जगह से उठकर बाहर आई और शामरानी से गले मिलकर उसे अन्दर कमरे में लाई। वे दोनों बातें करने लगीं। इधर रत्ना ने गर्मागर्म चाय के दो कप लाकर सामने कपड़ा बिछाकर रख दिए। शामरानी रत्ना के सेवा भाव से बड़ी प्रभावित हुई, मन ही मन उसे भी आज पहली बार अपनी बहू की याद आई। उसे अपने में खोई देखकर मां बोली– "आप किन खयालों में खो गईं?"

"कुछ नहीं बस यूंही। आपकी बहू बड़ी सुघड़ है। यही देख रही थी – सोच रही थी कि कश्मीर में हालात न बिगड़ते तो हम भी कैसे यहां आकर मिलते।"

"सो तो है, फिर भी प्रभु की दया है जो सही–सलामत हैं।"

"आप लोग कश्मीर में कहां रहते हैं?"

"हम गांव में रहते हैं बड़गाम के पास। और आप?"

"हम श्रीनगर में दीवानबाग के हैं।"

"आप कब आये कश्मीर से?"

यह सवाल सुनकर शामरानी परेशान सी हुई। कैसे कहे उसकी बेटी ने ही आतंकित किया है और उनको बेघर करके दर–दर भटकने के लिए मजबूर किया है। अब तो आतंकवाद का सहारा लेकर वे लोग भी मुंह दिखाने के काबिल हो गये हैं। नहीं तो उनके अपने हमदर्दों ने ही तो उनको यहां लाकर पटक दिया था। वह न जाने क्या–क्या सोचती जाती कि मां ने फिर वही सवाल पूछकर शामरानी को चौंका दिया। तब वह होश में आई और बोली, "बस! सब कुछ वहीं छोड़कर रात ही रात में जान बचाकर निकल पड़े" और आंखों में आये आंसू पोंछने लगी। पर मां का

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सवाल फिर गूंजा, ''वह तो मालूम है। लेकिन आप लोग कब भागे वहां से?'' यह सुनकर वह बोली, ''जब नामी वकील टिकालाल टपलू को गोलियों से छलनी कर दिया था आतंकवादियों ने!''

''ओहो। तब तो आप हमसे चार छः महीने पहले ही निकल आये हो।''

''यहां एक कमरे के लिए तरसते हैं और वहां हवेलियां छोड़ आये हैं, वाह री किस्मत।''

''हम भी ज़मींदार थे, फलों के बाग थे, माल मवेशी सब कुछ छोड़कर आये हैं।''

''सुना है हमारे मकान भी जलाये गये हैं, वहां।''

''पता नहीं हम लोगों के धर जलाकर क्या मिलता है इन दरिन्दों को। इतनी सी भी समझ नहीं इन्हें कि अगर लोगों को मारेंगे, बस्तितयां उजाड़ेंगे तो फिर हकूमत क्या कंकर–पत्थारों और वीरानों पर करेंगे?"

''इस खून खराबे और इस आगज़नी से क्या मसले हल हुए हैं कभी?''

''मेरे विचार से यह बरबादी का आलम कश्मीरी मुसलमान की करतूत नहीं बल्कि विदेशी आतंकवादियों की लगाई आग है, जो हमारा भाईचारा बर्दाश्त नहीं कर पा रहे हैं।

यह सुनकर रत्ना भी बोली, ''वह दो नम्बर कमरे की माता जी भी यही कहती थीं कि एक मुसलमान नौजवान ने ही उनको घर से सही सलामत निकाला था और मिलिट्री कैम्प तक पहुंचाया था, उसके बाद उसी रात उनके मकान को भी जलाया गया था।''

''कबाइली हमले में भी बहुत सारे मुसलमान भाई हम लोगों के बचाव में आ गये थे। मुझे याद है बारामूला में हम लोग अपने पड़ोसी सलाम शेख के तहखाने में आठ दिन छिपे थे। इतने दिनों तक रोटी–पानी का इन्तज़ाम वह और उसके घर वाले करते रहे हमारे लिए।''

"और क्या, उस वक्त भी इसी तरह हम कश्मीरी पंडित भागे थे। सब कुछ लूट लिया था आतताइयों ने। फिर भी उनका मन नहीं भरा।"

''कहते हैं यह हकूमत करने वालों की स्वार्थों की लड़ाई है। लेकिन मैं पूछती हूं उनकी आपसी लड़ाई में हम लोगों का क्या कसूर है जो हमें बलि का बकरा बनाया जा रहा है।"

''ठीक भी है शासन चाहे जो करे, आम लोगों को क्यों सताया जाता

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

है। वे हमें क्यों मारते हैं, लूटते हैं और ....?

वह न जाने और क्या कह जाती कि रत्ना ने बीच में ही टोक दिया, "मांजी दो बज गये। अब चलें, खाना खाइए।"

"हां बेटी लाओ आंटी के लिए भी परोसो।"

"नहीं नहीं। बड़ी देर हो गई, वे परेशान होंगे, अभी उनको भी खिलाना है। अच्छा मैं चली। कभी हमारे घर भी आइए।"

"ज़रूर आऊंगी कभी।"

"कभी क्या कल क्यों नहीं।"

"कल मेरा बेटा आ रहा है, इसलिए यहीं रहना है।"

"वह किसी काम से आ रहा है क्या?"

"बहु को लेने और क्या? आप भी कल आओ ना।"

"अच्छा। अभी चलती हूं। नमस्कार।"

"नमस्कार।"

शामरानी के जाते ही मां बोली, "बड़ी दुखियारी लगती है बेचारी।"

"मांजी इस वक्त तो आतंकवाद के मारे हम सभी खस्ता हालत में हैं," रत्ना बोली।

"हां बेटी और ऐसे में कोई अपनी बोली बोलने वाला मिल जाये तो बड़ी खुशी होती है।"

"चलिए आपको एक साथी मिल गया। मुझे खुशी हुई।"

"और क्या? दूसरा साथी वह दो नम्बर की माई।"

"अरे हां मांजी। कहते हैं एक सम्मेलन होने वाला है, जिसमें सारे भारत से लोग आयेंगे। उस सम्मेलन में कश्मीरी बेघर लोगों के बारे में बात होगी। जब होगा उसमें आप अवश्य जाना। इस तरह से और भी बहुत लोगों से मेल होगा," कहकर रत्ना ने चावल दो थालियों में परोसा और दोनों सास–बहू खाने लगीं। खाना खाने के बाद मां आराम करने के लिए लेट गई और रत्ना घर के काम काज में व्यस्त हो गई।

इधर शामरानी घर पहुंच कर शाम लाल से बोली, "सुनो आज गंगा घाट पर एक औरत से बात हुई और वह बातों–बातों में मुझे अपने डेरे पर ले चली। वहां उसकी सास से बातें हुई। बड़ी सीधी–सादी सी औरत है, बड़गाम की है यहां हरिभजन के लिए आई है। मुसीबत की मारी है बेचारी!

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रात के अंधेरे में भागना पड़ा था उन्हें कश्मीर से–– माल मवेशी ज़मीन जायदाद सब छोड़कर।

"वे लोग इस तरह भाग के आये हैं और हम –मुझसे भी उसने पूछा मैंने भी कहा –इसी आतंकवाद के कारण भागना पड़ा। वह तो आतंकवाद के सहारे हमारी बदनसीबी की कहानी छिप गई। नहीं तो अपनी माातृ भाषा में बात करने के लिए तड़पती ही रहती। आज उनसे मिलकर बड़ा अच्छा लगा। अगर तुम्हें खाना न देना होता तो मैं और भी कुछ समय वहां रहती।"

श्याम लाल भी उसकी बात सुनकर खुश हुआ और बोला, "क्या वे सास–बहू ही हैं केवल?"

"नहीं उनका बेटा भी है। अरे हां कल वह आ रहा है, तुम भी आओ मेरे साथ, थोड़ा मिल बैठ कर दिल बहलायेंगे।"

रात गये तक शामरानी सोचती रही कि किस्मत ने चाहे उसे बदनामी के डर से ही घर से क्यों न भगाया हो लेकिन आतंकवाद के कारण कोई उसे उसका अतीत नहीं पूछेगा। यह औरत जो उसे आज मिली है अच्छे भाग्यवःली है। उसकी बहू उसकी सेवा करती है और बेटा भी आज्ञाकारी है –उसका भी बेटा बड़ा आज्ञाकारी है और बहू भी बड़ी शरीफ मिली थी लेकिन उसके अपने लालच ने ही उसको इस हाल पर पहुंचाया कि न वह घर की रही और न बाहर की। काश! उसके साथ वह सब न घटा होता तो वह भी इसी औरत की तरह शांत और सुखी होती। अब कल उसका बेटा आ रहा है उसकी और आज्ञाओं का पालन करने –देखना चाहिए कैसा है इसका बेटा।–

यही सोचते–सोचते शामरानी की आंख लगी। जब आंख खुली तो सवेरा हो चुका था। जल्दी–जल्दी घर का काम निपटा कर वह पति से बोली, "सुनो। चलोगे मेरे साथ?"

"कहां?"

"हे भगवान। क्या अभी से भूल गये। मैंने तुम्हें कहा था ना कि सामने के मकान में नई किरायेदारिनी आई है जो कश्मीर मईग्रन्ट है। आज उसका बेटा आ रहा है। चलो उससे मिलें।"

"चलो।"

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कहकर श्याम लाल भी पत्नी के साथ नये पड़ोसी से मिलने चला। वहां पहुंचकर उन्होंने देखा कि दोनों सास–बहु चाय पी रहीं थी। इन लोगों के आते ही रत्ना ने उठकर और चाय बनाई और उन्हें भी पीने के लिए दी। चाय पीते–पीते शामरानी बोली, ''बहन आज इन्हें भी अपने साथ लाई आपस में जान–पहचान हो जाये और परेदस में आकर अपनी भाषा बोलने वाला मिले तो ज़िन्दगी की उदासी और दुःख–दर्द कुछ घट जायेंगे कुछ बंट जायेंगे।''

इसके उत्तर में मां ने कहा– ''और क्या इसी तरह से मेल जोल बढ़ता है। आपने अच्छा किया जो भाई साहब को भी अपने साथ लाई। पड़ोसी से मेल–जोल रहे तो जीवन की कठिनाई थोड़ी कम हो जाये। सुख–दुःख के समय पड़ोसी ही काम आते हैं। रिश्तेदारों में कौन कहां है इसका अभी तो सही पता भी नहीं और फिर पता लग भी जाये तो बहुत देर हो चुकी होगी, इसलिए पड़ोसी रिश्तेदारों से भी नज़दीक होता है। बैठिये भाई साहब। आज मेरा राज आ रहा है। उसे मिलकर बड़ी खुशी होगी आपको।

तीनों बड़ी देर तक अपने उजड़े और जले आशियानों के बारे में बातें करते रहे कि इतने में राज भी पहुंच गया। मां से गले मिलकर ज्यों ही वहां से मेहमानों की ओर बढ़ा तो तीनों ही चौंक पड़े। श्याम लाल के मुंह से यकायक निकल पड़ा, ''अरे। तुम?''

''आप हैं पंडित साहब। आपसे मिल कर बड़ी खुशी हुई। आप यहीं रहते हैं क्या?''

शामरानी बोली, ''हां बेटा और कहां जाते। कश्मीर गये तो वहां से भगाये गये। फिर यहां आकर कमरा किराये पर लिया बिल्कुल तुम्हारी अम्मा के पड़ोस में।''

यह बात सुनकर राज बड़ी बुरी तरह से तिलमिलाया, मन में आया कि कह दे –तुम लोगों की बेटी की कृपा से मेरी मां तो कब की भगवान को प्यारी हो गई। लेकिन उसने बहुत जल्द अपने आपको संभालना और बोला, ''मैं आया था नौकरी ढूंढने और बहुत जल्दी मां को और रत्ना को अपने पास बुलाना पड़ा क्योंकि आप तो जानते हैं कि हम सभी कश्मीरी अब बेघर हो गये हैं। भगवान मालिक है, वही जानता है कि हम लोगों का भविष्य क्या होगा?''

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शामरानी "मां" की ओर मुंह करके बोली, "लो बहन। हम तो आपके बेटे से बहुत पहले मिल चुके हैं। यह उन दिनों की बात है जब यह नौकरी के लिए घर से निकला था। तब तो कोई आतंकवाद वगैरा नहीं था। हम लोग भी यहां हरिद्वार के लिए आये थे। मेरी जवान बेटी मर गई थी, उसका श्राद्ध आदि करने यहां आये थे।" कहकर शामरानी रोने लगी। "मां" बड़ी द्रवित हुई और उसको तसल्ली देने लगी। इधर राज भी सोचने लगा –किस्मत की मार देखो यह लोग निधि की अन्तेष्टि कर बैठे हैं जो इनकी इज़्ज़त को नीलाम कर गई। जो भगवान करता है अच्छा ही करता है। वह मुझे न दुत्कारती तो न जाने मैं भी गुमनामी के किस आलम में खो गया होता। जैसे कमल कहते हैं कि उसने शराब और बदकारी में अपने को मिटा के रख दिया है! यदि यह बात इन लोगों को पता लग गई तो यह जीते जी मर जायेंगे। चलो अच्छा ही हुआ जो यह लोग यहां मिले। इनको मां का सहारा रहेगा और मां को इनका।

राज को सोचते हुए देखकर श्यामलाल बोले, "बेटा किस सोच में पड़े हो। फिक्र मत करो, तुम्हारी मां अकेली नहीं है हम भी उसके साथ हैं। तुम बेफिक्र होकर अपनी नौकरी करो।"

"आपको देखकर तो बड़ा सहारा मिला पंडितजी! अब मैं निश्चिन्त होकर जा सकता हूं।"

इतने में रत्ना ने सबके लिए खाना परोसा और सब खाने लगे।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सैनतालीस

न्यू प्लाट जम्मू में दो विस्थापित कश्मीरी पंडितों पर रिलीफ दफ्तर में आरोप लगाया गया कि वे फर्ज़ी नामों से दो–दो रिलीफ लेते रहे हैं। पिछले एक साल से ऐसा काम चल रहा है। अब इसका भांडा फोड़ उनके ही किसी रिश्तेदार ने किया है। चूंकि कमल ''पुनुन कश्मीर'' संस्था का एक स्थाई सदस्य है इसलिए यह खबर उस तक भी पहुंच गई। अपने समुदाय को अनादर से बचाने के लिए उसने तुरंत उन दोनों भाइयों को पहले दिल्ली बुलाया और फिर उनकी व्यवस्था कानपुर में राज के हवाले सौंप दी।

राज ने उन दोनों को ही यथा शक्ति सहायता की, उसके बाद दोनों को खूब डांटा और कहा, ''हम अगर इस वक्त भी जालसाज़ी और धोखाधड़ी से बाज़ नहीं आयेंगे तो कोई भी हमारे समुदाय को डूबने से बचा नहीं सकता। पहले आप यह तो बताइए कि आप लोग कश्मीर के किस कस्बे से आये हैं? क्या आपको कोई नहीं जानता जो इस कदर नीच हरकत कर डाली। अपने थोड़े से लाभ के लिए अपनी बड़ी हानि कर ही डाली और उस हानि की भरपाई हो भी नहीं सकती। वह हानि है हमारे पंडित समुदाय की इज़्ज़त की। अब लोग हमें संदेह की नज़र से देखने लगेंगे। समझे आप?'' उसकी डांट से वे दोनों भाई बड़े शर्मिन्दा हो गये। तब उन्होंने भी राज के साथ काम करने की लालसा प्रकट की।

इस तरह राज ने उन्हें भी ''पनुन कश्मीर'' संस्था म ें सम्मिलित किया। कोई पांच–छः महीने वे लोग बड़ी लगन से संस्था में काम करते रहे तब राज को उन पर काफी विश्वास होने लगा। इसी तरह सर्दियों में एक दिन राज उन्हें भी अपने साथ हरिद्वार ले चला। वे लोग उसके साथ उसकी ''मां'' के पास पहुंचे। उन्हें वहां बड़ा अपनापन महसूस हुआ। रात भर बड़ी देर तक इधर–उधर की बातें करते रहे। सुबह नींद से जाग कर

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ज्यों ही बरामदे में पहुंचे तो दो नम्बर कमरे की ओर देखकर स्तंभित हो गये। उस कमरे में उन्होंने अपनी मां को देखा, जिसे वे भगवान के भरोसे कश्मीर में अकेली छोड़कर आये थे।

वे दोनों भाई अपनी मां के पास गये किन्तु मां ने मुंह फेर लिया और रोष में कहा "मुझे जीवित देखकर हैरान हो रहे होगे, क्यों?" बड़े भाई ने कहा – "तुम्हें कहां–कहां नहीं ढूंढा मां, लेकिन तुम मिली नहीं।"

"इतनी बेशर्मी से झूठ मत बोलो। मैं तो घर में ही थी। तुम लोग तो मुझे घर पर छोड़कर अपने बाल–बच्चे लेकर रात में ही चले गये थे।"

" उस वक्त अगर ऐसा न करते तो मां हम सब की मौत निश्चित थी। भला हो हमारे दोस्त अशरफ़ का जिसने पहले ही हमें खबर कर दी नहीं तो मां आज तुम अपने इन बेटों को ज़िंदा न देखती!"

"तो मुझे भी अपने साथ ले जाने में कोई नुकसान होता तुम्हारा? या यह सोच कर मुझे अकेला छोड़ा कि चलो इसी बहाने मां नाम के बोझ से छुटाकरा मिलेगा।"

"नहीं मां ऐसी बात नहीं है। हमने इसलिए तुम्हें अपने साथ नहीं लिया क्योंकि एक तो तुम्हें देखकर पड़ोसियों को हमारे भागने का अन्दाज़ा लग जाता, दूसरे हम न जाने कहां–कहां ठोकरें खाते–फिरते और तुम इस अवस्था में वह सब कुछ कैसे सह लेती।"

"और अकेले डर के मारे मर जाती सो ठीक था क्यों?"

इस प्रश्न पर दूसरा बेटा बोला, "मर कैसे जाती मां। मैंने अशरफ़ को तुम्हारी ज़िम्मेदारी सौंपी थी।"

"अपने जायों ने तो अपनी ज़िम्मेदारी नहीं निभाई, लेकिन हां मुसलमान बेटे अशरफ ने अपनी ज़िम्मेदारी खूब निभाई!"

"अब मां यह तो बताओ तुम यहां कैसे पहुंच गई? हमने तो सुना था कि हमारे मकानों को जलाया गया।"

"तुमने ठीक सुना था, लेकिन मुझे ज़िंदा देखकर तुम्हें निराशा हुई होगी।"

"वह क्यों?"

"वह इसलिए कि मैं मकान में रहकर जली क्यों नहीं– ज़िन्दा क्यों रही?"

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दोनों भाई चुप आंखें नीची करके देखते रहे। कुछ देर के बाद उनकी मां ने उनसे पूछा, "अब बताओ तुम्हारे बीवी –बच्चे ठीक हैं ना?"

"ठीक हैं।"

"उन्हें साथ क्यों नहीं लाया?"

"हम पार्टी के काम से आये थे। राज जी के साथ यहां तुम्हें देखकर बड़ी खुशी हुई। अब चलो हमारे साथ जम्मू, वहां तुम्हारा सारा परिवार है।"

"जो जहां है, खुश रहे। सुखी रहे। पर मैं यह जगह छोड़ना नहीं चाहती। यहीं पर प्रभु का भजन करूंगी। मुझे कोई कष्ट नहीं है। हां, मेरे घर के तुम्हारे लिए दरवाज़ा बन्द नहीं है जब जी चाहे आ सकते हो।"

"तो तुम नहीं आओगी, तुम्हारा यही फैसला है?"

"हां भई। फिलहाल तो यही है आगे की प्रभु जाने।"

राज को भी उन दोनों भाइयों और उनकी मां की वास्तविकता का पता चला। वह सोचने लगा– क्या होता है कि इंसान जो चाहता है वह नहीं होता और जो नहीं चाहता वही हो जाता है। इन्होंने मां से पिंड छुड़ाने की कोशिश की थी जिसमें यह सफल नहीं हुए। लेकिन मां की ममता के सदके वह अभी भी इन्हें प्यार दे रही है। आने को कहती है। कितना जटिल है यह इंसान भी इसको पूरी तरह समझना असम्भव है। जो इन्सान मां को बोझ समझता है, वह कर्त्तव्य अकर्त्तव्य की क्या पहचान रख सकता है। यह लोग तो अपनी लाचारी को भी कैश करने से चूके नहीं। दुनिया कहती रही कश्मीरियों की इस घड़ी सहायता हो और इन जैसे लोग ऐसी हालत में भी जालसाज़ी करने से चूकते नहीं और तरह–तरह के काले धंधे करते रहते हैं। लेकिन कुकर्म कब तक छिप सकते हैं, आखिर पकड़े ही गये, कितना अनादर हुआ होगा इन लोगों का– यह तो कहो कमल जी से देखा न गया यह सब और अपने साथ इन्हें कानपुर ले आये– लेकिन बजाये इन्हें शर्म आती यह तो अकड़ते रहे। उस दिन मैंने पूछा था तो बोले, "क्या हम ही केवल नकली राशनकार्डों के लिए ज़िम्मेवार हैं? बीसियों ऐसे लोग हैं जिन्होंने घर के एक–एक सदस्य के नाम रिलीफ कार्ड बनवाये हैं। फैमिली फोटो के लिए कइयों ने बहनों और बेटियों के साथ फोटो बनाकर फैमिली फोटो आइडन्टी दी है"। –– तौबा क्या इतना भी गिर सकता है आदमी

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बहन और बेटी– जिनको घर की इज़्ज़त समझा जाता है उन्हीं को बीवी के बदले दिखाया गया है, केवल चन्द रुपयों के लिए। लालच कितना नीचे गिरा देता है इनसान को कि उसका विवेक ही खंडित हो जाता है।

दो तीन दिन हरिद्वार मेंरह कर राज उन्हें भी अपने साथ वापिस कानपुर ले गया। इधर मां की पड़ोसन वहां बेटों के मिलने से प्रसन्न हुई थी वहां न जाने क्यों वह बिखर सी गई थी। ऐसा लगता था जैसे बेटों के मिल जाने से उसकी ज़िंदगी में भूचाल सा आ गया हो। वह अनमनी सी उदासी, अपने कमरे में सारा–सारा दिन पड़ी रहती। उसको जैसे अब इस दुनिया में कोई दिलचस्पी न थी। सब के साथ बात–चीत की औपचारिकता तो वह अब भी निभाये जा रही थी। लेकिन अन्दर ही अन्दर जैसे वह टूट चुकी थी।

मां के बार–बार कारण पूछने पर वह केवल यही बता सकी थी, "बहन जी आपको मेरे दिल के दर्द की पहचान न होगी, क्योंकि आपसे उस तरह का व्यवहार नहीं हुआ है। लेकिन मै अपने दिल का क्या करूं जो इन दोनों भाइयों की चालाकी से अच्छी तरह परिचित है। मैं खुश थी चलो जहां हैं ठीक हैं –मेरे लिए इतना ही काफी है। सच बहन जी मैंने अपनी नियति से समझौता कर लिया था। पुराने ज़ख्मों को लगभग भुला चुकी थी मैं। लेकिन अब भी न जाने विधाता कौन–सा दुःख देना चाहता है। क्यों यह लोग यहां आये, क्यों आखिर क्यों? – मैं तो नये सिरे से जीने लगी थी। अब यह फिर आयेंगे जायेंगे यहां जो मैं नहीं चाहती। मुझे इनसे नफरत है नफरत! यह तो मुझे कश्मीर के उस जलते नर्क में अकेली जलने के लिए छोड़ आये थे। कैसे भूलूं वह सब, कैसे?"

मां उसकी इस तरह की बातों से बहुत द्रवित हुई और अन्दर ही अन्दर अपने बेटे और बहू का विचार आया, सोचने लगी– मैंने भी तो योगी के लिए क्या नहीं किया लेकिन नासमझ बीवी के हाथों में पड़ कर वह भी तो अपना कर्तव्य भूल गया। आज छः महीने हो गये हैं क्या उसे एक दिन भी नहीं आना चाहिए था। और यह राज। क्या लगती हूं मैं इसकी बराबर मेरी खबर लेता रहा है। –पहले तो मैंने ही मना कर दिया था कि राज योगी को पता न दे। लेकिन अब तक तो वह अगर पूछता–पूछता भी आता तो पता लगा चुका होता। अगर मन की ही इच्छा न हो तो दूरियां और भी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बढ़ जाती हैं। राज से पूछती हूं तो वह बहाना बनाकर टाल जाता है। ज़रूर उसके साथ कुछ अनहोनी घटी होगी, तभी राज योगी की बात करता ही नहीं। खैर! अब के राज आयेगा तो ज़रूर पूछूंगी।

फिर अपने विचारों को वहीं रोक कर मां ने दो बेटों की उस दुखी मां को बातचीत में लगाकर उदासी से बाहर लाने का प्रयत्न किया। तब वह बातों–बातों में बोली– ''बहन जी सुना है शिवरात्री पर यहां कश्मीरियों का एक विशाल सम्मेलन होगा।''

''अच्छा। शिवरत्री तो अब आने ही वाली है। यह माघ महीना जा रहा है और तब आयेगा भाद्रपद बस। समझो शिवरात्री आ ही गई।''

''और सुना संघ के लोग भी आयेंगे। उनके साथ ही साथ भारत के कोने–कोने से कश्मीरी पंडित भी आयेंगे।''

''तब तो बड़ा मज़ा आयेगा कितने लोगों से मिलना होगा। आप भी आयेंगी ना।''

''क्या बात करती हैं आप भी। बहार से लोग आयेंगे तो मैं यहीं ही रहती हूं –मैं नहीं जाऊंगी क्या?''

''मैं तो उस समय नेताओं से कश्मीरी विस्थापितों के रहने के स्थान की बात करूंगी, क्यों ठीक है ना।''

''बिल्कुल ठीक। यदि रहने को अपनी थोड़ी सी ही सही जगह मिले तो किराये के कमरों में रहना छूट जाये, इसके अलावा हम जैसी प्रौढ़ महिलाओं को कुछ काम भी मांगना होगा।''

''यह आप ठीक कहती हो। बस! इन्तज़ार करो शिवरात्री का।''

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अड़तालीस

विनय को रिलीफ के रूप में 25 सौ और मुंशीगिरी से दो हज़ार रुपये मिलते थे, जिसमें कमरे का किराया और किसी तरह गुज़र–बसर होती थी। बचता कुछ न था। शालू को चिन्ता खाये जा रही थी बच्चा बड़ा हो रहा था। उसके लिए पढ़ाई इत्यादि का खर्चा कहां से आयेगा? दिन रात सोचती रहती पर हल नज़र नहीं आता था। एक दिन हिम्मत करके उसने पति से कह ही दिया इस स्थिति के बारे में जिसका उत्तर विनय ने भी लाचारी दिखाने के अलावा कुछ न दिया। इस पर शालू ने विनय से अपनी नौकरी के लिए कहा। यह बात विनय को जची नहीं, दूध का जला छाछ को भी फूंक–फूंक कर पीता है। लेकिन शालू ने इस संकट की घड़ी में पति का हाथ बंटाने का संकल्प किया था।

यह बात नहीं थी कि पति को उसके चरित्र पर सन्देह था बल्कि बात यह थी कि उसकी पढ़ाई सामान्य थी सो उस पढ़ाई पर नौकरी मिल भी गई तो क्या नौकरी होगी और फिर घर व बच्चे को सम्भालने का भी मसला था। बड़े दिनों तक दोनों पति–पत्नी में वाद–विवाद चला। अन्त में पत्नी की ही बात मानी गई, मगर थोड़े फेर–बदल के साथ। फैसला यह हुआ कि पहले चार छः महीने शालू टाइप करना सीखेगी फिर किसी प्राइवेट संस्था में टाइप का काम करेगी। इस फैसले से स्फूर्ति आ गई शलू में। उसने अपनी दिनचर्या को एकदम बदल डाला। हर काम के लिए समय निश्चित करके वह दिन में चार–छः घण्टे बचा पाती औ.र उन्हीं चार–छः घण्टों में वह टाइप सीखती और अन्य बाहर का काम करती। इसी तरह चार महीने कैसे बीते उसे पता ही नहीं चला।

आखिर एक दिन एक निजी अस्पताल में शालू को नौकरी मिल ही गई। वेतन तीन हज़ार और समय था प्रातः दस बजे से लेकर छः बजे तक। इस वक्त अब मुन्ना को डे बोर्डिंग में रखा जाने लगा। धीरे–धीरे समय

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गुज़रता गया। उसकी नौकरी से घर में थोड़ा और सुधार आया, लेकिन इधर अधिक व्यस्त रहने के कारण वे हरिद्वार न जा सके। पत्रों पर पत्र आते और वे अपनी मजबूरी व्यक्त करते। कभी एक महीने में दो एक दिन जाते रहे थे पहले लेकिन अब छः महीने से अधिक समय बीत गया वह माता–पिता से मिलने न जा सके। यद्यपि पति–पत्नी में समझौता था परन्तु फिर भी विनय के मन में हरिद्वार न जाने का अपराध बोध जन्म ले चुका था। कभी–कभी तो वह शालू से कह भी देता था कि उन्हें छुट्टी लेकर हरिद्वार जाना चाहिए, लेकिन फिर अपनी मजबूरी के आगे हथियार डाल देता। शालू अपने पति के मन की अवस्था से भली–भांति परिचित थी, लेकिन आज कल करते करते कभी भी निश्चित न कर पाती।

एक दिन हरिद्वार से पत्र आया जिसमें उनके वहां न आने की शिकायत लिखी थी और यह भी लिखा था कि कहीं यह तो नहीं समझा है उन्होंने कि बूढ़े–बूढ़ी को सहारा देना पड़ेगा, इसीलिए दूर ही रहने की कोशिश करते हैं। उनको उनकी सहायता की आवश्यकता नहीं। केवल वे लोग उनको तथा मुन्ना को एक नज़र देखना चाहते हैं क्योंकि जीवन का अब कोई भरोसा नहीं।

पत्र पढ़कर दोनों ही परेशान हो गये तब उन्होंने एक हफ्ते की छुट्टी लेकर हरिद्वार जाने का कार्यक्रम बना ही डाला। दोनों मियां बीवी की नौकरियां प्राइवेट थीं इसलिए छुट्टी लेने के लिए काफी जुगत लड़ानी पड़ी और वे हरिद्वार की ओर चल पड़े। हरिद्वार पहुंच कर माता–पिता से मिल लिये और सारे हरिद्वार के शरणार्थी कश्मीरियों में काफी परिवर्तन देखा। कारण पूछने पर पता चला कि अगले महोने भाद्रपद में शिवरात्री के उत्सव पर विस्थापित कश्मीरी पण्डितों का एक बहुत बड़ा सम्मेलन होगा जिसमें भारत के कोने–कोने से आतंकवाद से उत्पीड़ित अल्पसंख्यक कश्मीरी समुदाय के लोग आयेंगे। सो उन लोगों के स्वागत के लिए कश्मीरियों में उत्साह है। यह सुनकर वे भी बड़े उत्साहित हुए और बोले– "पता होता तो अगले महीने ही आते।"

"क्यों शिवरात्री पर नहीं आना है क्या?" शामरानी ने पूछा।

"सवाल आने का नहीं बल्कि सवाल है छुट्टी मिलने का, इसीलिए कह नहीं सकते" विनय ने जवाब दिया।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मां फिर बोली, ''क्या तुम्हारे मालिकों को यह पता नहीं कि शिवरात्री हमारा बहुत बड़ा त्यौहार होता है। साल भर का बहुत बड़ा दिन, समझे तुम।''

''क्या अपनी ही कहे जा रही हो मां, हम घर में बैठे रोटियां नहीं तोड़ रहे हैं, किसी के नौकर हैं, समझी।''

''क्या बहू भी नौकरी करती है?''

''हां मांजी घर पर बैठे–बैठे बोर होती थी इसलिए,'' शालू ने जवाब दिया।

''अच्छा तो यह बात है। कितना कमाती है री तू?''

''कोई खास नहीं बस गुज़ारा हो जाता है।''

''इस मुन्ने बेचारे पर विपदा आई ना! मैं भी कहूं यह इतना कमज़ोर क्यों है? अब समझी। इसकी मां तो मनोरंजन करने जाती है और इसे किसी पराये के पास छोड़ती है। पराये को क्या पड़ी है जो इसकी देखभाल करे?''

आज चार सालों के बाद शालू को सास ने वही पुराना रूप तथा पुराना बर्ताव दिखाया। वह न जाने क्या–क्या कल्पना लेकर आई थी, लेकिन यहां उसका मन खिन्न हो गया। मुंह से तो वह और कुछ न बोली पर मन में कई–कई बार आया कि भाग जाये यहां से। पर क्या करती सहन करती रही।

श्याम लाल की परचून की दुकान अच्छी चली थी। इसलिए हालत पहले से अच्छी थी और शामरानी के लिये भी यह विवस्थापन अच्छा साबित हो रहा था। वह बिल्कुल ही भूल गई थी अपने निर्वासन को और अपनी बेटी निधि की घटना को भी। उसमें फिर से पुरानी तरह ही गर्जने की आदत पड़ गई थी और विनय उसकी हां में हां मिलाये जा रहा था जो शालू को बहुत बुरा लगता था। उसके मन में आता कि कहदे गिरगिट की तरह रंग बदलने वाली यह औरत कभी मां या असली औरत नहीं बन सकती। उन दो–चार दिनों में शामरानी बिल्कुल बैठी रही ज़रा भी हाथ–पैर नहीं हिलाये। शालू ही सबके लिए पकाती सब को खिलाती, फिर बर्तन मांझती, घर झाड़ती बुहारती तब कहीं खुद खा लेती। शामरानी ने एक दिन भी उससे पूछने की कोशिश नहीं की कि पूछे बेटी तूने भी खाया या नहीं। केवल यही कहती रहती ''मेरा बेटा खराब हो गया –न उसको मां–बाप की

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चिन्ता है न ग़म। वह बस मस्त है बीवी के साथ।''

उसकी एक–एक बात शालू के कलेजे को छलनी कर देती पर उसने अपने होंठ सी लिये थे। केवल वापसी की प्रतीक्षा में मशीन की तरह काम किये जा रही थी। शाम लाल भी अब पहले की तरह पत्नी की हां में हां मिलाये जा रहा था। शालू को लगता जैसे उसे गुलाम बनाया गया हो। उसके वश में केवल आज्ञा पालन के अलावा और कुछ न था। पति से अलग में बात करती यहां ऐसा अक्सर मिलना असम्भव ही था क्योंकि इन लोगों के पास एक कमरा और एक रसोई थी केवल जहां यह पांचों जीव रह रहे थे।

आखिर विनय और शालू के वापसी का दिन भी आ गया। आज भी शालू ने रोज़ की तरह खाना बनाया, सब को खिलाया उसके बाद रात के सफर की तैयारी की। उसे याद आया जब पहले यहां आई थी तो उसकी सास तथा ससुर दोनों उससे माफियां मांगते थकते न थे। सास ने बड़े प्यार से खाना बनाकर उसे खिलाया था–पर अब? उसकी आंखों से दो मोटे–मोटे आंसू चू पड़े मुन्ना बैठा था उसने मां की आंखों में आंसू देखे तो तुतला कर चिल्लाया ''दादी, मां लो लही है।'' इस पर उसकी सास ने जवाब दिया, ''कोई बात नहीं रोने से आंखें साफ़ होती हैं।''

''तो तुम भी लो दो ना आंखे साफ हो जायेंगी।''

''चुप शैतान। मेरी आंखों में कोई खराबी नहीं।''

''तो क्या मां की आंखें खलाब हैं?''

''नहीं। यह नखरे करती है, रोती नहीं। अब जा रही है ना इसलिए।''

''तुम कब नखरे कलती हो बोलो?''

इतनी देर में विनय रिक्शा ले आया और वे लोग स्टेशन की ओर चले। सारा रास्ता शालू चुप इस परिवर्तन का कारण ढूंढने की कोशिश करने लगी थी। और विनय उसे देखे जा रहा था। छोटा मुन्ना कभी मां को और कभी बाप को आश्चर्य से देखे जा रहा था।

ट्रेन में मुन्ना के सो जाने के बाद विनय शालू से बोला, ''पिछले कई दिनों से तुम्हें उखड़ी सी पा रहा हूं। क्या मैं पूछ सकता हूं कि ऐसा क्यों है?''

''कोई खास बात नहीं, बस तबीयत ठीक नहीं है इसलिए।''

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"क्या बात है तुमने वहां बताया नहीं। कहीं बुखार वगैरा तो नहीं, देखूं।"

"नहीं घबराइए नहीं मैं ठीक हूं।"

"तुमने तो मुझे डरा ही दिया था। वैसे वहां भी तो बात तक करने का अवसर नहीं मिला था इसीलिए तुमसे बेखबर रहा। अब बताओ क्या बात है?"

"सोचती हूं मांजी अब के बार फिर पहले की तरह ही बिहेव कर रही थीं, ऐसा क्यों?"

"हां, मुझे भी ऐसा ही अनुभव हुआ। मुझसे कह रही थीं कि काश तू कुंवारा होता तो किसी लखपति की बेटी लाती, इतनी बिसात है मेरी।"

"इतना कुछ हुआ हमारे साथ लेकिन तब भी मांजी की लालच की भावना उनका पीछा कर ही है। ठीक है, यदि ला सकती हैं दूसरी बहू तो लाये मुझे कोई एतराज़ नहीं। लेकिन मेरे साथ यह सौतेला व्यवहार क्यों?"

"देखो तुम नाराज़ हो गई। मुझे भी उसका यह रवैया अच्छा नहीं लगा। फिर मैंने सोचा कि कुछ ही दिनों की तो बात है– कहने दो जो कहती है, फिर हम अपने स्थान पर जायेंगे कोई हमारा कुछ भी बिगाड़ नहीं सकता।"

सुनकर शांत तथा स्थिर स्वर में शालू बोली, "मुझे आप पर पूरा विश्वास है। लेकिन सोचती हूं कि उन्हें अपने जीवन के पिछले अध्याय का कोई अफ़सोस नहीं –ऐसा क्यों?"

"वह इसलिए कि पहले तो वह कश्मीर में अपने माहौल और पड़ोसियों के बीच जाने से घबराती थीं –सोचती थीं कि कहीं निधि का प्रश्न आयेगा तो क्या मुंह दिखायेंगी, लेकिन इनका भाग्य अच्छा था कि सारे कश्मीर में ही त्राहि–त्राहि मच गई। अब ऐसे प्रश्न उठाने का सवाल नहीं उठता तो फिर से अपने ताने–बाने बुनने में जुट गई। वैसे में कहूं कि आदत तो इंसान के मरने के बाद ही छूटती है। सच कहता हूं।"

"ठीक है। लेकिन मैंने अब उनका क्या बिगाड़ा था जो इस तरह मेरे साथ पेश आई?"

"मेरे विचार से तुम्हारा नौकरी करना उन्हें अच्छा नहीं लगा।"

"तो क्या आपको भी अच्छा नहीं लगता?"

"मेरी बात अलग है, मुझे तुम्हारी नौकरी से फायदा होता है। उसे

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कोई फायदा नहीं। वह समझती है कि नौकरी करने के बाद तुम उसके वश में नहीं रहोगी और वह तुम पर हुकूमत नहीं कर सकेगी, और क्या?''

''बहुत गलत सोचती हैं वह। क्या मैंने कभी उनके जुल्मों के विरोध में कुछ कहा, तो इस तरह उनका सोचना बेईमानी है।''

''मैंने अब फैसला कर लिया है।''

''क्या?''

''यही कि तुम अब उसके पास तब तक नहीं जाओगी, जब तक उन्हें अपनी भूल का एहसास न हो जाये।''

''यह कैसे हो सकता है? क्या हम अपना कर्त्तव्य भूल जायेंगे?''

''नहीं, साल छः महीनों में उन कर्त्तव्यों को मैं पूरा करूंगा। समझी तुम।''

''ताकि उन्हें कहने का मौका मिले कि बहू बुरी है क्यों?''

''समझती है तो समझा करे। मुझे तुम्हारी इज़्ज़त की भी हिफाज़त करनी है।''

''तो वह इसी तरह से होगी क्या?''

''हां, इसी तरह होगी। मेरी मां है और मैं ही उसके इस रवैये को पसन्द नहीं करता और तुम न जाने किस मिट्टी की बनी हो, तुम्हें महसूस ही नहीं होता कि हर किसी की अपनी इज़्ज़त होती है। अगर उसको तुम्हारी कुर्बानी में अपनी जीत लगती है तो लानत भेजता हूं मैं ऐसी सोच पर।''

शालू देखती रही पति को, उसकी सिद्धान्तों भरी वाणी को और मन ही मन सोचती रही कि कितना अन्तर है मां–बेटे की सोच में? इतने में अपना स्वर दृढ़ करता हुआ विनय फिर बोला, ''यदि मेरी पत्नी हो तो तुम्हें मेरी कसम है कि कभी वहां जाने की ज़िद न करना।''

''ठीक है पर आपको अपने माता–पिता को भूलना नहीं चाहिए।''

''फिलहाल तो उन्हें हमारी कृपादृष्टि की आवश्यकता नहीं। अच्छा गुज़ारा है उनका। हमारी अपनी दुनिया है। क्यों उजाड़ें उसको उनके लिए जो उसका मूल्य नहीं जानते।''

''आपकी इच्छा। अब सो जायें कल काम पर भी तो जाना है।''

''ओ हां। अच्छा गुडनाइट।''

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उन्नचास

निधि को होस्टल में आये दो वर्ष हो गये थे। इस बीच वह काफी बदल चुकी थी। आयु बढ़ने के साथा–साथ से शरीर में भी परिवर्तन आये थे। लगतार बीमार रहने के कारण चेहरे पर पहले जैसी रौनक न थी। ज़बरदस्ती बालों को सफेद बनाने के चक्कर में अब बाल खिचड़ी लगते थे, जिन्हें देखकर उसके कभी सुन्दर होने की कल्पना भी नहीं हो सकती थी। पहनावा भी एक दम सीधा–सादा था। सब मिला कर वह एक विशेष व्यक्तित्व लग रही थी, जिसकी दिनचर्या पाठ–पूजा से शुरू होकर काम–काज और स्वाध्याय पर समाप्त होती थी। चूंकि 'पनुन कश्मीर संस्था' की सहायता से उसे होस्टल की नौकरी मिली थी इसलिए वह इस संस्था में बड़ी दिलचस्पी लेती थी और स्थानीय काम–काज में संस्था का हाथ भी बटाती थी। एक दिन उसने किसी सदस्य से सुना कि अबके शिवरात्रि पर हरिद्वार में विस्थापित निर्वासित कश्मीरियों का महा सम्मेलन होगा तो उसके मन में भी इस सम्मेलन में भाग लेने की इच्छा हुई, लेकिन प्रश्न यह उठा कि उसको छुट्टी कैसे मिलेगी? बहुत सोच–विचार के बाद उसने स्कूल के प्रबंधक से बात की। प्रबंधक ने होस्टल की लड़कियों को हरिद्वार पिकनिक पर ले जाने का सुझाव दिया, जो उसको ठीक लगा। इस प्रकार दो एक कर्मचारियों के साथ निधि को लड़कियों के साथ हरिद्वार जाने की आज्ञा मिल गई।

हरिद्वार जाने के विचार से ही उसे रोमांच सा हो आया क्योंकि उसको मालूम था कि उसके मां–बाप हरिद्वार में ही थे, यह सूचना राज ने निधि को तब दी थी जब वह निधि से आखिरी बार दिल्ली की धर्मशाला में मिला था। वह मन ही मन सोचने लगी– काश मां–बाबू जी वहीं हों। शायद वे माफ कर दें उसे। लेकिन तब से भी तो कितना समय बीत चला है। क्या वे वहीं होंगे और कौन जाने वे ज़िन्दा भी होंगे या वे भी और भाई भाभी भी कश्मीर में ही मारे गये होंगे– न जाने क्या बीती होगी उन पर? –सोचते

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सोचते निधि सिहर उठी। उसकी आंखों में आंसू भर आये। बड़ी देर बेआवाज़ उसके आंसू बहते रहे, फिर साड़ी के छोर से आंसू पोंछे और अपनी तैयारियों में लग गई।

निधि हैरान थी कि हर तरह की संभावना के विषय में सोचने के उपरान्त भी न जाने उसे अनजानी खुशी सी क्यों हो रही थी। अपनी तीन चार साड़ियों को एक बैग में डाल कर उसने अपनी पोथियां इत्यादि भी डाल दीं। तब संक्षिप्त सा बिस्तर बनाकर पैक कर दिया। इस प्रकार निश्चित समय से पूरा एक दिन पहले वह तैयार हो गई। वक्त आने तक वह एक ही स्थान पर बैठी हुई छोटे बच्चे की तरह बार–बार घड़ी देखती रही और समय था कि धीरे–धीरे सरक रहा था। आखिर समय पर सब लोग आ गये और वे लोग हरिद्वार के लिए रेलगाड़ी में सवार हो गये।

वे सभी लोग अपने–अपने वार्तालाप में मस्त थे और निधि खोई हुई थी अपनी अतीत में। चित्र की तरह सारी बीती बातें उसे याद आती रहीं, जब उसे घर छोड़ना पड़ा। कितनी स्वाधीन थी वह। उसे अपने आप से घिन्न आने लगी। जवानी में की हुई भूल किस सफाई से उसने राज के सर पर मढ़ दी थी और राज भी किस तरह उसके वाक् जाल में फंस कर घर व मां को छोड़कर उसके साथ भागने को तैयार हो गया। उसे याद आया कमल का नाटकीय ढंग से मिलना और उनको सहारा देना। सोचते ही उसके चेहरे पर एक थकी सी मुस्कान फैल गई और अनायास ही मुंह से निकल पड़ा –– जिस भागने को मैं अपनी किस्मत समझती रही वही मेरी बदकिस्मती की शुरूआत थी। सत्य ही उसे तब अपनी सुन्दरता का बड़ा घमण्ड हो गया था। उस समय उसे अपने बुढ़ापे का ज़रा भी विचार न आया। बस अपनी सुन्दरता को स्थाई समझकर उस पर इतराने लगी। उसने धन और यश के पीछे अपनी ममता तक का कत्ल किया– "काश। कानी बेटी ही होती।" दो बड़े आंसू उसकी आंखों से चू पड़े। इतने में ट्रेन रूक गई। मुसाफिरों का आना जाना फिर शुरू हुआ। एक लड़की सामने आकर बोली, "मैडम, चाय लीजिए, कहते हैं इस स्टेशन पर चाय बड़ी ज़ायकेदार मिलती है।" "हुं। हुं "चाय लीजिये मैडम", उसने हाथ बढ़ा दिया और प्लास्टिक का चाय भरा गिलास ले लिया और पीने लगी अन्यमनसक सी। वह लड़की फिर बोल उठी "क्या बात है मैडम। आपने अपनी राय ही नहीं दी।"

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

''किस बात के लिए?''

''यही कि चाय आपको पसन्द आई कि नहीं?''

''चाय। हां हां। चाय अच्छी बनी है"।

''मैडम आप कुछ उदास लगती हैं। क्या बात है?''

''बात। बात कुछ भी नहीं। ज़रा नींद आ रही थी, बस।''

''नहीं मैडम। मैंने अभी आपकी आंखों से आंसू बहते देखते हैं तो नींद कहां से आई। आप कुछ छिपा रहीं हैं। नहीं कहना चाहती तो मत कहिए। लेकिन उदास मत रहिए, प्लीज़।''

''नहीं ऐसी कोई बात नहीं। थोड़ा अपना बचपन याद आया था और याद आई थी अपनी ममतामयी मां जो अब नहीं है।''

''मैडम। आइ एम सारी, मुझे आपका दिल दुखाना नहीं चाहिए था।"

''कोई बात नहीं। आइ एम आलरायट।''

''तो मैडम हम हरिद्वार में कहां रहेंगे।''

''किसी होटल में।''

"और कितने दिन स्टे करना होगा?''

"आए तो हम एक हफ्ते के लिए हैं लेकिन अगर उसे कम वक्त लगा तो और भी एक दो जगहें घूम लेंगे। ठीक।''

''ठीक है मैडम। मेरे विचार से हमें किसी धर्मशाला में ठहरना चाहिए। एक तो पैसे कम खर्च होते, दूसरे सम्मेलन का आनन्द भी खूब आता।''

''तुम्हारा कहना तो सही है। लेकिन सम्मेलन वालों ने सारी धर्मशालाएं बुक कराई हैं। इसलिए फिलहाल वहां रहना न हो सकेगा और फिर तुम लड़कियों के लिए हर तरह की व्यवस्था धर्मशाला में असम्भव है, इसलिए।''

''मैडम, जो आपने किया अच्छा ही किया होगा। हमें तो आम खाने से गर्ज़ है पेड़ गिनने का कोई लाभ नहीं।''

हरिद्वार पहुंचकर उन्होंने गंगाघाट के नज़दीक ही एक होटल में डेरा डाल दिया। यह होटल थोड़ा सस्ता था और जहां मेला लगना था उस स्थान के नज़दीक ही था। इन दिनों हरिद्वार में देश के बाकी स्थानों से धड़ाधड़ लोग चले आ रहे थे। होटलों, धर्मशालाओं तथा अन्य स्थानों पर बड़ी भीड़ देखने को मिलती थी। बड़ी चहल–पहल नज़र आती थी। होटल पहुंचकर सबसे पहला काम निधि ने नहा धोकर घाट पर घूमने का किया। वह चोर दृष्टि से चारों ओर देखे जा रही थी, शायद इस अनुमान से कि

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कहीं से उसे उसके मां–बाबू जी दिखाई दें। बड़ी देर तक घूमने के बाद उसे यकीन सा हो गया कि उसे उसके माता–पिता नहीं मिलेंगे। तब भारी मन से वापस होटल आ गई और कुछ खा–पी कर सो गई। शायद ही पिछले आठ दस सालों में ऐसी मीठी नींद कभी आई हो। बड़ी गहरी नींद सोई निधि। उसने स्वप्न में देखा कि उसकी सभी मुरादें पूरी हो गई हैं। उसको उसके मां–बाबू जी मिल गये हैं और उन्होंने उसे माफ भी कर दिया है। अभी वह अपनी रामकहानी सुनाने ही लगी थी कि एक भयानक सा आदमी बीच में आया कि डर के मारे उसका स्वप्न ही टूट गया। वह जब जागी तो सारा दिन बीत चुका था।

गंगा के किनारे घरों में जलद्वीपों का प्रतिबिम्ब बड़ा सुहाना लग रहा था। वह तख्त पर से उठी और बालकनी में आ गई। मन्दिरों से आरती के स्वर तैरते से आ रहे थे, जो उसे आज पहली बार शांति प्रदान कर रहे थे। निधि सोचने लगी –– आज कितनी शान्ति महससू कर रही हूं मैं। सारी उम्र मैं धन के पीछे भागती रही पागलों की तरह। धन पाया भी पर तन–मन गंवा के। इस धन को पाने के लिए मैंने अपना सब कुछ स्वाहा कर दिया। पर तब भी मन का स्कून न मिला। मैंने राज को अपनी बदकारियों में शामिल किया– वह सच्चा था और मैं ही मक्कार निकली। भनोत के सोने–चांदी की चमक में मैंने वह हीरा खो दिया! पता नहीं कहां होगा वह? क्या पता, है भी या वह भी आतंकवाद की चपेट में आ गया होगा। कितना सीधा–सच्चा तथा भोला था राज। उस वक्त मैंने ज़रा भी नहीं सोचा उसके बारे में कि परदेस में क्या करेगा वह, किसके सहारे जियेगा? उसको दुःख देकर मैंने भी कौन-सा सुख भोगा? काश, कहीं मिल जाता वह, मैं बेहिचक अपनी गलतियों की माफी मांग लेती। पिता जी भी तो आये थे मुझे उस नर्क से निकालने के लिए। पर मैं न समझी। घमण्ड में चूर होकर मैंने उन्हें भी धक्के देकर निकाला था। कैसे सहन किया होगा उन्होंने वह अपमान? काश, वे होते तो मैं क्षमा मांगती। मैं क्षमा के योग्य भी तो नहीं।

यह तो तय है कि भाई भाभी कश्मीर में मारे गये होंगे। उनका भी बड़ा अफसोस है मन में परन्तु वे मेरी खोज–ख़बर में नहीं आये होंगे। इसलिए इतना महसूस नहीं होता। पर मेरे कारण उनके मुंह पर भी कालिख पुत गई होगी। हाय! कितनी नीच हूं मैं?''

वह न जाने और भी क्या–क्या सोचती जाती कि एक लड़की ने

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आकर उसकी विचारों की तन्द्रा पर प्रहार किया, ''मैडम, 'पनुन कश्मीर' का सेक्रेटरी आया था।''

''क्या कह रहा था?''

''आपके बारे में पूछ रहा था।''

''तुम लोगों ने क्या कहा?''

''हमने कहा मैडम सो रही हैं, तब उसने कहा कि शाम को आकर आपसे बात करेगा।''

''अच्छा, क्या टाइम हुआ?''

''अभी कोई आठ बजे का वक्त होगा, क्यों?''

''यही कि अभी तक तो वह आया नहीं। शायद कल आये। अभी तो सम्मेलन होने में दो दिन बाकी हैं। अच्छा तुम लोग दिन में कहीं घूम भी आये या नहीं।''

''हां मैडम हम कुछ लड़कियां यहीं आस–पास घूम रही थीं। यहां कश्मीर के विस्थापित कई लोग स्थाई तौर पर रहते भी हैं। हम लोग उनसे मिल भी लिए, बड़ी दयनीय दशा है उन लोगों की।''

''यानी''

''यानी उनके पास बस गुज़ारे के लिए सामान् है और उसी में पूरे का पूरा परिवार गुज़ारा करता है। एक कमरे में आठ–दस लोग रहते हैं! कुछ गिने चुने बर्तन, थोड़ा सा राशन। बस यह समझ लीजिए कि वे गर्दिश के दिन काट रहे हैं बेचारे।

''तब भी इन स्वयंसेवी संस्थाओं ने इनके पुनर्वास के लिए बड़े प्रयत्न किये हैं।''

''सुना है सरकार भी इन्हें सहायता हेतु राशन तथा पैसे देती है।''

''तुम्हारा कहना सही है, लेकिन उसके लिए भी इन्हीं संस्थाओं ने जी तोड़ मेहनत की है, नहीं तो न जाने क्या भाग्य होते बेचारों के।''

''हां मैडम, हमने सुना है कि यहां के महासम्मेलन का आह्वान भी इन्हीं संस्थाओं द्वारा हुआ है। तभी तो देश के कोने–कोने से आतंकवाद द्वारा सताए गए कश्मीरी यहां एकत्रित हो रहे हैं।''

''तुमने ठीक कहा, यहां सब मिलेंगे तो कई समस्याओं का समाधान होगा।''

''हमारे विद्यालय को भी इनके लिए कुछ करना चाहिए मैडम्।''

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

''क्या करोगी तुम बताओ।''

''मैं....मैं... जयपुर जाकर सब से चन्दा इकट्ठा करके भेजूंगी यह मैंने ठान लिया है।''

''अच्छा विचार है। हमें ऐसा ही करना चाहिए ताकि इन बेचारों की सहायता हो जाये।''

यह लोग बात ही कर रहे थे कि होटल का कर्मचारी आया और उसने राज और कमल के आने की सूचना दी। निधि ने हाथ घड़ी पर नज़र डाली, तो आश्चर्य में भर कर बोली, ''रात के दस बज गये हैं और यह लोग इस समय आये, खैर बुलाओ उन्हें ऊपर।''

कर्मचारी के जाने के कुछ देर बाद राज और कमल के कमरे में प्रवेश किया और आते ही बोले, ''सारी मैडम। हम इतनी रात गये आये हैं। आये तो हम दिन को ही थे पर आप सोई थी। हमने शाम को आने को कहा था लेकिन काम इतना रहा कि अब तक यहां आने का समय ही नहीं मिला।''

''कोई बात नहीं। तशरीफ रखिये'' दोनों आगुन्तुकों को आवाज़ कुछ जानी पहचानी सी लगी। पर कुछ निश्चित नहीं कर पाये। इधर निधि ने उन्हें देखते ही पहचान लिया था। पर अपनी हालत को दृष्टि में रखकर ही उसने अनजान बनने की कोशिश की। वे दोनों बैठ गये। बिजली की रोशनी में दोनों ने ही उसे पहचानने की कोशिश की। पर दोनों ही अपनी–अपनी जगह वास्तविकता तक न पहुंच पाने की स्थिति में कुछ उत्तेजित से लग रहे थे। निधि की पहले जैसी शक्ल सूरत तो न थी लेकिन नयन–नक्श चाहे कितने बदलाओ बदल नहीं सकते। निधि दोनों को ही एक नज़र में पहचान गई थी और बारी–बारी से दोनों के चेहरों को पढ़ने की कोशिश में थी। कुछ देर सन्नाटा रहा तब कमल बोला, ''आप कुछ कह रही थी मैडम?''

''हां हां, कुछ नहीं। हां आप सम्मेलन के बारे में कुछ कह रहे थे।''

''हां। आं। हमने आपके लिये सम्मेलन हाल में निश्चित स्थान रखा है कृपया अपना नम्बर बताकर, समय से कुछ देर पहले आकर स्थान ग्रहण करें क्योंकि भीड़ होने पर आपकी व्यवस्था नहीं हो सकेगी।''

''बहुत अच्छा किया आपने। आपका बहुत–बहुत धन्यवाद। हम स्टॉफ मिलाकर कुल 30 सदस्य हैं।

''ठीक है आप को समय से कम से आधा घण्टा पहले पधारने का

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कष्ट करना होगा'' कमल कहकर खड़ा हो गया, उसे देखते ही राज भी खड़ा हो गया। यह देखते ही निधि जैसे सोते से जाग गई और एकदम बोल पड़ी, ''यह क्या आप जा रहे हैं। थोड़ी देर और बैठिये ना प्लीज़।''

इसका जवाब राज ने दिया, ''रात बहुत हो गई है, हमारे घर में प्रतीक्षा हो रही होगी, इसलिए बैठ नहीं सकते?'' जवाब में दोनों बोले ''जी हां। कल समय मिले तो आइयेगा। गंगा घाट पर बने पीले रंग के मकान में हम लोग रहते हैं"।

उन लोगों के जाने के बाद निधि सोच में पड़ गई शायद कमल अपना परिवार लेकर आया होगा– या फिर राज ने शादी की होगी। जहां तक उसे मालूम है राज का कोई न था एक मां के सिवा, जिसको छोड़कर वह उसके साथ घर से भाग गया था। क्या उसने कश्मीर से मां को अपने साथ लाया होगा –नहीं। यह कैसे संभव होगा। शायद उसकी मां तभी मर गई थी जिन दिनों वह उसके साथ रहता था –फिर यह परिवार यहां लाया होगा। चलो, कल जाकर देख ही लेंगे। ऐसा सोचकर निधि शेष तैयारियों में लग गई परन्तु दिल के किसी कोने में अतीत बराबर कुलबुला रहा था।

राज पहले से अच्छा लगता है। न जाने क्या करता होगा? यह कमल से कब मिला होगा। इसने मेरे बारे में क्या कहा होगा उसे? मैंने कमल से राज के बारे में कितनी पूछताछ की थी। लेकिन उस वक्त कमल को शायद कुछ मालूम न था। यदि कुछ पता होता तो ज़रूर ही बता देता मुझे। पर मैंने भी तो राज को दुबारा अपने साथ रखने में कोई खास दिलचस्पी नहीं दिखाई थी। काश वह दुबारा मिला होता तो ज़िन्दगी कुछ और होती। अब अगर मैं चाहूं भी तो कौन मुझे अपना लेगा, न मां–बाप ही और न ही राज। दौलत की मृगतृष्णा में मैंने अपना सब कुछ गंवा दिया। काश! यही लोग मुझे पहचानते– लेकिन यह अच्छा ही हुआ कि इन्होंने मुझे पहचाना नहीं। मैं कल और भी कुछ मालूम कर सकती हूं।

''मैडम रात बहुत हो गई। आप सोयेंगी नहीं क्या?'' एक लड़की ने कहा और उसके विचारों की तन्द्रा टूट गई। हड़बड़ाकर बोली निधि– "हां हां, सोना है। जाओ सो जाओ, मेरी भी बत्ती गुल कर दो।" लड़की ने स्विच ऑफ कर दिया और कमरे का दरवाज़ा बेड़ दिया।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पचास

आखिर सम्मेलन का दिन आ ही गया। सुबह सवेरे से राज, कमल व योगी व्यवस्था में व्यस्त थे, इसी बीच योगी ने राज और कमल दोनों को सुनाया, "आपको मालूम है यह जो चार नंबर में बूढ़ा और बूढ़ी रहते हैं इनका बेटा विनय जम्मू में रहता है अपनी फेमली के साथ।"

"तो क्या हुआ कई रहते हैं?"

"बात रहने की नहीं है। बात है इनके इस सम्मेलन में भाग लेने की।"

"तो फिर जल्दी–जल्दी बताओ क्या बात है?"

"हम भी तो कानपुर में रहते हैं पर सम्मेलन में अपनी माता के पास ही आये हैं और इकठ्ठे भाग लेंगे, क्यों?"

"हां यह तो तुमने ठीक कहा।"

"पर इनका बेटा उनके साथ सम्मेलन में नहीं आया है।"

"यानी"

"यानी वह और उसकी पत्नी जम्मू के कश्मीरियों के साथ आये हैं। और उन्हीं के साथ ठहरे भी हैं।"

"तुम्हें कैसे मालूम?"

"कल हमारी माता जी के साथ इनकी माता बातें कर रही थी।

"क्या बात कर रही थी?"

"यही कि उसकी बहू और बेटा दोनों आये हैं, पर उनके पास नहीं, सम्मेलन में और लोगों के साथ आये हैं।"

"उसे किसने कहा था?"

"उसने कल बहू को गंगा घाट पर और लोगों के साथ देखा था।"

"क्या उसने बहू को नहीं बुलाया।"

"बुलाया था बात भी की थी। अपने पास आने को भी कहा था लेकिन बहू नहीं मानी थी।"

"उसने क्या कहकर इंकार किया था?

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"यहीं कि इस वक्त वह पार्टी के आदेश पर पार्टी के लोगों के साथ ही रहेगी।"

"तो बेचारी ने क्या बुरा कहा था?"

"लेकिन वह तो कह रही थी कि उसका बेटा बड़ा आज्ञाकारी था, लेकिन बहू के आते ही वह भी हाथ से गया।"

यह सुनकर कमल को आघात सा लगा क्योंकि वह शामरानी और उसके घर से भली–भांति परिचित था। उसे विनय के हालात मालूम थे। वह बोला– "ठीक है यदि पार्टी ने उन लोगों को कोई काम सौंपा होगा तो हम उसमें क्या कर सकते हैं। रही बात बहू के घर आने की सो वह हम लोगों से बेहतर जानती है कि उसे क्या करना चाहिए।" फिर अचानक विषय बदल कर कमल बोला, "यार राज कल जो हम जयपुर के स्कूल की मैडम से मिले मुझे तो उसकी आवाज़ जानी पहचानी सी लगी। क्या तूमने नोट किया?"

राज भी उसी की तरह उस आवाज़ से थोड़ा विचलित सा था, बोला, "मैंने सोचा शायद तुमने पहचान लिया होगा इसीलिए मैं कुछ बोला नहीं। पर आज जब तुम भी पूछ ही रहे हो तो निश्चय ही यह सोचने का विषय है। किसकी आवाज़ हो सकती है वह?"

बड़ी देर तक सोचते रहे दोनों तब एक बोला, "हो सकता है कमल तुम्हारे ऑफिस में किसी की आवाज़ ऐसी हो।"

"नहीं रे। यह किसी मुलाज़िम की आवाज़ नही थी बल्कि किसी ऐसी देवी की आवाज़ थी जो हम दोनों के बहुत करीब हो। तुम सोचो ना शायद सुराग मिल ही जाये।"

"अगर हम आवाज़ों का पीछा करते रहे तो फिर हो गया सम्मेलन? अभी बड़े काम हैं, निपटा कर फिर उसी के पास पूछने जायेंगे। ठीक!"

"बिल्कुल ठीक! अच्छा उन लड़कियों की व्यवस्था कहां पर की है हमने?"

"पण्डाल के ठीक दाईं ओर का कार्नर और उसी साइड पर शेष महिलाओं की व्यवस्था भी होगी।"

"यह बिल्कुल ठीक हुआ। बाकी बोलने वाले अथवा अतिथि इत्यादि पण्डाल पर ही रहेंगे। उसके अलावा हम तीन और वे दो लड़के जिन्हें तुम इधर लाये हो– व्यवस्था के लिए पंक्तियों में खड़े रहेंगे।"

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

''इतना ही नहीं यहां रहने वाले शरणार्थी कश्मीरी भी हमारा सहयोग देंगे। खाने–पीने की व्यवस्था संस्था में आई महिलाएं करेंगी।''

''तो रात भर रहने की व्यवस्था भी की है या नहीं?''

''अव्वल तो लोग सम्मेलन की समाप्ति पर ही जायेंगे, यदि कुछ बच भी गये तो दो एक धर्मशालाओं में प्रबंध कर रखा है, पूरा हुआ तो ठीक नहीं तो यहां के स्थानीय लोग उनकी व्यवस्था करेंगे।''

"इस हिसाब से लगता है कि सब काम व्यवस्थित रूप से होगा। इसलिए हम लोगों को भी डेरे पर चलकर तैयार होना चाहिए।"

डेरे पर पहुंचते ही तीनों नहाये फिर नाश्ता किया तब अपना–अपना काम समझने लगे।

दोनों बहुओं के सामने आने पर योगी की मां प्रसन्नचित्त अपने पोत्तों के साथ चारपाई पर बैठी खेल रही थी। अब पुष्पा पहले जैसे तेज़ तर्रार और खुदगर्ज़ न लगती थी। उसके अपने दो बेटे उसके सही शिक्षक साबित हुए थे। रत्ना का भी एक बच्चा था लेकिन मां की तरह ही बहुत शान्त और सीधा –तीनों बच्चे दादी मां के आमने–सामने बैठे अपनी–अपनी कारगुज़ारी दिखा रहे थे और रत्ना व पुष्पा एक भरे–पूरे घर की बहुओं की तरह घर के कामकाज में लगी थीं। यह देखकर कमल को राज पर बार–बार प्यार आता और बार–बार निधि का भी विचार आता। सोचता यदि राज निधि के पास ही रहता तो उसको इस तरह का सफल जीवन नसीब न होता। यह तो राज की ही योग्यता है कि योगी का भी घर बस गया। निधि के कारण अपनी मां को खोने के बाद राज ने अपना सारा प्यार योगी की मां को दिया। और राज योगी से भी ज़्यादा अपना बेटा बन गया मां का। यह सत्य में ही महान है शरणार्थियों के विवाह कार्य में भी इसने भाग लिया और स्वयं भी शादी की। पत्नी भी सुन्दर न सही पर गुणी मिली। यदि रत्ना की जगह निधि होती तो क्या राज इतना सफल हो सकता था – नहीं। निधि को वैभव और धन की लिप्सा थी पर रत्ना तो त्याग की मूर्ति है। सच कहा है किसी ने कि हर सफल आदमी की सफलता के पीछे किसी औरत का हाथ होता है।

वह और भी सोचता जाता लेकिन राज ने बीच में बोलकर उसकी तन्द्रा को तोड़ दिया– ''मुझे लगता है कि कल की देवी जी हमारा घर ढूंढ रही हैं।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"कौन? अच्छा। हां। कल मैंने ही तो बताया था। चलो बुला लाओ इन्हें।"

योगी बाहर निकल कर निधि और कुछ लड़कियों को अपने डेरे का रास्ता दिखाने लगा। थोड़ी देर में वे लोग डेरे के अन्दर अन्य महिलओं से बातें कर रहीं थीं।

कमल ने सामने आकर नमस्ते की और रत्ना की ओर इशारा करके कहा– "यह मेरी भाभी रत्ना, मि. राज की धर्म पत्नी।"

फिर पुष्पा की ओर इशारा करके कहा "यह मेरी छोटी भाभी पुष्पा, मि. योगी की धर्मपत्नी। यह हम लोगों की मां। अब रहा मैं, तो मेरा नाम... "कमल जी है", बात काटकर निधि बोली। सुनकर कमल के साथ–साथ राज भी हैरान हो गये। तभी कमल ने पूछा, "आप कैसे जानती हैं?"

"वैसे ही जैसे जानना चाहिए।"

"तब भी।"

"मैं यह भी जानती हूं कि आप कश्मीरी ज़रूर हैं पर माइग्रन्ट नहीं। आपका दिल्ली में अपना बहुत बड़ा बिज़नेस है। आपकी प्यारी सी धर्मपत्नी है, जो इस समय दिल्ली में ही है और...

"ठीक तो है सभी कुछ। पर आप भी अपना कुछ अता–पता दें तो आसानी रहेगी।"

"कमल जी, मेरा कोई खास परिचय नहीं है। जो है सो आपके सामने है। इसके अतिरिक्त बताने के लिए कुछ भी नहीं।"

"आपका नाम, काम, धाम। यही तीनों चीज़े खैर! मिल जायेंगी या मिल गई हैं। पर बताने वाला कुछ क्यों नहीं है। यह बताने की कृपा करेंगी।"

"ज़िन्दगी में बहुत सारे ऐसे प्रश्न भी होते हैं जो कभी हल ही नहीं होते, प्रश्न चिन्ह बनकर ही समाप्त होते हैं।"

"यह तो आपने दर्शन बताया। लेकिन यदि आदमी सवालों को हल करने लग जाये तो असंभव कुछ नहीं।"

"असम्भव तो न था किन्तु हमारा समाज सम्भव करने की आशा को निराशा में बदल देता है। इसलिए यदि चिन्गारी को राख में ही दबी रहने से समाधान मिलता है तो सौदा बुरा नहीं।"

"हममें अगर चिंगारी को झाड़ने की ताकत नहीं तो फिर अच्छे कल

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

की संभावना ही क्यों करें?''

''नहीं कमल जी संभावना भी कर सकते हैं और राख झाड़ने की ताकत भी जुटा सकते हैं पर वातावरण वह सब सहन न कर सकेगा। इसलिए जान बूझकर मूर्ख बनने में ही समझदारी है।"

उसकी बातें सुनकर कमल को लगा कि कोई ऐसी औरत है यह जो उसके बारे में सब कुछ जानती है। लेकिन यह क्या बोल रही है? और किसके बारे में बोल रही है –यह उसकी समझ में नहीं आ रहा था। इतने मे रत्ना ने चाय और बिस्कुट सामने रखे और निधि न जाने कहां खोई रही, चुपचाप कप उठाया और चाय पीती गई।

रत्ना को देखकर उसे जैसे यकीन ही नहीं आया कि राज भी शादी कर सकता है।

उसकी नज़रों में राज का वह लाचार सा चेहरा घूम गया जो कभी उसकी आज्ञानुसार चलता था। राज में इतना बड़ा परिवर्तन आया कैसे? वह सोचती रही।

इतने में कमल ने कहा– "यह राज भी पहले ऐसा न था, बहुत ही भोला और सीधा था। मैं इसको पहले से जानता हूं तब तो यह अन्दाज़ा भी न था कि यह इतना बड़ा कवि होगा। इतना बड़ा कार्यकर्ता होगा। सच कहता हूं यह पहले ऐसा न दिखता था"।

निधि सुनकर हैरान सी हो गई कि राज कवि भी है। उसने ज़ोर देकर पूछा, "सच कहते हैं ना आप कि यह कवि हैं या मज़ाक कर रहे हैं?"

"नहीं देवी जी मेरी मज़ाक करने की आदत नहीं। यह एक अन्तरदेशीय स्तर के कवि हैं और कदाचित इस सम्मेलन में भी सम्मानित हो रहे हैं। क्यों राज आप भी स्वयं कहो ना"।

राज ने लज्जाते हुए सा स्वीकार किया– ''ऐसे ही आड़े तिरछे शब्द लिख लिया करता हूं।''

''और क्या कर रहे हैं आजकल?''

''ज़ाहिर है खाली शायरी से पेट नहीं भरता। एक बहुत बड़ी फर्म के जनरल मैनेजर भी हैं!" निधि विस्फारित नेत्रों से राज को देखने लगी। उस नज़र में न जाने क्या आर्कषण था कि राज एकदम निधि को पहचान गया और एकदम बोल पड़ा।'' सब भगवान की कृपा है निधि। एक दरवाज़ा बन्द होता है तो दस खुल जाते हैं।''

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कमल यह सुनकर निधि को गौर से देखने लगा, जिस पर निधि ने रोते हुए कहा– ''इन्होंने ठीक पहचाना कमल जी!'' और कहते ही बेहोश हो गई। सब उसको होश में लाने की अपने–अपने ढंग से कोशिश करने लगे। रत्ना यह सारा दृश्य हैरान व परेशान सी देखती रही। सारे घर की भीड़ निधि के आगे पीछे जमा हो गई। कमल बोलता गया– ''यह तुमने अपनी क्या हालत बना रखी है निधि?''

पर निधि बेहोश थी। उसके साथ की लड़कियां परेशान थीं। इतने में कुछ और कश्मीरी शरणार्थी इधर आये जिनमें शामरानी व श्यामलाल भी थे। अलग–अलग लोग अलग–अलग तरह की अटकलें लगाते रहे। निधि का उपचार चल रहा था कि शामरानी बोली– "जब मन बहुत ही दुःखी हो तो यही होता है। मुझे अपना वह दुख याद आता है जब मेरी बेटी मरी थी। मैं भी इसी तरह मूर्च्छित हो जाया करती थी।''

दूसरी महिला बोली, ''वही बेटी जिसकी 'बारहवीं' करने आप हरिद्वार आई थीं।''

''हां बहन। मेरी तो एक ही बेटी थी जो जवान ही मुझे छोड़कर चली गई।''

''दुनिया में कोई भी सुखी नहीं किसी को एक ग़म है तो किसी को दूसरा!"

क्या कारण था उसकी मौत का?''

''मैं अपने बेटे के पास किलम गांव गई थी। वहीं उसकी मौत का तार मिला था। घर पहुंच कर पता चला कि उसका हार्ट फेल हो गया था, "कहकर शामरानी रोने लगी। इधर निधि को होश आ रहा था और वह अपनी मां की आवाज़ पहचान चुकी थी। ज्यों ही उसने अपने बारे में इस तरह की बातें सुनी तो एकदम चीख उठी, ''तब नहीं लेकिन अब तुम्हारी बातों से यकीनन मर जाऊंगी!''

सारे लोग यह सुनकर हैरान हो गये और निधि व शामरानी को बारी–बारी देखते रहे। श्याम लाल भी बेटी को पहचान गया, किन्तु कुछ भी बोला नहीं, न जाने क्यों? इधर निधि फिर चीखी ''मां मैं मरी नहीं ज़िन्दा हूं। मुझे अपना लो मां। मुझे अपना लो!'' लेकिन शामरानी आगे बढ़ी नहीं बल्कि हक्की–बक्की देखती रही निधि को। न हां बोली और न ना। निधि बराबर कहती रही – ''आज इस दुनिया में सब होने के बाद भी मेरा अपना कोई

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नहीं– कोई नहीं। मैं निधि हूं बाबू जी निधि हूं।'' पर बाबू जी चुपचाप रास्ता बनाते हुए बाहर निकल आये भीड़ से। इतने में कार्यकर्ताओं का बैज लगाये शालू उस ओर आ गई कि शामरानी ने उसे रोका और बोली, ''बहू। मत जाओ उस ओर मत जाओ। वह कर्मों जली वहीं इज्जत तार–तार कर रही है। मत जाओ। सुना तुमने" लेकिन शालू ने अपनी सास की बातों पर कोई ध्यान न देकर भीड़ से रास्ता बनाती हुई निधि तक पहुंचने की कोशिश की और पहुंच भी गई। वहां नीचे बैठ कर सिर पटकती निधि का सिर अपनी गोदी में रखा और आंचल से आंसू पोंछने लगी! निधि एकदम चुप हो उसे निहारने लगी, तब कुछ देर के बाद बोलने लगी– "मुझे माफ कर दो भाभी। मेरी मां ने तुम पर तरह–तरह के जुल्म ढ़ाये। मुझे माफ कर दो भाभी मैं भी तुम्हारे किसी काम न आई। मैं स्वार्थी निकली। अपने स्वार्थ के कारण ही मैंने हीरा जैसा पति और तुम जैसी देवी भाभी सब को खोया"। निधि बोलती ही जा रही थी...

इतने में पत्नी को ढूंढता विनय भी वहीं पहुंचा। उसने सुना– "भाभी अपने मुंह से कह दो कि तुमने और भैय्या ने मुझे माफ किया।"

शालू स्वयं रोती हुई उसके आंसू पोंछती जाती थी कि विनय भी बैठ कर बहन को समझाने लगा– ''कोई बात नहीं, जो हुआ उसे भूल जाओ भगवान सब भली करेंगे। उठो! चलो" –कहते हुए ज्यों ही उसने पत्नी से निधि को सम्भालने के लिए हाथ बढ़ाया कि निधि लुढ़कती हुई नीचे धरती पर गिर गई––– एकदम खामोश और आंखें पथराई हुई। सब लोगों ने समझा कि फिर बेहोश हो गई है। बड़े उपचार किये गये लेकिन व्यर्थ। निधि तो मर चुकी थी!!

यह सारा दृश्य देखकर राज, कमल, योगी, रत्ना तथा पुष्पा सब रोने लगे! इधर शामरानी ने भी सुना तो वह भी दहाड़ें मार–मार कर रोने लगी। पर बेटे ने समझाया– "अब इस तरह रोने का कोई लाभ नहीं। फिर तुमने तो ज़िन्दा ही बेटी की ''बाह'' (बारहवीं) कर दी थी। अब रोती क्यों हो मां! निधि ने तो मुक्ति पाई है एक विस्थापित ज़िंदगी से!"

टप.. टप.. टप... विनय. रो रहा था!!

इति

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जन्म : सन् 1940 में श्रीनगर, काश्मीर में।

शिक्षा : एम.ए. हिन्दी और अंग्रेज़ी में तथा बी.एड. जम्मू विश्वविद्यालय से।

विवाह : सन् 1960 में श्रीनगर में।
जीवन के कटु अनुभवों के लगभग एक दशक बाद 1970 से लेखन शुरू किया। स्थानीय पत्र-पत्रिकाओं में यदा-कदा कुछ रचनाएं प्रकाशित होती रहीं। इसी दौरान *आकाशवाणी* से कई लघु रेडियो एकांकी प्रसारित होते रहे। सन् 1979 में एक कहानी संग्रह *लक्ष्यहीन* प्रकाशित हुआ। उसके बाद कुछ छुटपुट कवितायें, लेख व कहानियां लिखीं जो *योजना* तथा अन्य स्थानीय पत्रिकाओं में छपती रहीं।

सम्प्रति : जागृति निकेतन हाईस्कूल जम्मू में अध्यापन कराने के बाद अब अवकाश प्राप्त।

सहयोग प्रकाशन
7/1, पंत नगर, जंगपुरा
नई दिल्ली-110014

ISBN No. : 81-86029-06-9 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh **Price Rs. 200.00**